राज॰ राजस्थान ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक :

पद्मश्री जिनविजय मुनि पुरातत्त्वाचार्य

(सम्मान्य संचालक : राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर)

ग्रन्थाङ्क - 13

कवि जान कृत

क्यामखां रासा

(हिन्दी अनुवाद सहित)

सम्पादक :

डॉ. दशरथ शर्मा, अगरचन्द नाहटा एवम्

भंवरलाल नाहटा

अनुवादक :

डॉ. रतनलाल मिश्र

प्रकाशक :

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

तृ० सं० 1996 मूल्य : 124 रुपये

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक :

पद्मश्री जिनविजय मुनि पुरातत्त्वाचार्य

(सम्मान्य संचालक : राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर)

ग्रन्थाङ्क - 13

कवि जान कृत

क्यामखां रासा

(हिन्दी अनुवाद सहित)

सम्पादक :

डॉ. दशरथ शर्मा, अगरचन्द नाहटा एवम्

भंवरलाल नाहटा

अनुवादक :

डॉ. रतनलाल मिश्र

प्रकाशक :

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

तृ० सं० 1996

मूल्य : 124 रुपये

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक :
पद्मश्री जिनविजय मुनि पुरातत्त्वाचार्य
(सम्मान्य संचालक : राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर)

ग्रन्थाङ्क - 13

कविजान कृत

क्यामखां रासा

(हिन्दी अनुवाद सहित)

सम्पादक :
डॉ. दशरथ शर्मा, अगरचन्द नाहटा एवम्
भंवरलाल नाहटा

अनुवादक :
डॉ. रतनलाल मिश्र

प्रकाशक :
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

तृतीय संस्करण 1996 मूल्य : 124 रुपये

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थान, प्रदेशीय पुरातनकालीन संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषा निबद्ध विविध वाङ्मय प्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक :

पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

ग्रन्थाङ्क - १३

सम्पादक :

डॉ. दशरथ शर्मा, अगरचन्द नाहटा एवं भंवरलाल नाहटा

प्रथम संस्करण - 1953 ◆ द्वितीय संस्करण - 1983 ◆ तृतीय संस्करण - 1996

प्रकाशक :

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

मुद्रक : राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर

प्रकाशकीय

कायमखानी मुसलमानों के उद्भव एवं यशोगाथापरक इस कृति को राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला से सन् 1953 में प्रकाशित किया गया था। सुधी पाठकों एवं विद्वज्जनों में यह कृति इतनी लोकप्रिय हुई कि इसके दो संस्करण अद्यावधि निकाले जा चुके हैं। पुस्तक का वर्तमान तृतीय संस्करण आपके हाथों सौंपते हुये मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है।

वर्तमान संस्करण को अधिक उपादेय बनाने हेतु हमारे आग्रह पर डॉ. रतनलाल मिश्र ने इसका हिन्दी अनुवाद एवं ऐतिहासिक टिप्पणियाँ देकर कायमखानियों के बारे में अब तक की गई शोध को अपनी भूमिका में समाहित कर इसे और अधिक प्रामाणिक एवं पठनीय बना दिया है। आशा है कि विद्वज्जगत् में इस संस्करण को समादर प्राप्त होगा।

ओ. पी. सैनी
आई. ए. एस.
निदेशक

किंचित् प्रास्ताविक

'**राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला**' में प्रकाशित करनेके लिये, बीकानेरके ज्ञानभंडारोंमेंसे कुछ ग्रन्थ प्राप्त करनेकी दृष्टिसे सन् १९५२ में बीकानेर जाना हुआ, उस समय, प्रसिद्ध राजस्थानी साहित्यसेवी श्रीयुत अगरचन्दजी नाहटाके पास प्रस्तुत '**क्यामखां रासा**' की प्रतिलिपि देखनेमें आई। ग्रन्थकी उपयोगिता एवं विशेषताका खयाल करके हमने इसे, इस ग्रन्थमालामें प्रकट करने का निश्चय किया और तदनुसार मुद्रित होकर अब यह विद्वानोंके हस्त संपुट में उपस्थित हो रहा है।

ग्रन्थ और ग्रन्थकारके विषय में यथालभ्य सब बातें संपादक-त्रयीने विस्तृत भूमिका और ऐतिहासिक टिप्पण आदि द्वारा उपलब्ध कर दी हैं जिससे पाठकोंको ग्रन्थका हार्द समझने में यथेष्ट सहायता मिल सकेगी।

मूल ग्रन्थकी केवल प्रतिलिपि ही हमें मिली थी जो श्री नाहटाजीने कुछ समय पहले, उन्हें प्राप्त हस्तलिखित प्राचीन प्रतिके उपरसे करवा रखी थी। प्राचीन ग्रन्थोंके संपादनकी हमारी शैली यह रहती है कि किसी कृतिका संपादन कार्य जब हाथमें लिया जाता है तब उसकी अन्यान्य दो, चार प्रतियां प्राप्त करनेका प्रयत्न किया जाता है। यदि कहींसे उसकी ऐसी प्रतियां मिल जाती हैं तो उनका परस्पर मिलान करके, भाषाकी, छन्दकी, अर्थकी और वस्तुसंगति आदिकी दृष्टिसे, विशिष्ट रूपसे पर्यवेक्षण करके मूल पाठकी वाचना तैयार की जाती है और भिन्न-भिन्न प्रतियोंमें जो शाब्दिक पाठभेद प्राप्त होते हैं उन्हें मूलके नीचे पादटिप्पणीके रूपमें दिया जाता है। प्राचीन ग्रन्थोंके संपादनकी यह पद्धति विद्वन्मान्य और सर्वविश्रुत है। परन्तु जब किसी ग्रन्थका कोई अन्य प्रत्यन्तर शक्य प्रयत्न करने पर भी, कहींसे नहीं प्राप्त होता है, तब फिर वह कृति केवल उसी प्राप्त प्रतिके आधार पर यथामति संशोधित-संपादित कर प्रकट की जाती है। प्रस्तुत 'क्यामखां रासा' भी इसी तरह, केवल जो प्रतिलिपि हमें प्राप्त हुई उसीके आधार पर, संशोधित कर प्रकाशित किया जा रहा है। जिस मूल प्रतिपरसे, श्री नाहटाजीने अपनी प्रतिलिपि करवाई थी वह मूल प्रति भी हमारे देखनेमें नहीं आई। इससे हमको यह ठीक विश्वास नहीं है कि जो वाचना प्रस्तुत मुद्रण में दी गई है वह कहां तक ठीक है।

प्रेसमेंसे आनेवाले प्रुफोंका संशोधन करते समय हमें इस रचनामें भाषा और शब्द संयोजनाकी दृष्टिसे अनेक स्थान चिन्तित मालूम दिये हैं जिनका निराकरण मूल प्रति और एकाध प्रत्यन्तरके देखे विना नहीं किया जा सकता। लेकिन उसके लिये कोई अन्य उपाय न होनेसे इसको यथाप्राप्त प्रतिलिपिके अनुसार ही मुद्रित करना हमें आवश्यक हुआ है। राजस्थानके साहित्यसेवी विद्वानोंसे हमारा अनुरोध है कि वे इस रचनाके कुछ प्रत्यन्तर – जो अवश्य कहीं-न-कहीं होने चाहिये – खोज निकाले, जिससे भविष्यमें इसकी एक अच्छी विशुद्ध वाचना तैयार करने-करानेका प्रयत्न कोई उत्साही मनीषी कर सके।

कवि जान राजस्थानका एक बड़ा और प्रसिद्ध कवि हो गया। यद्यपि जाति और धर्मसे वह मुसलमान था लेकिन उसकी रचनाओंके पढ़नेसे मालूम होता है कि वह भाव और भक्तिकी दृष्टिसे प्रायः हिन्दु था। उसका शरीर मुस्लिम था परन्तु आत्मा हिन्दु था। यदि उसने अपनी रचनाओमें अपने व्यक्तित्वके परिचायक कोई उल्लेख न किये होते तो पाठकोंको इन रचनाओंका कर्त्ता कोई हिन्दु-इतर है ऐसी कल्पनाका होना भी असंभवसा लगता।

कविकी विविध प्रकारकी और विस्तृत संख्यावाली रचनाओंके विषयमें संपादक मित्रोंने यथेष्ट प्रकाश डाला है। इससे ज्ञात होता है कि कवि अपने समयमें राजस्थानका एक प्रमुख साहित्यकार रहा है। शायद इतनी विविध रचनाएं, उस समयके अन्य किसी हिंदु या जैन विद्वान्ने नहीं की हैं। कविका अनेक विषयोंपर अच्छा अधिकार मालूम देता है। भाषा और भावों पर तो उसका बड़ा ही प्रभुत्व प्रतीत हो रहा है। लोक भाषाके ग्रन्थोंकी प्रतिलिपि करनेवाले लेखकोंकी लिखन-पद्धति प्रायः शिथिल और अनियमित होती थी, इस लिये ऐसी रचनाओंमें लेखनभ्रष्टताके कारण भाषाभ्रष्टताका प्राचुर्य उपलब्ध होना स्वाभाविक है और इसी कारणसे किसी भाषा कविकी कृतिका पूर्णतया विशुद्ध रूपमें प्राप्त होना असंभवसा रहता है। परंतु यदि ऐसी प्राचीन रचनाओंके दो चार भिन्न स्वरूपके अच्छे प्रत्यन्तर मिल जाते हैं तो उनके आधार पर विशेषज्ञ विद्वान् किसी भी रचनाकी विशुद्ध वाचना ठीक तरहसे उपस्थित कर सकता है। जैसा कि हमने ऊपर सूचित किया है प्रस्तुत 'क्यामखां रासा' उक्त एक ही प्रतिलिपिके आधार पर मुद्रित किया गया है और इससे इसमें भाषा, छन्द, वर्णसंयोजन आदिकी दृष्टिसे बहुतसे स्थान शिथिलता और अशुद्धताके उदाहरण स्वरूप दृष्टिगोचर होते हैं परंतु हमारा विश्वास है कि यदि दो-एक अन्य प्रत्यन्तरोंके आधार पर, इसकी विशुद्ध वाचना तैयार की जाय तो, जान कविकी यह कृति एक उत्तम कोटिकी साहित्यिक रचना सिद्ध होगी। उस समयके हिन्दु या जैन कविकी कोई रचना, शायद ही कवि जानकी रचनाकी तुलनामें स्पर्द्धा करने योग्य सिद्ध हो।

कविका स्वभाव बहुत उदार है। वह राजपूत जातिकी वीरताका बडा प्रशंसक है। अपने चरित्रनायकके विपक्षियोंकी वीरताका भी वह अच्छा सहानुभूतिपूर्वक वर्णन करता है। क्यामखानी वंशवाले, वास्तवमें चौहान वंशीय राजपूत थे और इसलिये कवि चौहान कुलका गौरव-गान करनेमें अपना गर्व समझता है। वह चौहान कुलको राजपूत जातिमें सबसे बड़ा गौरवशाली कुल मानता है। उसके विचारमें

जिसी जात रजपूत की, सगरे हिंदसतान।
सबमें निहचै जानियो, बडौ गोत चहुवांन॥

... ...

चाहवांन यातें कह्यो चहूं कूटमें आन।
सगरे जंबू दीपमें सम को गोत न आन॥

... ...

"फूलनि मधि गुलाल, चुनियनि जैसी लाल ।
राइनमें तैसो गोत चक्कवै चौहांन को ॥"

इसलिये अपने चरितनायक अलिफखानका, इस चौहान गोतमें उत्पन्न होना कविके मनमें बड़े गौरवकी बात है और वह प्रारंभहीमें बड़े गर्वके साथ इसका उल्लेख करता हुआ कहता है कि

"अलिफखांनु दीवानकौ बहुत वडौ है गोत।
चाहुवांनकी जोरको और न जगमें होत ॥"

चौहानकुलकी उत्पत्ति की जो कथा इस कविने दी है वह शायद अन्य किसी ग्रन्थमें नहीं है और इस दृष्टिसे यह एक नूतन अन्वेषणीय वस्तु है। कवि पृथ्वीराज चौहान (प्रथम के ?) द्वारा काबूलसे दूब मंगा कर, दिल्लीके मैदानोंकों हराभरा कर देनेका जो उल्लेख करता है (पृ. ६, पद्य ६५) वह भी एक, ऐतिहासिकोंके लिये गवेषणीय विचार है।

कविकी वर्णनशैली स्वाभाविक और सरल है। न इसमें कोई शब्दाडंबर है न अत्युक्तिका अतिरेक है। उक्तिपद्धति अच्छी ओजस्भरी हुई और रचना प्रवाहबद्ध एवं रसप्रद है।

भाषाविद्या (फाइलोलॉजी) की दृष्टिसे यह ग्रन्थ और भी अधिक महत्त्वका है। इसमें डींगलकी वह कृत्रिम शब्दावलि बहुत ही कम दिखाई देती है जो बादकी शताब्दीमें बनी हुई चारणोंकी रचनाओंमें भरपूर दृष्टिगोचर होती है। इसकी शब्दावलि पर शौरसेनी अपभ्रंशकी बहुत कुछ छाया दिखाई देती है और साथमें प्राचीन राजस्थानीका पुट भी अच्छे प्रमाणमें उपलब्ध होता है। हमारा अभिमत है कि किसी उत्साही और परिश्रमी विद्वान्को या विद्यार्थीको चाहिये कि किसी युनिवर्सिटीकी पीएच. डी. की डीग्रीके लिये इस कविकी रचनाओंका भाषाविज्ञानकी दृष्टिसे गंभीर अध्ययन कर, तुलनात्मक निबन्ध उपस्थित करनेका प्रयत्न करे।

इस भाषाविद्याके विचारका उल्लेख करते समय, प्रस्तुत प्रकरणमें जो एक कथन हमें प्राप्त हुआ है वह विद्वानोंके लिये और भी विशेष विचारणीय है।

बीकानेरकी अनूपसंस्कृत लाइब्रेरीके, एक हस्तलिखित प्राचीन गुटकेमें, रूपावली नामक आख्यान लिखा हुआ है जिसका थोड़ा-सा परिचय संपादकोंने अपनी भूमिकाके पृ. ११ पर दिया है। यह रूपावली आख्यान प्रस्तुत कवि जान ही की कृति है या अन्य किसीकी यह इस परिचयसे ज्ञात नहीं हो सकता। इस आख्यानकी पहली चौपाईमें कहा गया है कि **फतहपुर नगर जहां बसा है उस देश या भूमिका नाम बागर* है और वहांके आसपास जो भाषा बोली जाती है वह भली प्रकार की सोरठ-मारू है जिसमें सुन्दर रूपसे भाव प्रकट किये जाते हैं।** हमारे लिये

* ग्रन्थकारने बर्तमानमें शेखावाटी कहलानेवाले प्रदेशका नाम-जिसमें फतहपुर और झुंझनु आदि नगर बसे हुए हैं—वा ग ड लिखा है—यह भी भौगोलिक दृष्टिसे अन्वेषणीय है। राजस्थानका वह प्रदेश, जिसमें डूंगरपुर, बांसवाडा, प्रतापगढ आदि नगर बसे हुए हैं प्राचीन कालसे वा ग ड नामसे प्रसिद्ध है। इसी तरह राजस्थानकी दक्षिणी सीमा पर आया हुआ कच्छ और उत्तर गुजरातके बीचमें जो छोटा रण कहलाता है उसके आसपासके प्रदेशका नाम भी वा ग ड है और जो प्रायः कच्छ-बागडके नामसे प्रसिद्ध है। कवि जानके समकालीन साहित्यमें फतहपुर आदिका होना भी वा ग र या वा ग ड प्रदेशमें बताया गया है। यों राजस्थानके सीमा प्रान्तों पर तीन बागडी प्रदेशोंका उल्लेख मिल रहा है। इस वा ग ड शब्दका वास्तविक अर्थ क्या है यह भी एक बिचारणीय बस्तु है। जैन ग्रन्थोंमें वा ग ड विषयके बहुतसे उल्लेख प्राप्त होते हैं।

भाषाका यह **सोरठ-मारू** नाम बिल्कुल नया और विचारणीय है। मारू का अर्थ तो स्पष्ट ही है कि जिसका सम्बन्ध मरूभूमिसे हो वह **मारू** है; पर इसके साथ सोरठ शब्दका क्या संबन्ध है? हमारा खयाल है कि कविको सोरठ शब्दसे वह भाषाप्रदेश अभिप्रेत है जिसे वर्तमानमें गुजराती भाषा-भाषी प्रान्त कहा जाता है। जिस प्रकार भौगोलिक दृष्टिसे सोरठका प्रदेश प्राचीन कालसे सर्वत्र विश्रुत रहा है इसी तरह वहांकी जनभाषा भी, जो कि वर्तमानमें तो वह गुजरातीके नामसे ही सर्वत्र प्रसिद्ध हो रही है, उस समय, सोरठके नामसे प्रसिद्धिमें रही हो और फतहपुरके प्रदेशके लोगोंकी जो बोली रही हो उसमें **मारू** और **सोरठ** की बोलीका विशिष्ट संमिश्रण रहा हुआ होनेसे कविने उसे इस नामसे उल्लिखित किया हो।

आधुनिक राजस्थानी और गुजराती दोनों भाषायें मूलमें एक थीं। मुगलोंके शासन कालके मध्य समयसे धीरे-धीरे इनमें कुछ पार्थक्य होने लगा। भाषावैज्ञानिकोंने प्राचीन राजस्थानी एवं गुजरातीको एकरूप मान कर उसके लिये **प्राचीन पश्चिमीय राजस्थानी** ऐसा शास्त्रीय नाम निश्चित किया है। लेकिन इस नामनिर्देशमें बहुतसे विद्वानोंको सन्तोष नहीं है। अतः वे कोई ऐसा नामनिर्देश करना-कराना चाहते हैं जिससे राजस्थान और गुजरातकी भौगोलिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक संयुक्तता और सहकारिताका स्पष्ट बोध हो सके। गुजरातके एक विशिष्ट कवि, लेखक, विचारक और विवेचक विद्वान् श्रीयुत उमाशंकर जोशीने इसके लिये **मारू-गूर्जर** शब्दका प्रयोग करना पसंद किया है। उक्त रूपमती आख्यानके कर्ता द्वारा किया गया **सोरठ मारू** शब्दका प्रयोग देख कर हमें इस विषयमें विशेष प्रेरणा मिली है और हमारी कल्पनामें कवि उमाशंकरजी द्वारा सूचित राजस्थान और गुजरात की सांस्कृतिक एकताका सारसूचक **मारू-गूर्जर** शब्द प्रयोग ठीक उपयुक्त लगता है। राजस्थान और गुजरातके विशिष्ट भाषाविद् विद्वान् इस पर अवश्य विचार करें। इस विषयमें हम अपने कुछ विशेष विचार किसी अन्य अवसर पर प्रकट करना चाहते हैं।

हमारी कामना है कि कवि जानकी अन्य रचनाएं भी इसी तरह सुसंपादित हो कर प्रकाशमें आनी चाहिये।

सर्वोदय साधना आश्रम,
चंदेरीया
ता. १०-३-५३

–जिनविजय मुनि

क्यामखां रासाके कर्त्ता कविवर जान और उनके ग्रन्थ

हिन्दी साहित्यमें जान कविके क्यामखां रासो आदि ग्रन्थोंका सबसे पहला उल्लेख राजस्थान विद्वद्रत्न परम साहित्यनुरागी व संत साहित्यके अद्वितीय संग्राहक स्वर्गीय पुरोहित हरिनारायणजीने, १५ वर्ष हुए अपनी "सुन्दर ग्रन्थावली" में किया था। सन्तकवि सुन्दरदास सं० १६८२ में फतहपुर पधारे, और अधिकतर यहीं रहने लगे। अतः फतहपुरके विद्यानुरागी नवाबोंका आपके सम्पर्कमें आना स्वाभाविक था। इसी प्रसंगसे पुरोहितजीने अलफखाँ व उनके रचित चार ग्रंथ, फतहपुरके नवाबोंके नाम एवं क्यामरासोका उल्लेख किया था। यथा—

"सुन्दरदासजी फतहपुरमें नवाब अलफखाँके समयमें आगये थे। सम्भव है यहां उस वीर और कवि नवाबसे इनका मिलना हुआ हो, क्योंकि नवाब सम्वत् विक्रमी १६६३ (सन् हिजरी १०५३ रमजान की २८ ता. को) तलवाड़ेके युद्धमें बड़ी वीरतासे वीरगतिको प्राप्त हुआ था। यह महामहिम नवाब अलफखाँ प्रायः शाही खिदमतमें रहा करता था। यह बड़ी-बड़ी मुहिमों और युद्धोंमें भेजा जाता था और प्रायः सदा विजयी रहा करता था। परन्तु शूरवीर होकर भी कहते हैं कि यह एक अच्छा कवि भी था, और हिन्दी काव्यमें कई ग्रन्थ भी बनाये हैं[1] जो प्रायः शेखावटीके अन्दर प्रसिद्ध हैं।"

आपने टिप्पणीमें लिखा है कि अलफखाँ-काव्योपनाम जान कविके बनाये हुए चार ग्रन्थ १. रतनावली, २. सतवंतीसत, ३. मदनविनोद, ४. कविवल्लभ हैं, जो हमारे संग्रहमें हैं। (पृष्ठ ३६-३७) पृष्ठ चालीसकी टिप्पणीमें उपर्युक्त टिप्पणीकी बातको पुनः दुहराते हुए क्यामरासा के रचियताका नाम [2]नेडमतखाँ बतलाया था। यथा—

"अलफखाँ फतहपुरके नवाबोंमें नामी वीर और कवि हुआ। यही जान कवि था, जिसने कई ग्रन्थ रचे थे। उनमेंसे चार ग्रन्थ हमारे संग्रहमें भी विद्यमान हैं। इसके छोटे बेटे "नेड़तमतखाँ" ने कायमरासा बनाया। इसहीके अनुसार नजमुद्दीन पीरजादे झुंझणूं फ़तहपुरने "शजतुल मुसलमीन" फारसीमें तवारीख लिखी, जिसकी नकल झूंझणूंमें हमने करवायी थी परन्तु वह मांगकर कोई ले गया था सो अबतक लौटाई नहीं। इसीके आधारपर "तारीख खाँजहानी" हैदराबाद-दक्षिणमें बनी है। नवाब नं. १२ कामयाबखाँके समयमें शेखावत वीर शिवसिंहजीने सं. वि. १७८८ में फतहपुरको तलवारके जोरसे छीन लिया। तबसे शेखावतोंके अधिकारमें है। (वाकियात कौम काइम खानी" "फरूरू तवारीख" तथा "शिखर वंशोत्पत्ति पीढ़ी वार्तिक" एवं सीकरका इतिहास।)

पुरोहितजीके पश्चात् धूमकेतुके सम्पादक पं. शिवशेखर द्विवेदीने धूमकेतुके तीसरे अंक (अगस्त सन् १६३८) में तीन ग्रन्थोंका परिचय प्रकाशित करते हुए जानका नाम अलफखाँ

---

१. फ़तहपुर परिचयके पृष्ट १३६ में भी इसी भ्रान्त परम्परा को अपनाया गया है।

२. फ़तहपुर परिचय ग्रन्थमें नियामतखाँ लिखा है।

लिखनेके साथ-साथ उसे मुगल सम्राट् शाहजहाँका साला बतलाया। इसका आधार अज्ञात है।

इसके पश्चात् पं. झाबरमलजी शर्माने सन् १९४० में हमारे द्वारा सम्पादित "राजस्थानी" त्रैमासिक (वर्ष ३ अंक ४)में "कायमखानी नवाब अलफखाँ और उसकी हिन्दी कविता" नामक लेख छपवाया जिसमें कायमखानी वंशकी पूर्व-परम्पराके साथ सतवंतीसत, मदनविनोद एवं कविवल्लभका रचयिता अलफखाँको बतलाया। इस लेखमें पण्डितजीने पुरोहित हरिनारायणजीके अलफखाँकी मृत्यु[1] सं. १६९३ (तलवाड़े युद्ध) में होनेके कथनपर सन्देह प्रकट किया क्योंकि कविवल्लभका रचनाकाल स्वयं ग्रन्थमें ही सं. १७०४ दिया गया है। पुरोहितजीके कथनानुसार इन्होंने कायमरासाके रचयिता अलफखाँके छोटे बेटे नेड़मतखाँको ही बतलाया है एवं हिन्दी साहित्यमें प्रसिद्ध ताजको कायमखानी नवाब फदनखाँकी पुत्री एवं अलफखाँ के पिता ताजखाँ (द्वितीय) की बहिन होना बतलाया है। जब मैंने इस लेखको पढ़ा, मनमें विचार हुआ कि सभी व्यक्ति जान कविको अलफखाँ बतला[2] रहे हैं। पर ग्रन्थकारने कहीं भी इसका सूचन नहीं किया। अतः वास्तविकताकी शोध करनी चाहिए।

इसी समय बीकानेर राज्यकी अनूप संस्कृत लाइब्रेरीका पुनरुद्धार-कार्य आरंभ हुआ और उसमें जान कविके कई ग्रन्थोंकी हस्तलिखित प्रतियां प्राप्त हुईं। फलतः व्रजभारतीमें प्रकाशित (सं. १९९२ में) अपने लेखमें मैंने जान कविके ९-१० ग्रन्थोंका उल्लेख किया था। अनूप संस्कृत लाइब्रेरी के लाइब्रेरियन श्री रावत सरस्वत बी. ए. से जान कविके सम्बन्धमें बातचीत होने पर इन्होंने शेखावाटीके किसी स्थानमें जान कवि के ७० ग्रन्थोंकी संग्रह प्रतिकी जानकारी दी। उनकी दी हुई ७० ग्रन्थोंकी सूची देते हुए मैंने एक लेख भी तैयार करके रखा, और उपर्युक्त संग्रह प्रतिके खरीदनेकी बात चल रही थी। इसी बीच वह प्रति मेरी[3] सहायतासे जुलाई सन् १९४४में हिन्दुस्तानी अकेडेमीने खरीद ली। सन् १९४५ में रावत सारस्वतने सरस्वती (जनवरी) एवं विश्ववाणी (मई) में जान कविके ग्रन्थोंके परिचायक दो लेख प्रकाशित किये, पर जान कविका वास्तविक नाम व परिचय वे भी प्राप्त नहीं कर सके उन्होंने नाम मुहम्मद जान होनेकी संभावना प्रगट की। अकेडेमीकी प्रतिके आधारसे श्रीकमल कुलश्रेष्टने हिन्दुस्तानीके जनवरी-मार्च सन् १९४५ के अंकमें उक्त प्रतिके ६८ ग्रन्थोंका ज्ञातव्य परिचय प्रकाशित किया।

जान कविके ग्रन्थोंमें बुद्धिसागर नामक ग्रन्थ भी था। उसकी एक प्रति दिल्लीके कूचे दिगम्बर जैन मन्दिरमें ज्ञात हुई। वहाँके सरस्वती भण्डारकी सूची अनेकान्त व० ४ अं० ७ ८ में प्रकाशित हुई। उसमें बुद्धिसागरके ग्रन्थ रचियताका नाम "न्यामतखाँ" बतलाया था। अतः दिल्ली जानेपर मैंने इस प्रतिको देखनेका प्रयत्न किया पर सफलता नहीं मिली। उसी बीच जैनाचार्य श्रीजिन

---

१. वास्तवमें यह सम्वत् भी सही नहीं है। यहाँ सम्वत् १६८३ चाहिए।

२. श्रीयुत मोतीलाल मेनारिया और कमलकुलश्रेष्ठने भी इसीका अनुकरण किया है, क्योंकि कविने क्याम रासोके अतिरिक्त किसी ग्रन्थमें अपना वास्तविक नाम नहीं दिया है।

३. हिन्दुस्तानी, भाग १५ अंक १.

ऋद्धिसूरिजी महाराजके दर्शनार्थ चुरूमें मेरा और भंवरलालका जाना हुआ, और वहाँसे विदुषी साध्वी श्री विचक्षणश्रीजीके वन्दनार्थ भूंझणू भी गये। वहांके जैन उपाश्रयमें स्थित यतिजीके संग्रहके खंडमें हमें जान कविके तीन ग्रन्थों (कायम रासो, अलफखांकी पैंडी, बुद्धिसागर) की उपलब्धि हुई, जिनमेंसे कायमरासो एवं अलफखाँकी पैडी दोनों ऐतहासिक काव्य थे, एवं अलफखांके सम्बन्ध-में रचे गये थे। उसकी प्रारंभिक पंक्तियोंको पढ़ते ही यह तो निश्चय हो गया कि जान कवि अलफखां नहीं, पर उसका पुत्र था। फिर सूक्ष्मतासे विचार करनेपर उसका नाम उपर्युक्त बुद्धिसागर ग्रन्थकी लेखन प्रशस्तिमें उल्लिखित न्यामतखां ही, जो कि अलफखांके पांच पुत्रोंमें द्वितीय थे, सिद्ध हुआ। इसकी सूचना सर्वप्रथम हमने हिन्दुस्तानीके अप्रेल, जून १९४५ के अंकमें कायमरासोका परिचय प्रकाशित करते हुए दी। वैसे "कविवर जान और उनके ग्रन्थ" नामक लेख इस सम्बन्धमें पहले लिखा जा चुका था, पर कागजकी दुष्प्राप्यतादिके कारण वह बादमें १९४९ की 'राजस्थान भारती' में प्रकाशित हुआ। इस लेखमें मैंने जान कविके ६ ग्रन्थ अपने संग्रहमें एवं अन्य ग्रन्थोंकी प्रतियां अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, राजस्थान रिसर्च सोसाइटी, सरस्वती भंडार (उदयपुर) एवं एशियाटिक सोसाइटीमें प्राप्त होनेका उल्लेख करते हुए रावत सारस्वतसे प्राप्त ७० ग्रन्थोंकी सूची दी। उप-र्युक्त १७ ग्रन्थोंमेसे बारह ग्रन्थोंके नाम तो इन ७० ग्रन्थोंमें मिल जाते हैं, पर ५ ग्रन्थ उनसे अतिरिक्त मिले। अतः जान कविकी कुल ७५ रचनाओंका परिचय इस लेखमें मैंने दिया था। पीछेसे हमारे संग्रहके बुद्धिसागर ग्रन्थके सम्बन्धमें अनुसन्धान करनेपर वह ७० ग्रन्थोंकी सूचीमें उल्लिखित बुद्धिसागरसे भिन्न ही सिद्ध हुआ, अतः रचनाओंकी संख्या ७६ हो जाती है।

इन ग्रन्थोंके रचना-कालपर विचार करनेसे कविकी संवतोल्लेख वाली सर्व प्रथम रचना शतकत्रय प्रतीत होती है, जिसकी रचना १६७१ में हुई है, और अन्तिम संवतोल्लेख वाली रचना जाफरनामा पदनामा है जो सं० १७२१ में रचित है। अतः कविने ५० वर्षतक निरन्तर साहित्यकी सेवा की और इस तरह ७० वर्षकी आयु अवश्य पाई सिद्ध होता है। उपलब्ध ग्रन्थों में सबसे बड़ा ग्रन्थ बुद्धिसागर है जो कि ३५०० श्लोक परिमाण का है। उसके बाद परिमाणमें कविवल्लभ एवं कायमरासोका स्थान आता है। कविकी भाषा और शैली सुन्दर है। वह आशु कवि था। उसने कई ग्रन्थोंके २, ३, ८ प्रहरमें व १-२-३ दिनोंमें रचे जानेका उल्लेख स्वयं किया है। रस-तरंगिणी, बुद्धिसागर आदि ग्रन्थोंसे स्पष्ट है कि कवि संस्कृत एवं फारसीका भी अच्छा ज्ञाता था। प्रथम ग्रन्थका आधार संस्कृत ग्रन्थ है, दूसरेका फारसी ग्रन्थ। कविका अध्ययन भी बहुत विशाल था। हिन्दी भाषापर तो इसका विशेष अधिकार था ही। अलंकार-रस, काव्य-शास्त्र, वैद्यक एवं इतिहास संबन्धी ग्रन्थोंकी रचना करनेके अतिरिक्त आख्यानक प्रेम काव्य लिखना उसका प्रिय विषय रहा प्रतीत होता है।

[टिप्पणी—सूफी काव्य संग्रहमें श्रीयुत परशुरामजी चतुर्वेदीभी लिखते हैं कि इस कविकी विशेषता इसकी रचनाओंकी पंक्तियोंकी द्रुतगामितामें देखी जा सकती है। जान पड़ता है कि इसकी प्रत्येक पंक्ति

तत्क्षण अपने आप बनती चली जाती है, न तो इसे उसके लिए कुछ सोचना पड़ा है और न कोई परिश्रम ही करना पड़ा है। कथानककी रूप रेखा इस कविके केवल संकेत मात्रसे ही भरती चली जाती है और कुछ कालमें एक प्रेमगाथा प्रस्तुत हो जाती है। फिर भी इसकी रचनाएँ केवल तुक बन्दियां नहीं कही जा सकतीं। उनके बीच २ में कुछ ऐसी सरस पंक्तियाँ आ जाती हैं जो किसी भी प्रौढ़ एवं सुन्दर काव्यका अङ्ग बन सकती हैं, और उनकी संख्या किसी प्रकार भी कम नहीं कही जासकती।

इस कविने पात्रोंके चरित्र-चित्रण तथा घटना-विधानमें भी कभी-कभी अपना काव्य कौशल दिखलाया है और कोई न कोई नवीनता ला दी है।]

रावत सारस्वत द्वारा प्राप्त सूचीमें 'रस कोष' का रचनाकाल सं० १६६७ लिखा हुआ था, उसी आधारसे राजस्थान भारतीमें प्रकाशित अपने लेखमें, मैंने उसे सर्वप्रथम रचना बतलाई थी। श्रीयुत परशुराम चतुर्वेदीने सूफी काव्य संग्रहके पृष्ठ १३९-४०में उसीका अनुकरण किया है। पर मेरे लेख छपनेके पश्चात् सं० १६८४ जेष्ठ वदीमें कवि भीखजनके फतहपुरमें लिखित प्रति अनूप संस्कृत लाइब्रेरीमें अवलोकनमें आई। जिससे इस ग्रन्थका वास्तविक रचनाकाल १६७६ सिद्ध होता है। यथा –

"जहाँगीरके राज्यमें हिरन चित्त को दोष।
सोलहसै षट हुतरै, कियो जान रस कोष॥" १४१। चौ. ५०

प्रस्तुत ग्रन्थ, रसमंजरीकी भाँति नायक नायिकाके वर्णन वाला है।

"अबहि बखानौ नाइका नाइक कहि कवि जान।
मथूं कथूं रसमंजरी सुनो सबे धर कान॥३॥

ग्रन्थका परिमाण ३०० श्लोकोंका है।

कविका गुरु

कविने हाँसीके शेखमोहम्मद चिस्तीको अपना गुरु बताया है।

शेखमुहम्मद मेरो पीर, हाँसी ठाम गुनीन गंभीर।
शेखमुहम्मद पीर हमारो, जाकौ नाम जगत उजियारो।
रहन गाँव जानहु तिहँ हाँसी, देखत कटे चित्तकी फाँसी।

कविवल्लभ एवं बुद्धिसागर ग्रन्थमें पीर मुहम्मदके ४ पूर्वज कुतवाँ १. जमाल २. बुरहान ३. अनवर एवं ४. नूरदीके भी नाम दिए हैं। यथा—

"कुतब भयै न इनके कुलचार, तिनको जानत सब संसार।
पहले जानहुँ कुतब जमाल, जिहि तन तक्यो सु भयौ निहाल॥३॥
दूजै भयौ कुतुब बुरहान, प्रगट्यो जाकौ नाम जहान।
कुतब अनवर दादौं भयौ, जिनकौं छत्रपति नयौं।
कुतब नूरदी नूरजहाँन, प्रगट भयौ जग जैसे भाँन।
हाँसीमें इनको विसराम, जियारत करै सरै मन काँम।

हाँसी ऐसी ठौर है, उत जो रावत जाई ।
इच्छा पूजै सुखित ह्वै, हँसत खेलत घर आई ।
सेखमोहम्मद पीर हमारौ, जाकौ नाम जगत उजियारौ ।
रोजो ऊपर बरसत नूर, करामात जग भई हजूर ।
ज्यारत करत फिरसते आवत, मनुषनुकी को बात सुनावत ।
नई नाही कछु होति आई, इनके कुलमें आदि बड़ाइ ।

७० ग्रन्थोंकी संग्रह प्रति

श्री कमलकुल श्रेष्ठके लेखानुसार इस प्रतिके पृष्ठोंकी लम्बाई-चौड़ाई ६ × ४ है । प्रारंभिक कुछ अंश प्राप्त नहीं हैं । बीच-बीचमें भी एकाध पृष्ठ गायब है । प्रति सं० १७७७-७८ में फतह-चन्द ताराचन्द डीडवाणिया द्वारा लिखित है । लिखावट स्पष्ट है । कहीं-कहीं कीड़ोंके खाने आदि कारणोंसे पढ़नेमें कठिनाई होती है । पहले यह एक जिल्दमें होगी अब सब पन्ने अलग-अलग हैं ।

कमल कुलश्रेष्ठकी वर्गीकृत ग्रन्थ सूची

१. छोटे-छोटे चरित्र काव्य
२. मुक्तक शृङ्गारवर्णन काव्य
३. उपदेशात्मक काव्य
४. कोष
५. मिश्रित

इनमें छोटे छोटे चरित्र काव्योंको दो भागोंमें विभक्त किया गया है—प्रेम कहानियाँ व स्वतन्त्र कहानियाँ । प्रेम कहानियाँ दो उपभागोंमें विभाजित की जा सकती हैं ।

१. अविवाहिता नायिकासे प्रेम होने और प्रायः विवाहमें समाप्त होने वाली कहानियाँ ।
२. परकीया-प्रेम-मूलक कहानियाँ ।

पहले उपवर्गमें निम्न काव्य हैं—

१. रतनावली, रचना संवत १६९१, मि. व. ७ (हि. सं. १०४४) छंद दोहा-चौपाई, विस्तार १७५ दोहे ।

(प्रायः ७ चौपाइयोंके बाद १ दोहा आता है । इस प्रकार दोहोंकी संख्या दी गई है, उसके साथ चौपाइयोंकी संख्या भी जान लेनी चाहिए)

यह ग्रन्थ ९ दिन में रचित है, प्रारंभिक ४४ दोहे इस प्रतिमें नहीं हैं ।

२. लैला मजनूं, र. सं.१६९१, छन्द वही, पद्य ६५९ (बीकानेर अनूप सं. ला. प्रतिके अनुसार)

३. रतनमंजरी, र. सं. १६८६, छन्द वही, २६४ दोहे, प्रारंभके पचास (५०) दोहे अनुपलब्ध है ।

४. नल-दमयंती, र. सं. १७१६, छन्द वही, विस्तार, १४६ दोहे।

५. पुहुप वरिषा, र. सं. १६७८, छन्द वही, पृष्ठ २७ (१७२ चौ.) राजकुमार पुरुषोत्तम व सुकेसीके प्रेम और विवाह से सम्बन्धित है।

६. कलावती, र. सं. १६९६, छन्द वही, दोहे २०४ (१२ दिनमें रचित) (रावत सारस्वतके लेखानुसार चौ. २०७)

७. छवि-सागर, रचना सम्वत् १७०६, छन्द वही, दोहा १६ (राजा जैत एवं राजकुमारी छविसागरकी प्रेमकहानी)

८. कामलता, र. सं. १६७८, छन्द वही, दोहा ३२ (हंसपुरीके राजा तथा कामलताकी प्रेम कथा है) हिन्दुस्तानीमें पूर्ण और कुछ अंश सूफी काव्य संग्रहमें प्रकाशित।

९. कलावती, र. अस्पष्टता, छन्द वही, दोहा ३६ (पुरन्दर और कलावती प्रेमकथा) (रावत सारस्वतानुसार दोहा ३६, चौपाई ३६, छन्द १२, सोरठा २, र. सं. १६७६, दो प्रहर-में रचित)

१०. छीता, र. सं. १६९३, कार्तिक सुदी ६, छन्द वही, दोहा ३७। कुछ अंश सूफी काव्य संग्रहमें प्रकाशित।

११. रूपमंजरी, र. सं. १६९४ छन्द वही, दोहा १२२, ज्ञान एवं रूपमंजरीकी प्रेमकथा।

१२. मोहिनी, र. सं. १६९४, मि. सु. ४, छन्द वही, पद्य १२२, ३ प्रहर में रचित।

१३. चन्द्रसेन शीलनिधान, र. सं. १६९१, छन्द चौपाई, दो. १८, ८ प्रहर में (रावत सारस्वतानुसार ढाई प्रहर में) रचित।

१४. कामरानी पीतमदास, र. सं. १६९१, छन्द वही, दोहा १२, सवा दो प्रहर में रचित।

१५. कलन्दर, र. सं. १७०२, छन्द वही,पृ. २.

१६. देवलदेवी खिजखां, र. सं. १६९४, छन्द वही, दोहा ८५, प्रसिद्ध उपाख्यान।

१७. कनकावती, र. सं. १६७५, छन्द वही, दोहा ८१, राजा भरतके पुत्र परमरूप और कनकावतीकी प्रेमकहानी, ३ दिन में रचित।

१८. कौतूहली, र. सं. १६७५, छन्द विविध, पृष्ठ ३३ (चन्द्रसेन एवं कौतूहलीकी प्रेमकथा)

१९. सुभटराई, र. सं. १७२०, छन्द दोहा चौपाई, दोहा ६० (सूरजमलके पुत्र सुभटराई एवं राजकुमारीकी प्रेमकहानी)

२०. मधुकरमालती, र. सं. १६९१, फा. व. १. छन्द वही, पृष्ठ २६, कुछ अंश सूफी-काव्य संग्रहमें प्रकाशित।

२१. बांदी नामा, रचनाकाल अज्ञात, छन्द वही, पृष्ठ ४, (किसी मियांका क्रीतदासीसे अनुचित प्रेम, प्रेमकथाके ढांचेसे भिन्न।

दूसरे उपवर्गकी रचनाएं –

१. निर्मल, र. सं. १७०४ माघ, छन्द वही, दोहा १३, निर्मलको सतीत्व रत्ताकी कहानी।

२. सतवंती, र. सं. १६७८, छन्द वही, दोहा ५२, सतवंतीकी रत्ताकी कहानी।

३. तमीमअनसारी, र. सं. १७०२, चौपाई १५०, तमीम अनसारीके पत्नीकी सतीत्व रत्ताकी कहानी।

४. शीलवती, र. सं. १६८४, छन्द वही, दोहा २५, शीलवतीको सतीत्व रत्ताकी कहानी २ दिनमें रचित।

५. कुलवंती, सं. १६९३ पौष, छन्द वही, दोहा ४७ कुलवंतीकी सतीत्व रत्ताकी कहानी।

स्वतन्त्र कहानियां–

१. बल्कियां विरही, र. सं. १६८६, चौपाई १२८, एक दिन में रचित, ईश्वर-प्रेममें पागल बल्किया विरहीके एक लोभीके उद्धारकी कहानी।

२. अरदेसरकी कहानी, र. सं. १६९०, दोहा-चौपाई, दोहा २३, दो प्रहरमें रचित।

मुक्तक शृंगार वर्णन, १. वर्णनात्मक, २. रीति काव्य वर्णनात्मक –

१. बारहमासा, र. सं. अज्ञात, सवैया १५, वियोग श्रृंगारका बारहमासा।

२. ग्रन्थ बरवा, र. सं. अज्ञात, बरवा ७०, संयोग-वियोग षट् ऋतु वर्णन।

३. षट् ऋतु बरवा, र. सं. अज्ञात, बरवा २२, षट् ऋतु वर्णन।

४. षट् ऋतु पवंगम, र. सं. अज्ञात, पवंगम पृ. २. षट् ऋतु वर्णन।

(विशेषता—अंत पदोंको अेकवरण जौ मारिअे।
तौ बरबा सब ह्वै हैं मढै विचारिअे॥)

५ घूंघटनामा, र. सं. अज्ञात, दोहा चौपाई ४, पृष्ठ, यौवन व घूंघटका वर्णन।

६. सिंगार-सत, र. स. १६७१, दोहा १०१, स्त्रियोंके श्रृंगारका वर्णन, ३ दिनमें रचित।

७. भावसत, र. सं. १६७१, पृष्ठ ६, श्रृंगार रस, २ दिनमें रचित।

८. विरहसत, र. सं. १६७१ दोहा, १००, वियोग श्रृंगार, ५ दिनमें रचित।

९. दरसनामा, र. सं. अज्ञात, चौपाई २१ "घूंघट खोल दरस परसाव"।

१० अलोक नामा, र. सं. अज्ञात, चौपाई २३, अलकोंके सौंदर्यका वर्णन।

११. दरसन नामा, र. सं. अज्ञात, चौपाई ३३।

१२. बारहमासा, र. सं. अज्ञात, पृष्ठ २, फुन्निग छन्द।

१३. प्रेमसागर, र. सं. १६६४, दोहा २६४, प्रेममहिमा।

१४. वियोगसार, र. सं. १७१४, दोहा, सवैया, पृष्ठ १६, विरह-वर्णन।

१५. कन्द्रफकलोल, र. सं. अज्ञात, कवित्त सवैया, पृ० ३२, श्रृंगाररस मुक्तक छन्द। प्रतिमें

अन्त नहीं है।

१६. भावकल्लोल, र. सं. १७१३, छन्द विविध, पृ. २० मुक्तक छन्द।

१७. विरहीको मनोरथ, र. सं. १६९४, दोहा ४४।

१८. मानविनोद, र. सं. अज्ञात, छन्द विविध, पृष्ठ ४, मान वर्णन।

१९. प्रेमनामा, र. सं. १६७५, दोहा-चौपाई, दोहा २१।

शृंगार रस-रीति ग्रन्थ

१. रसकोष, र. सं. १६७६, दोहा चौपाई, दोहा १४१, नायक-नायिका, दूत-दूती भेद वर्णन।

२. शृंगार तिलक, र. सं. १७१०, चौपाई पृ. ३५, नायक-नायिका वर्णन।

३. रसतरंगिणी, र. सं. १७११ माघ, विविध छन्द ३२७, (संस्कृत रसतरंगिणीकी भाषा, सं. १७२४ लिखित प्रति आचार्य शाखाभण्डार बीकानेरमें।)

उपदेशात्मक काव्य

१. चेतननामा, र. सं. अज्ञात, चौपाई ३५।

२. सीख ग्रन्थ, र. सं. अज्ञात, चौपाई २२ (छन्द पारसी मति)।

३. सुधा सिख, र. सं. अज्ञात, छन्द अस्पष्ट, पृष्ठ ४।

४. सत्तनामा, र. सं. १६९३, दोहा चौपाई, दोहा १९।

५. वर्णनामा, र. सं. अज्ञात, दोहा ३२, अक्षरोंपर दोहे।

६. बुद्धिदायक, र. सं. अज्ञात, छन्द अस्पष्ट, पृष्ठ ४, मोदक छन्द।

७. बुद्धिदीप, र. सं. अज्ञात, छन्द अस्पष्ट, पृष्ठ ४।

८. उत्तम शब्द, र. सं. अज्ञात, दोहा ३५, अली, उसमान एवं बीवी फातिमाका संवाद।

९. सिखसागर, र. सं. १६९५, दोहा २४६।

१०. पदनामा, र. सं. १७३१, दोहा ८० (लुकमान)

११. जफरनामा, र. सं. १७२१, चौपाई १३५।

कोष ग्रन्थ

१. नाम-माला अनेकार्थी, र. सं. अज्ञात, पृष्ठ २४, दोहा।

मिश्रित काव्य

१. बाजनामा, र. सं. अज्ञात, दोहा, पृष्ठ ३, बाजकी चिकित्सा।

२. कबूतरनामा, र. सं. अज्ञात, दोहा, पृष्ठ ४, कबूतरकी चिकित्सा।

३. गूढ़ग्रन्थ, र. सं. अज्ञात, दोहा ९०।

४. देसावली, र. सं. अज्ञात, दोहा-चौपाई, दोहा, ४७, पृथ्वीके विस्तारका वर्णन।

५. वेदक सिखनामा. र. सं. १६९५ दोहा, १०१ वैद्यक ग्रन्थ।

६. पाहन परीक्षा, र. सं. अज्ञात, दोहा, चौपाई, पद्य ४७।१५ रत्न पत्थरोंका वर्णन।

कुल ग्रन्थ २१, ५, २, १९, ३, ११, १, ६, = ६८ ।

श्री रावत सारस्वतसे प्राप्त सूचीके अनुसार १ - सुधासागर और २ - स्वास संग्रह, दो और होने चाहिए, अतः कुल मिलाकर ७० होते हैं ।

अन्य ग्रन्थ

१. कवि वल्लभ, र. सं. १७०४, शाहजहाँके समय । काव्य शास्त्रका महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ ।

२. मदनविनोद, र. सं. १६९० का. सु. २, कोक, पंचसायक, अनंगरंग, शृङ्गारतिलकके आधारसे रचित ।

३. बुद्धिसागर, र. सं. १६९५ मि. सु. १३, पंचतंत्रका अनुवाद, शाहजहाँको भेंट किया । इस ग्रन्थके संबंधमें विशेष जाननेके लिए 'कविजानका सबसे बड़ा ग्रन्थ' शीर्षक लेख देखना चाहिए, जो कि हिन्दुस्तानी, भाग १६, अङ्क ४ में प्रकाशित है ।

४. ज्ञानदीप, पद्य ८६०।८ कथाएँ, सं. १६८६ वै. व. १२, १० दिनमें रचित । (जयचन्दजी संग्रह, श्री पूज्यजी संग्रह, बीकानेर) देखें ब्रजभारती, वर्ष १, अङ्क ११ ।

५. रसमंजरी, र. सं. १७०६ का, पत्र ४६, सरस्वती भण्डार, उदयपुर ।

६. अलफखाँकी पैडी, - प्रस्तुत ग्रन्थके परिशिष्टमें प्रकाशित हो रही है ।

७. कायम रासा - प्रस्तुत क्यामखां रासा ।

उपर्युक्त ग्रन्थोंमेंसे बीकानेरके संग्रहालयोंमें जान कविके निम्नांक ग्रन्थोंकी प्रतियाँ प्राप्त हैं । सम्पादनादिमें उपयोगी समझ सूचना दी जा रही है —

अनूप संस्कृत लाइब्रेरीमें

१. सतवंतीसत, र. सं. १६७८, सम्वत् १७२६ व १७२९ की लिखित दो प्रतियाँ प्राप्त हैं ।

२. लैला मजनू, सं. १६९१, (सम्वत् १७५४ को लिखित संग्रह प्रतिमें) ।

३. कथामोहनी, र. सं. १६९४ मि. सु. ४ (सं. १७२९।३० लि. संग्रह-प्रतिमें) ।

४. कविवल्लभ, र. सं. १७०४ पत्र, ८६ । महत्त्वपूर्ण काव्य ग्रन्थ, चित्र काव्य भी है ।

५. रसकोष, र. सं. १६७६, पत्र ३७ (सं. १६८४ फतहपुरमें लिखित प्रति)

६. मदनविनोद, र. सं. १६९० का. सु. २ पत्र २७ (सं. १७४३ में लि. प्रति)

हमारे अभयजैन ग्रन्थालयमें

१. बुद्धिसागर, सं. १६९५ पत्र १८६ (सं. १७१६ लिखित) ।

२. क्यामरासो, सं० १६९१ (प्रति सं. १७११में की गई) ।

३. अलफखांकी पैड़ी, पद्य १००, सं. १६८४ लगभग (सं. १७१६ लि.) ।

४. वैदक मति, सं. १६९५ ।

५. शिखासागर, सं. १६६५। (एक साथ सं. १७०१में मरोटमें लिखित)।

६. पदनामा।

७-८. सतवंतीसत व मदन विनोदकी अपूर्ण प्रतियाँ हैं।

आचार्य शाखा भण्डार

१. रसतरंगिणी, सं. १७११ माघ (सं. १७२४ लि. परिमाण ग्रन्थ १०५४ पद्य ३२७)।

श्रीपूज्य संग्रह

१. ज्ञानदीप, र. सं. १६८६।

जयचन्दजी संग्रह

१. ज्ञानदीप „ „

२. रसमंजरी (अपूर्ण प्रति)।

बड़ा भण्डार

१. पाहन परीक्षा।

प्रकाशित ग्रन्थ व ग्रन्थोंके विवरण

जान कविके प्रेमाख्यानोंमेंसे कामलता 'हिन्दुस्तानी' भाग १५, अङ्क ३ में प्रकाशित हो चुका है। हिन्दी साहित्य सम्मेलनसे प्रकाशित सूफी काव्य संग्रहमें १. कनकावती, २. कामलता ३. मधुकर मालती, ४. रतनावली ५. छीता इन पाँचोंको कथा एवं कथाओंके कुछ अंश प्रकाशित हुए हैं। अतः उनके संबन्धमें विशेष जाननेकी इच्छा वालोंको उक्त ग्रन्थ देख लेना चाहिए।

कविके अन्य ग्रन्थोंमेंसे १. सतवन्तीसत, २. मदनविनोद और ३. कविवल्लभके आदि अन्त, राजस्थानी, भाग ३, अंक ४ में प्रकाशित हैं। एवं १. कविवल्लभ, २. रसतरंगिनी, ३. रसकोष, ४. वैदकमति, ५. पाहनपरीक्षा, ६. कथामोहिनी, ७. बुद्धिसागर, ८. लैलामजनू, ९. ज्ञानदीप, १० कायमरासा, और ११. अलफखांकी पैड़ीका आदि अन्त, मेरे सम्पादित "राजस्थानमें हिन्दीके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी खोज" के द्वितीय भागमें प्रकाशित है। रसमन्जरीका आदि अन्त सह विवरण मोतीलालजी मेनारिया द्वारा सम्पादित इसी ग्रन्थ के प्रथम भागमें है।

क्यामखानी दीवानोंके समयमें रचित ग्रन्थ

दीवान अलिफखाँ व दौलतखांके समयमें रचित कई हिन्दी ग्रन्थ उपलब्ध हुए हैं, जिनमें इन दीवानोंके सम्बन्धमें निम्नोक्त उल्लेख प्राप्त हैं—

१. बीकानेरकी राजकीय अनूप संस्कृत लाइब्रेरीमें (सं. १७५४ लि. गुटकेमें) प्राप्त सं. १६५७ फतहपुरमें रचित रूपावती नामक अख्यानकके प्रारंभमें निम्नोक्त महत्त्वपूर्ण उल्लेख है –

जंबुद्वीप देश तहाँ बागर, नगर फतेपुर नगरां नागर।
आसि पासि तहाँ सोरठ-मारू, भाषा भल्ली भाव पुनि सारू।
राजा तहाँ अलफखाँ जानहु, चहवाव हठीका पहिचानहु।
ताकर कटक न आवै पारा, समद हिलोरनि स्यों अधिकारा।
तुरक तमंकि चढ़े केकाना, नगर नगर भू परे भगाना।
राजपूत असि चढ़ि करि कौपह, रविरथ थकै गिर्मानिकौं लोपह।

दोहा

ता घरि पूत सुलछनां, मनमोहन सुर ज्ञान।
चिरंजीव दिनपति उदो, दूलह दौलतिखांन।

चौपाई

अलफखांन चहुवानकी सरभरी, कौं करि सकै न देख्यो कर भरी।
इह विधि कीयो आप बखार, करम जोति स्यौं दिपै लिलार।
इन्द्रकी सभा सुनी हम कांनि, परतकि देखी इन्ह पहचांनि।
जास्यों रस सो नो निधि पावै, जाहिस्यों रिशि सो मूल गंवावै।
दीनदार दया असि कीनु, हजरति कह्यो सु शिर धरि लीनु।
ता ढिगि सेरखांन नित्य सोहे, दीनदार अर सभात विमोहे।
सारदुल अर संघ विराजै, गुंजै साल शिवाली भाजै।

दोहा

ताहि वजीर साहिबखां, औदखांन उकील।
एक ही एक समलंग, बैठे करह सवोल॥

(राजस्थानमें हिन्दीके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी खोज, पृ० ८३ से)

२. बीकानेर के स्व. श्री पूज्य जिन चारित्र सूरिके संग्रहमें कवि भिखजन रचित भारती नाममालाकी प्रति है। यह ग्रन्थ सं. १६८५ में फतहपुरमें रचा गया है। कविने दौलतखाँ व० उनके पुत्र ताहरखाँनका उल्लेख इन पद्योंमें किया है –

बागर मधि गुन आगरो, सुबस फतेहपुर गांव।
चक्रवर्ती चहुवाँन निरप, राज करत तिहाँ ठांव ॥१०॥

राज करत रससों भयौं, ज्यो जगतिपति इन्द्र ।
अलिफखांन नन्दन नवल, दौलतिखान नरिंद ॥११॥
दान क्रिपांन सुजान पन, सकल कला सम्पूर ।
रवि बिरंचि ऐसौ रच्यौ, बचन रचन सति सूर ॥१२॥
ता नन्दन बन्दन जगत, गुन छंदनह निधान ।
कवि पंछी छाया रहे, तरवर ताहरखान ॥१३॥
अजा सिंघ नित एकठां, धर्म रीति आनन्द ।
सकल लोक छाया रहे, बिनैराज हरिचन्द ॥१४॥
तहाँ सुभग शोभा सरस, बसै बरन छत्तीस ।
तहाँ भीखजनु जानिकै, इह मनि भई जगीस ॥१५॥

(उपर्युक्त ग्रन्थ के पृ० ६, पद्य १० से १५)

३. उपर्युक्त भीखजनकी लिखित कवि जान रचित रसकोष व आनन्द रचित कोकसारकी सं. १६४८-८५ में लिखित प्रति, अनूप संस्कृत लाइब्रेरीमें है । भीखजन रचित बावनी छप चुकी है ।

४. सुन्दर ग्रन्थावलीमें राघवदासजीके भक्तमालसे संत कवि सुन्दरदासजीके नवाबके चमत्कार दिखानेका उल्लेख वाला पद्य उद्धृत है । पद्यमें यद्यपि नवाबका नाम नहीं है पर सुन्दर-दासजीके समय पर विचार करने पर दौलतखां होना सम्भव है । पद्य इस प्रकार है —

"आयो है नवाब फतहपुरमें लग्यौ है पाई, अजमति देहु तुम गुसइयाँ रिझायौ है ।
पलौ जो दुलीचाको उठाइ करि देख्यौ तब, फतहपुर बसै नीचै प्रगट दिखायौ है ॥
येक नीचै सर येक नीचे लसकर बड, येक नीचे गैर बन देखि भय आयौ है ।
राघा धारे राखि लीये दबते नवाब केर, सुन्दर ग्यानीकौ कोई पार नहीं पायौ है ॥

इस घटना और चमत्कारोंके लिए कहते हैं कि नवाब स्वयं सुन्दरदासजीसे मिलनेको उनके स्थल पर कभी कभी आ जाते थे और कभी कभी सुन्दरदासजो नवाबके यहाँ चले जाते थे । नवाब उनके उपदेशोंसे लाभ उठाते थे । एक समय करामात दिखानेकी प्रार्थना की तो सुन्दरदासजीने नवाबसे कहा कि ईश्वर समर्थ है संसार सारा ही करामात हैं । नवाबने बहुत नम्रतासे आग्रह और हठ किया तो सुन्दरदासजीने उस गलीचेके किनारोंको, जिस पर दोनों बैठे थे, उठा कर देखनेको नवाबसे कहा । देखा तो एक कूंटके नीचे फतहपुर नगर बसता हुआ दिखाई दिया । दूसरेके नीचे फतहपुरका सर (जोहड़ा, तालाब) दिखाई दिया । तीसरेके नीचे नवाबकी फौज और रिसाले, तोपखाने आदि सारी सेना दिखाई दी और चौथेके नीचे फतहपुरका बड़ा भारी बीड़ (बीहड़, घासका मैदान) दिखाई दिया । यह अजमत (करामात) देख कर नवाबको मनमें यह भय हुआ कि कहीं यह फकीर मेरे आग्रहसे रुष्ट तो नहीं हो गये हैं और यह भी कि ये बड़े करामाती

साधु हैं इनसे डरते ही रहना चाहिए और इनकी सेवा और भक्ति करके इनको रिझाना और प्रसन्न रखना चाहिए।

पुरोहित हरनारायणजीने उपरोक्त घटनाके अतिरिक्त एक अन्य चमत्कारी घटनाका भी उल्लेख किया है। यथा –

"एक और समयकी बात है कि स्वामी सुन्दरदासजी फतहपुरके गढ़में नवाबके पास बैठे थे। बातों ही बातोंमें स्वामीजीने तुरन्त फुर्तीसे नवाबको सावधान किया कि तबेलेमेंसे सब घोड़े बाहर निकलवाओ और असबाबको फौरन तबेलेमेंसे बाहर निकाल कर गढ़से बाहर ले जाओ। हुक्म होते ही वहां देर क्या थी। सैकड़ों सईस और सवार और सिपाही लग गये। घोड़ों और सामानका बाहर निकालना था कि तबेला 'धरर' धर्राट करके गिर पड़ा। यों स्वामीजीने नवाबके घोड़ोंको रक्षा की। नवाबने स्वामीजीके कदम पकड़ लिए और बहुत भक्ति की। इस प्रकार कई चमत्कार अनेक समयोंमें दिखाये थे।"

सुन्दरदासजीसे नवाबोंका अच्छा सम्बन्ध तो था ही, इन्होंने फतहपुरमें रह कर बहुतसे ग्रन्थ इन नवाबोंके समयमें रचे।

क्यामखां रासाका ऐतिहासिक कथा - सार

रासाका प्रारंभ करते हुए कवि जान सर्व प्रथम सृष्टिकर्त्ता व मुहम्मदको स्मरण कर अपने पिता दीवान अलफखां और उसके वंशका सत्य इतिहास लिखता है। पहले पौराणिक ढंगसे सृष्टिकी उत्पत्ति और चौहान वंशका विवरण इस प्रकार लिखा है –

सृष्टिकर्त्ताने पहले मुहम्मदके नूरको रचा, और उससे स्वर्ग, फरिश्ते, चंद्र, तारे, देव, दानव, गिरि, समुद्रादि निर्माण किए। मनुष्योंकी उत्पत्तिमें प्रथम आदम हुए जिनसे आदमी हुए। हिंदु और मुसलमान दोनों एक ही पिंडसे उत्पन्न हैं, रक्त चर्मादिका कोई भेद नहीं, करनीसे अलग-अलग नाम हुए। पैगंबर आदम एक हजार वर्ष जीवित रहे, उनका पुत्र सीस ९१२ वर्ष, सीसका पुत्र उनूस ९६५ वर्ष, उसके पुत्र कीनानने ९६२ वर्षके जीवनकालमें सुन्दर आवास, कोट, गढ़ आदि बनवाए। कीनानका पुत्र महलाइल, उसका पुत्र यजद हुआ। यजदका पुत्र इदरीस पैगंबर हुआ जो ३६५ वर्ष पृथ्वी पर रहा। उसका पुत्र मसतूस हुआ जिसने धर्म छोड़ दिया। उसका नंदन नामक हुआ। फिर नूह नबी हुआ जो ६५० वर्ष जीवित रहा और जिसने संसारमें धर्मका पथ प्रकट किया। नूहके तीन पुत्र थे साम, हाम और यासफ। सामके अरबी, रूमी, ईराक, खुरासान इत्यादि हुए। चौहान, पठान आदि सामके वंशज हैं। हामके उजबक, हिंदी, बर्बरी, हबसी, कुबती हुए। और यासफके फिरंगी, रूसी, यूनानी, तुर्क और चीनी हुए।

सामका पुत्र इमन, उसका पुत्र उज और उसका पुत्र समूद हुआ। समूदका पुत्र राजा आद हुआ, उसका अनाद, फिर जुगाद, ब्रह्माद, मेर, मंदिर, कैलास, समुद्र, फैन, वासिग, राह, रावन,

धुंधुमार, मारीच, जमदग्नि, परशुराम, सूर, वच्छ, चाह और चाहुवान क्रमशः हुए। चक्रवर्ती चाहुवानकी आन चारों दिशाओंमें है, उनके साँभरका नमक सब लोग खाते हैं। उसी चौहानके कल्पवृक्ष रूपी वंशमेंकी निम्नोक्त शाखाएं हैं—क्यामखानी, देवड़े, सीसोदिये, भदौरिये, चित्तोरिये, वाघौर, मलखीची, निरबान, चाहिल, मोहिल, माहौ, दूगट, बलिसे, जौर, सोनगरे, गिलखौर, मांदलेचे, गुहिलौत, उमट, साचोरे, गोधे, राकसिये, हाले, झाले, दाहिमे, गूंदल, बालौत, हाडे, छोकर, घंघेरे, खैल, बारौरिये, धुकारने, चीबे, गोवलवाल, हुलतावर, डलोहोर आदि। पंडसूर, आसोप, पीपारे, गौतम, दागी, मरिल आदि सबका मूल चौहान है।

अब चौहान वंशके छत्रपति राजाओंका विवरण लिखते हैं—

दिल्लीमें मानिकदे चौहानने २ वर्ष ६ मास १७ दिन राज्य किया, रावलदेने ९ वर्ष ७ दिन, देवसिंहने ६ वर्ष ३ मास; स्योंदेवने १० वर्ष, १ मास २२ दिन; बलदेवने ५ वर्ष ११ दिन, पृथ्वीराजने २२ वर्ष ११ दिन तक दिल्लीका शासन किया। इसने बहुत युद्ध किए, काबुलसे दूब मँगा कर घोड़ोंको चराया। चौहान वंश सबमें सिरमौर है जिसमें बीसल, आना, हमीर जैसे वीर राजा हुए।

चहुवानके पुत्र मुनि, अरिमुनि, मनिक और जैपाल थे जिनमें एक योगी हुआ बाकी राजा हुए। मानिकके कुलमें सोमेश्वरका पुत्र पृथ्वीराज हुआ, आठ चौहान अरि मुनिके वंशज हैं। चहुवानके बाद मुनि हुआ उसने कूचौरेमें राज्य किया। फिर भोपालराय, कहकलंग, घंघराय हुआ, जिसने घांघू गाँव बसाया।

एक बार घंघराय शिकार खेलने गया। उसके हरिनका पीछा करते हुए बहुत दूर चले जाने पर सेवक लोग व्याकुल हो कर उसे खोजने लगे। इधर राजा मृगके पीछे लोहगिरि तक पहुँचा। यहां आते ही मृग अदृश्य हो गया। राजाने चिंतातुर हो कर सजल नेत्रोंसे एक वृक्षकी छायामें विश्राम लिया। निकट ही एक जल-कुंड था जिसमें स्नान करनेके लिए चार महान सुंदरी अप्सराएं आईं। वस्त्र उतार कर उन्होंने कुंडमें प्रवेश किया। राजाने कौतूहलसे उनके वस्त्रोंको उठाकर अपने कब्जेमें कर लिया। अप्सराओंके माँगने पर राजाने कहा चारोंमेंसे यदि एक मेरे साथ शादी करे तो वस्त्र दे सकता हूँ। अप्सराओंने बहुत कुछ समझाया, पर न मानने पर आखिर एक जो सबसे छोटी थी, उसे राजाको देनेका वचन दिया। तब राजाने वस्त्र दिये और वे सुसज्जित हो कर बाहर आईं। राजाने एक अप्सराके साथ विवाह किया अर्थात् हरिणका पीछा करते हुए हरिणाक्षीकी प्राप्ति की।

अप्सराके गर्भसे तीन पुत्र हुए—कन्ह, चंद और इंद। चंदने चंदवार, इंदने इंदौर बसाया। कन्हरदेव पिताका राज्याधिकारी हुआ। उसके चार पुत्र थे अमरा, अजरा, सिघरा और बजरा। अजरासे चाहिल, बछरासे मोहिल, अमराके वंशज चौहान हुए। अमराका पुत्र जेवर राज्याधिकारी हुआ। उसके गूगा, वैरसी, सेस और घरह, यह चार पुत्र थे। गूगाके नागिन, घरहके भोथर और

भरह और वैरसीके उदैराज, उसके जसराज फिर कैसोराइ और उसके पुत्र विजयराज और हरराज हुए। हरराजके केसो और नंद हुए, उसके पृथ्वीराज, फिर लालचंद, अजयचंद, गोपाल, जैतसी, पुनपाल क्रमशः हुए। जैतसीके मूलराज, असरथ, दौंका, साँगा, रातू, पातू, महियल पुत्र थे। पुण्यपालके रूप, फिर रावन और उसका पुत्र तिहुँपाल हुआ। उसका पुत्र मोटेराय हुआ, जो ददरेवेंमें राज्य करता था। मोटेरायके पुत्र करमचंदको बादशाहने तुर्क बना कर "क्यामखां" नाम रक्खा। मोटेरायके चार पुत्रोंके नाम – क्यामखां, जैनदी, सदरदी और जगमाल थे। इनमें चौथा, जगमाल[1] हिंदू रहा। दीवान क्यामखांके पाँच पुत्र ताजखां, महमदखां, कुतुबखां, इख्तियारखां और मोमनखां थे।

अब क्यामखां (करमचन्द) तुर्क कैसे हुआ इसका विवरण लिखते हैं —

एक बार कुंवर करमचंद शिकार खेलता हुआ थक कर एक वृक्षके नीचे विश्राम करने लगा और उसे नींद आ गई। दिल्लीपति बादशाह पेरोसाह (फिरोजशाह) हिसारसे शिकार खेलता हुआ इधर आ पहुँचा, कुँवरको सोते देख कर बड़ा हर्ष और कौतूहल हुआ, क्योंकि सब वृक्षोंकी छाया ढल जाने पर भी जिस वृक्षके नीचे करमचंद सोया था, छाया नहीं ढली थी। बादशाहने सैयद नासिरसे पूछा। उसने कहा कि कोई महापुरुष होगा, जगावें। हिंदू देख कर विस्मय हुआ और उसे तुर्क बनानेकी ठानी। बादशाहने उसे जगा कर परिचय पूछा और प्यारसे गले लगा कर बहुत सम्मानित किया। बादशाहने उसका नाम क्यामखां रक्खा और अपने साथ हिसार ले गया। उसे पढ़ानेके लिए सैयद नासिरको सौंप दिया।

इधर करमचन्दके लौटने पर ददरेमें हाहाकार मच गया। सैयदके द्वारा खबर पा कर मोटेराय हिसार गया। बादशाहने बड़ा सम्मान किया और कहा कि इसके तुर्क होनेकी चिन्ता न करो। मैं इसे अपने पुत्रकी तरह रक्खूंगा; इसे पाँच हजारी पदवी मिलेगी। इस प्रकार समझा-बुझा कर सिरोपाव दे कर मोटेरायको बिदा कर बादशाह दिल्ली गया।

क्यामखां सैयदके पास पढ़ने लगा। मीरांके १२ पुत्रोंके साथ खेल-कूदमें उसके दिन बीतते थे, भोलेपनसे आपसमें लड़ते-झगड़ते भी थे। एक बार हाँसीसे कुतब नूरदी, नूरजहान आए। क्यामखांको उदास देख कर उसे राजी किया और नींबू व गिंदोड़े दिए। उसने पहले नींबू और फिर गिंदोड़े लिए तो पीरने कहा कि इनके गोत्रमें पहले खट्टे हो कर फिर मीठे होनेकी रीति होगी। जब क्यामखांकी पढ़ाई हो चुकी, तो सैयदने कहा अब नमाज पढ़ो, सुन्नत करो, और दीनमें आओ। क्यामखांने कहा और तो ठीक है, शादी कैसे होगी, सैयदने कहा – बड़े-बड़े राजा महाराजाओंके डोले आवेंगे, दिल्लीपति बहलोल अपनी पुत्री देगा। क्यामखां मुसलमान हो गया, मीर उसे

---

१ फतहपुर परिचयमें जेउद्दीन व जबरुद्दीन नाम लिखा है। इनके वंशज भी क्यामखांनी कहलाते हैं। क्यामखांके मुसलमान होनेका समय इस ग्रन्थमें सं. १४४० लिखा है।

दिल्ली ले गया। मीरको बादशाहने सम्मान दे कर मनसब बढ़ाया। मीरांके साथ बादशाहका बहुत प्रेम था, जब वह बीमार हुआ तो बादशाह मिलने आया। मीरांने कहा कि मेरे पुत्रोंमें कोई सपूत नहीं है, इस क्यामखांको मनसब देना, यह तुम्हारी सेवा करेगा। बादशाह जब चला गया तो मीरांने अपने पुत्रोंको बुला कर क्यामखांकी आज्ञामें रहनेकी व क्यामखांको इन्हें प्यारसे रखनेकी शिक्षा दे कर परलोक गमन किया।

बादशाहने क्यामखांको मनसब, सरपाव, और बावनी दे कर उमराव किया। एक बार बादशाह क्यामखांको दिल्लीका फौजदार बना कर स्वयं ठटा विजय करनेके लिए गया। मुगलोंने बादशाहकी अनुपस्थितिका लाभ उठा कर दिल्ली पर चढ़ाई कर दी। चौहान क्यामखांने मुगलोंसे इस प्रकार युद्ध किया कि लड़े सो मरे और बचे सो भाग गए। लूटमें जो बहुत-सा माल-खजाना हाथ लगा, क्यामखांने उसे बादशाहके सुपुर्द कर दिया। बादशाहने उसे सरपाव दे कर सम्मानित किया और मनसब बढ़ा कर खानजहां नाम रक्खा। पेरोसाह (फिरोजशाह) बादशाहने और उसके पीछे उसके पुत्र महमूदने फिर नजीरखांने बादशाह हो कर क्यामखांका बहुत सम्मान किया। जब बादशाह नसीरखां बीमार हुआ तो उसके पास मलूखां नामक गुलाम (जिसे बादशाह पेरोसाहने पाल-पोस कर बड़ा किया था) प्रधान पद पा कर बादशाहके पास रहता था। लोगोंने यही निश्चय किया कि इसीने तख्तके लोभसे बादशाहको मारा है।

बादशाह नसीरखांके कोई पुत्र नहीं था, खुशामदी कामदारोंने मलूखांको बादशाह बन बैठनेकी राय दी। जब क्यामखांने सुना तो कहा कि जो नौकर है वह बादशाह कैसे होगा? गुलामको बादशाह बनानेमें शोभा नहीं है। प्रधानने गढ़की चाबियां ला कर दीवान क्यामखांके सम्मुख रक्खीं, और दिल्लीके तख्त पर बैठनेका आग्रह करते हुए कहा कि "आप ही दिल्लीका तख्त लीजिए, आपके पूर्वज दिल्लीपति थे, आपके लिए यह कुछ नई बात नहीं है!" क्यामखांने कहा–"मुझे दिल्लीपति बननेकी बिल्कुल इच्छा नहीं है, कौन भावी संततिके लिए आफत मोल ले?"

प्रधानने तब कहा–"यदि आप बादशाह नहीं होते तो फिर हम मलूखांको तख्त पर बिठाते हैं।" ऐसा कह कर मलूखांको बादशाह बना दिया। क्यासखांने वहांसे निकल कर अपने घरकी राह ली। जब मलूखांको यह ज्ञात हुआ तो वह ससैन्य क्यामखांको मारनेके लिए चल पड़ा। २० कोसके फासलेमें जब क्यामखांको मालूम हुआ तो वह मलूखांसे युद्ध करनेके लिए पीछे लौट आया और दोनोंमें परस्पर घमासान युद्ध हुआ। मलूखांके पैर उखड़ गए, वह दिल्लीमें आ कर छिप गया। क्यामखांने भागते हुएका पीछा किया परन्तु हाथी, घोड़े, द्रव्य आदि जो लूटमें हाथ लगे ले कर हिसारमें आ बिराजा। देश-देशसे पेशकश आने लगी। कमधज, कछवाहे, बैरिया, भट्टी, तँवर, गोरी, जाद्दू, तावनी, सरोवे, नारू, खोखर, चंदेले, हुसैन अकंलीम सा, साह महमद, ममरेजखां, इदरिस, मौजदी, मुगल, आदि सब सेवा करने आए। दूनपुर, रिणी, भटनेर, भादरा, गरानौ, कोठी,

बजवारा, कालपी, एटावा, उज्जैन, धार आदि सब क्यामखांके अधीन हो गए। मलूखां और क्यामखांका फिर कभी मिलाप न हुआ।

उस समय काबुलमें बादशाह तैमूर राज्य करता था जिसने आठों दिशाओंमें अपनी धाक जमा ली थी और जिसने रूम, ईराक और खुरासान आदि जीत लिए थे। हिन्दुस्तान लेनेके लिए वह चढ़ आया। मलूखां तैमूरसे जा भिड़ा, परन्तु तैमूर लंग जैसे जबरदस्त शक्तिशालीके सामने वह क्षण भर भी न ठहर सका। दिल्लीको तैमूरने खूब लूटा और तख्त पर आ बैठा। कुछ दिन रह कर खिदरखांको पचास हजार पठानोंके साथ दिल्ली छोड़ कर वह स्वयं काबुल लौट गया। जब मलूखांने तैमूरलंगके जानेकी बात सुनी तो उसने दलबल-सहित आ कर दिल्लीको घेर लिया। खिदरखांके साथ युद्धमें मलूखां मारा गया और तैमूरके दलकी जीत हुई।

मलूखांकी ओरसे निश्चिन्त होकर खिदरखांने सब भोमियों, जमीनदारोंको वशमें कर लिया और क्यामखां चौहान पर फरमान दे कर मौजदीनको भेजा। मौजदीन लाहौरका शक्तिशाली फौजदार था। उसने क्यामखांको फरमान दे कर बादशाह खिदरखांकी सेवा करनेके लिए बहुत समझाया, किन्तु वह अपने निश्चय पर अटल रहा और युद्ध करनेके लिए तैयार हो गया। दोनों ओरसे घमासान युद्ध हुआ। अगवान मौजदीन और क्यामखां चौहान भिड़ पड़े। मौजदीनकी फेंकी हुई बरछीसे बच कर क्यामखांने बाणके द्वारा उसका काम तमाम कर दिया। मौजदीनके मर जाने पर खिदरखांकी सेना तितर-बितर हो गई।

अपनी हारसे खिदरखां बहुत रुष्ट हुआ। क्यामखांने भी दिल्लीका शासक बदल डालनेका निश्चय किया और अपने पूर्व-परिचित बोखरीवाल लकब बोल अन्य खिदरखांको पत्र लिखा कि—"मैं तुम्हें दिल्लीका राज्य देता हूं, यदि इच्छा हो तो आओ।" उसने पत्र पाते ही तुरन्त दलबल-सहित तैयार हो कर क्यामखांको पत्रोत्तरमें अपनी तैयारीका समाचार दे कर उसे भी तैयार होनेको लिखा। क्यामखां सेना सहित मुलतानमें खिदरखांसे जा मिला और पहले नागौरमें राठौड़ोंसे युद्ध कर फिर दिल्ली लेनेकी ठानी। नागौरमें उस समय राव चूंडा था; उसकी मृत्यु हुई और राठौर सेनाकी पराजय हुई।

क्यामखां और खिदरखां दोनों नागौरको वशमें कर पठान खिदरखांको जीतनेके लिए दिल्ली चले। पठान भी अपनी सेना ले कर लड़ने आया परन्तु क्यामखांके साथ युद्ध करता हुआ हार कर भाग गया। क्यामखांने अपने मित्र खिदरखांको दिल्लीका सुलतान बनाया और दोनों सुख-पूर्वक रहने लगे। खिदरखांने सोचा कि क्यामखां सबल है; इसकी इच्छानुकूल शासन होगा; अतः इसे मार डालना ही श्रेष्ठ है। इन कुत्सित विचारोंसे उसके उपकारको भूल कर एक दिन बादशाह खिदरखांने क्यामखांको धक्का दे कर नदीमें गिरा दिया। क्यामखां नदीमेंसे निकल आया और खिदरखांकी बदनीतोको जानते हुए भी बादशाहसे लड़ना धर्म-विरुद्ध समझ कर संतोष किया। अपने जीवनमें क्यामखांने बड़े-बड़े युद्ध किए थे। ९५ वर्षकी उम्रमें उसके शरीरका अन्त हुआ।

क्यामखांके पाँच पुत्र थे ताजखां, अहमदखां, कुतबखां, इख्तयारखां, और मौनखां, ये पाँचों बड़े वीर और मनस्वी थे। खिदरखांके बार-बार बुलाने पर भी ये सलाम करने नहीं गए। हिसार में सुखसे बैठे रहे। दीवान ताजखांके छः पुत्र थे – फतहखां, रुका, फखरदी, मोजन, इकलीमखां, और पहाड़ा। कृतघ्नी बादशाह खिदरखांके निःसंतान मरने पर मुबारक, महमदफरीद, अलावदी और मुबारक बादशाहका पुत्र अमानतखां क्रमशः बादशाह हुए। फिर बहलोल लोदीने अपने भुजबलसे दिल्लीका तख्त प्राप्त किया। उस समय ढोसी पर अखनका राज्य था।

एक बार बादशाह बहलोलने ईराकसे बहुतसे घोड़े मँगाए। मार्गमें अखनने उसमेंसे नौ चुन कर रख लिए। बादशाहने कुपित हो कर घोड़े वापिस न देने पर चढ़ाई करनेकी धमकी दी। उसने उत्तरमें लिखा कि मेरे लाख घोड़े हैं, परन्तु तुमसे युद्ध करनेकी इच्छासे ही मैंने घोड़े रक्खे हैं। तुम निस्संकोच आ जाओ मैं ढोसोमें पर्वतकी तरह स्थिर बैठा हूँ। बादशाह इस उत्तरसे रुष्ट तो अवश्य हुआ परन्तु वह उसका कुछ भी न बिगाड़ सका। अखनने मेवातियोंको बहुत तंग किया, पहाड़के पास उसने अखन-कोट बसाया। आस-पासके सब भोमिया*उसे दंड देते थे। आंबेर वाले वार्षिक १२ लाख और अमरसर वाले ८ लाख भरते थे। तुबखां जो क्यामखांका चौथा पुत्र था, बारुवै जा बसा और पाँचवां[1] पुत्र मौनखां बगरमें बसने लगा। आस-पासके भोमियोंसे वह कर उगाहता था, और कछवाहोंमें उस चौहानकी धाक जमी हुई थी।

क्यामखांके दोनों बड़े पुत्र हिसारमें प्रीति-पूर्वक रहते थे। नागौरके फिरोजखांके बुलाने पर दोनों भ्राता वहां गए। खांने बड़े आदरके साथ इन्हें रखा और कहा कि मैं भी दिल्लीपतिको सलाम नहीं करता। अच्छा हुआ जो एकसे तीन हुए। एक बार चित्तोड़के स्वामी राणा मोकल पर आक्रमण करनेका विचार कर वे दलबल-सहित चले; राणा भी लड़नेके लिए मोरचे पर आ पहुँचा। राणा मोकलसे और फिरोजखांमें परस्पर युद्ध होने लगा। ताजखां और महमदखां खड़े-खड़े देखते रहे। राणा मोकलने खांके पैर उखाड़ दिए। वह नागौरकी ओर मुंह करके भागा। राणाने चार कोस तक उसका पीछा किया और नेजा-निसान छीन कर चित्तोड़की राह ली। दोनों चौहान भ्राता ताजखां, मुहम्मदखां अवसर देख कर राणासे जा भिड़े, और युद्धमें राणाको परास्त कर नागौरके नेजे निसान वापिस ले लिए। उन्होंने भागते हुए राणाके हाथी-घोड़े द्रव्यादि लूट लिए और नागौर ले आए।

जिन नेजे-निसानोंको हार कर फिरोजखां दे आया था, उन्हें चौहान-बंधुओंके वापस लाने पर खां उन्हें लज्जाके मारे मुँह न दिखा सका। स्वामीके भागने पर भी सेवक लड़े अर्थात् जब

---

* जमीनदार।

१. फतहपुर परिचयमें ७ स्त्रियोंसे ६ पुत्र होनेका बतलाते हुए मुहम्मदखां नाम अधिक दिया है। क्यामखांके स्वर्गवासका समय इस ग्रन्थमें सं० १४७५ लिखा है। मुहम्मदखांका नाम आगे रासामें भी आता है।

उखड़ जाने पर भी वृक्ष स्थिर रहा, यह एक विचित्र बात हुई। फिरोजखांने लज्जासे ऐसा रुख बदला कि वह इनसे हँस-बोल कर बात भी न करता था। ताजखां और मुहम्मदखांने अपने घर जानेका इरादा किया और दमामे बजाए। खांने रुष्ट हो कर सेवकोंको आज्ञा दी कि क्यामखानी चौहान बंधुओंको मत जाने दो। स्वयं दलबल-सहित युद्धके लिए तैयार हुआ। दोनों भ्राता बड़ी वीरता-पूर्वक लड़े। ताजखां युद्ध करता हुआ घायल हो कर गिर पड़ा। महमदखांको युद्धसे ही कब फुरसत थी कि भाईकी खबर लेते। राठौड़ लोग घायलोंको उठाते हुए आए। उन्होंने ताजखांको उठा कर देख-भाल की और घाव अच्छा होने पर उसे हिसार भेज दिया। ताजखांने युद्ध भी किया और जीवित भी रह गया। इससे इसका बड़ा सुयश हुआ। फिरोजखां तो इससे बड़ा भय खाता था। इसने खेतड़ी, खरकश, चवौहाना, पाटनको जीता। पाटन और रेबासे मिल कर उसने आंबेरको वशमें किया। कछवाहे, निरबान, तंवर और पंवार आदिसे पेशकश ली। ताजखां हिसारमें और महमदखां हाँसीमें रहा। ताजखांकी[1] मृत्युके बाद बड़ा पुत्र फतहखां हिसारमें पिताका उत्तराधिकारी हुआ।

फतहखांके दस पुत्र थे —जलालखां; हैबतसाह, महमद साह, असदखां, दरिया साह, साह मनसूर, सेख सलह; बला, बंखामसूर और हेंसम।

फतहखां बड़ा प्रबल और वीर था। उसने एक ही मुहूर्त्तमें छः कोटकी नींव डाली। सं० १५०८ चैत्र शुक्ला ५ के दिन अपने नामसे उसने फतहपुर शहर बसाया[2]। उस दिन हिजरी सन् ८५७ सफ़र महीनेकी २० तारीख थी। आस-पासके भोमिये पल्हू, सहेवा भादरा, भारंग, बाइले आदिके स्वामी जुहार करने आए। जब कोट तैयार हो रहा था वह रनाउमें रहा और कोट तैयार होने पर फतहपुर आ गया। एक बार बादशाह बहलोल लोदी रणथंभोर लेनेके लिए चढ़ कर आ रहा था। जब फतहखांने सुना तो वह भी सदल-बल बादशाहसे जा मिला। बादशाहने उसका बड़ा सम्मान किया और फतहखांके आगमनको अपनी फतहका चिन्ह समझा। उधर रणथंभौरकी सहायताके लिए मांडूका सुलतान हिंसामदी आ पहुँचा। परन्तु बादशाहसे लड़नेमें असमर्थ हो कर फाटक बंद कर बैठा रहा। फतहखांने मांडूके सुलतानके साथ घमासान युद्ध किया और उसका सर काट कर बादशाहके पास भेजा। फतहखांका बड़ा नाम हुआ और बादशाहने उसे मनसब दे कर सम्मानित किया। बादशाहसे जय-पत्र ले कर फतहखां स्वदेश लौटा और सुख-पूर्वक रहने लगा।

नारनौलसे अखनने कहलाया कि मेवाती लोग मिल कर बग़ावत करने पर उद्यत हैं। तुम स्वयं आओ, या सेना भेजो। फतहखांने अपनी सेना भेजी जिसने मेवातियोंको ढोसीकी

---

१. फतहपुर परिचयानुसार सं० १४७७ से १५०३ तक २६ वर्ष राज्य किया।

२. फतहपुर परिचयमें मुहम्मदखांके झूझा जाटकी सलाहसे बसानेका उल्लेख है पर मूलतः यह शहर १४वीं सदीके पहलेका बसा है।

तरफ भगा दिया। इधर इख्तारखांने सामनेसे आक्रमण किया। दोनों ओरसे मार पड़नेसे मेवाती लोग निर्बल हो कर हार गए। विजयी फतहखान लौट कर फतहेपुर आया।

फतहखांने अपनी वीरतासे बड़ी प्रसिद्धि पाई। कांधल और रिणमल, राणा साँगा, अजा साँखला आदिके साथ रणक्षेत्रमें उसकी सेनाने शत्रु-दलका संहार कर विजय प्राप्तकी थी। फतहखांके यहां वीर बहुगुन तो ऐसा था कि सिर कट जाने पर भी युद्ध करता रहा। (इसकी कब्र व कुआ अब तक मौजूद है)।

मुसकीखां नामक किर्रानी पठान फतहखां चौहानसे युद्ध करनेके लिए आया और सरसेके पास दोनोंकी मुठभेड़ हुई। फतहखांने मुसकीखां किर्रानीको मार कर विजय प्राप्त की। फिर आंबेर पर चढ़ाई करके वहांके भोमियोंको भगा कर आंबेरको लूट लिया। भिवानीको घेर कर जाटू जावलोंसे युद्ध किया और उन्हें हराया। भिवानीको लूट कर बहुतोंको बंदी बना कर लाया।

राव जोधाने सोचा कि यदि फतहखांसे संबन्ध हो जाय तो उधरका खटका मिट जाय, इस लिए उसने नारियल भेजा। काँधलने बहुगुनको मारा था, इस वैरसे फतहखांने नारियल लेना अस्वीकार कर दिया। महमदखांका बेटा समसखां उस समय झूंझणूमें था 'उसके पास भी नारियल भेजा गया' उसने कहा, वहां ब्याहने कौन जाय? यहीं डोला भेज दो। जोधाने डोला भेजा। मीरांजीने जो भविष्यवाणी की थी वह सफल हुई।

बादशाह बहलोलखां लोदीने फतहखांको बुला कर अपने पास रक्खा। परस्पर बड़ी प्रीति थी। एक दिन बादशाहने कहा कि अपने-आपसमें अदल-बदलका विवाह संबंध करो जिससे पारस्परिक प्रीति बढ़े। फतहखांने कहा अब मेरे तो कोई पुत्री अविवाहित नहीं है। बादशाहने इसे बुरा माना। तब फतहखां रुष्ट हो कर फतहपुर आ गया और फिर दिल्ली नहीं गया। बादशाहने समसखां चौहानके पास अदल-बदल संबंधके लिए कहलाया। उसने प्रसन्न हो कर शाहजादी अपने पुत्रको ब्याही और अपनी बहिन बादशाहको दी। फतहखां आजीवन दिल्लीपतिको सलाम करने न गया। फतहखांकी[1] मृत्युके बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र जलालखां फतहपुरका स्वामी हुआ।

दीवान जलालखांके दस पुत्र थे — दौलतखां, अहमदखां, नूरखां, फरीदखां, निजामखने पहाड़खां, दाऊदखां, लाडखां, अखन, और महमदशाह।

जलालखांने[2] पिताके बनाए हुए कोटको बढ़ाया और जबरदस्त पोल (दरवाजा) बनाई। जलालखां बड़ा शूर-वीर था। वह भी पिताकी तरह दिल्लीपतिके कदमोंमें सलाम करने नहीं जाता था। नागौरके खानका माल लूट-लूटकर जलालखां उसे तंग करने लगा। उसने रुष्ट हो कर जलालखांके

१. फतहपुर परिचयमें इनका राज्य सं० १५०५ से १३५१ लिखा है। मृत्यु १५३१में हुई थी।
२. फतहपुर परिचयमें इनका राज्य सं० १५३१ से १५४६ तक लिखा है।

ऊपर आक्रमण करनेके लिये अगणित सैन्य एकत्र किया और बीड़ा फेरा। मुगल चौपानखांने बीड़ा उठाया और जगीर कटराथलके पास दलबल-साहित आ पहुँचा। जलालखां भी तैयार हो कर युद्धमें उतरा। उसने शत्रुके छक्के छुड़ा दिए। चौपानखांको पकड़ कर उसके नितंब पर दाग लगाया और उसके हाथी, घोड़े, इत्यादि लूट कर छोड़ दिया। फिर जलालखांने छोपौरी पर चढ़ाई की और विजय प्राप्त कर आंबेरको जा घेरा। वहांके भौमिए बड़ी वीरतासे लड़े। मिल कर उन्होंने जलालखांके हाथीको आ घेरा। साथी लोग सब लूटमें लगे थे, तो भी अकेले दीवान जलालखांने बाणोंसे शत्रुदलको भगा दिया।

चौहान समसखांके मर जाने पर उसका पुत्र और बादशाह बहलोल लोदीका जमाई, फतहखां उत्तराधिकारी हुआ। अपने अभिमानमें मस्त हो कर अपने भाई मुबारकशाह और विमाताको बँटवारा न दे कर झूंझणूकी समस्त आय वह स्वयं खाने लगा। मुबारकसाहने अपने नाना राव जोधाके पास जा कर शिकायत की। राव जोधाने कहा कि तुम्हारे मामा बीका और बीदा तुम्हारे निकट हैं, उनसे कहो। मुबारकशाह मामाके पास आया, किंतु वहांसे निराश हो कर लौटा, और फतहपुरमें जलालखांके पास आया। मुबारकशाहको उसने आश्वासन देते हुए कहा कि मुझे बादशाहका कोई खौफ नहीं, मेरे पिता भी उससे नहीं डरे तो डर कर क्यों कलंक लूं? जलालखांने ससैन्य झूंझणू पर चढ़ाई की। फतहखांकी सेना भाग गई, तब उसने मुबारकशाहको झूंझणूका राज्य दिया। फतहखां मर गया। महमदखांको राज्य न मिला। मुबारकशाह ही राज्यका मालिक रहा।

जलालखां लोहागर जा कर रहने लगा। वहां पहाड़की ओट ग्रहण कर नागौरी खानको तंग किया करता था। इधर फतहपुरको सूना सुन कर उसके लिए बीदाका मन ललचाया और वह सदलबल नरहरमें दिलावरखांसे जा मिला। दस हजार रुपया और एक बेटी देनेकी बात कर पठानको भी ससैन्य फतहपुर ले आया। लोहागरमें जलालखांको खबर मिली तो उसने तुरंत अपने पुत्र दौलतखांको भेजा। उसने फतहपुरके गढ़में प्रवेश कर अपनी जय-पताका फहराई। बीदा और दिलावरखां व्याकुल हो कर लौट गए।

जलालखांके मरने पर उसका पुत्र दौलतखां उत्तराधिकारी हुआ। उसके तीन पुत्र थे — नाहरखां, होबनखां, और वाजिदखां। दीवान दौलतखां चौहान महान् तेजस्वी और जबरदस्त वीर था, उसकी ऐसी धाक जमी हुई थी कि शत्रु लोग भयसे मुँह छिपाते फिरते थे। वह अनीतिके लाख-करोड़को भी कौड़ीके समान गिनता था। किसीको अपनी अंगुल-मात्र भूमि भी नहीं देता और न किसीकी लेता था। सात सुलतान भी यदि उसके प्रतिस्पर्द्धी हों तो भी वह संग्राममें पीठ नहीं दिखाता था। उसमें वचनसिद्धिकी भी विशेषता थी।

राव बीका ढोसीसे असफल लौटा था, अतः लूणकरनने सदलबल तैयार हो कर पाटौधैमें डेरा किया, और पत्र दे कर प्रधानको दौलतखांके पास भेजा। पत्रमें लिखा था कि — दौलतखां, यदि

भला चाहते हो तो शीघ्र हमसे आ कर मिलो, या सहायता भेजो। दौलतखांने क्रुद्ध हो कर चिट्ठी पर पेशाब किया और दूतके अंचलमें रेती बाँध कर कहा कि तुम्हारा स्वामी यदि चढ़ कर न आया तो उसके सिर पर धूल है। प्रधानोंको धक्के दे कर उसने निकाल दिया। प्रधानोंके जाने पर लोगोंको चिंतातुर देख कर दौलतखांने भविष्यवाणी की कि लूणकरन जीवित नहीं बचेगा।

प्रधान अपमानित हो कर राव लूणकरनके पास गए। वृत्तांत सुन कर उसने क्रुद्ध हो कर कहा कि पहले ढोसी जीत कर फिर आते समय दौलतखांकी खबर लेंगे। राव अपार सैन्य शक्तिके साथ ढोसी गए परंतु वहां तुरकमानकी मददसे पठान लोग खूब लड़े, और लूणकरनको मार कर उसके साथियोंको लूट लिया। दौलतखांका वचन सत्य हुआ।

एक बार काबुलसे दिल्ली देखनेके लिए बाबर कलंदरके वेषमें बाघको साथ ले कर चला। मार्गमें फतहपुर ठहर कर दीवान दौलतखांसे मिल कर बाघके लिए एक गाय मँगा देनेको कहा। दीवानने तुरंत गाय मँगाई और कहा कि मैं देखता हूँ कि बाघ कैसे गायको मारता है? जब बाघ गायके समक्ष आया तो दौलतखांने सिंहनाद कर बाघको फटकारा। वह उस गायको खानेको असमर्थ हो कर स्तंभितकी भाँति खड़ा रहा। सत्य सुभट पुरुषोंके वचनका सिंह भी उल्लंघन नहीं कर सकते। गजेंद्रका मद भी उनके सामने सूख जाता है। फिर बाबरने अलवरमें मेवाती हसनखांके कटकको और दिल्लीपति बादशाह सिकंदरशाहको विस्मित हो कर देखा।

जब बाबर हिंदुस्तान देख कर काबुल लौटा तो लोगोंने इधरकी बातें पूछीं। उसने कहा— सारे हिंदमें तीन आदमी देखे — सिकंदरशाह, हसनखां और दौलतखां। इस प्रकार बाबरने दीवान दौलतखांकी बड़ी प्रशंसा की।

एक बार दौलतखांने सुना कि गौर निरवाण व नागौरके गावोंको लूट कर जा रहे हैं उसने ससैन्य जा कर उन्हें घेर लिया और उन्हें हरा कर लूटका सारा माल छीन लिया। एक दिन दौलतखां शिकार खेलने चला। बाज, कुही, बहरी आदि बहुतसे उसके साथ थे। उसने बहरीको कुंजके लिए छोड़ा। वह आकाशमें ऊँची उड़ गई, फिर अदृश्य हो गई। दीवानजी उसको छोड़ कर चले आए। बहरी उड़ती-उड़ती हिसार जा पहुँची, वहां मीरने पकड़ कर सिकंदरको सौंपा। दौलतखां यह ज्ञात कर ससैन्य हिसार पहुँचा। हिसारका सिकदार मुहब्बतखां साराखानी पठान सेना-सहित लड़नेको आया। नासौमें दोनों सेनाएं मिलीं। दूरसे दीवान दौलतखांका मुंह उतर गया। मुहब्बतखां भय-भीत हो भागा। दौलतखांने विजयके नगाड़े बजाए।

दौलतखां अपने सिद्धांतोंका पक्का था। स्वगोत्रीय पर घाव न करना, परमात्माको एक मानना, न्याय-मार्ग पर निश्चल रहना चाहे लाखों विरोधी हों, न्यायके समय निष्पक्ष रहना, आदि उसके विचार मँजे हुए थे। बादशाह बहलोल लोदीके मरने पर सिकंदर उत्तराधिकारी हुआ, पर दौलतखां उसके दरबारमें भी न गया।

मुबारक साहके बड़े पुत्र कमालखांको झूंझणूका राज्य मिला और दूसरे पुत्र साहबखांको नौहाका। वह जब तक जिया भाईके अधीन रहा। कमालखांका पुत्र भीखनखां झूंझणूका स्वामी

हुआ और साहबखांका पुत्र मुहब्बतखां उसे प्रतिदिन सलाम करता था। एक बार परस्पर चित्त-कालुष्य हो जानेसे मुहब्बतखां नौहा छोड़ कर दौलतखांके पास फतहपुर चला गया। उसने दौलतखांके पौत्र फदनखांको पुत्री दी और उसकी सेवा करने लगा। मुहब्बतखांके निवेदन करने पर दौलतखांने कहा—नौहा तुम्हारा है, तुम वहां जाकर रहो। तुम्हें कौन निकालने वाला है ? यदि भीखनखां कुछ गड़बड़ करे तो मुझे खबर देना।

मुहब्बतखां नौहा जा कर रहने लगा। भीखनखां तत्काल सेना ले कर चढ़ आया। मुहब्बतखांके फ़तहपुर कहलाने पर दौलतखांका बड़ा पुत्र नाहरखां भी सहायतार्थ आ पहुँचा। आभूसरके ताल पर घमासान युद्ध होने लगा! नाहरखांको देखते ही भीखनखां युद्ध क्षेत्र छोड़ कर भाग गया। नाहरखां जीत कर घर आया। पिताने प्यारसे गले लगा लिया। दौलतखांके मरने पर उसका पुत्र नाहरखां फ़तहपुरकी राजगद्दी पर बैठा।

दीवान नाहरखांके[1] तीन पुत्र थे — फदनखां,[2] बहादुरखां, और दिलावरखां। नाहरखां बड़ा वीर और विलास प्रिय भी था। घरमें धन बहुत था, उसने बहुत-सी पातरियां रख ली और नाच-गानका अखाड़ा रात-दिन जमा रहता था। आस-पासके भोमिए जमीदार भय खाते थे। बीकानेरके राव लूणकरनके मरने पर पूर्व निश्चयानुसार वजीरोंने प्रेम-संबंध स्थापित करनेके लिए राज-कन्या दी। दिल्लीपति सिकंदरके मरने पर इब्राहीम बादशाह हुआ। उसे मार कर बाबर और फिर उसका पुत्र हुमायूं बादशाह हुआ। नाहरखांके समय शेरशाह दिल्लीका बादशाह था। वह नाहर-खांको बहुत मानता था और उसे मामा कह कर पुकारता था। उसने हुक्म दिया कि फ़तहपुरकी पेशकश घर बैठे मज़ेसे खाओ।

नाहरखांने सं० १५९३ भाद्र सुदी ८ सोमवारके दिन फ़तहपुरमें एक सुंदर अद्वितीय महल बनवाया।

एक बार चित्तोड़के राणाने नागौरके ख़ान पर चढ़ाईकी। पूर्वकी प्रीतिके कारण नागौरीके आमंत्रणसे नाहरखां सहायतार्थ चला। राठौड़ व कछवाहे उसे दिल्लीपतिसे भी अधिक मानते थे राव गांगा, जैतसी, सूजा और पृथ्वीराज आदि सब ससैन्य आ मिले। जब नाहरखांने सुना कि नागौरसे १२ कोस पर राणा ठहरा हुआ है और खान नागौरसे निकल कर लड़नेको नहीं जाता है, तो वह नागौरमें न जा कर तीन कोस और आगे गया। नागौरीखांके बुलाने पर नाहरखांने कहा, "राणा निकट ठहरा हुआ है। तुम कोटकी ओटमें क्यों छिपे हो ? मैं अब आगे निकल आया, लौट नहीं सकता। तुम्हीं आ कर मिलो।" नागौरीखां भी नाहरखांकी धाक सुन कर राणा उलटे पैर चला। नाहरखां भी उसी मार्गसे सबके साथ पीछे-पीछे गया। राणाके पहाड़ोंमें प्रवेश करने पर

---

१. राज्यकाल सं० १५४६ से १५७०

२. राज्यकाल सं० १५७० से १६१२

सेना लौट चली और उसने सारे गाँवोंको लूट लिया। जगमाल पँवारने कहलाया कि राणाने मुझे अजमेर दिया था; उसके सब गाँव तुम लोगोंने लूट लिए। यदि सच्चे राजपूत हो तो प्रहर दो प्रहरके लिए ठहर जाओ। मैं आता हूं। यह सुन कर बीकानेर, सूजा अमरसर, और आंबेर वाले आंबेर चले गए। किन्तु नाहरखांने कहा—तुम बेधड़क आओ। यह कह कर नाहरखां मकराणेके तालमें प्रतीक्षा करने लगा। अजमेरका फ़ौजदार जगमाल पंवार राणाकी सेना ले कर आया। दोनोंमें परस्पर घमासान युद्ध होने लगा। अन्तमें पँवार भागा और चौहान नाहरखांकी जीत हुई।

नाहरखांके मरने पर उसका पुत्र फदनखां फ़तहपुरका स्वामी हुआ उसके तीन पुत्र थे–ताजखां, पिरोजखां, दरियाखां। दिल्लीमें जब पठान सलेमसाह बादशाह हुआ तो उसने फदनखांका बड़ा सत्कार किया। मुहब्बतखांका पुत्र खिदरखां फदनखांके पास खड़ा था। बादशाहने फदनखांकी बड़ी प्रशंसा की और कहा कि सब (क्यामखानी) भाइयोंमें सिरमौर है। हुमायूंने भी बादशाह हो कर फदनखांको अच्छा आदर-मान दिया।

दिल्लीपति अकबर भी फदनखांसे प्रेम रखता था। बीरबलके पूछने पर बादशाहने कहा कि और तो सब मेरी कृपासे बने हैं, इन्हें करतारने बड़ा बनाया है। राजपूतोंकी जातिमें ३॥ कुल हैं–प्रथम चौहान, द्वितीय तँवर और तीसरे पँवार, आधेमें शेष सब हैं। वाजित्रोंमें जैसे निसान बड़ा है वैसे ही गोत्रोंमें चौहान बड़ा है। फदनखांने बादशाह अकबरको अपनी बेटी दी; इससे पारस्परिक प्रेममें विशेष वृद्धि हुई। बादशाहको भोमियोंका (हिन्दू जमींदारोंका) विश्वास नहीं था। उसने कहा हिन्दू बदलते देर नहीं लगाते, अतः तुम इनकी जमानत दो तो मैं मनसब दूँ। फदनखांने सबकी जमानत दो और बादशाहने उन्हें मनसबदार कर दिया। फदनखांने राय सालको दरबारी बना कर मनसब दिलाया।

बीदावत लोग इधरके गाँवोंमें आ कर चोरी लूट कर जाते थे। यह दीवान फदनखांको बुरा लगा और उसने सेनाके साथ बीदावतोंके प्रदेशमें प्रवेश किया और छापर द्रोणपुरमें बीदावतोंको हराकर चोरीको शपथ दिला दो। इसके बाद फदनखांने छापौरो और पूंगपर हमला किया; निरबानोंको हरा कर उनके गाँवोंको जला दिया। उसने बहादुरखांकी सहायता करके झुंझणू दिलाया।

फदनखांके पश्चात् उसका बड़ा पुत्र ताजखां[1] फ़तहपुरका स्वामी हुआ। उसके ८ पुत्र थे–महमदखां,[2] महमूदखां, शेरखां जमालखां जलालखां, मुजफ़्फरखां, हैबतखां और हबीबखां। ताजखां रूपमें अत्यंत सुंदर था, देश-विदेशमें उसका सौंदर्य प्रसिद्ध था। उजियारै (?) के दौलतखां पठानने प्रशंसा सुन कर दीवान ताजखांका चित्र बनवा कर मंगाया और उसे देख कर अत्यन्त प्रसन्न हुआ।

---

१. राज्यकाल सं० १६०२ से १६०९।
२. राज्यकाल सं० १६०९ से १६२७।

ताजखां अलवरसे सदलबल चढ़ा। उसने सारां और खरकरीको नष्ट किया। लखानगढ़को लूटा। मलिक ताजके यहां लूटमार कर रेवाड़ीका थाना नष्ट कर दिया। दीवान ताजखांके बड़े पुत्र मुहम्मदखांके तीन पुत्र थे – अलफखां, इब्राहीमखां और सरमस्तखां। मुहम्मदखांने क्योर और बैराटको विजय किया। मांडनके पुत्र कूंपावत राठौर कुंभकरनको उसने रणक्षेत्रसे भगाया।

ताजखांकी विद्यमानतामें ही मुहम्मदखांकी मृत्यु हो गई। पुत्र वियोगसे पिताको अत्यंत दुःख हुआ परंतु रुदन करनेसे आंसूके सिवा क्या हाथ आ सकता था, अतः अपने पौत्र अलफखांके मस्तक पर हाथ रक्खा और उसे शाही दरबारमें ले गया। बादशाह जलालुद्दीनसे (अकबरसे) ताजखांने निवेदन किया कि मेरे घरमें यह बड़ा है, इसे आप सम्मान दें। बादशाहने अलफखांको बड़ा प्यार किया। जब तक ताजखां जीवित रहे, अलफखांको क्षण भरके लिए भी अपनेसे अलग नहीं किया। उसके मरने पर अलफखां उत्तराधिकारी हुआ। बादशाहने उसे टीका दे कर फ़तहपुरका स्वामी बनाया और उसे हाथी, घोड़ा सिरोपाव दिए। अलफखांने शाही फरमान ले कर फ़तहपुर भेजा; कछवाहे गोपालके पुत्र स्यामदासके न मानने पर सिकदार शेरखांने उसे निकाल दिया। दीवान अलफखांको फ़तहपुर मिला और वह नबाब कहलाने लगा। नबाब अलफखांके पांच पुत्र थे – दौलतखां,[1] न्यामतखां, सरीफखां, जरीफ और फकीरखां।

झूंझणूके स्वामी बहादुरखांके मरने पर उसका बड़ा पुत्र समसखां उत्तराधिकारी हुआ, किंतु दूसरे भाई उसे नहीं मानते थे और उसे सतत दुःख दिया करते थे। अलफखां उसे बादशाहके पास ले गया और बादशाहके द्वारा मनसबका सम्मान दिलाया। यही रीति चलती है कि फतेहपुर वाले जिसे बड़ा करें वही झूंझणूमें बड़ा होता है।

बादशाह अकबरने पहाड़में युद्ध करनेके लिए जगतसिंह और दीवान अलफखांको सेना सहित भेजा। धमेहरीमें जा कर द्रवन लोगोंको पराजित कर उनके गांवोंको नष्ट किया। राजा तिलोकचन्द भयभीत हो कर शरणमें आ गया। दीवानजीने उसे बादशाहके कदमोंमें हाजिर किया।

सलीमने जब राणा पर चढ़ाई की तो उसने बादशाह अकबरसे कह कर अलफखांको भी साथमें ले लिया। मेवाड़में आ कर शाहजादेने विशाल सेनाको विभाजित कर सादड़ीका थाना अलफखांके जिम्मे लगाया। उसने राणा अमरसिंहके थाने पर आक्रमण कर दलको मार भगाया और लूटका बहुत-सा माल हाथमें किया। राणा बहुत रुष्ट हुआ, परन्तु वह भी सादड़ी आनेमें असमर्थ रहा। ऊंठालेमें समसखां था। उसने भी राणाको खूब छकाया। जब शाहजादेने सुना तो उसने अलफखां और समसखां दोनों चौहान वीरोंकी बड़ी प्रशंसा की।

---

१. राज्यकाल सं० १६२७ पर यह चिंतनीय है। पेढ़ीके अनुसार इनका जन्म १६२१ में हुआ था।

बादशाह अकबरके मरने पर शाहजादा सलीम जहाँगीरकी उपाधि धारण कर राजगद्दीपर बैठा। उसने दीवान अलफखांका बड़ा सम्मान किया और उसके नाम फतहपुरका लाल मुहरका पट्टा कर दिया। राय मनोहरने अलफखांको मेवात देशमें भेजा। वहां मेव लोग इनकी बड़ी सेवा करते और भेटों द्वारा द्रव्यकी भी उन्हें अच्छी प्राप्ति हुई।

बीकानेरके राजा दलपतसिंहने अगणित सेना एकत्र कर बादशाहके विरुद्ध हो कर लूट-मार शुरू कर दी। वह सरसामें गया और ज्याबदीनको हटा कर उसने शाही खजाना लूट लिया। बादशाहको ज्ञात हुआ तो वह बड़ा क्रुद्ध हुआ और शेख कबीर व अलफखांको बीस उमरावोंके साथ विशाल सेना दे कर सरसा भेजा। दलपतसिंह वहांसे अन्यत्र चला गया। एक दिन पानीके लिए परस्पर युद्ध छिड़ गया। एक ओर २१ उमराव थे और दूसरी ओर अकेला अलफखां। घमासान युद्ध हुआ, बहुतसे सुभटोंके मारे जाने पर स्वयं शेख कबीरने बीच-बिचाव किया। उसने दीवान अलफखांकी बड़ी प्रशंसा की और उन्हें सम्मानित किया। युद्ध बन्द कर दोनों दल परस्पर मिल गए और दलपतिसिंहको जीतनेके लिए भाटू पर चढ़ाई की। वह बीकानेरके बहुतसे सरदारोंके साथ था। शाही सेनाके सामने दलपतिसिंहने लड़नेमें असमर्थ हो कर जलालखां द्वारा दीवान अलफखांसे कहलाया कि तुम मेरे बड़े भाई हो। शाही सेनाको रोको। हमारे पूर्वज लूणकरन, प्रतापसी, जोधा, मालदेव आदिकी प्रीतिका प्रतिपालन करो। अलफखांने तत्काल युद्ध बंद कर प्रेमपूर्वक बादशाहके पास भेज कर दलपतिसिंहको बचा लिया। दिल्लीपतिने शेख कबीरको बुला लिया, उसके स्थान पर मुबारक आया।

दीवान अलफखां और पठानने मिल कर भिवानी पर चढ़ाई की। वहां जाटू जावलोंने पैर थाम कर युद्ध किया। फिर गढ़ईमें जा कर गोली चलाने लगे। दीवानके दलने तुरन्त गढ़ईको तोड़ कर जाटुओंको हरा दिया और गांवोंको लूट कर ख्याति प्राप्त की।

बादशाहने अलफखांको मेवात देश पर चढ़ाई करनेकी आज्ञा दी और हाथी, घोड़ा, सिरो-पाव दे कर मनसब बढ़ाया। दीवानजो ससैन्य मेवात देशकी ओर चले। सर्व-प्रथम सारा विजय कर अलफखांने कारहंडेमें डेरे किये। वहां भी मेवातियोंको मार कर घनहटा गए। मेव लोगोंने खूब बीरतासे लड़ कर प्राण दिए। इस विजयसे सारे पहाड़में अलफखांकी धाक जम गई।

बादशाहने शाहज़ादे परवेज़के साथ दीवान अलफखांको भी दक्षिण विजय करनेके निमित्त भेजा। बुरहानपुर पहुँचने पर युद्धके लिए सब थाने-बँटे गये। अलफखांको मलकापुर मिला। शाहज़ादा एदलाबाद ठहरा और सेनाको उसने आगे भेजा। खानखांना, लोदी खानजहान, अब्दुल्ला जख्मी, कछवाहा मानसिंह, राठोर रायसिंह आदिका अगणित दल इस सेनामें था। अब्दुल्लाने खूब वीरतासे लड़ाई की पर आख़िरमें उसके पैर उखड़ गए। वह बुरहानपुर लौट चला, लिखी अलफखांके मलकापुरके सिवाय सब थाने उखड़ गए। सब सरदारोंने दीवानको चिट्ठी लिखी कि सब थाने उखड़ गए, तुम क्यों बैठे हो? जैसा पंच करे वैसा करो, इसमें कौन-सी लाज है?

अलफखांने उत्तर लिखा कि अपने पूर्वज चौहान हमीर आदिको इस तरह लजा कर मैं कैसे आ सकता हूं ? दक्षिणके प्रबल दलने उमड़ कर मलकापुर पर चढ़ाई कर दी, दीवानने घमासान युद्ध करके दक्षिणी दलको भगा दिया। जब शाहजादेने यह सुना तो अलफखांकी बड़ी प्रशंसा की और भीलोंके थानेको विजय करनेके लिए मलकापुरसे भेजा। उसने अविलंब जालवापुर आदि सारे मैवासको विजय कर भीलोंको परास्त कर दिया। फिर फतहपुर आ कर वह वापस मैवास चला गया। वहांके लोग अलफखांकी निरन्तर सेवा करने लगे। दीवान स्वयं दक्षिणमें रहते थे, उनका बड़ा पुत्र दौलतखां फतहपुरमें रहता था। बादशाहने दीवानका मनसब बढ़ा कर उसे बड़ा उमराव बनाया।

बीदावत सरदार चोरी करता था। उसके न मानने पर फतहपुरसे दौलतखांने चढ़ाई करके उसे परास्त किया और उसके गांवको जला दिया। पटौधी और रसूलपुरके कछवाहे भी चोरी और लूटका धंधा करते थे, व राहगीरोंको मार देते थे। जब बादशाहके दरबारमें इसकी पुकार की गई तो बादशाहने महावतखांसे सलाह ली। उसने कहा – कछवाहोंको दौलतखां धूलमें मिला देगा। बादशाहने तत्काल फरमान भेज कर दौलतखांको बुलाया। दौलतखां अजमेरमें आ कर बादशाह जहांगीरसे मिला। बादशाहने हुक्म दिया – "सूजावत चोर है, उसने सगरसे पटी छीन ली है, यदि तुममें शक्ति हो तो उसे निकाल कर पटी अपनी जागीरमें मिला लो।" दौलतखांने तुरन्त शाही आज्ञा स्वीकार की। बादशाहने उसे सिरोपाव दे कर सम्मानित किया और दोनों पटी दीवानके मनसबमें लिख दी।"

दौलतखांने बादशाहसे रुखसत पा कर कछवाहोंसे कहलाया कि हमारी पटी अविलंब छोड़ दो, अन्यथा युद्धके लिए तैयार हो जाओ। कछवाहोंने कहा – "रायसिंह और राणा सगर भी हमें नहीं निकाल सके। उन्होंने भी जागीर छोड़ दी। तुम कौन उनसे बढ़ कर आ गए। खुशरो, तरतीबखां और अंबिया शेख भी हमारे सामने नहीं रुके, तुम किस फेरमें हो।" यह सुन कर दौलतखांने तुरन्त धावा बोल दिया। कछवाहे भाग गए। माधव, नरहर और नरहरखांने दौलतखांके आगे गीदड़की गति पकड़ी। गिरधरके पुत्र गोकुलने आ कर जुहार किया।

दौलतखांने नरहरदासको पटीसे निकाल दिया, वह सकुटुम्ब लोहारू जा कर रहने लगा। माधव भादौवासीमें रह कर चोरी करने लगा। माधवके विरुद्ध लोगोंकी पुकार होने पर दौलतखांने उसे भादौवासी छोड़ देनेको कहलाया। उसके न मानने पर दौलतखांने माधव पर जो सेखावतोंके दलसे गर्विष्ठ था, आक्रमण किया। वह लड़नेमें असमर्थ हो भाग गया। दौलतखांने उसका छूटा हुआ द्रव्य और सामान उसके पास उदारता-पूर्वक भेज दिया।

दिल्लीपतिने अलफखांको नरहरकी जागीर दी। उस पर अधिकार करनेके लिए दौलतखांने सदलबल चढ़ाई की। नाहरखांने खूब सेना तैयार की पर आखिर चौहानोंसे न लड़ सका और शरण स्वीकार करके दौलतखांके बड़े पुत्र नाहरखांको अपनी बेटी दी। बादशाहके दरबारमें अलफखांका बहुत सम्मान था। बादशाहने उदयपुर, बारुवाकी जागीर भी इसे इनायत की। गिर·

धरने अलफखांको जागीर न छोड़नेके लिये संदेश भेजा और दौलतखांने लिखा कि यदि सीधे तौरसे नहीं निकलोगे, तो मैं लड़ कर भगा दूंगा। तब उसने लिखा कि मेरे पैर पातालमें हैं; ऐसा कौन योद्धा है जो मुझे निकाल सके। दौलतखांने तुरन्त ससैन्य चढ़ाई कर दी अलफखां भाग गया और खीरौरमें न रह सकने पर खोहमें मारा-मारा फिरने लगा। दौलतखांने विजय-दुन्दुभी बजाते हुए उदयपुरमें प्रवेश किया। उसकी धाक चारों ओर जम गई; खंडेला और रैवासेमें भी खलबली मच गई।

अलफखांको बादशाहने दक्षिणसे बुला कर तीसरी बार मेवातकी फौजदारी दे कर भेजा। दीवानने दौलतखांको साथ ले कर बाँकी, खेरी, चोरटी, मैवास आदिको तहस-नहस कर डाला। बहुतसे भोमिए लड़ मरे। कितनोंने युद्ध बन्द करके अपनी पुत्रियां दीं। मेवात फतह करनेके बाद अलफखांको बादशाहने तुरन्त दक्षिण भेज दिया।

काँगड़ा पर चढ़ाई करनेके लिए बादशाहने दीवान अलफखांको दक्षिणसे बुलाया और राजा विक्रमाजीतको साथ दे कर विदा किया। राजा सूरजमल नूरपुरमें था, शाही सेनाके साथ युद्धमें भाग गया। राजा विक्रमाजीत और दीवान अलफखांने नूरपुर पर कब्जा कर लिया और वहीं डेरा जमा दिया। दीवान अलफखां नूरपुरमें रहा और राजा विक्रमाजीतने नगरकोट पर चढ़ाई करनेके लिए कूच किया। जब सूरजमलने सुना कि राजा नगरकोट पर गया तो उसने नूरपुर पर सदलबल चढ़ाई कर उसे वापिस लेनेकी ठानी, परन्तु दीवानजीसे लड़नेमें असमर्थ हो कर कुछ भी घात न कर सका।

राजा विक्रमाजीत काँगड़े गया। वहां वैरीसे बात कर असफल-सा होकर लौटा और दीवानजीको काहलूर पर चढ़ाई करनेको कहा। तत्काल अलफखांने कूच कर ग्वालियरमें डेरा किया तो कहलूरिया दीवानजीके आनेकी बात सुनते ही पेशकश सहित हाजिर हुआ। अलफखांने उसे विक्रमाजीत राजाके पास भेज दिया। राजा जब बढ़-चढ़ कर बात करने लगा तो बादशाहने लिखा कि काँगड़ा जैसे हो अधिकारमें लाओ।

शाही सेनाने नगरकोटके चारों तरफ घेरा डाल दिया और गढ़ तोड़ कर अधिकार कर लिया। दूसरोंके वहां रहना अस्वीकार करने पर राजा विक्रमाजीत और दीवान अलफखांने सलाह करके दीवानजीको ही वहां रक्खा। बादशाहने अलफखांका मनसब बढ़ा कर सत्कृत किया।

बादशाह जहाँगीर स्वयं काँगड़ा देखनेके लिए आया। दीवान अलफखांसे मिल कर वह अति प्रसन्न हुआ और उसे सम्मानित कर काश्मीरकी ओर चला गया। जब ठटा वालोंने सिर उठाया तो बादशाहने अलफखांको बुला कर ठटा भेजा। उसने तुरंत वहां जा कर ठटा सर कर लिया। इधर दीवानजीके चले जानेसे कांगड़ेके सब पहाड़ी एक हो कर मुगल सल्तनतके विरुद्ध हो गए। बादशाहने सादिकखांको ससैन्य भेजा, परन्तु उसके असफल होने पर शाही फ़रमान द्वारा दीवान अलफखां कांगड़े आया। अलफखांके आते ही सब पहाड़ी उसे जुहार करने आए। सादिकखां दीवानके प्रभावसे बड़ा चमत्कृत हुआ।

काबुलके भोमियोंके बगावत करने पर शाह जहाँगीर स्वयं लाहौर आया और उसने काबुल भेजनेके लिए काँगड़ासे अलफखांको बुलाया। इसी समय लखी जंगलकी पुकार आई कि दुढी और बट्ट लोगोंने मुल्क ऊजड़ कर दिया है। बादशाह सोच रहा था कि लखी जातके भोमियोंको गिरफ़्तार कर लाहौर लानेके लिए किसे भेजा जाय; तब आलफखांने दीवान अलफखांको भेजनेकी राय दी। बादशाहने दीवानजीको सिरोपाव दे कर ससैन्य लखी जंगलकी ओर बिदा किया।

दीवान अलफख़ां लाहौरसे चल कर कसूर आया। भटी मनसूर डरसे भाग कर बादशाहके पास चला गया। दीवानजीने अखीरकी गढ़ी पर आक्रमण किया। परस्पर घमासान युद्ध हुआ। ३०० मनुष्योंको मार कर शेष सबको बन्दी बना लिया। आखिरको जीत कर दीवानजी डोगरोंकी तरफ मुड़े। इनका आगमन सुन कर डोगरे पहलेहीसे भाग गए। दीवानजी बट्ट गए, वहाँ वाले भी दीवानजीका सामना करनेमें असमर्थ रहे। फिर दीवानजीने खाई डेरा किया, आसपासके भोमिए सब आधीन हो गए। वहांसे चिहुनी, देपालपुर गए। दुढी बहादुरखांने आ कर भेंट दी और अधीन हो गया। जो भोमिए (जागीरदार) भेंट ले कर आए थे, सबको अलफख़ांने बादशाह जहाँगीरके पास भेज दिया। बादशाह अत्यंत प्रसन्न हुआ। चिहुनी, देपालपुर, महमदौट, भटिंडा, पट्टन, आलमपुर, पिरोजपुर, भटनेर, जमालाबाद, धिग, कबूला, रहमताबाद, रहीमाबाद, आदि लखी जंगलके सरदारोंको सर कर लिया। भटी, समेज, जोहिए, दुढी, बट्ट, नेपाल, विराटे, ढोगर, ख़रल, अरब और घौला, खेड़ा आदि सब पर दीवानने विजय-दुन्दभी बजाई।

काँगड़ाके पहाड़ पर सरदारख़ां शासक था। उसकी मृत्युके बाद पहाड़ी फिर बग़ावत करने लगे। बादशाहने अलफख़ांको बुला कर उसे चौथी बार पहाड़ फ़तह करनेके लिए भेजा। दीवानजीके सदलबल पहुँचने पर पहाड़ी लोग सम्मुख न आ कर पहाड़ोंकी ओटमें छिपे रहे। दीवानजीने काहलूर, मंडई, सिकंदराको अपने अधीन कर लिया। उधर सिकंदर शाहके सिवा कोई भी तुर्क नहीं गया था। चौहान अलफखांके जाने पर पहाड़ी घर-बार छोड़ कर भागे फिरते थे। उन सबने विचार किया कि दीवानसे हम सब एक हो कर लड़ेंगे। जगतसिंह पैठनिया, विसंभर चंब्याल, भौनका चंद्रभान, जसवाल फतू, भोपत, अमूल, बूला, सूरजचन्द, ठकर कल्याण, श्यामचंद, जगतमाल, अजिया, राय कपूर आदिके सारे कटकने एकत्र हो कर नगरौटेमें डेरा किया। क्यामख़ानी और पहाड़ियोंमें परस्पर खूब घमासान युद्ध हुआ। पहले दिन जगतसिंह रणक्षेत्रसे भाग गया। दीवान अलफख़ांकी विजय हुई। दूसरे दिन फिर पहाड़ी सेना एकत्र हो रणक्षेत्रमें आई। दीवानजीने उसे हरा दिया, इसी प्रकार तीसरे दिन भी पहाड़ी हारे। चौथे दिन और भी बहुतसे भोमिए पहाड़ी दलमें शामिल हो कर लड़े, परन्तु उनकी हार हुई। पाँचवें दिन और छठे दिन भी अलफखांकी जीत और पहाड़ियोंकी हार हुई। पैठानसे सादकख़ांने अलफखांको पत्र लिखा कि या तो तुम आ कर मिलो या सेना भेजो। अलफखांने देखा कि शत्रुदल उमड़ा हुआ है। युद्धसे मैं क्यों लौट कर अपने कुलमें कलंक लगाऊँ? मरना एक दिन है ही। उसने अपने थोड़े दलको रख कर समस्त शाही सेना रोष-पूर्वक सादकखांके पास भेज दी।

जब जगतसिंहने सुना कि अलफखांके पास थोड़ी-सी सेना है तो वह निशान बजाता हुआ

सदल रणक्षेत्रमें आ पहुँचा। दीवानजीने भी अपने दलकी तीन अनी बनाई। एक ओर रूपचन्द दूसरी ओर बासो डडवाल और मध्यमें दीवान स्वयं रहा। पहाड़ियोंने इन्हें चारों तरफसे घेर लिया। घमासान युद्ध हुआ। रूपचंद और बासी हार कर भाग खड़े हुए अलफखां सत्य और साहसके बल पर पैर रोप कर युद्ध करने लगा।* दीवानजीके बड़े-बड़े वीर योद्धा इस लड़ाईमें काम आए। एदल और कमाल क्यामखानी और जमाल, मुजाहद, भीखन, बहलोल, लाडू, पिरोजखां, दोला, अबू इस कंदर, मारूफ, सरीफ, ऊदा, परता, चतुरभुज, जगा, मनोहरदास, कौजू, हरदास, दोदराज, मोहत आदिने हजारों पहाड़ी वीरोंको धराशायी करके अंतमें वीरगति प्राप्त की। स्वयं दीवानजी और उनके चतुर नामक हाथीने अपने चौहान वंशका पानी बड़ी सफलतासे दिखाया। पहाड़ी लोग तंग आ कर भागने लगे। दीवानने उन्हें खदेड़ते हुए पीछा करके १३०० मनुष्योंको मार डाला। जब पहाड़ियोंने देखा कि भागनेसे छुटकारा नहीं होगा, तो सब एकत्र हो कर युद्ध करने लगे। घमासान युद्ध करते हुए दीवान अलफखां शहीद हो गए।

वि० सं. १६८६, हि० सन् १०३५ रोजा तारीखके दिन दीवान अलफखां वीरगतिको प्राप्त हुए। दीवानजीकी दरगाह बड़ी चमत्कारी है, बहुतसी करामातें प्रकट हैं। निर्धनको धन और निर्बुद्धिको बुद्धि व मार्गभ्रष्टको मार्ग देनेवाले हैं। इस प्रकार अलफखां महा पीर प्रगटे।

कवि जानने वि० सं. १६९१में पुराने कवित्तके अनुसार इस ग्रन्थकी रचना की। अब दीवान दौलतखांका विवरण लिखते हैं—

दीवान अलफखांके पीर हो जाने पर उसका पुत्र दौलतखां उत्तराधिकारी हुआ। बादशाह जहाँगीरने उसे मनसब दे कर काँगडेका गढ़ सुपुर्द किया। वह भी काँगड़ेमें रह कर पहाड़ी सरदारों द्वारा सेवा कराता हुआ शासन करने लगा। जहाँगीरकी मृत्यु हो जाने पर सब थाने उठ गये और अराजकता छा गई, किंतु दीवान दौलतखां अपने स्थान पर अविचल रहा। पहाड़ियोंने मिल कर गढ़के चौतरफ घेरा डाल दिया, तब दीवानके दलने पहाड़ियोंको मार भगाया और नगरकोटकी रक्षा की।

शाहज़हांने दिल्लीके तख्त पर बैठते ही दौलतखांको मनसब बढ़ा कर सम्मानित किया। दीवानने १४ वर्ष काँगड़ेमें रह कर शासन किया; फिर काबुल और पेशावरमें जा कर रहा। सीमाके सब शासक दीवानसे मिल कर चलते थे। दौलतखांके तीन पुत्र थे—ताहरखां, मीरखां, और असदखां।

दौलतखांका पुत्र ताहरखां बादशाहसे मिलनेके लिए अकबराबाद गया। बादशाहने प्रसन्नतासे उसे मनसब दे कर बड़ा प्यार किया। जब शाही दरबारमें गजसिंहके पुत्र राठौर अमरसिंहने सुलावतखांको मारा तो बड़ा घमासान मच गया। बादशाहने हुक्म किया कि राठौड़ोंको मारो,

---

*कवि जानने इस युद्धका वर्णन बड़े विस्तारके साथ किया है, और दीवान अलफखांकी वीरताकी बड़ी प्रशंसा की है।

जिससे भविष्यमें कोई दरबारमें बेअदबी न करे। अमरसिंहके जो सेवक आगरेमें थे वे सबके सब खड़ मरे, कोई भी न भागा। रावजीका कुटुंब नागौरमें था। बहुतसे जोधावत पासमें थे अतः उनके त्रासके कारण नागौर लेनेकी किसीने भी स्वीकृति नहीं दी। आखिर वीर ताहरखांने नागौरके लिए बीड़ा उठाया। बादशाहने नागौरका पट्टा लिख कर दौलतखांको काबुलसे बुलानेके लिए फरमान भेजा और मनसब भी ड्योढ़ा कर दिया।

एक दिन बादशाहने ताहरखांसे[1] पूछा – काबुलसे अपने पिताके आने पर नागौर जाओगे या पहले ही जा कर राठौड़ोंको निकालोगे? ताहरखांने कहा "आपका फरमान मस्तक पर है। मैं अभी जाकर नागौर दखल करता हूँ।" बादशाहने नागौर दे कर उसे बड़ा उमराव बनाया और सिरोपाव दे विदा किया। ताहरखांके पुत्र सरदारखांको बादशाहने मनसब दे कर अपने पास रक्खा। ताहरखांने स्वदेश लौट कर बड़ी भारी सेनाके साथ नागौरकी ओर प्रयाण किया।

ताहरखांके नागौर आने पर जोधोंने गढ़ खाली कर दिया। ताहरखांने उस पर कब्जा कर लिया और अमरसिंहके स्थान पर जैगढ़में रहने लगा। चार मासके बाद दीवान दौलतखां भी काबुलसे आ पहुंचा और पिता-पुत्र दोनों आनंदपूर्वक नागौरमें रहने लगे। ७-८ महीनेके अनन्तर बादशाहने फरमान भेजा कि फरमान पाते ही तुम शीघ्रतासे पेशावर जाओ। शाहजादा वहांसे बलख लेनेके लिए जायेगा, तुम भी उसके साथ जा कर फतह करो। शाही फरमान पाते ही दीवानजीने प्रयाण किया और ताहरखां नागौरमें ही रहा। ८ मास नागौरमें सुख-पूर्वक उसने बिताए। जब ताहरखांने फौजके बलख जानेकी बात सुनी तो उसने बादशाहके पास लाहौर अरज भेजी कि हुक्म हो तो मैं हाजिर होऊं। बादशाहने उसे बलख भेज दिया। छोटे शाहज़ादेने कटकके साथ बलखको फतह कर लिया। दोनों शाहजादोंने दक्षिणी रुस्तमखां और दीवान दौलतखांको इंदखह स्थानमें भेज दिया। शाहजादेके पास बलखमें ताहरखां था। आयु पूर्ण हो जानेसे युवावस्थामें हो अचानक उसकी मृत्यु हो गई। नगरमें ताबूत आने पर हाहाकार मच गया[2]। पिता दौलतखांको बड़ा दुःख हुआ। बादशाहने सुन कर दुःख प्रकट किया और सलावतखांको बुला कर दिलासा दिया।

बलखसे शाही सेना लौट कर काबुल आई तो बादशाहने कंधार विजय करनेकी आज्ञा दी, और कुमुक भेजी। इधर शाहजहांकी सेना और उधर शाह अब्बासकी सेना परस्पर लड़ने लगी। जब शाही सेनाके पैर उखड़ते देखे तो रुस्तमखां दक्षिणी और दीवान दौलतखां रणक्षेत्रमें उतर पड़े और उन्होंने शत्रुसेनाको परास्त कर दिया।

जब शीतकालमें बरफ़ जमने लगी तो शाही सेना कंधार छोड़ कर काबुल आ गई। जब

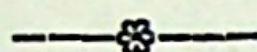
---

१ राज्यकाल सं० १६८३ से १७१० इनके नामसे रचित 'दउलितविनोदसारसंग्रह' नामक विशाल वैद्यक-ग्रन्थकी अपूर्ण प्रति अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेरमें उपलब्ध है। इसकी पूरी प्रति अन्वेषणीय है। आपका चित्र फतहपुर परिचयमें प्रकाशित है।

२ कवि जानने बड़े ही करुण शब्दोंमें विलाप किया है।

मौसम ठीक हुआ तो फिर सेना कंधार लेने गई पर उसके हाथ न आने पर वापिस सेनाको काबुल लौटना पड़ा। तीसरी बार बादशाहने फिर सेनाको भेजा। कंधारमें घमासान युद्ध होने लगा। दौलतखां दीवान भी चढ़ाईके दौरे करता था। इसी बीच उसे ज्वर हो गया और कुछ दिन बाद उसकी मृत्यु हो गई। वि० सं० १७१०, हिजरीमें दीवानकी मृत्यु हुई। बादशाहने दिलासा दे कर ताहरखांको सिरोपाव दे कर स्वदेश विदा किया। सरदारखां अपने वतन लौट कर सुखपूर्वक राज्य करने लगा। सरदारखां और पूरनखां चिरायु हों।

प्रस्तुत रासा यहीं समाप्त होता है। पं. झाबरमलजी शर्माके लेखानुसार, 'शजतुल मुसलमीन' और 'तारीख़ ख़ानजहानी' ग्रन्थ इसी रासाके अनुसार बने हैं और उपर्युक्त सरदारखांके (१७१०-३७) बाद दीनदारखां (सं. १७३७ से ६०),सरदारखां द्वि. (१७६०-८६) कामयाबखां[1] (१७८६-८८) फतहपुरके नवाब हुए। अंतिम सरदारखांने अपना विरुद 'सवाई क्यामखां' रखा और यही अंतिम नवाब हुआ। सीकरके सामन्त राव शिवसिंह सेखावतने उसे पराजित किया और सं. १७८८ में स्वयं फतहपुरका स्वामी बना। फतहपुर परिचयसे सरदारखांके परवर्तीय नबाबोंका वृतांत परिशिष्टमें दिया गया है।



क्यामखां रासाकी प्रतिका परिचय।

हमें प्राप्त प्रतिके अनुसार ग्रन्थका नाम "रासा श्री दीवान अलिफखाँका" है। पुरोहित हरिनारायणजी, पं. झावरमलजी व फतहपुर परिचय आदिके लेखकोंने इसका नाम "कायमरासा" लिखा है। इसका प्रधान कारण यही प्रतीत होता है कि इसमें क्यामखानी नवाबोंका इतिहास है केवल अलिफखाँका ही नहीं। हमें यह प्रति झुंझणूंके जैन उपासरेसे मिली थी। इसकी अन्य प्रति स्व. पुरोहितजीके पास होनेका जाननेमें आया तब पुरोहितजीसे पूछा गया तो आपने उत्तर दिया कि कोई सज्जन मेरे यहाँसे ले गये थे, उन्होंने वापिस लौटानेकी कृपा नहीं की। अतः इसका सम्पादन हमारे संग्रहकी एक मात्र प्रतिसे ही किया गया है। प्रति बहुत शुद्ध एवं रचना-समयके आसपासकी ही लिखित है। अतः हमें कोई दिक्कत नहीं हुई।

प्राप्त प्रति पुस्तकाकारके ७० पत्रोंमें है। साइज ५॥। × ८॥। है। प्रत्येक पृष्ठमें १६ से १८ पँक्तियां व प्रति पंक्ति अक्षर १८के लगभग हैं। गणनासे ग्रन्थ परिमाण १३५० श्लोकका होता है।

यद्यपि इस प्रतिमें लेखन-सम्वत् नहीं दिया गया है, पर हमारे संग्रहकी दीवान अलफखाँकी पैड़ी और उसके लेखक एक ही हैं। अतः उसकी पुष्पिका नीचे दे दी जाती है—

---

१ फतहपुर—परिचयमें सरदारखांकी विद्यमानतामें कामयाबखांके २ वर्ष राज्य करनेका लिखा है पर यह कुचामण चला गया था। वहीं मरा। अब भी वहां इसके वंशज विद्यमान हैं। झाबरमलजीने बीचमें एक काम और दिया है पर ठीक नहीं है।

"संवत् १७१६ मिति कार्तिक बदी २१ शनिवार ता. २३ मा. मुहर्रम सन् १०७० लिखाइतं पठनार्थे फतैहचंद लिखतं भीखा"

झुंझणूंसे हमें तीन ग्रन्थोंकी प्रतियां मिली थी उनमेंसे बुद्धिसागर ग्रन्थ भी इसीका लिखित है—

"सम्वत १७१६ मिती आसोज सुदी १४ बार सोमवार ता. ११ मास मुहर्रम सं. १०७० पौथी लिखाइतं पठनार्थं फतहचन्द लिखतं मीश्रदेवै । श्रीमालशकगोत्र संभवत । श्री

हिन्दुस्तानी एकेडेमी संग्रह वाली प्रति भी फतेहचन्दकी है । संभवतः दोनों फतेहचन्द एक हों । फतेहचन्दको जान कविकी रचनाओंसे छोटी उम्रसे ही प्रेम रहा प्रतीत होता है । एकेडेमीकी प्रतिसे कामलता ग्रन्थका पुष्पिकालेख नीचे दिया जाता है—

"सम्वत् १७७८ मिती कातका सुदी ६ विसपतिवार हसतखत फतेहचन्द ताराचन्दका ढोडवानिया पोथी फतेहचन्दकै घरकी । श्री । श्री ।

क्यामखां रासाका महत्त्व

क्यामखां रासा अनेक दृष्टियोंसे महत्त्वपूर्ण है । साहित्यकी दृष्टिसे यद्यपि उसकी तुलना पृथ्वीराज रासा, संदेश रासा आदिसे नहीं की जा सकती, तथापि यह तो मानना ही पड़ता है कि उसकी शैलीमें एक विशेष प्रवाह है । प्रेमपूर्ण आख्यायिकाओं और प्राकृतिक वर्णनोंसे जान भी इसे सुसज्जित कर सकता था, वह वीर रसका ही नहीं शृंगार रसका भी कवि था, किन्तु उसने सरल ओजस्विनी भाषामें ही अपने वंशके इतिहासको प्रस्तुत करना उचित समझा, उसने यथाशक्ति मितभाषिता और सत्यका आश्रय लिया ।[1] जानने जहां तहां सुन्दर पद्य भी लिखे हैं । जिनमें कुछ यहां प्रस्तुत किये जाते हैं—

बांकै बांकैही बने, देखहुं जियहि विचार ।
जो बांकी करवार है, तो बांको परवार ॥
बांकैसौं सूधो मिलै, जो नांहिन ठहराइ ।
ज्यों कमांन कवि जान कहि, बानहिं देत चलाइ ॥

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

कहा भयो कवि जान कहि, बैरी बकीय कुबात ।
कबके गिर गिर कहात हैं, पै गिर ना गिर जात ॥

❀ ❀ * ❀ ❀

---

१ कहत जान अब बरनिहौं, अलिफ़खांनकी जात ।
पिता जान बढ़ि न कहौं, भाखौं साचीं बात ॥

सूर वीर अरु मीन जल, इनको येक सुभाइ ।
रफि रफि दोऊ मरै, जो पानी प्यादे जाइ ॥
रहे न केहूँ हीन जल, सहे न दोऊ गार ।
सूर वीर सुनि मीनकौ, पानी हीसौं प्यार ॥
येक बात कवि जान कहि, बढ्यौ मीनतें सूर ।
मीन मरे पानी घटे, सूर मरे जल पूर ॥

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

ताहरखां कीनौ गवन, स्रवन सुने ये बैन ।
वस्त्र भगौहे ह्वै गये, रत रोये जुग नैन ॥
पूलोको पहुंच्यौ नहीं, भग कमोदनि मंद ।
यह बपरीत लागे बुरी, गह्यो सप्ली चंद ॥
थारीके मुक्ता भये, ठरे ठरे ही जाहि ।
सुरतर ताहरखांन बिनु, केहूं न द्रग ठहराइ ॥
हिय कमल नांहिन खुलत, मुक्लित पल पल मांहि ।
छबि रवि ताहरखांन जू, डिष्ट परत है नांहि ॥
कहु कैसे कै ऊपजे, नैन चकोर अनंद ।
कहूं डिष्ट परै नहीं, ताहरखां मुखचन्द ॥
मीर करि ताहरखांन जू, हितवन हिय हित दीन ।
नैन बहन हिरदै दहन, मनहि गहन तन छीन ॥
धर्मराज कैसे कहूँ, कौन धर्म यहु आहि ।
काटत ऐसो कलपतर, कृपा न उपजी काहि ॥

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

सूरज नाव कहाहि है, उलटौ सबै सुभाइ ।
छुप्यौ रहत है स्योसकूं, निसको निकसत आई ॥

दिल्लीका यह वर्णन भी पठनीय है —

अनंत भनाहरि भखि गइ, नैकु न आई लाज ।
येक मरै दूजै धरै, यहै दिल्लीको काज ॥
जात गोत पूछत नहीं, जोहै पकरत पान ।
ताहिमौं हित मिल चलैं, पै भखि तार निदान ॥

एक साहित्यिक व्यक्ति द्वारा लिखे जानेके कारण रासामें सहृदयजनके लिए आनन्दकी इस भांति पर्याप्त सामग्री है। किन्तु वास्तवमें उसका महत्व साहित्यिक नहीं, ऐतिहासिक है। साहित्यकी दृष्टिसे अनेक अन्य कृतियाँ कायमरासासे बढ़ी चढ़ी हैं, किन्तु अपने निजी क्षेत्रमें यही प्रमुख वस्तु है। कायमखानियोंका इतना अच्छा और इतना विश्वसनीय वर्णन हमें अन्यत्र नहीं मिलता; और वह भी इतने रोचक ढंगसे कि पाठकका मन कभी नहीं ऊबता, यही इच्छा बनी रहती है कि वह और पढ़े। वंशके गर्वसे यत्र-तत्र कुछ बातें शायद बिना जाने ही कुछ बढ़ा कर लिखी हों। किन्तु जान कर तो शायद उसने ऐसा न किया होगा। सच्चे भारतीयकी तरह वह कभी यह भूल नहीं पाता कि यह संसार क्षणभंगुर है। ओजस्वीसे ओजस्वी वर्णनके पश्चात् जब वह लिख बैठता है –

> जो लौं दौलतखां जिये, साके किये अपार।
> अंत न कोउ थिर रहै, या झूठे संसार॥

तो हमें प्रतीत होता है कि यह कोई दरबारी इतिहास लेखक नहीं है, न अबुल्फजल है और न बाबर। सत्य इसे प्रिय है, यह व्यर्थकी अतिशयोक्तिमें विश्वास नहीं रखता।

पुस्तकका ऐतिहासिक सार पूर्व दिया जा चुका है। पुस्तकके अन्तमें दी हुई टिप्पणियों द्वारा हमने रासाके ऐतिहासिक मूल्याङ्कनका भी प्रयत्न किया है। अतः सामान्यरूपसे ही रासाके ऐतिहासिक महत्वका हम यहां निर्देश कर रहे हैं।

किवामरासा या क्यामरासा

यह पुस्तक आजकल 'कायमरासा' के नामसे अधिकतर विद्वानोंको ज्ञात है। किन्तु इसके मूल नायकका वास्तविक नाम 'किवामखां' होनेके कारण 'किवामरासा' कायमरासासे कहीं अधिक शुद्ध शब्द है। यह शब्द बिगड़ कर 'क्यामरासा' बन गया है। इसे शुद्ध कर कायमरासाका रूप देना ठीक नहीं है। 'किवामखां' के वंशजोंको भी कायमखानी न कह कर 'किवामखानी' या 'क्यामखानी' कहना अधिक ठीक होगा। हमने कायमरासाके स्थान 'क्यामखांरासा' लिखना उचित समझा है।

पुस्तकका रचनाकाल संवत् १६९१ अर्थात् सन् १६२४ है। उस समय बादशाह शाहजहां दिल्लीके सिंहासन पर उपस्थित था। मुगल साम्राज्य अपने वैभवके शिखिर पर पहुँच कर अस्तोन्मुख होनेकी तय्यारी कर रहा था। बलख और कन्धारकी पराजय, जिनका वर्णन रासामें वर्तमान है, उसके प्रथम लक्षण थे। दक्षिणमें मलिक अम्बरके विरुद्ध युद्ध करते हुए जिन कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा था, उनका भी इसमें अच्छा दिग्दर्शन है। रचयिताके पिता अलिफखां, भाई दौलतखां, और भतीजे ताहरखांने इनमें भाग लिया था। अतः इनका वर्णन ठीक होना स्वाभाविक ही था।

रचयिताके पिता अलिफखांने बड़ी आयु प्राप्त की थी, उसने अकबरसे ले कर अन्त तकके अनेक युद्धोंमें भी भाग लिया था। इसलिये उसके जीवनसे मुगल कालीन भारतका हम अच्छी तरह ज्ञान प्राप्त करते हैं। बादशाह अकबरने उसके नाम फतहपुरका पट्टा लिख दिया; किन्तु उसका अधिकार दिलानेके लिये शिकदार शेरखांको श्यामदास कछवाहेके विरुद्ध बलका प्रयोग करना पड़ा।

अकबरके अन्तिम और जहांगीरके समग्र समयमें जितने उपद्रव हुए उनकी अलिफखांके जीवनसे हम खासी सूची तय्यार कर सकते हैं। सलीमकी मेवाड़ पर चढ़ाईके समय अलिफखां सादड़ीका थानेदार नियुक्त हुआ। जब दलपतने जहांगीरके विरुद्ध विद्रोह किया तो शेख कबीरके साथ अलिफखां भी दलपतके विरुद्ध भेजा गया। तुजुके जहांगीरीमें इस विद्रोहका अत्यन्त संक्षिप्त वर्णन है। उसके विशेष वर्णनके लिये हम आपके आभारी रहेंगे। स्वयं दिल्लीके पासके प्रदेश भी अनेक बार उपद्रव करते रहते थे। अलिफखांने जाटुओंको हरा कर भिवानी फतह की। मेवातमें तो उपद्रवोंको शान्त करनेके लिये उसे अनेक बार नियुक्त होना पड़ा। पाटौधि और रसूलपुरको उसके पुत्र दौलतखांने सर किया। दक्षिणमें अनेक सेनापतियोंकी अधीनतामें अलिफखांको मलिक अम्बरकी सेनाओंका सामना करना पड़ा। चार बार अलिफखांको कांगड़े भेजा गया, और वहीं सन् १४२६में वह विद्रोही पहाड़ियोंके विरुद्ध लड़ता हुआ मारा गया।

अलिफखांसे पूर्वका वर्णन किसी पुराने कवित्त पर आश्रित है। उसका अंतिम भाग जानके समयके निकट होनेके कारण स्वभावतः प्रायः ठीक है। किन्तु प्रारम्भिक भागमें अनेक भूले हैं, और संभवतः इसका भी यही कारण है कि यह पुराना कवित्त भी कायमखांके मरणके अनेक वर्षों बाद लिखा गया था। नामसाम्यके कारण जो भूलें हुई हैं उनका विशेष विवरण टिप्पणियोंमें दिया गया है, पाठक वहीं देखें। चौहानोंकी उत्पत्तिकी कथा रोचक है। उसकी पृथ्वीराजरासा आदिकी कथासे तुलना ऐतिहासिक दृष्टिसे लाभप्रद सिद्ध हो सकती है। वीर चौहान जाति वत्सगोत्रीय थी। जान वत्स ऋषिसे ही चौहानोंकी उत्पत्ति मानते हैं, चांद, सूरज आदिसे उन्हें मिलानेका जानने प्रयत्न नहीं किया।

तुगलक, सय्यद, लोदी, सूर और मुगल वंशों पर रासामें पर्याप्त सामग्री प्राप्त होती है, जिसका ऐतिहासिक सावधानी पूर्वक प्रयोग कर सकते हैं। जोधपुर, बीकानेर आदि राज्योंके इतिहास पर भी जानकी लेखनी कुछ नवीन प्रकाश डालती है। अतः इस ऐतिहासिक रासाको प्रकाशित कर राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर प्रशस्य कार्य कर रहा है। हम व्यक्तिगत रूपसे उसके आभारी हैं; उसने हिन्दी भाषाकी एक कविकी रचना पाठकोंके संमुख प्रस्तुत करनेका हमें सुअवसर प्रदान किया है।

दशरथ शर्मा

—०—

परिशिष्ट नं० १

दीवान दौलतखाँ रचित हिन्दी वैद्यक ग्रन्थ

दीवान दौलतखाँ[1] द्वारा रचित हिन्दी वैद्यक ग्रन्थका नाम है 'दउलति विनोदसार'। इसकी एक अपूर्ण गुटकाकार प्रति बीकानेरकी अनूप संस्कृत लाइब्रेरीमें विद्यमान है। प्रस्तुत प्रतिमें अन्य कई वैद्यक ग्रन्थोंका भी संग्रह है, केवल बीचके पृ० ३६७ से पृ० ३९७ तकमें यह ग्रन्थ लिखा हुआ है। पूर्ण प्रतिकी अनुपलब्धिके कारण इसमें ग्रन्थका कितना अंश कम रह गया है व अन्तमें, ग्रन्थके रचनाकाल आदिका उल्लेख था या नहीं, यह कहा नहीं जा सकता। उपलब्ध पत्रोंमें करीब १५०० पद्य हैं, जिनमें हिन्दीके अतिरिक्त संस्कृतके भी सैकड़ों श्लोक हैं। संभवतः ये किसी अन्य ग्रन्थसे उद्धृत किये गये होंगे। आश्चर्य नहीं कि वे ग्रन्थकारके बनाये हुए भी हों, क्योंकि उनमें किसी ग्रन्थसे उद्धृत किये जानेका उल्लेख देखनेमें नहीं आया।

जैसा कि राजा-महाराजाओंके नामसे रचित बहुतसे ग्रन्थोंके सम्बन्धमें देखनेमें आता है, संभव है कि यह ग्रन्थ भी स्वयं दौलतखाँका रचा न हो कर उसके आश्रित किसी वैद्यविद्याविशारद कविका रचा हुआ हो। पर प्राप्त अंशमें कहीं ऐसा नाम-निर्देश न मिलनेसे दौलतखाँ द्वारा रचित मान लेना ही ठीक जान पड़ता है। ग्रन्थका प्रारंभिक अंश व अधिकारोंके नामादि नीचे दिये जा रहे हैं, जिससे ग्रन्थका महत्व भली भाँति विदित हो जायगा—

दउलतिविनोदसारसंग्रह

श्रीमंतं सच्चिदानंदं, चिद्रूपं परमेश्वरम्।
निरंजनं निराकारं, तं किंचित्प्रणमाम्यहम् ॥१॥
दोधकादि सद्वृत्तै पाठैः पाठानुगे वरे।
शास्त्रं विरुच्यते रुच्यं, दृ (दृ?) ष्ट्वा शास्त्राण्यनेकशः॥२॥
"दउलतिविनोदसारसंग्रह" नाम प्रकृष्ट परमार्थम्।
यत्रा से परोपकृत्यै, सम्मते सुमतं कवीन्द्राणां ॥३॥
श्रीमद्बागड मंडलाखिलसिरः प्रोद्यत्प्रभा मंडनः।
श्रीमंतोऽलिफखानभूपतिवरः नन्द्यासुरानन्ददाः ॥
तत्पट्टोदय स्यनुम दिवाकरैः भास्वित्प्रभा भास्करैः।
श्रीमद्दउलति खान नाम वसुधाधीशैः सुधीशाश्रितैः ॥४॥

---

१ इनका चित्र फतहपुर ग्रन्थमें प्रकाशित है।

धनंतरि मुख वैद्य बहु, सिद्ध चिकित्साकार ।
तन सुद्धिइं मुणि योग पथ, लहइ संसारह पार ॥५॥
ताथइं चिकिछक योगविद्, पछई चिकित्सा सत्थ ।
मुक्ति होई परमवि निपुण, रहां चाहइ तउ अत्थ ॥६॥
धर्म अर्थ अरु काम कउ, साधन एह शरीर ।
तसु निरोगता कारणई, उद्यम करइ सुधीर ॥७॥
धुरि निदांन विग्यान तसु, ओषधके गुण दोष ।
तास सुद्ध वैद्यक हुवइ, जानु करइ जु अमोस ॥१२॥
देश काल वय वन्हि सम, ओषध प्रकृति विचार ।
देह सत्व बल व्याधि फुनि, धइ ओषध गुनकारि ॥१३॥

इति श्री दउलति विनोदसार संग्रहे श्री दउलतिखांन नृपति वर विनिर्मित वैद्यगुणाधिकारः ।
अधिकारोंके अंतमें –

ज्ञान परम इहु जोगी जानइ, कइ किछु परम वैद्य बखानइ ।
ग्रन्थ विसेषि जिहां कछु पाया, भूपति दउलतिखांन दिखाया ॥१॥

× × ×

जामाता मधुरइ सीतलेहिं, तिउं पित्तह सेवउ मन अनेहि ।
इहुं काल ज्ञान जानहुं सुजांन, भास्यउ नृप श्री दउलतिखांन ॥२॥

× × ×

षोडश ज्वर लक्षण सहित, ओषध कवाथ बखांन ।
कह्या वागड देशाधिपति नृप श्री दउलतिखांन ॥१७॥

इति श्री वागड देशाधिपति श्री आलिफखांन नंदन श्री दउलतिखांन विरचित श्री दउलति विनोद सार संग्रह षोडश ज्वराधिकारः ।

प्राप्त ४५ अधिकारोंके नाम–

वैद्यगुणाधिकार, परमज्ञानाधिकार, कालज्ञान, मूत्र परीक्षा, नाड़ी परीक्षा, ज्वर चिकित्सा, अतिसार, संग्रहणी, हर्ष, दुनामोनिरूपण, मन्दाग्नि, विसूति, अजीर्ण, कृमिनिदान, पांडु, राजयक्ष्मा, काश, छींकनिदान, स्वरभेद, आरोचक, छर्दि, तृष्णा, दाह, उन्माद, वातनिदान, आमवात, शूलनिदान, गुल्म, हृद्रोग, मूत्रकृच्छ्र, मूत्रघात, अश्मीरी, प्रमेह भेद, उदरामय प्लीहा, शोथ, अंड वृद्धि, गंडमाल, श्लीपद जयानां, विस्फोट, भगंदर, उपदंश, सूक कष्ट, शीत पित्त, आम्लपित्त, बिसर्पि तथा भावौं लूता । (इसके बादका अंश प्राप्त नहीं है) ।

जैसा कि ऊपर लिखा गया है, प्रस्तुत ग्रन्थकी केवल एक ही अपूर्ण प्रति प्राप्त हुई है ।

फतेहपुरादिमें खोजने पर संभव है इसकी अन्य पूर्ण प्रति भी उपलब्ध हो जाय। आशा है, आयुर्वेद एवं हिन्दी साहित्यके प्रेमी सज्जन अन्वेषण कर इस ग्रन्थके सम्बन्धमें विशेष प्रकाश डालनेकी कृपा करेंगे।

हिन्दी भाषा व आयुर्वेद चिकित्सा पद्धतिका प्रचार दिनों दिन बढ़ रहा है, पर खेद है कि अभी हिन्दी भाषामें इस विषयके ग्रन्थ बहुत ही कम प्रकाशित हुए हैं। यह हिन्दी साहित्यके लिए उचित नहीं है। इन ग्रन्थोंकी बिक्री भी अच्छी हो सकती है, अतः साहित्य सम्मेलन, नागरी प्रचारणी सभा आदि संस्थाओं व ग्रन्थ प्रकाशकोंको वैद्यक सम्बन्धी ग्रन्थोंके प्रकाशनकी ओर शीघ्र ध्यान देना चाहिए।

क्यामखानी दीवानोंके समयके शिलालेख

संतकवि सुन्दरदासके स्थान पर सं. १६८८ फा. ब. ६ बुधवारका लेख लगा हुआ है जिसका फोटू सुन्दर ग्रन्थावलीके जीवन चरित्र पृ. १२८ में छपा है। दौलतखाँ व ताहिरखाँका उल्लेख इस प्रकार है—

ढीली पति जहाँ सुत, राजत शाही जहान।
दौलतखाँ नृप फतेहपुर, ता नन्दन ताहिरखान।

ताहरखाँको, राठौर अमरसिंहके शाही दरबारमें सलाबतखाँको मार कर स्वयं मर जाने पर सम्राटने नागौरका परगना दे दिया था। वहाँ पहुँच कर ताहरखाँनने राठौरोंसे नागौर छीन लियाँ। गढ़के पास मसजिद बनाई गई थी। जिसके हिजरी सन् १०७६ के लेखमें शाहजहाँ एवं ताहरखाँ नाम खुदा है। (सुन्दर ग्रन्थावली, जीवन चरित्र पृष्ठ ३७)

फतहपुर किलेका जीर्णोद्धार व आश्चर्यजनक बावड़ीका निर्माण दौलतखाँने सं. १६६२-१६७१ में किया ऐसा उल्लेख फतहपुर परिचयमें किया है। संभवतः इसके सूचित शिलालेख वहाँ हों।

परिशिष्ट नं० २

"मुहणोत नेणसीरी ख्यात" मूलसे क्यामखानीकी उत्पत्ति यहां उद्धृतकी जाती है—

"अथ क्यामखांन्यारी उत्पति अर फतैपुर जूंझणूं वसायौ।

दरेरैरा वासी चहुवांण, तिकां ऊपर हंसाररो फोजदार सैद नासर दौड़ियौ। तद दरेरो मारियो अर लोक सरब भागो। पछै बालक २ फोजदाररै नजर गुदराया। ताहरां फोजदार दीठा। हुकम कियौ "जु हाथीरै महावतनूं सांपो अर दूध पात्रो - मोटा करो।" ताहरां फौजदार सैद नासर दोनूं बालकांनूं आपरी बीबीनूं सांपिया अर कह्यो —"जु हम दो लाये हैं सो इनको तुम पालो" ताहरां दोनूं बालकांनूं बीबी पालिया। लड़का बरस १० तथा १२ रा हुआ ताहरां

हांसीरै सेखनूं सांपिया। तद कितरेक दिन सैद नासर फौत हुवौ। तद सैद नासररा बेटा अर अै दोनूं पुतरेला पातसाह लोदी पठांण नाम बहलोल तैरी नजर गुदराया। ताहरां सैद नासररा बेटा पातसाहरी नजर उसड़ा न आया अर ओ चहुवांण नजर आयो। तैरो नाम क्यामखांन हुतो सु इयेनूं सैद नासररो मुनसब हुतो सु दियौ अर जाटरो नांम जैनूं हुतो तैरा जैननदोत कहाया। सो जूझणूं फतैपुर मांहे केहीक रहै छै। अर पातसाह थोड़ो बीजानूं पण दियो। अर क्यामखांनीनूं हंसाररी फोजदारी दीवी। तद इयै दीठो "जु कोइक रहणनूं ठिकांणो कीजै तो भलो" ताहरां जूंझणूं आछी दीठी। ताहरां चोधरीनूं तेड़ियो। ताहरां कह्यो—"चोधरी! तूं कहै तो म्हे ठिकांणो रहणनूं करां" ताहरां चोधरी बोलियो—"जु भलो ठोड़ वणावो। ऊ पण म्हारो नांम रहै त्यूं करीज्यौ" ताहरां कह्यो 'भलो'। ताहरां चोधरीरो नाम जूझो हुतो सु तिकेरै नांम जूंझणूं वसायौ। अनै जूंझणूं मांहिली ही ज धरती काढ़ नै फतैपुर वसायौ। नै अै भोमिया थका रहै। पछै कितरैहेके दिन अकबर पातसाह मांडण कूपावतनूं जूंझणूं जागीरमें दी हुती। अर फतैपुर इण जूंझणूं मांहिली ही ज हुती सु फतैपुर गोपालदास सूजावत कछवाहैनूं दी हुती। सु भोमिया थका रैहता। मुकातो देता। सु पछै जहांगीर पातसाहरा चाकर हुवा। सु पैहला तो समसखां जूंझणूं चाकर रह्यौ। पछै अलमफखां रह्यौ।

दूहो –

पैहली तो हिंदु हुता, पाछै हुआ तुरक्क।
ता पाछै गोले हुवै, तातैं वडपण तुक्क ॥१॥
धाये कांम न आवही, क्यांमखांनि गंदेह।
बंदी आद-जुगादके, सैद नासर हंदेह ॥२॥

इति क्यांमखान्यांरी वात संपूर्ण ॥"

—०—

परिशिष्ट नं० ३

क्यामखांरासामें सरदारखांके राज्याधिकार प्राप्ति तकका उल्लेख है, अतः परवर्ती इतिवृत्तकी पूर्ति फतहपुर परिचयसे की जाती है –

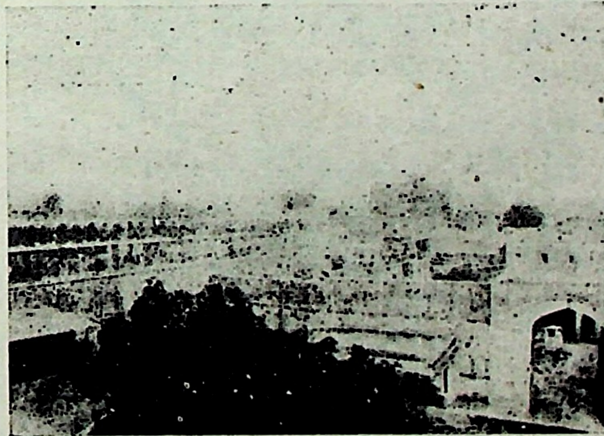
१ – नबाब सरदारखां (१)

(संवत १७१० से १७३७ तक तदनुसार सन् १६५३ से १६८० तक)

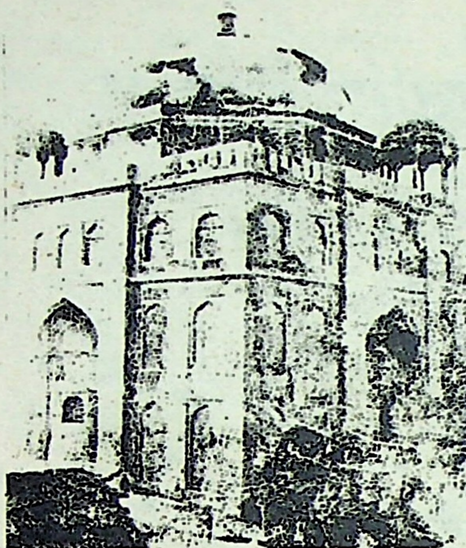
नबाब दौलतखां और ताहिरखांके संवत् १७१०में प्राणान्त हो जानेके बाद, ताहिरखांके पुत्र सरदारखांको शासनाधिकार मिला। अपने नामसे उसने "सरदारपुरा" गांव आबाद किया। वह शासनस्थ प्रजाकी और अपने राज्यकी रक्षा करनेमें हर समय लगा रहता था।



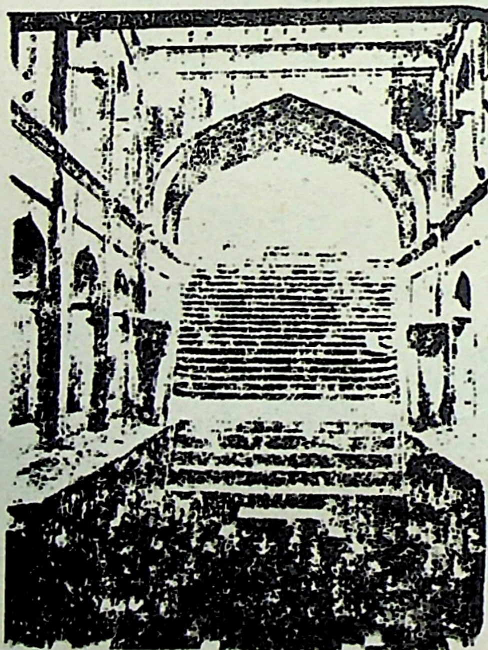
नवाब दौलतखां (द्वितीय)
शासनकाल सं० १६८३-१७२०



फतहपुर का किला
(निर्माण संवत् १५०८)



नवाब अलिफखां का मकबरा



नवाबी बावड़ी

निर्माण संवत १६७१-नवाब अलिफखां के राज्य में

फदनखां नामक एक लड़का नवाब सरदारखांके था, जो असमयमें नवाबकी जिन्दगीमें ही मर गया था, इससे नवाब दुःखी रहने लगा। रात-दिन दुःखमें डूबे रहनेसे उसे राज्य-कार्य अरुचिकर हो गया था, जिससे उसने संवत् १७३७ तक २७ वर्ष ही राज्य करनेके बाद गद्दी छोड़ दी और राज्यका अधिकार अपने छोटे भाई दीनदारखांके सुपुर्द कर दिया।

१०—नवाब दीनदारखां

(संवत १७३७से १७६० तक तदनुसार सन् १६८०से १७०३ तक)

संवत १७३७में नवाब सरदारखांने, अपने पुत्रकी मृत्युसे दुःखित होनेके कारण राज्यासन छोड़ कर अपने भाई दीनदारखांको गद्दी पर बैठाया। वह पहलेके नवाबोंकी तरह बहादुर और बुद्धिमान न था; बल्कि शक्तिहीन और मूर्ख था।

अपने नामसे "दीनदारपुरा" नाम रख कर नवाब दीनदारखांने एक गांव झुंझुणूके रास्तेमें बसाया। नवाबके २ लड़के पैदा हुए जिनका नाम — रसीदखां* और मुजफ्फरखां रक्खे गये।

कम अकल होनेसे नवाब दीनदारखां अधिक दिन तक राज-काज न निभा सका, इससे उसके पोते सरदारखांने संवत् १७६०में उससे राज्यभार ग्रहण करके नवाबी अपने हाथमें ले ली।

११—नवाब सरदारखां (२)

(संवत् १७६०से १७८६ तक, तदनुसार सन् १७०३से १७२९ तक)

नवाब दीनदारखांके राज-काज न संभाल सकनेके कारण उसके पोते सरदारखांको उसके जीते जी ही १७६०में गद्दी सौंप दी गयी। वह भी नवाब दीनदारखांके समान मूर्ख और बलहीन था। ऐयाश भी अव्वल दर्जेका था। उसने एक तेलिनको उसके रूप पर आसक्त हो कर रख लिया था, जिसका महल आज तक फतहपुरके किलेमें विद्यमान है, जो "तेलिनका महल" ऐसा कहा जाता है। तेलिनसे एक लड़का भी नवाबके हुआ, जिसका नाम महबूब था।

संवत् १७९२में नवाब सरदारखांने किसी कारण वश क्रोधावेशमें आ कर भोजराजजीके वंशज बरवांके केशरीसिंह और सुखसिंहको जानसे मरवा दिया। यह बात जब भोजराजजी वंशज वीरवर शार्दूलसिंहजीने सुनी, तो वे इतने क्रोधित हुए कि सिरसे पैर तक क्रोधाग्निसे तिलमिलाने लगे। उन्होंने तुरन्त ही राव शिवसिंहजीको साथमें ले कर १५० सवारों सहित फतहपुर पर चढ़ाई की।

---

*रसीदखाँ-नवाब दीनदारखांका बड़ा बेटा था। उसने अपने नामसे "रसीदपुरा" बसाया। उसके २ लड़के थे। सरदारखां और मीरखां। सरदारखां उसका बड़ा बेटा था, इससे उसे ही नवाब दीनदारखांने अपनी गद्दी पर बैठाया।

फतहपुरकी बीहड़में पहुँच कर शार्दूलसिंहजी और राव शिवसिंहजीने नवाबके ऊंटोंके समूहको वहां चरता हुआ पाया। उन्होंने उस समूहको घेरा। नवाबने अपने सर्वेसर्वा काजीको वहां भेजा। काजी और शार्दूलसिंहजी वगैरहमें लड़ाई छिड़ गयी। अन्तमें काजी और ग्यारह कायमखानी उस स्थान पर मारे गये और बाकी सब भाग गये।

उसी समयसे शार्दूलसिंहजी और राव शिवसिंहजी कायमखानियोंको नीचा दिखाने और उनकी भूमि उनसे छीन लेनेके लिए प्रयत्नशील हुए। अपने प्रयत्नमें लगे हुए उन्होंने झुंझुणूको संवत् १७८६में कायमखानियों से छीन कर, उस पर अपना अधिकार कर लिया। बादमें फतहपुर पर अपना अधिकार स्थापित करना चाहा, इसके लिए वे उचित अवसरकी बाट जोहने लगे।

महबूबको अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहनेके कारण नवाब सरदारखांसे अन्य कायमखानी सरदार मनमुटाव रखने लगे थे। कायमखानी चाहते थे कि अधिकार महबूबको न मिल कर कामयाबखांको मिले; पर नवाब यह न चाहता था। उसने तो महबूबको ही उत्तराधिकार देना चाहा; यद्यपि वह कायमखानियोंके कहनेसे कामयाबखांको दत्तक-पुत्र बना चुका था।

कायमखानी नवाबसे बिलकुल असंतुष्ट हो गये। चूड़ी और बेसवाके कायमखानियोंने राव शिवसिंहजीके पास जा कर करबद्ध प्रार्थना की कि "आप फतेहपुरका अधिकार कामयाबखांको दिला दें, आपकी सेवामें हम २५ गांव भेंट स्वरूप दे देंगे और फतेहपुरकी राज्य-व्यवस्था भी आपकी सलाहसे की जावेगी।"

कायमखानियोंकी प्रार्थना सुन कर राव शिवसिंहजीने काशलीके कुंवर रामसिंहको बुलवाया रामसिंह और प्रार्थी कायमखानियोंको साथ ले कर संवत् १७८६में राव शिवसिंहजीने फतेहपुर पर चढ़ाई की। भयंकर लड़ाई हुई, दोनों तरफके अनेक वीर आहत हुए और अनेक मारे गये। बादमें नवाबने यह जान कर कि कायमखानियोंने ही शेखावतोंको साथ ले कर चढ़ाई की है वहराव शिवसिंहजीके चरणोंमें आ पड़ा। राव शिवसिंहजीने नवाबके लिए नौ हजार रुपया वार्षिक निश्चित किया और कामयाबखांको गद्दी पर बैठा दिया।

१२—नवाब कामयाबखां

(संवत् १७८६से १७८७ तक तदनुसार सन् १७२९से १७३० तक)

नवाब सरदारखां, जो महबूबको राज्याधिकार देना चाहता था, उससे राव शिवसिंहजीने राज्यका अधिकार संवत् १७८६में कामयाबखांको दिलवा दिया, जो नवाबके छोटे भाई मीरखांका लड़का था और नवाबके द्वारा दत्तक भी स्वीकृत किया जा चुका था।

नवाब कामयाबखां अपनेसे पूर्वके दो नवाबोंकी भांति ही बलबुद्धिसे रहित था। वह राज्यकी व्यवस्था पर ध्यान न दे कर अपने आरामकी तरफ ही विशेष ध्यान देता था। हिताहितकी बातोंकी उसे पहचान न थी।

राव शिवसिंहजीने नवाब कामयाबखांको जब गद्दी दिलवाई थी, तब अपने श्वसुर भावसिंहजी बीदावतको उन्होंने नवाबका कामदार नियत किया था। नवाब कामयाबखांने गद्दी पानेमें कामयाब हो कर भावसिंहजी और चूड़ी, वेसवाके कायमखानियोंको थोड़े दिनों बाद ही अपने राज्य फतहपुरसे निकाल बाहर किया। राव शिवसिंहजीने यह बात सुनी। उन्होंने इसे एक अच्छा मौका समझा। तुरन्त शार्दूलसिंहजीको बुलवाया और उनसे सलाह करके चैत्र-कृष्णा १३ संवत् १७८७को फतहपुर पर दो हजार घुड़सवारोंकी सेना ले कर चढ़ आये।

समस्त कायमखानी, झुंझुणूकी तरह फतहपुरको अपने हाथसे जाता देख कर एकत्रित हो नवाबके पक्षमें आ डटे। केवल वेसवाके कायमखानी नहीं आये।

शेखावतों और कायमखानियोंमें प्रबल युद्ध हुआ। दोनों तरफके योद्धा प्रबल विक्रमसे लड़े, जिनमें कई घायल हुए और कई मारे गये। चारों तरफ रुधिरसे लथ-पथ रुण्ड और मुण्ड ही नजर आते थे।

निदान नवाब सरदारखां घायल हो गया[1] और नवाब कामयाबखां मैदान छोड़ कर भाग-गया।[2] जिसके फलस्वरूप कायमखानियोंकी पराजय हुई। उनसे राज्य छीन कर शेखावतोंने उस पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। संवत् १७८७की समाप्तिके रोजसे राव शिवसिंहजी फतहपुरके शासक पद पर आरूढ़ हुए।

उपसंहार

फतहपुर राज्यके हाथसे चले जानेके बाद कायमखानी हार मान कर चुप न बैठ सके। वे राज्यको फिर हस्तगत करनेके लिए कोशिशें कर रहे थे। उन्होंने दिल्ली जा कर तत्सामयिक मुग़ल बादशाह मुहम्मदशाहके दरबारमें शेखावतोंके विरुद्ध दावा पेश किया, लेकिन शेखावतोंने पहलेसे ही सवाई जयसिंहजी (द्वितीयको) जो कि दरबारके मान्य व्यक्ति थे फतहपुर पर अधिकार-स्थापनकी कथा कह सुनाई थी। जिससे उनकी इच्छित बात ही शाही रजिस्टरोंमें दर्ज हो गयी थी, इससे कायमखानियोंके दावे पर ध्यान न दिया गया। फतहपुर पर राव शिव-सिंहजीका ही अधिकार रहा।

संवत् १८०८में कायमखानियोंने समर्थसिंहजी और चांदसिंहजीकी अनुपस्थितिमें* सिन्धी

---

१ नवाब सरदारखां, आहत दशामें ही हिसार ले जाया गया, जहां पर उसका प्राणान्त हो गया।

२ नवाब कामयाबखां, भाग कर कुचामण (मारवाड़में) चला गया। वहीं अपनी जिन्दगीके दिन पूर्ण होने पर मृत्युको प्राप्त हुआ। उसकी सन्तान आज तक कुचामणमें विद्यमान है।

* समर्थसिंहजी और चांदसिंहजी, जोधपुरके महाराजा अभयसिंहजीके पुत्र रामसिंहकी सहायतार्थ गये हुए जयपुरके महाराजा ईश्वरीसिंहजीके साथ जानेके कारण अनुपस्थित थे।

और बिलोचियोंकी सेना सहित फतहपुर पर चढ़ाई की और उसे हस्तगत कर लिया। चांदसिंहजीने यह समाचार सुन कर लाड़खानियों और अपने मामोंसे सैनिक सहायता ले कर फतहपुरके लिए प्रस्थान किया। सीकरसे बुधसिंहजी ससैन्य आ पहुंचे। फतहपुर पर आक्रमण करके कायमखानियोंके हाथसे वह छीन लिया गया। तदनन्तर फिर संवत १८३१में कायमखांनियोंने बादशाह शाहआलम (द्वितीयसे) मदद मांगी। उसने पीरूखां बिलोची और मित्रसेन अहीरको सेना दे कर शेखावाटी पर भेजा। राव देवीसिंहजी शेखावत सेना सहित जयपुरकी सैन्य सहायता प्राप्त कर मैदानमें आ गये। लड़ाई "मांडण" गांवमें हुई। लड़ाई होते-होते अन्तमें पीरूखां धराशायी हुआ और मित्रसेन भाग गया। अपने प्रमुखको भागा देख कर सेना भी पलायित हुई, इस तरह शेखावतोंने विजय पायी।

तत्पश्चात् संवत् १८३६में बादशाह शाह आलम द्वितीयने पुनः एक सेना कायमखानियोंकी सहायता - स्वरूप शेखावटी पर आक्रमण करनेके लिए भेजी। शेखावतोंके पक्षमें जयपुरपतिकी भेजी हुई एक सेना और ससैन्य अलवर नरेश प्रतापसिंहजी आये। दोनों पक्षोंमें घमासान युद्ध हुआ। अन्तमें शाही सेनाकी पराजय हुई और उसका सेनापति निराश हो कर दिल्ली चला गया।

एक सेना फिर कायमखानियोंको सहायतार्थ दे कर संवत् १८३७में बादशाह शाह आलम द्वितीयने शेखावाटी पर भेजी। राव देवीसिंहजी शेखावतोंको एकत्रित कर "खाटू"के मैदानमें आ डटे। युद्ध आरम्भ हो गया। सहस्त्रों मनुष्य दोनों तरफ मारे गये, परन्तु किसी पक्षकी विजय नहीं हुई। दोनों तरफके योद्धा लड़ते-लड़ते बहुत अधिक थक चुके थे, निदान बादशाही सेना दिल्ली लौट गयी और शेखावत अपने स्थानोंको चले गये।

———

(क) नवाबोंकी हैसियत।

तहपुर पर नवाबोंने संवत् १७८७ तक २७९ वर्ष राज्य किया। इतने कालमें १२ नवाब गद्दी पर बैठे, जिनमें प्रारम्भके ८ तो शक्तिशाली और सामर्थ्यशाली हुए और बादके ४ कमजोर। नवाब अलिफखां (फतहपुरका ७ वां नवाब) सर्वश्रेष्ठ नवाब हुआ।

इन नवाबोंकी हैसियत बहुत ऊंची थी। दिल्ली बादशाहोंके यहां भी ये नवाब ही कहलाए। दिल्ली दरबारमें नवाब ताजखां (२), नवाब अलिफखां और नवाब दौलतखां (२) बराबर जाते रहे। अपने समसामयिक सम्राटोंकी ओरसे इन्होंने अनेक लड़ाइयां वीरतापूर्वक लड़ीं और उनके लिए सम्मान पाया।

(ख) नवाबोंका राज्य-विस्तार ।

आजकी शेखावाटी नवाबोंके शासन-कालमें फतहपुरवाटी और झुंझुंणूवाटीके नामसे प्रसिद्ध रही है, बादमें परम प्रतापी राव शेखाजीके नामसे इसका नाम शेखावाटी पड़ गया ।

इसका नवाबी शासन कालका भूमि-विस्तार कितना था, इस सम्बन्धमें यथेच्छ जानकारी मुझे नहीं हुई; यद्यपि इस बारेमें मैंने काफी छानबीन भी की; पर जितना, इतिहासोंमें इस सम्बन्धका उल्लेख मिलता है, उससे यह तो भली भांति अनुमान लगाया जा सकता है कि फतहपुर वाटी और झुंझुंणूवाटीकी भूमि दूर तक विस्तृत थी जोधपुरमें सम्मिलित झाटोदकी पट्टीके ५७ गांव और बीकानेरमें सम्मिलित फतहपुर पट्टीके १२० गांव * जिनमें रतनगढ़ और चूरू भी हैं, नवाबोंके शासनकालमें फतहपुरवाटीके ही अंतर्गत थे ।

परिशिष्ट नं० ४

क्यामखानी नवाबोंके बसाये हुए गाँव

१. फतहखाँने फतहपुर बसाया (रासाके अनुसार सं० १५०८में) ।

२. मुहम्मदखाँने जुझा जाटकी सलाहसे झुंझणू बसाया (विशेष आबाद किया) ।

३. नवाब जलालखाँने जलालसर बसाया जो फतहपुरके दक्षिण ३ कोस पर है । इसने पशुपक्षीके लिए १२ कोस घेरेका बीहड़ रखा जो आज भी है ।

४. नवाब दौलतखाँ (१) ने दौलताबाद गाँव बसाया जो फतहपुरका एक मोहल्ला है ।

५. नाहरखाँने नाहरसर गाँव बसाये, ये फतहपुरके उत्तर दक्षिणमें ४-४ कोस पर हैं ।

६. फदनखाँने फदनपुरा गाँव बसाया जो फतहपुरके ३ कोस उत्तरमें है ।

७. ताजखाँ (२)ने ताजसर गाँव बसाया जो शहरसे ३ कोस पर है ।

८. अलिफखाँने अलिफसर गाँव बसाया जो फतहपुरसे दक्षिण पूर्वमें ५ कोस पर वेषय ग्रामके पास है ।

९. दौलतखाँने दौलतपुरा गाँव बसाया जो वर्तमानमें बीकानेर राज्यमें है ।

१०. सरदारखाँने सरदारपुरा बसाया ।

११. दीनदारखाँने दीनपुरा झूंझणूके रास्तेमें बसाया ।

नवाबोंके लड़कोंके नामसे भी कई गाँव बसाये गये हैं ।

---

* फतहपुर पट्टीके ये गांव राव लूणकरणने नवाब दौलतखां (१) से ले लिये थे । इस बारेमें अधिक जानकारीके लिए इसी पुस्तकके तीसरे खण्डमें "नवाब दौलतखां (१)" शीर्षकके अन्तर्गत देखिए ।

१. ताहिरखाँके नामसे ताहिरपुरा।

२. रसीदके नामसे रसीदपुरा।

फतहपुर किला नवाबोंका स्मारक है ही। अन्य स्मारक इस प्रकार हैं —

१. नवाब फतेहखाँ (१) वीर सेनापति बहुगुनाको जालके पेड़के नीचे दफनाया। वहाँ उनकी कब्र आज भी है, पासमें कुआ है, जिसको बोहगुणका कुआ कहते हैं।

२. दौलतखाँ (१की) कब्र किलेके नीचे दक्षिणमें आज भी हिन्दू मुसलमान दोनोंसे पूजित है।

३. नवाब अलीफखाँके दफन स्थान पर दौलतखाँने [1] मकबरा बनाया जो उल्लेखनीय व दर्शनीय-स्मारक फतेपुरसे पूर्वकी ओर है।

४. सं० १६७१में अलिफखाँके समय दौलतखाँकी देखरेखमें नागौरके शेख महमूदने बड़ी उल्लेखनीय[2] बावड़ी बनाई जो आश्चर्यजनक व दर्शनीय है।

५. सरदारखाँ (द्वितीयकी) रखेली तेलनका महल किलेमें आज भी तेलनके महलके नामसे प्रसिद्ध है।

६. जलालखांने बीहड़ १२ कोसकी रखी जिसमें पशु चरते हैं।

———०———

परिशिष्ट न० ५

क्यामखानी दीवानोंका वंश-वृक्ष

१. दीवान क्यामखाँ (सं० १४४१से ७५)

१. ताजखाँ, २ मुहम्मदखाँ, ३ कुतबखाँ, ४ इखतियारखाँ, ५ मोमनखाँ।

२. (सं० १४७७-१५०३)

१. फतिहखाँ, २ रूका, ३ फखरदी, ४ मोजन, ५ इकलीमखाँ, ६ पहाड़ा।

३. (१५०३-३१.)

१. जलालखाँ, २ हैबतसाह, ३ मुहमदसाह, ४ असदखाँ, ५ हरियासाह, ६ साह मनसूर ७ शेख सलह, ८ बलों, ९ संग्रामसूर, १० हेतम।

---

१ इसका परिचय व चित्र फतहपुर परिचयमें प्रकाशित है।

२ इसका परिचय व चित्र फतहपुर परिचयमें प्रकाशित है।

४. (१५३१-४६)

१. दौलतखाँ, २ अहमदखाँ, ३ नूरखाँ ४ फरीदखाँ, ५ निजामखाँ, ६ पहाड़खाँ, ७ लाड़खाँ ८ दाउदखाँ, ९ अबन, १० महमदसाह।

५. (१५४६-७०)

१. नौहरखाँ, २ होबनखाँ, ३ बाजिदखाँ।

६. (१५७०-१६०२)

१. फदनखाँ, २ बहादरखाँ, ३ दिलावरखाँ।

७. (१६०२-९)

१. ताजखा, २ पेराजखाँ, ३ दरियाखाँ।

८. (१६०९-२७)

१. महम्मदखाँ, २ महमूदखाँ, ३ सेरखाँ, ४ जमालखाँ, ५ जलाखाँ, ६ मुजफरखाँ, ७ हेबतखाँ, ८ हबीबखाँ।

९. (१६२७-८३)

१. दौलतखाँ, २ न्यामतखाँ, ३ सरीफखाँ, ४ जरीफखाँ, ५ फकीरखाँ।

१० (१६८३-१७१०)

१. ताहरखाँ, २ मीरखाँ, ३ असदखाँ।

१. सरदारखाँ।

११. (सं० १७१०-३७)

फदनखाँ (क्यामरासा इसकी विद्यमानतामें बना) यह असमयमें स्वर्गवासी हो गया। इससे सरदारखाँने अपने भाई दीनदारखाँको राज्याधिकार दे दिया।

फतहपुर परिचय ग्रन्थमें वंश वृक्ष दे दिया है; उसमें कुछ नामान्तर व अधिक नाम ये हैं—

१. क्यामखाँका अहमदखाँ नामक एक और पुत्र बतलाया है। मोमनखाँको मोहनखाँ लिखा है।

२. दौलतखां (१के) पुत्रोंके नामोंमें नं० ७-९-१० नामोंके बदले १ बहारखाँ, २ एमनखाँ, ३ दरियाखाँ है।

३. नाहरखाँके पुत्र होव्वनखाँका नाम जोवनखाँ लिखा है।

४. दौलतखाँके पुत्र फकीरखाँका नाम फकखाँ लिखा है।

५. ताहरखाँके पुत्र मीरखाँका नाम महरखाँ दिया है।

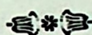
६. सरदारखाँके बाद उसका भाई दीनदारखाँ दीवान हुआ, राज्यकाल (सं० १७३७से-६०)।

———०———

क्यामखां रासा

अथवा

रासा श्री दीवान अलिफखांका



॥ दोहा ॥ सिरजनहार बखानिहौं, जिन सिरज्यौ सँसार ।
खं भू गिर तर जल पवन, नर पस पंछी अपार ॥१॥
येक येक ते जात बहु, कीनी है जग मांहि ।
अनंत गोत कवि जांन कहि, गनती आवत नांहि ॥२॥
दोम महंमद उच्चरो, जाकैं हितकै काज ।
कहत जांन करतार यहु, साज्यौ है सब साज ॥३॥
कहत जांन अब बरनिहौं, अलिफखांनकी जात ।
पिता जान बढ़िनां कहौं, भाखौं साची बात ॥४॥
अलिफखांनु दीवानकौं, बहुत बड़ौ है गोत ।
चाहुवांनकी जोटकौ, और न जगमें होत ॥५॥
अलिफखांनकै बंसमें, भये बड़ै राजांन ।
कहत जांन कछु येक हौं, सबकौं करौं बखान ॥६॥
बात अलिफखांकी कहौं, सब पाछै कहिं जांन ।
किहिं बिधि जीये जगतमें, कैसें मरे निदान ॥७॥
बड़े बड़े साके कीये, अलिफखांन जग मांहि ।
पातसाहकै कामकौं, ज्यों पुनि राख्यौ नांहि ॥८॥
नूर महंमदको रच्यो, पहले सिरजनहार ।
ताहीते कवि जांन कहि, भयो सकल सँसार ॥९॥
तौ नभ रबि तारे ससि, सुरग नूर तें कीन ।
रचे फिरसते नूरके, करे नबी आधीन ॥१०॥

धर गिरवर सांगर रचे, पाछे दानव देव ।
अंत रचे मानस अलख, कहत न आवहि भेव ॥११॥
जबहि भयौ करतारको, मनुष रचनको चाइ ।
तब पहले [जिनकौ] कीयो, सुनहु कथा चित लाइ ॥१२॥
कहत जांन कवि जानियो, ग्रंथनिको मत गांव ।
माटीतैं पैदा भयौ, तातें आदम नांव ॥१३॥
मांनस भये जहांनमैं, ते सगरे कहि जांन ।
आदम पाछै आदमी, हेंदू मुसलमांन ॥१४॥
येक पिंड इन दुहुंनकौ, नां अन्तर रत चांम ।
पै करनी नाहिंन मिलै, तातें न्यारे नांम ॥१५॥
बातें बहु संतत भई, गनती आवत नांहि ।
आदम बरस सहस लौं, जीयो जगती मांहि ॥१६॥
आदम पैगंबर भयो, प्यार कीयो करतार ।
पहले बैकुंठ राखकै, फिर पठयो सैंसार ॥१७॥
जिते पुत्र आदंम भये, सबमै टीकौ सीस ।
हूर बरी हूवो नबी, दया करी जगदीस ॥१८॥
नौसै बारह बरस लौ, सीस रह्यौ जग मांहि ।
सेवा करताकी करी, चुख अरसायो नांहि ॥१९॥
भयो सीसकै जांन कहि, बडड़ो पुत्र उनूस ।
निस बासुर करतारकी, सेवा करी अदूस ॥२०॥
नौसै पैंसठ बरस लौं, भयो न जगतैं दूर ।
याते उपज्यो जगतमैं, तरवर तरल खजूर ॥२१॥
भयो जु पुत्र उनूसकैं, नांव ताहिकी नांन ।
नौसै बासठ बरस लौ, सुखरसु कीये जहांन ॥२२॥
नीके मंदिर कोट गढ़, उपजै जगती मांहि ।
सो याहीते जांन कहि, पहले जानत नांहि ॥२३॥

ताकौ महलाइल सुत, रूपवंत कहि जांन।
वाकौ देखन आइ है, मिलि मिलि सकल जहांन ॥२४॥
यजद ताहि नंदन भयो, दयो न करता ग्यांन।
अपने घरमंहि छांडकै, पंथ चलायो आंन ॥२५॥
भयो यजदकै जांन कहि, पैगांबर इदरीस।
डंकरि कैफिरि यों करै, ये चरित्र जगदीस ॥२६॥
साठ पंच अरु तीन सौ, बरस रह्यौ जग मांहि।
अजहूं जीवै सुरगमैं, मरै प्रलै लौ नांहि ॥२७॥
ताकौ सुत मसतूस लख, धर्म छाडि जिन दीन।
लमक भयो ताको नंदन, बहु पुनि सेवा हीन ॥२८॥
ताकै नूह नबी भयो, नौ सै बरस पचास।
धरम पंथ सब जगतमें, नीकैं कर्‌यो प्रकास ॥२९॥
प्रगट बात है नूहकी, सब ग्रन्थनिकै मांहि।
मैं ताते कबि जांन कहि, यामैं आंनी नांहि ॥३०॥
तीन भये सुत नूहकै, सुनि लै तिनकौ नांम।
लघु याफस मधि हांम है, बडड़ौ जांनौ सांम ॥३१॥
अरबी रूमी सांमकै, पुनि ईराक खुरसांन।
अरबी ताई अस अरी, अजदी अरु मसरांन ॥३२॥
अरां अरमंन पारसी, भये जु नबी जहांन।
सकल सामकै बंसमैं, अरु चहुवांन पठांन ॥३३॥
और हांमकै बंसमैं, येती जात बखांनि।
उजबक हिंदी बरबरी, हबसी कुवती जांनि ॥३४॥
याफस ते सकलाबके, परतासी यों मांन।
फिरंग रूस चगता तुरक, चीमां चीन पिछांन ॥३५॥
साम बड़ो सुत नूहको, धरम पंथ गहि लींन।
इमन भयो ताको नंदन, कोइ बात न हींन ॥३६॥

उज भयो घर इरमकैं, ताकैं भयौ समूद।
वै पुनि ज्वाला कालकी, जरि निंबरे ज्यो ऊद ।।३७।।
वाकैं राजा आद हुव, ताके पुत्र अनाद।
तातें भयो जुगाद जग, तिहं नंदन ब्रह्माद ।।३८।।
मेर भयो ब्रह्मादकै, अरु मंदिर घर तास।
मंदिरकै घर जांन कहि, उपज्यौ सुत कैलास ।।३९।।
वाकै भयौ समुद्र सुत, जाके उपज्यौ फेंन।
ताकैं बसिग अतुलि बल, संम न करैं बलि बैंन ।।४०।।
बसिगको सुत राह है, है साहंसीक मल सूर।
दुर्जनकौं ऐसें गहत, राह गहत जिम सूर ।।४१।।
रावन है सुत राहकौ, धुँधमार सुत ताहि।
भयो चक्रवै जगतमैं, उपमा दीजै काहि ।।४२।।
परगट सकल जहानमैं, करिहौं कहा बखांन।
उदै अस्त लौं जांन कहि, धुँधमारकी आंन ।।४३।।
प्रगट्यो तिहिं मारीच सुत, प्राची और प्रतीच।
बदन किरन यों जगमगै, जैसे सूर मिरीच ।।४४।।
वाकैं राजा जमदगिन, बिध सुमिर्यो करि चाइ।
परसराम तिहं सुत भयो, चार चक्कको राइ ।।४५।।
परसरामके जुद्ध सब, बरने नाहिंन जाहि।
जो बरनौं तौ जांन कहि, लिखनंहार अर नांहि ।।४६।।
परसराम सुत सूर है, ताकैं बछ बड़ जोत।
चाहुवान है जगतमैं, ते सब बछ सगोत ।।४७।।
चाइ भयो सुत बछकौ, बिधु सुमिर्यो करि चाइ।
चाहुवांन तिहि सुत भयो, करता आयो भाइ ।।४८।।
चाहुवांन यातें कह्यो, चहूं कूटमें आंन।
सगरै जंबू दीपमैं, संम कौ गोत न आंन ।।४९।।

संभर लयो निकास जिहं, ताकी संम सर कौन ।
सब ही कोउ खातु है, चाहुवांनको लौंन ॥५०॥
संभरकी लौंनी धरा, तित उपजे कहि जांन ।
लौन हि लाज नं मारि है, हैं जित लौं चहुवांन ॥५१॥

॥ सवैया ॥ देवनमें देवराज, गजनिमैं गजराज,
पंछी पंछराज, ग्रहनिमें तपु भांनकौ ।
सरितामैं ज्यों समंद, बोहिथ नौका निब्रिंद,
उडिनमें इंद, पत्रनिमें भोग पांनकौ ।
गिरिनमैं सुमेर, दरगाहनिमैं अजमेर,
खाननमें मांन, जैसौ कंचनकी खांनकौ ।
फूलनि मधि गुलाल, चूनियनि जैसौ लाल,
राइनमें तैसो गोत, चक्रवै चौहांनकौं ॥५२॥

॥ दोहा ॥ कलप बिछ चहुवान है, जाकै अनगन साख ।
जो हौं जानौ जांन कहि, सु तो सुनाउ भाख ॥५३॥

॥ सवैया ॥ क्यामखांन देवरे, सीसोदीये भदोरिये,
चितोरीये बाघोर मल, खीची निरबान जू ।
चाहिल मोहिल माहो, दूगर बालेसे जौर,
सोनगरै गिल खोर, मांदलेचे मांन जू ।
गुहिलौत उमंट, साचौरे गोधे राकसिये,
हाले झाले दाहिमैं कहि [कवि] जांन जू ।
गूंदल बालोंत हाडे छोकर घंघेरे खैल जू
जेती सब साखनिकौ मूल चहुवांन जू, ॥५४॥

॥ दोहा ॥ बारोरिये धुकारने, चीबे गोवल वाल ।
हुल तावर डल होर पुनि, चाहुवांनकी डाल ॥५५॥
पंड सूर आसोफ पुनि, पीपारे कहि जांन ।
गोतम दागी अरु मरिल, सबन मूल चहुवांन ॥५६॥
चाहुवानकै बंसमैं, भये छत्रपति राइ ।
तिनकी कथान जै कथी, नांव कह्यौ समझाइ ॥५७॥

राज कीयौ है दिल्लीमैं, मानिकदे चहुवांन ।
दोइ बरस षट मास लौं, सतरह दिन कहि जांन ।।५८।।
पाछैं दिल्लीमैं भयो, देवराज चहुवांन ।
तीन मास द्वै बरस लौं, सत्रह दिन कहि जांन ।।५९।।
पाछैं दिल्लीमें भयौ, रावलदे चहुवांन ।
सात द्योस नौ बरस लौं, राज कीयौ कहि जांन ।।६०।।
पाछै दिल्लीमैं भयौ, देवसीह चहुवांन ।
तीन मास षट बरस लौं, राज कीयौ कहि जांन ।।६१।।
येक मास बाईस दिन, दस बरसनि स्योंदेव ।
राज कीयौ है दिल्लीमैं, सब मिलि कीनी सेव ।।६२।।
वा पाछै बलदेव है, राखन कुलकी लाज ।
पंच वरस दिन एक दस, करचौ दिलीमैं राज ।।६३।।
प्रिथीराज पाछै भयौ, दिल्लिपति चहुवांन ।
ग्यारह दिन दुने बरस, रही जगतमैं ग्रांन ।।६४।।
दूब काबिली दिल्लीमैं, लई मंगाइ मंगाइ ।
घरी घरी ग्रावत हरी, चरी तुरंगनि खाइ ।।६५।।
प्रिथीराजकी बरनना, मोपै करी न जाइ ।
साके गनना हि न सकौ, कहा कहौं समझाइ ।।६६।।
ग्रौर बंस चहुवांनकै, राजा भये ग्रपार ।
बीसल ग्राना जांन कहि, हठी हमीर मुछार ।।६७।।
जिती जात रजपूतकी, सगरे हिंदसतान ।
सबमें निहचै जानियो, बड़ौ गोत चहुवांन ।।६८।।
चाहुवांन सुत मुनि ग्ररु, मुनि मानिक जैपाल ।
येक भयो जोगी ग्रमर, तीन भये भोवाल ।।६९।।
मानिक कुल प्रिथीराज हुव, सोमेसुरको ग्रंस ।
जिते राठ चहुवांन है, ते ग्ररिमुनिकै बंस ।।७०।।

चाहुवांन जब चलि गयो, मुनि बैठ्यो उहि ठौर ।
कूचौरैहूमैं रह्यौ, केतक दिन सिरमौर ॥७१॥
मुंनि राइकैं जानियो, भयो राइ भोपाल ।
कह कलंग ताकै भयौ, सूरा गोत गुवाल ॥७२॥
घंघरान ताकै भयौ, कीनौ घांघू गांव ।
अपनी भुज वर जातमै, नीकौ कीनौ नांव ॥७३॥
चढ्यौ अहेरै येक दिन, घंघ राइ कहि जांन ।
म्रिग छौना टौनां मनौ, देख्यौ चरत उद्यान ॥७४॥
चौंप भई जिय राइकें, पकरौं दै गर चाप ।
सब दल ठाढ़ौ छाड़िकै, गयौ अकेलो आप ॥७५॥
म्रगसावक तब भजि चल्यौ, पाछै धायो राइ ।
घंघ [राइ] तुरंग पुनि, चले चढ़े रथ बाइ ॥७६॥
बहुत वार जब ह्वै गई, राजा आयो नांहि ।
तब सेवक सब बिकल ह्वै, सोधत है बन मांहिं ॥७७॥
बन बन सेवक फिरत है, तन मन भैंट न चाहि ।
चिंता अंन अंन भांतकी, अनगन व्यापति ताहि ॥७८॥
सुनहु बात अव राइकी, चित अति बढ़्यौ उमंग ।
आगैं पाछै जात हैं, निकट कुरंग तुरंग ॥७९॥
जात जात कवि जांन कहि, लोह गिरकै पास ।
छलकै छौनां छपि गयो, भयो नरेस उदास ॥८०॥
सोधि रह्यो नाहिन लह्यो, तकी ब्रिछकी छांहि ।
नैन सजल उर धकधकी, चिंत बढ़ी चित मांहि ॥८१॥
सर्ल तर्ल तरकाज तित, तातर निर्मल कुंड ।
तहां अपछर झुंड है, हर्नछी ससितुंड ॥८२॥
चार अपछरा चार छबि, करत कुंड असनांन ।
पांनिकौ पांनिपु चढ़ी, अंगलगे कहि जांन ॥८३॥

॥ सवैया ॥ करत सनांन, सर रूपकी निधांन,
बांम अति अभिरांम, अैसी उपमां बखांनी है ।
अंगकी झमक दमकनि अैसी लागति है,
असित घटामैं दामनीसी चमकांनी है ।
कै तौ अैसी भांति तंन कांतिकी है सोभा देत,
ससि प्रतिबिंब देखियत मधि पानी है ।
मानहुं अगिन झाई, जलमांहि प्रगटाई,
कै तौ बड़वानल सलिल भभकानी है ॥८४॥

॥ दोहा ॥ बसतर छाडे पाल सर, न्हावन पैठी बांम ।
लीना घंघ उचाइकै, पूजे मनसा कांम ॥८५॥
वसन लेत राजा तक्यौ, परी परी मुरझाइ ।
सूर छपें ज्यौं नीरमैं, कंवल रहै कुमिलाइ ॥८६॥
द्रिग आसू उर धकधकी, बकी लगी मुख रांम ।
बसतर बिना न उडि सकै, रही उघारी बाम ॥८७॥

॥ सवैया ॥ अंबर देहु हमारे, जात उघारी हहा रे !
खरी हम लाज मरैं, दुख पावै महा रै ।
जीभ थकी बकतैं,तुमसौं सुनतैं,चुख कांन तिहारे न हारे ।
आवै सनांनकौ दीजिये जांनन यामै कहौ तुम पुंन कहारे ।
ठाढ़ी रही जल पोत कीये हम अंबर देहु हमारे हहारे ॥८८॥

॥ दोहा ॥ तब हि घंघ उनिसौं कह्यौ, सुनि लै सांची बात ।
येक बरौ जौ चहुंनिमै, तौ ढापौ तुम गात ॥८९॥
कहै अपछरा राइसौं, अैसी हुई न होइ ।
हम तुममैं कैसे बनैं, जात गोत ही दोइ ॥९०॥
तूं मानस हम अपछरा, कैसें बनिहै बात ।
अबलौं काहू नां तके, येक संग दिन रात ॥९१॥
राइ कह्यौ सुनि अपछरा, यहु समझौ चित मांहि ।
जब हिं पीति तन ऊपजै, जात गोत सुधि नांहि ॥९२॥

जौ लौं जीउ जगतमैं, हां तो ह्वै हो नांहि ।
जौ तुम जिय तौ अंग हूं, तुम घट तौ हौं छांहि ॥९३॥
कै तुम लेहु मिलाइ मुहि, उरत फिरौं तुम मांहि ।
कै तुमकौ मानस करौं, बसतर दैहों नांहि ॥९४॥
काहेकौ बिललातु हौ, मया न आवत मोहि ।
मन बदलै बसतर लयै, सो कैसै द्यों तोहि ॥९५॥
सोच कर्‌यो चित अपछरा, बसतर नाहिंन देत ।
जो लौं हममैं देखि कै, येक हि ना चुनि लेत ॥९६॥
बसतर नाहिंन देत है, कीने जतन अनेक ।
सब जलमें कोलौं रहै, दैहौं याको येक ॥९७॥
तब हि कह्यौ सुनि राइ जू, बसन हमारे देहु ।
जासौं उरझे नैनं तुम, येक बीन सो लेहु ॥९८॥
सबमें नान्ही बैंसकी, बीन लइ तब राइ ।
बनमैं जल प्यासै लह्यौ, फूल्यौ अंग न माइ ॥९९॥
बोल बचन कर राइनै, बसतर दीने आंनि ।
चारौं आइ घंघपै, बनि बनि बानिक बानि ॥१००॥
येक दई तब राइकौ, रीति भांति करि ब्याह ।
तबहि संग करि लै चल्यौ, पूजी चितकी चाहि ॥१०१॥
लही सुहारी फल लहत, कहत जांन परबीन ।
धावत पाछैं हरनकै, हरनंछी बिध दीन ॥१०२॥
तीन जंने सुत अपछरा, कन्ह, चन्द पुनि इंद ।
येक येकतें सरस हैं, तीनों भये नरिंद ॥१०३॥
चंदवार चंदे करी, इंद करी इंदोर ।
कन्हर देव सुजान कहि, रहे पिताकी ठौर ॥१०४॥
घंघ रान पुनि अपछरा, आनंद कीये अपार ।
अंत भये बस कालकै, यहै रीति सैंसार ॥१०५॥

अंत कलाही कन्हपै, आइ छिड़ाई ठौर ।
तब राजा अमरा भयो, चाहुवांन सिरमौर ॥१०६॥
अमरा अजरा सिधरा, पुनि बछरा ये चार ।
कन्हरदेके पुत्र हैं, प्रगट भये संसार ॥१०७॥
अजराते चाहिल भयो, सिधरा जौर जहांन ।
बछरातें मोहिल भये, अमरेतें चहुवांन ॥१०८॥
अमरा सुत जेवर भयो, राज कर्‌यो जग मांहि ।
अंत मर्‌यो या जगतमें अमर अजर को नांहि ॥१०९॥
ताकै गूगा बैरसी, सेस धरह ये चार ।
राज कर्‌यो केतक बरस, अंत तज्यौ सैंसार ॥११०॥
गूगैकै नानिग भयौ, सेस सु गयौ अऊत ।
कहत जांन भोथर भरह, भये धरहके पूत ॥१११॥
उदराज सुत बैरसी, ताको सुत जसराज ।
तिह सुत केसोराइ है, समरथ सगरैं काज ॥११२॥
बिजैराज हरराज जुग, केसोनंद बखांन ।
है संतत हरराजकी, पर्वतमैं कहि जांन ॥११३॥
बिजैराजकै जांन कहि, भयो पदमसी पूत ।
प्रिथीराज ताकैं भयौ, राज कीयो अदभूत ॥११४॥
लालचंद ताकै भयौ, वाकै अजै जु चंद ।
याकै सुत गोपाल है, हरनहार दुख दंद ॥११५॥
तिंह सुत उपज्यौ जैतसी, समसर करै न कोइ ।
पुंनपाल ताकैं भयो, पुंननिहि सुत होइ ॥११६॥
मूलराज मल असरथ, दौंका सांगा जानि ।
रातू पातू और महियल, सुत जैत बखानि ॥११७॥
पुंनपालकौ रूप है, रावन है सुत ताहि ।
तिहुंनपाल याकै भयौ, लाज गोतकी ताहि ॥११८॥

तिहुंनपाल सुत ऊपज्यो, मोटेराइ सकाज ।
निस बासुर सुखसौं कीयौ, ददरेवैमें राज ।।११९।।
ताकैं उपज्यौ करमचंद, प्रकट भयो सब ठांव ।
तुरक करचौ पतिसाहजू, धरचो क्यामखां नांव ।।१२०।।
मोटे राके चार सुत, क्यामखांन भोपाल ।
और जैनंदी सदरदी, हिन्दू रह्यौ जगमाल ।।१२१।।

श्री दीवान क्यामखान पुत्र—ताजखां १, महंमदखां २, कुतुबखां ३, इखतियारखां ४, मोमनखां ५ ।

क्यामखांनको बखांन

।। चौपाई ।। करमचंदकी बरनौं बाता, कैसें कीनौ तुरक विधाता।
कुंवर करमचंद खेलत डोलत । अधिक सिरिस्ट बचनमुखबोलत।। १२२।।
येक द्यौं सवहु चढ़चो अहेरैं । भाई बंधव हे वहु नेरैं ।
साबर हरंन रोझ बहु पाये । गहिबेकौं सबहि ललचाये ।।१२३।।
आप आपकौं सब उठि धाये । भूलि परे बनमें भरमाये ।
सबै अहेरैंके मदमाते। आप आपको डोलैं ह्रातैं ।।१२४।।
करमचंद इक बिरछ निहार्‌यौ । बैठ्यौ जाइ हुतौ अति हार्‌यौ ।
घोरा बांधि डारि सकलात । पौढ्यौ कुंवर दैन सुख गात ।।१२५।।
आई नींद गयो तब सोइ। ढरि गइ छांह दुपहरि होइ ।
फेरोसाह दिली सुलतांन । चारौ चकमैं जाकी आंन ।।१२६।।
उतरै हे हिसारमें आइ । इक दिन चढ़े अहेरैं चाइ ।
आवत आवत उहि ठा आये । कुंवर बिरछतर सोवत पाये।। १२७।।
सकल बिरछ छइयां ढरि गई। वा तरवरकी दूरि न भई ।
पातसाह अचरजकी बात। देखि देखि अति ही भरमात ।।१२८।।
नासिर सैद बुलायौ पास । जो देखौ सो कर्‌यौ प्रकास ।
अचरज रहे सैद पतिसाहि । महापुरुष कोउ यहु आई ।।१२९।।
कह्यौ जगाइ पाइ इह लागै। सूते भाग हमारे जागै ।
साहस करिकै कुंवर जगायौ । हिंदू देख बहुत भरमायौ ।।१३०।।

हिंदू मांहि न होइ करामत । इन कैसै कै पाई न्यामत ।
सैद कह्यौ ऐसी जिय आवै । अंत पंथ तुरकनि यहु पावै ।।१३१।।
पूछ्यौ तब हि कहा तुव जात । रहत कहां साची कहु बात ।
ददरेवौ रहिबेको ठाँव । मोटेराव पिताको नांव ।।१३२।।
बंस हमारौ है चहुवांन । नाम करमचन्द कहत जहांन ।
पातसाहनें निकट बुलायौ । बहुत प्यारसौं गरैं लगायो ।।१३३।।
कह्यो संग मो चलि चहुवान । दै हौ तांकौं आदर मांन ।।१३४।।

।। दोहा ।। कर्मचंदते फेरिके, धरयो क्यामखां नांम ।
पातसाह संगहि लये, आयो अपनी ठांम ।।१३५।।

।। चौपाई ।। तब हिं सैद नासर यों कह्यौ । तुम मेरे भार्गनि यहु लह्यो ।
मोकौं देहु जु याहि पढ़ाउ । तुम लाइक करि तुमपैं लाऊं ।।१३६।।
पातसाह भाख्यो यहु भाख । पायौ रतन जतन सौं राख ।
क्यामखांन संग चढ़े अहेरै । ते सब गये आपुनै डेरै ।।१३७।।
करमचंद घर आयो नाहीं । रोर परी ददरेवै मांही ।
येक परेवा सैद पठायो । ये ते मांहि लैन वहु आयो ।।१३८।।
मोटाराजा गयो हिसार । पातसाह कीनौं बहु प्यार ।
कह्यो करमचंद मोकौं देहु । जो भावै सो बदलौ लेहु ।।१३९।।
तुरक भयेकी करिहु न चिंत । याकौं राखो ज्यो सुत मित ।
याकौं करिहौ पंच हजारी । साँचु कहत हौं बांह हमारी ।।१४०।।
कर तसलीम कह्यो यों राइ । दिलीपति जो करे सु न्याइ ।
जो सेवा करिहैं सो बढ़िहैं । सोई फूल महेसुर चढिहैं ।।१४१।।
पातसाह देकैं सरपाव । बिदा करयो डेरैंको राव ।
पातसाह दिल्लीकौं धायो । क्यामखांनु तब सैद पढ़ायो ।।१४२।।
द्वादस हे मीरांके नंदन । तिनमें क्यामखाँनु जग वंदन ।
येक ठौर पढ़न ये जाहिं । भोरे लरिहैं आपुन मांहि ।।१४३।।
रोवत लरत येक दिन जात । बालक आपुन मांहि रिसात ।
कुतुब नूरदी नूरजहाँन । हांसीते बैठे हैं आंन ।।१४४।।

तक्यो क्यामखां जात उदास। तबहिं बुलाय बिठायो पास।
पीरसुँबचन तब ही उच्चरै । तैं बाबा काहे द्रिग भरे ।।१४५।।
मारौं थाप चबाऊँ लौंन । धनी बावनी मारै कौंन ।
नैंबू ग्रौरगंदौरा ग्रांन । दये नूरदी नूरजह्नंन ।।१४६।।
लये क्यामखां तब मन ग्राछैं। नैंबू ग्रादि गंदौरा पाछै ।
कह्यौ रीत यहु ह्वै इन गोत । खाटे ह्वै फिर मीठे होत ।।१४७।।
केतक दिन पढ़तैं ही गये । क्यांमखानुँ पढ़ि पूरे भये ।
सैंद कह्यौ ग्रब सुनंत करावहु। करहु नमाज दीनमें ग्रावहु ।।१४८।।
तब क्यामखान बिनती कीन। मेरौ हूं मंन चाहत दीन।
पै यहु चिंत मोहि चित मांहि ।हमसों साक करे को नाहीं।।१४९।।
नासिर सैद करांमत पूरन। जाको कह्यौ होत है दूरन ।
यहु चिंता जिन चितकौं देहु । मेरे बचन मांनिकै लेहु ।।१५०।।
बड़े वड़े जगु ह्वै हैं राइ । ते तनया देहैं करि चाइ ।
ह्वै है जोध मंडोवर राइ । बहु डोला घर देइ पठाइ ।।१५१।।
ह्वै वहलोल दिली सुलतांन । दैहै तनया निहचै मांन।
मीरांकै मुख निकसै बैंन । ते सब भये ग्रैन ही मैंन ।।१५२।।
तबही दीनमें ग्रायौ खान। निर्मल मो मन मुस्सलमांन ।
जब सब वातिन निर्मल पायो ।तब मीरां दिल्ली ले धायो ।।१५३।।
पातसाह देखत हरसाये । मनसब देकै खानं बढ़ाये ।
पातसाह मीरांको प्यार। दिन दिन खांसो बढ़त ग्रपार ।।१५४।।
मीरांजी जब रोगी भये । पातसाह पूछनकौं गये ।
तव मीरांजी ग्रैसें भाख्यौ। क्यांमखानु मैं सुत करि राख्यो ।।१५५।।
जौं कबहू मेरो ह्वै काल । याकौं दीजहु मनसब माल ।
मेरैं पूत सपूत न कोई । जिनतें सेव तुम्हारी होई ।।१५६।।
पातसाह भाख्यो जूं नीकै। क्यामखानु है लाइक टीकै ।
पातसाह उठि डेरै ग्राये । तब मीरां सब पुत्र बुलाये ।।१५७।।

कह्यो सुंनहुं तुम सगरे भाई। क्यामखानुंकौ दई बड़ाई।
यहु तुममैं कीनौ सिरमौर। याकौ समझौ मेरी ठौर ॥१५८॥
क्यामखानुंसौं ये सिख भाखी। इनकौं बहुत प्यारसौं राखी।
सिखदे मीरां कलमां कह्यौ। या कलमैंको अमर न रह्यौ ॥१५९॥
मीरां भये जबहि बस काल। लह्यो क्यामखां मनसब माल ॥१६०॥

॥ दोहा ॥ पातसाह किरपालु ह्वै, दै हय गय सिरपाव।
दई बावनी क्यामखां, कर्यो बड़ौ उमराव ॥१६१॥
ठटा लैंन जौं ऊपज्यौ, पातसाह अभिलाष।
क्यामखानुंकौ मया करि, चले दिलीमैं राख ॥१६२॥
फौजदार करि क्यामखां, सौंपी दिल्ली ताहि।
आपुन दलबल साजिकै, चले ठटाकौं साहि ॥१६३॥
देस देस बतिया चली, पातसाह घर नांहि।
बिना क्यामखां और को, रह्यो न दिल्ली मांहि ॥१६४॥

क्यामखांन मुगलनिसौं युद्ध करत है

॥ दोहा ॥ मुगल बिलायत ते चले, हिंद लैनके चाइ।
छलके बलसौं जांन कहि, दिल्ली घेरी आइ ॥१६५॥
सुनत बात यहु परजर्यो, क्यामखानु चहुवांन।
सौह आये लरनकौं, दै सतसौ नीसान ॥१६६॥
सुभट सबद सुनि ऊससैं, कादूर तन थहरान।
धौं धौं धौं धौसा करै, धौकत पावहु जान ॥१६७॥

॥ सवैया ॥ बहु सैंन बनाइ चढ्यो चहुवांन, निसान लये अरिमारनकौ।
अब जैसे गजिंद नरिंद चल्यो, विटपी खल मूर उखारनकौं।
अतिही बलवंत करे करता कर, दंतीके दंत उपारनकौं।
परिहै दलमैं इमं क्यांमलखां, जिम चीतौ चलै म्रिग डारनकौ॥१६८॥

॥ दोहा ॥ दिली बिलाइत लरत है, परत महा घमसान।
येक वोर जुझै मुगल, येक वोर चहुवान ॥१६९॥

॥ भुजंगी छंद जुगंम विधि ॥

चढ़े क्यामखानं, लये कर दुधारी।
इतहि चाहुवांन, उतहि मुगल भारी ॥१७०॥
बजैं सुर नीसानं, सु जुभै जुभारी।
गहै कर कमानं, चलावै ततारी ॥१७१॥
लरैं सुभट जोरै, सुत रनें किसोरे।
सहें झकझोरे, मुरे नहिं मोरे।
फिरे ना बहोरे, करै रज तोरे।
हने गैंद घोरे, रहे आइ थोरे ॥१७२॥
लरे वहु जुभारी, मरे जोध सूरा।
अरुन भौम सारी, भयो जुद्ध पूरा।
लगे हाथ भारी, गयो छूटि गरूरा।
मुगल सैन हारी, चले भाजि भूरा ॥१७३॥
लर्‌यो चाहुवाँनं, सुजस जगत सबही।
पगनि गज केकांनं, गये मुग्ल दबही।
सुन्या सुलतानं, जित्यो खांन जबही।
दयो संनमानं, बढ़्यौ बहुत तबही ॥१७४॥

॥ दोहा ॥ मुगल लरे सो मरि परे, उबरे गये जु भाग।
खल दादूर हैं वापुरे, क्यामल कारो नाग ॥१७५॥
अैराकी तुरकी तुरग, लूट्यौ दरब अनेक।
सब पठये पतिसाह ढिगु, आप न राख्यो एक ॥१७६॥
आनंदित ह्वै छत्रपति, दीनों आदुर मांन।
क्यामखांनको नाम तब, राख्यो खानुं-जहांन ॥१७७॥
मद गइंद अरबी तुरक, अपतनको सिरपाव।
मनसव बहुत वढ़ाइकै, कर्‌यौ बड़ौ उमराव ॥१७८॥
जौ लौ जीयौ जगतमै, फेरोसाह सुलतांन।
तो लौं दिन दिन ही बढ्‌यो, क्यामखांनकौ मांन ॥१७९॥

जबहि भयौ बस कालकैं, फेरोसाह सुलतान ।
तब महमद महमूदनैं, फेरी जगुमैं आन ।।१८०।।
इनहू कीनौ प्यार बहु, पिता करत ज्यों नित्त ।
क्यामखांनुं अैसे रख्यौ, जैसे भाई मित्त ।।१८१।।
जब महमद महमूद हू, परे कालके जाल ।
तब नसीरखां पुत्र उहिं, ठौर गही ततकाल ।।१८२।।
क्यामखांनु चहुवान सों, इनहू कीनौ प्यार ।
जो कछु किये सु जांन कहि, इनसौं पूछि बिचार ।।१८३।।
रोगी भये निंसीरखां, सब फिरि गये सुभाइ ।
बिन मल्लूखां दूसरौ, निकट न कोउ जाइ ।।१८४।।
मल्लूखां चेरौ हतौ, पाल्यो फेरौसाहि ।
बहुरि करचो परधान वहु, सब जगु मांनत ताहि ।।१८५।।
पातसाह जब चलि गये, तबही चली यहु बात ।
दील्लीकैं हित मल्लू नैं, मारचौ है करि घात ।।१८६।।
गोत गैल बुधि होत है, अैसैं कुसल कहंत ।
कुलहीनौ मुख लाइये, पूरी परै न अंत ।।१८७।।
कुलहीनौं सुधरै नहीं, कीजे जतन करोर ।
पाइक तौ फरजी भये, चलैं सीसके जोर ।।१८८।।
पाछौ भारी नांहि जिहिं, यों चलिहै पग छोर ।
जैसे गुंडिया पौंछ बिन, उलटि परत सिर जोर ।।१८९।।
जब मरि गयो नसीरखां, कोउ पुत्र न आहि ।
मल्लूखांको तब भई, पतिसाहीकी चाहि ।।१९०।।
कामदार सब मल्लूसौं, राखत है अति नेहु ।
कह्यो तखत पर बैठके, तुम पतिसाही लेहु ।।१९१।।
क्यामखानुं यहु बात सुनि, सबसौं कह्यौ रिसाइ ।
पातसाह कैंतखत पर, चेरौ क्यौं न आइ ।।१९२।।

साहब उत्तिम कीजिये, जो कुलवंतो होइ ।
चेरैंके चाकर भये, सोभ न पावै कोइ ॥१९३॥
लै तारी गढ़ कोटकी, उठि आयो परधांन ।
काइमखां दीवानकै, आगै राखी आंन ॥१९४॥
यहै कह्यौ तब सबनि मिलि, सुनि साहिब दीवांन ।
तुम चलि बैठो तखतपर, फेरहु अपनी आंन ॥१९५॥
पातसाह तुम दिल्लीके, हम सब सेवक आहि ।
गहर छाड़ि बैठहु तखत, जो पतिसाही चाहि ॥१९६॥
भये दिलीमैं छत्रपति, बड़े तिहारे सात ।
तुम तिनके पतिसाह हौ, नांहि नई कछु बात ॥१९७॥
क्यामखानुं तब युं कह्यौ, सुनिहु बात परधांन ।
मोहि न दिल्ली चाहीये, रचनहारकी आन ॥१९८॥
जिन जानउं मो जीउमैं, दिल्ली लैनको हेत ।
द्वै दिनकै सुख कारनै, को संतत दुख लेत ॥१९९॥
जो पाछै पतिसाह ह्वै, क्रोध धरै मन मांहि ।
संतत पहले छत्रपति, जीवत छाड़त नांहि ॥२००॥
परधाननि तब यों कह्यौ, सुनि चकवै चहुवांन ।
जो तुम दिल्ली लेत ना, देहैं मल्लू खांन ॥२०१॥
अनंत भतारहि भख गई, नैकु न आई लाज ।
येक मरै दूजै धरै, यहै दिल्लीको काज ॥२०२॥
जात गोत पूछत नहिं, जोई पकरत पांन ।
ताहीसौं हिलमिलि चलै, पै भखि जाइ निदांन ॥२०३॥
यें बतियां कहि उठि गये, मल्लू पास परधांन ।
पकरि बांहि पतिसाहिकै, तखत बिठायो आंन ॥२०४॥
बात सुनी यहु क्यामखां, तब ही दै नीसांन ।
अपनै घरको उठि चल्यौ, चक्रवती चहुवांन ॥२०५॥

जबहि क्यामखां चलि गये, मल्लू सुनी यहु बात ।
हय गय दल बल साजिकै, मारन चल्यो रिसात ।।२०६।।
कोस बीसकै बीचसौं, आगै पाछै जांहि ।
मल्लू दबाइ न सकत है, वै जानत है नांहि ।।२०७।।
जबहिं सुन्यौ यों क्यामखां, मल्लू चढ्यौ दल साज ।
फिरि अहुटौ सन्मुख चल्यौ, ज्यों तीतर पर बाज ।।२०८।।
उत मल्लू इत क्यामखां, भये सनंमुख आइ ।
करी घटा घंटा छटा, दुंदुभ गर्ज सुनाइ ।।२०९।।

क्यामखां मल्लूखांसुं युद्ध करत है

।। छंद अर्ध भुजंगी ।।

चढ्यौ चाहुवानं, मच्यो घमसानं ।
छूटै नाल गोली, बहै करां चोली ।।२१०।।
छुटै चपल बानं, चटकै कमानं ।
बहै सेल सागं, सु निकसैं द्रुवागं ।।२११।।
लगै सीस ससपर, परै धर मरै नर ।
बरैं बरंमं भारी, सुजंमं धर कटारी ।।२१२।।
हुई मार भारं, सु जुझै जुझारं ।
लरैं सुभट मनसौं, मिट्यौ हेत तनसौं ।।२१३।।
सु जोधा बिरच्चे, गये ह्वै किरच्चे ।
कहूं सिर कहूं धर, कहूं पग कहूं कर ।।२१४।।
लरे बहुत हस्ती, मरे सहित मस्ती ।
परे बहु तुरंगं, भयो अधिक जंगं ।।२१५।।
परी धाम धूमं, भई अरुन भूमं ।
सुभट घाव धूमं, मनौ गैंद घूमं ।।२१६।।
मच्यो जुद्ध भारी, मलू सैन खारी ।
जित्यो क्यामखानं, सु जानत जहानं ।।२१७।।

मलूखां परायो, सबै कछु लुटायो।
दिली मांहि आयो, लै आपहि छपायो।।२१८।।

।। दोहा ।। फिरै भजोरा भाजतौ, ता पाछै ना जाउं।
सत छाड़ै तिह नांह तौ, मोहि क्यामखां नांउं।।२१६।।
हाथी घोरे दर्व बहु, लूट लयो चहुवांन।
पैठ्यो आइ हिसारमै, बजत जैत नीसांन।।२२०।।
क्यामखानुं बहु बल गह्यौ, करै जु इंछ्या प्रांन।
मल्लूकौं फिरि लरनकौ, नांहि रह्यौ अरमांन।।२२१।।
देस देसकी पेसकस, क्यामखानुंकौ आइ।
भले पजाये भोमिया, सगरे सेवहि पाइ।।२२२।।

।। सवइया ।। क्यामखांनु चहुवानुं खानुं सुलतानुं साधे,
राव रानं आनं सब भोमिया पजाया है।
कमधज कछवाहे वैरिया हुमइ भटी,
तूंवर·····गोरी जाटू पाइ लाये हैं।
तावनीस रोवे नारू खोखर चंदेल कालू,
झाव साहुसेन अकलीमसा भजाये हैं।
साह महमद ममरेजखां इदरीस,
मोजदी मूगल खेतते खिसाये हैं।।२२३।।
·········वैठे ही हिसार नीके साथे चक चार हैं।
दूनपुर रिनी भटनेर भादरा गरानौ,
कोठी बज्रवारौ और डरत पहार है।
कालपी येटावो और बीचिकै मेवासी सब,
चमकत रहत उजीन और धार है।
पूरब पछिम और उतर दछिन साधी,
दिल्लीमें मलूके नहीं खुलत किवाड़ है।
क्यामखां चहुवान मोटे रावसुत तप,
·· ।।२२४।।

॥ दोहा ॥ क्यामखाँनुं घर आपनै, मल्लू दिल्ली मांहि ।
वहुत रोस मन दुहुंनकै, कबहूं भेटत नांहि ॥२२५॥
काविलमें तब रहत है, पातसाह तैमूर ।
सप्त दीपमें परगट्यो, कहत जांन ज्यों सूर ॥२२६॥
उत्तर दिछन पूरब पछिम, अगनेई ईसान ।
नैरित बाइब तिमरकी, अस्ट दिसामैं आन ॥२२७॥
चगता आये जगतमैं, कीनौ कर्म इलाह ।
तबके पतिसाही करे, हैं जाती पतिसाह ॥२२८॥
रूम साम औराक ली, खुरासान इक धाप ।
भयो तिमर मन हिंदकौ, इत चलि आये आप ॥२२९॥
मलू सुन्यो आयो तिमर, चल्यो लरन दल साज ।
मुगलनिको देखत डर्‌यो, छाड़ी रज सत लाज ॥२३०॥
तिमर भयो दल धूरिकौ, आयो तिमर रिसाइ ।
मलू जहां डिढु करतु है, तिहां तिमर डिढु आइ ॥२३१॥
नांव तिमर तप तिमरहर, लरन सकत है कोइ ।
लरै सिकंदर जुलिकरन, जो अब जगमैं होइ ॥२३२॥
मलूवा वपरौ कौन है, जो सनमुख ठहराइ ।
जोति गई मिटि तिमर तें, भाज दुर्‌यो बन जाइ ॥२३३॥
अर्कतूल मलुआ भयो, तिमरल्यंग दल बाइ ।
पल न सक्यो ठहराइकै, डार्‌यो केहूं उड़ाई ॥२३४॥
जैत भई तब तिमरकी, लूट्यो ढीली माल ।
आइ विराज्यो तखतपर, चगता मरद मुछाल ॥२३५॥
मलुआ पाछे दल दये, आपुन ढीली मांहि ।
ढिली मंडलमैं नैकु हौं, रहन दयो वहु नांहि ॥२३६॥
तिमरलंगकै जीवमैं, उपजी काबुल चाहि ।
खिदरखांनूंकौं सौंपकै, दिली चले पतिसाहि ॥२३७॥

खिदरखां दिल्ली रहत, मरद मुंछार पटान।
मानस सहस पचास ढिडु, सबही येक समान ॥२३८॥
तिमरलंग जब उठि गये, मलू सुनी यहु बात।
खिदरखांनुकौ नां बदै, फूल्यौं अंग न मात ॥२३९॥
तब दल बल बहु साजिकै, दिल्ली घेरी आइ।
खिदरखांनु ठटु कटक करि, लर्‌यो सनमुख जाइ ॥२४०॥
जूझि गये सूरा सुभट, भार पर्‌यो जब आइ।
मलू भाजि नांहि न सक्यो, मरचो परचो भुंमि जाइ॥२४१॥
जीते हैं दल तिमरके, मार्‌यो मल्लूखांन।
खिदरखांनु फूल्यो फिरे, करिहै गर्ब गुमान ॥२४२॥
जबहि मलूकी वोरते, भयो नचिंत पठांन।
बस कीने सब भोमिया, बदत न काहू आंन ॥२४३॥
सुलताननिकौं नां वदै, क्यामखांनु चहुवांन।
बात सुनी जहु खिदरखां, बाढ़ी अधिक रिसान ॥२४४॥
खिदरखांनु फुरमांन दिय, मोजदीन अगवांन।
मार वांधिकै काढ़िदै, क्यामखांनु चहुवांन ॥२४५॥

क्यामखां मोजदी जुध करत है

॥ दोहा ॥ रुहतक झज्झर जनम भुमि, मोजदीन अगवांन।
फौजदार लाहोरकौ, है दल बल अनग्यांन ॥२४६॥
उन कहि पठयो क्यामखां, छाडहु कोट हिसार।
जो तुम गहर लगाइ हौ, हमहि न लागै बार ॥२४७॥
पातसाहकौ नां बदहि, सेवा करन न जाहिं।
बिनही दीनी बावनी, कहियो किहिं बल खाहि ॥२४८॥
तबहि क्यामखां यों लिख्यो, सुनि अगवान गिवार।
को काहूकौ देतु है, दैनहार करतार ॥२४९॥

दिली दई जिन खिदरखां, तिन मो दयो हिसार ।
ऐसौ कौन जु लइ सकै, जो दीनौं करतार ॥२५०॥
जो चढ़ि आवै खिदरखां, तौ ना तजौं हिसार ।
जौ हिसार अब छांड हौं, हांसी हुवै सैंसार ॥२५१॥
कुतब हमारी मदत है, निहचै जियमैं जान ।
जो अपनौ चाहै भलौ, जिन आवहि अगवान ॥२५२॥
रोस भयो चिठी पढ़त, दयो तबहीं नीसांन ।
महा प्रबल दल साजकै, चढ़ि जु चल्यौ अगवांन ॥२५३॥
सुनत बात यहु क्यामखाँ, करयो लरनकौ साज ।
जुझ बिना सूझत नहीं, जिहं भाजनकी लाज ॥२५४॥
आवत आवत मोजदी, नेरैं उतरयौ आइ ।
चिठी लिखकै बहुरि इक, मानस दयो पठाइ ॥२५५॥
काहे लरिकैं क्यामखाँ, मरिहै बेही काज ।
सुलताननिकैं कटकसौं, भाजत कैसी लाज ॥२५६॥
मेरे कटक अनंत है, मारि डारिहौं तोहि ।
याते फिरि फिरि कहतु हौं, दया आइ है मोहि ॥२५७॥
क्यामखानु तब यों लिख्यो, सुनि अगवान गिंवार ।
तेरी डिठि है कटकपर, मेरि डिठि करतार ॥२५८॥
चिंता नैकु न कीजिये, जौ रिप होंहि अनेक ।
मारन ज्यावंनहार है, सु तौ जांन कहि येक ॥२५९॥
ढीठ बसीठन फेर तू, अबहि मिलावहु डीठ ।
ह्वै है जाके ईठ बिधु, ताकी रहै पटीठ ॥२६०॥
मोजदीन उतते चढ्यो, इतते काइमखांन ।
चाहुवांन अगवान मिलि, भलौ कर्यौ घमसांन ॥२६१॥
जैसी सावनकी घटा, मिलीं सैन द्वै आइ ।
अंधकार ही ह्वै गयौ, धूरि रही जगु छाइ ॥२६२॥

॥ नाराइच छंद ॥

चढ़े मूछार सूरवां, बजंत सार सार ही ।
लरंत जोध जोधसों, ररंत मार मार ही ।
भई सुरंग भोम है, कटंत हाथ पाव ही ।
सुभट्ट सीस टूटिहै, मिटै न चित्त चावही ॥२६३॥
कटैं परै उठैं लरै, मरै विना नहीं रहै ।
वदै न घाव चोटकौं, छतीस आवधैं सहै ।
परैं हथ्यार हाथतैं, भुजा जबै कटंत है ।
तबै सुभट्ट सूरिवां, करै हथ्यार देत हैं ॥२६४॥
परे करी तुखार हैं, लरे मरे जुझार हैं ।
गनें गनें न जात है, अपार ते अपार है ।
खरे महेस जुग्गनि, अनंद चैनमैं हंसै ।
गिरिज्झ आसमानतैं, सु देखि देखिकै धंसै ॥२६५॥

॥ दोहा ॥ जबहि कटक दहुं औरके, मरे परे घमसांन ।
तव दलमेंतै निकसिकै, चलि आयो अगवांन ॥२६६॥
क्यांम क्यांमखां ही करत, अरु डारत केकांन ।
इतते निकस्यो क्यामखां, चक्रवती चहुवाँन ॥२६७॥
बरछी बाही मौजदी, हन्यो क्यामखां बांन ।
ये राखे करतार नैं, पर्‌यो भोंम अगवांन ॥२६८॥
काइमखां चहुवांननै, लये मौजदी मारि ।
दुलहु बिन न जनेत ह्वै, भाज चले दल हारि ॥२६९॥
सब दल लूट्यो क्यामखां, जीते करी तुखार ।
दले दमामे जैतके, उपज्यौ चैन अपार ॥२७०॥
सुनी बात यहु खिदरखां, काटि काटि कर खाइ ।
मेरे दल बल जिन हनें, तासौं लरिहौं जाइ ॥२७१॥
रैन दिनां चिंता करै, किहिं बिधि लरियैं जाइ ।
क्यामखानुंकी धाकतैं, चलत बहुत अरसाइ ॥२७२॥

जवहि सुन्यो यों क्यामखां, बहुत पठान रिसाइ ।
तब मन मांहि बिचारिकै, कीनौ यहै उपाइ ।।२७३।।
हुतौ बिलाइत खिजरखां, लकब वोज्भरीवाल ।
तासौं कछू पहिचांन ही, यहु टेरचो ततकाल ।।२७४।।
यो लिखि पठयो क्यामखां, तूं उठि बेगौ ग्राव ।
मैं तोकौं दीनी दिली, जो लेबैको चाव ।।२७५।।
खिजरखानुं पाती पढ़त, सिर ऊपर धरि लीन ।
उतते दल करि चढ़ि चल्यो, गहर कछू नां कीन ।।२७६।।
लिख पठयों यों खिजरखां, खां जू गहर निवार ।
चढ़ि ग्रावौ ज्यों मिलि चलैं, दिली लैंनकैं प्यार ।।२७७।।
पाती बाचत क्यामखां, चढ्यो बजे नीसांन ।
खिजरखांन सेती मिले, ग्रानंदनि मुलतांन ।।२७८।।
खिजरखानुं पाइन पर्‍यो, ग्रंक भर्‍यो चहुवांन ।
यहै कह्यो तब कौन दे, तुम बिन दिल्ली ग्रान ।।२७९।।
क्यामखानुं ग्रैसे कह्यो, दिली दई करतार ।
हौं तेरौ संगी भयो, तूं ग्रब गहर निवार ।।२८०।।
तबही चढ़े मुलताँन ते, मतौ कर्‍यौ मन मांहि ।
राठोरनिकौं साधिकैं, तब दिल्लीपर जांहि ।।२८१।।
सबही मेवासै मलत, ग्राइ लगे नागौर ।
तामैं चौंडा बसत हौं, राइनकौं सिरमोर ।।२८२।।
ग्राइ दबायो कोटमैं, ग्रैसी कीनी दौरि ।
चौंडा चढ़ि नाहिन सक्यौ, मूवौ निकसिकै पौरि ।।२८३।।
चौंडा लीनौं मारिकै, भाज चल्यौ सब संग ।
बहुत खदेरे ना लरे, सके कटाइ न ग्रंग ।।२८४।।
कमधज कर बरछी लये, भज्जै इहं उनिहार ।
सांग स्रिगसे देखिये, मनहुं चले म्रिग डार ।।२८५।।

क्यामखां खिदरखां पठांनसूं जुध करत

॥ दोहा ॥ अप वसिकरि नागोरकौ, चलो दिल्लीकी वोर ।
खिजरखांनु पुनि क्यामखां, दल वल साजे जोर ॥२८६॥
यहु कहनावत कहत है, तवते सकल जहांनु ।
दील्ली थोरे कांगुरे, वहु दल लायो खांनु ॥२८७॥
सुनी बात यहु खिदरखां, आयो काइमखांनु ।
खिजरखांनुकौ संग लै, देत वहुत नीसांन ॥२८८॥
चढ्यौ खिदरखां दिल्लीते, दल बल साजि अपार ।
इत उतके कवि जांन कहि, जूज्झन लगे जुझार ॥२८९॥

॥ नाराइच छन्द ॥

चढ़े जुझार मारके, वदै न घाव सारके ।
लरे कटै हटै नहीं, मरै परै जहीं तहीं ॥२९०॥
करी करी लरे मरे, तुरी तुरी किते परे ।
सुभट्ट ठट्ट खेतमें, सु घूमि हैं अचेतमैं ॥२९१॥
मुवो सर्व साथ ही, रह्यो न प्रान हाथ ही ।
चल्यो पठान भज्जिकै, दयो न जीव लज्जिकै ॥२९२॥

॥ दोहा ॥ जीते काइमखांनजू, भाज्यो खिदर पठांन ।
खिज रखांनुकी बाहि गहि, तखत बिठायो आंन ॥२९३॥
सबही वात समत्थ है, क्यामखानुं चहुवांन ।
जाकै सिरपर कर धरैं, सो दिली सुलताँन ॥२९४॥
खिजरखान पतिसाह हुव, करै दिलीमैं राज ।
चिंता कछु नाहिंन रही, पूरै सब मन काज ॥२९५॥
खिजरखांनुकौ रैन दिन, सुखही मांहि बिहात ।
क्यामखानु अरु आप बिच, तीसर नांहि समात ॥२९६॥
पाछैं मूरिख खिजरखां, यहु समुझि जिय मांहि ।
क्यामखानुं बलवंतु है, पतियारौ कछु नांहि ॥२९७॥
चाहै ताकौ काढि-है, राखै जांनै जाहि ।
महाबली उमराव है, रहन न दैहौं याहि ॥२९८॥

राजा अरु परधांन पुनि, जबहिं हौहि सम दोइ।
पहलै हनै सु हनत है, पाछै कछु न होइ ।।२९९।।
यह मनमै समझी नहीं, दिली दई करि प्यार।
कोउ बिरवा लाइकै, डारत नांहि उखार ।।३००।।
येक द्योंस तौ क्यामखां, ठाढ़े हुते सुभाइ।
खिजरखांनु दीनौं धका, परो नदीमें जाइ ।।३०१।।
निकसि गयो ज्यों परत ही, खरो रह्यौ इक पांन।
संतत कर रहि है खरौ, इक खांडै अरु दांन ।।३०२।।
मतौ कर्‌यौ हौ खिजरखां, सो जानत हौ खांन।
पैं पतिसाहनिसौं लरे, होत धर्मकी हानि ।।३०३।।
जीयो बरस पचांनुवै, क्यामखानु चहुवांन।
बड़े २ साके करै, गनत न आवै ग्यांन ।।३०४।।
साके क्यामलखांनके, सागर अपरंपार।
जो मोकौ आवत हुते, ते मैं करे बिचार ।।३०५।।
क्यामखांनकी बातकौ, कर्‌यौ नहीं बिस्तार।
भाखै है मैं सुलप अति, अपनी मति अनुसार ।।३०६।।
हतौ हजीरौ दिल्लीमैं, कीनौ काइमखानुं।
लै उत राख्यो छत्रपति, देकै आदर मांनु ।।३०७।।

श्री दीवान ताजखांके पुत्र

१ फतिहखां, २ रुका, ३ फखरदी, ४ मोजन, ५ इकलीमखां, ६ पहाड़ा।

फतिहखांन मोजंन रुका, फखरद्दी इकलीम।
और पहारा है छठौ, ताजंन सुत बलभीम ।।३०८।।

ताजखांकौ बखांन

पांच पुत्र है क्यामखां, सुनि पिताकी बात।
विषधर कैसे जांन कहि, निस बासुर वल खात ।।३०९।।
ताजखानुं महमद्दखां, कुतबखांन इखतार।
मौनुखांनु पांचौ सुभट, अरिदल भंजनहार ।।३१०।।

खिजरखांनु पै ना गये, रह्यो बुलाइ बुलाइ।
बैठे रहे हिसारमैं, कर्‌यो जूहार न जाइ ॥३११॥
जबहि भयो बस कालके, खिजरखांनु पतिसाह।
तबहिं मुबारक साहकौ, दीनौ राज इलाह ॥३१२॥
खिजरखांकै बंसमैं, नाहिन सुनिये कोइ।
किर्तघंनीकौ जानिये, कबहु भलौ न होइ ॥३१३॥
मुवो मुबारक तब भयो, जगमहमद फरीद।
पतिसाही करि मरि गयो, जबही काल रसीद ॥३१४॥
ताकौ नंद अलावदी, दीनौ राज इलाह।
भयो अमानतखाँ बहुरि, पूत मुबारक शाह ॥३१५॥
ता पाछै बहलोल हुव, दिली महि सुलतान।
लोदी अपनी भुजन बलु, साध्यौ हिंदस्तान ॥३१६॥
ढोसी ऊपर अखन है, दिली साहि बहलोल।
बदै न नंदन क्यामखां, परे दहुंनमैं बोल ॥३१७॥
पातिसाहि अैराकके, तुरंग मंगाये आहि।
इत निकसे तब अखन नैं, नौ चुनि लीने चाहि ॥३१८॥
वात सुनी बहलोलनै, कहि पठयो रिस मांहि।
मेरौ मारग देखीयौ, जौ असु पठयो नांहि ॥३१९॥
अखन लिख्यो बहलोलसों, मेरै घोरे लाख।
पै मै तेरे लये है सो, जुद्धकी अभिलाष ॥३२०॥
मोकौ इतही पाइये, जब जानहि तब आव।
ढोसी चलै न हौं चलौ, गिरकौ गह्यो सुभाव ॥३२१॥
पातसाह अति पर्जर्‌यौ, सुनि अक्खनके बोल।
पै कछु बल नाहिंन चल्यो, बैठि रह्यो बहलोल ॥३२२॥
बावंन बर अक्खन करी, पात पात मेवात।
मेवाती भाजत फिरै, ज्यों रवि आगै रात ॥३२३॥

जौलौं जीयो जगतमैं, बध्यो नहीं पतिसाहि।
वहै करचो इखतारखां, जोई जियकी चाहि ॥३२४॥
जित गिरवर तितही करी, अखन कोटकी मांड।
रहत भोमिया निकट जे, सबे देत ते डांड ॥३२५॥
आंबैरे बीतें बरष, देत दुवादस लाख।
आठ अमरसरके भरत, कबितु देतु हैं साख ॥३२६॥
है चौथो सुत कुतुबखां, बस्यो बारुवै जाइ।
कोऊ बरनां कर सकै, परे भोमिया पाइ ॥३२७॥
बस्यो बगरमैं मौनखां, गयो नगरसौं होइ।
आस पासके सब नये, बलु कर सकै न कोइ ॥३२८॥
मौनां क्यामलखांन सुत, कूरमरिप चहुवांन।
जाकै दलकी दहलते, कूतल पर्‌यो भगांन ॥३२९॥
ताजखांनु सबमैं तिलक, दूजो महमदखांन।
दोउ अति नीके भये, सूरबीर चहुवांन ॥३३०॥
ताजखाँनु महमद्‌खां, दोउ रहे हिसार।
ठौर पिता राखी भलै, हौं दहुवनमैं प्यार ॥३३१॥
दिल्लीपतिसौं ना मिलैं, रिस राखै सिरमौर।
ताक्यो खां पेरोजखां, तबहि गये नागौर ॥३३२॥
नागोरीखां उठि मिल्यो, बहुतैं आदुर दीन।
हौं ना बदौं दिलेसकैं, भये येकतैं तीन ॥३३३॥
हांते कबहू होत नां, रहै रैन दिन संग।
रानै ऊंपर चढ़नकै, करि है मते उमंग ॥३३४॥
दल बल करि खां चढ़ि चल्यो, आगै मोकल रांन।
कटकनिकें ठटु ठानिकै, आयो दे नीसांन ॥३३५॥
दल बल जोताई मिले, दहू वोरिके आइ।
उत मोकल पेरोज इत, जुरे जुद्धके चाइ ॥३३६॥

कमधज कूरम भोमिया, बहु पिरोजकै संग।
रांनैहूकें बहुत दल, लरत न राखै अंग ॥३३७॥

नागोरी बाटी अंनी, फूल्यो करत कलोल।
गोल हिरोल चंदोल पुनि, जरं गोल बरं गोल ॥३३८॥

ताजखांनु महमदखां, खरे तमाचै दोइ।
देखौं तुम केसी करौ, जैसी तुमते होइ ॥३३९॥

ताजखां महमदखां आगे रांना भाग्यो

॥ दोहा ॥ चढ़े कटक दहुं ओरते, मिले बजत निसांन।
घमडंत है मानो घटा, गर्जत है मरवांन ॥३४०॥

पहलै तौ गोली चली, औरं छुटी हथनाल।
जिनकी लागी ते परे, ज्यो निकले ततकाल ॥३४१॥

बॉन चले दहुवोरके, बहुत रहे गड़ि देह।
घाइल असें लागि हैं, है मांनौ येसेह ॥३४२॥

घोरे बाहे खांनपर, रानै अधिक रिसाइ।
धका सहार न सक्यो, छूटि गये तब पाइ ॥३४३॥

भाजि चल्यो पेरोजखाँ, ताकी हैं नागौर।
पाछै आवै लूंटतौं, मोकलसी सिरमौर ॥३४४॥

चार कोस लौ गैल करि, लैने जो नीसाँन।
रान चल्यौ चीतोरकौं, चितुमैं करत गुमाँन ॥३४५॥

ताजखानुं महमद्खां, ठाढ़े वाही खोज।
रहे तमाचै ही खरे, भाजि गयो पेरोज ॥३४६॥

नागौरीकौं भाजतै, नैकुं न लागी बार।
झांकत ही भइया रहे, कहा करै करतार ॥३४७॥

सोच रहे दोउ खरे, रानौ निकस्यो आइ।
ज्यौं चीतौ म्रगकौं तकै, परे रोसमें धाइ ॥३४८॥

लरि बिचर्यो सीसौदियो, जब हि पर्यो घमसांन।
दे अपने पेरोजके, नेजे पुनि नीसांन ॥३४९॥

पाछै गये पहार लौ, बहुत बढ़ी कर लूट ।
जुगल बाजकैं हाथते, गयो चिरीसौं छूट ॥३५०॥
उत ते ये दोऊ फ़िरै, जैत दमांमे देत ।
रानांकी रज लूट ली, गज हय दर्ब समेत ॥३५१॥
अब आये नागौरमें, नेजो पुनि नीसांन ।
लुटवाये पेरोजखां, ते पठये चहुवांन ॥३५२॥
बहुत चप्यौ पेरोजखां, मुख ना सकै दिखाइ ।
बात चले जब जुद्धकी, सुनि सुनि अधिक लजाइ ॥३५३॥
और इतेपर जस जुरे, ताजन महमदखांन ।
काक भये पेरोजके, पढ़िहै सकल जहांन ॥३५४॥
स्वांम भगे सेवक लरै, ते रजवंत विचार ।
जर उखरें तरु ठाहरै, तैसौ यहु अधकार ॥३५५॥
चोरी डिठ पेरोजखां, जब ये दोउ जाहिं ।
अैंयौ ग्वैयोही रहैं, हंसि बोलत है नांहि ॥३५६॥
जो आपुन कापुरस ह्वै, सुभट न भावै ताहि ।
जैसौ कोऊ आप ह्वै, करै सु तैंसै चाहि ॥३५७॥
चोरी डिठ पेरोजखां, रोस भरे चहुवांन ।
अनरसमै ही ऊठि चले, ताजन महमदखांन ॥३५८॥
बंबु दमामेकी सुनी, रिस उपजी चित खांन ।
अपनै दलसौं यों कह्यौ, इनको देहु न जांन ॥३५९॥
नागोरी पेरोज़खां, दल बल साजि अपार ।
आइ दबाये लरनकौं, फिरे जुगल जूझार ॥३६०॥
जुद्ध मच्यौ नाँरद नच्यो, भाज बच्यो नहिं सूर ।
चितसौं जूझे जोध तिन, हितसौं ले गई हूर ॥३६१॥
परे खेतमें ताजखां, जबहि होइ घनघाइ ।
निकसे महमदखांनु तब, नाहिं सके ठहराइ॥३६२॥

नागौरीखां जीतिकै, बहुरि गयो नागौर ।
रहे खेतहीमैं परे, ताजखांनु सिरमौर ॥३६३॥
घाइल फिरहिं उठावते, उत आये राठौर ।
परे हुते बेसुध भये, ताजखांनु जा ठौर ॥३६४॥
देखत ही रनधीर तव, लैके गये उठाइ ।
जबहिं घाव नीके भये, दये हिसार पठाइ ॥३६५॥
बड़ो कर्‌यो करतारनै, ताजखानुं चहुवान ।
इक जूझे पुनि ऊबरे, प्रगट्यौ सुजस जहांन ॥३६६॥
महा सुभट ताजन भयो, लयो सुजस सैंसार ।
भले पजाये भोमिया, करबर अरु करवार ॥३६७॥
ताजनकी तरवारकौ, डर उपज्यो नागौर ।
भै मानै पेरोजखां, खुलत न कबहू पौर ॥३६८॥
हनें खेतरी खरकरौ, बौहानों करि बैर ।
पाटन रेवासौं मिले, बस कीनी आंबेर ॥३६९॥
कछवाहे निरबांन पुनि, तूंवर और पंवार ।
इनपैं लीनी पेसकस, जानत सब सैंसार ॥५७०॥

॥ **सवैया** ॥ क्यामखानुंनंदन अरिकंदन ताजंन डर डरपन नागौर ।
हनें खेतरी और खरकरौ बौहांनौ पाटन इक दौर ।
रेवासौ दलमल्यो ते गबर गढ़ आंबेर खुलत ना पौर ।
तूंवर पंवार देवरे कूरम सांचे चहुवांन सिरमौर ॥३७१॥

॥ **दोहा** ॥ जबहिं भये बस कालके, ताजखांनु चहुवांन ।
राखे तबहि हिसारमैं, क्यामखांन असथांन ॥३७२॥
महमदखांन जब मरि गये, राख्यो हांसी मांहि ।
भाई और हिसारमैं, कोऊ राख्यो नांहि ॥३७३॥
ताजखांनु जब चलि गये, फतिहखानुं सिरमौर ।
बैठौ कोट हिसारमैं, भलै पिताकी ठौर ॥३७४॥

श्रीफतिहखांके पुत्र

१ जलालखां, २ हैबतसाह, ३ महमसाह, ४असदखां, ५दरियासाह, ६ साहमनसूर, ७ सेख सलह, ८ बलों, ९ संग्रामसूर, १० हेतम ।

खां जलाल हेतम बलो, सलह साह मंनसूर ।
दरिया हैबत असद महमद, जुद्ध सूर संपूर ।।३७५।।

अथ फतिहखांको बखांन

फतन भयो अतहीं प्रबल, नम्यो न काहू सीस ।
काहूकौ मानत नहीं, येक बिनां जगदीस ।।३७६।।
नींव दई षटंकोटकी, येक द्योंस कहि जांन ।
नगर फतिहपुर आपनौं, कर्‌यों फतन असथांन ।।३७७।।
नयो बसायो फतिहपुर, हौ सरवर उद्यान ।
नांव आपनै फतेहखां, कर्‌यो बड़ो असथांन ।।३७८।।
पंदरहसै जु अठौतरै, बस्यो फतहपुर बास ।
सुद पांचै तिथ ही तबहिं, और चैतकौ मास ।।३७९।।
संन सत्तावन आठसै, जगमैं कर्‌यो प्रकास ।
माह सफर दिन बीसवैं, बस्यो फतहपुर बास ।।३८०।।
कोट चिन्यो नींकै नखित, सुथिर कर्‌यो करतार ।
आस पासके भोमियां, आवहि करन जुहार ।।३८१।।
पल्हू सहेवा भादरा, पुनि भारंग अस्थांन ।
और बाइलै कोट ये, कीये फतन चहुवांन ।।३८२।।
पातसाहकी चोखसौं, रहि ना सके हिसार ।
कर्‌यो फतिहपुर फतिहखां, इतहि आइ तिंह बार ।।३८३।।
प्रथम रनाउमैं रहे, जो लौं चिनियो कोट ।
पाछै आये फतिहपुर, लये साथ दल कोट ।।३८४।।
पातसाह बहलोल चित, उपजी रिनथंभ चाहि ।
मिल्यो न मोसौं आइकै, हेंदू कोधौं आहि ।।३८५।।

ढल बल सजि लोदी चल्यो, रिनथंभौरको लैंन ।
धूर बिनां डिठ नां परै, येक भये दिन रैंन ॥३८६॥
सुनी फतिहखां बात यहु, दल बल साजि अपार ।
मारगमैं बहलोलकौं, कीनो जाइ जुहार ॥३८७॥
लोदी देखत फत्तंनकौ, बहुत बड़ाई दीन ।
क्यांमखांनकै नांवते, अंक वारनि भर लीन ॥३८८॥
नांव सुनत ही यों कह्यो, तब लोदी पतिसाह ।
फतिहखांनकै मिलत ही, दीनी फतह अलाह ॥३८९॥
परधानंनिसौं यों कह्यो, बार बार सुलतांन ।
कंचनकौ मांनस तक्यौ, फतिहखानुं चहुवांन ॥३९०॥
रिनथंभोरहू मैं सुन्यों, आवत है बहलोल ।
तब मांडौंकौ छत्रपति, उनहू लीनौ बोल ॥३९१॥
ताकौ नांव हिसामदी, मांडौको सुलतांन ।
रिनथंभोरकी भीरकौ, आयौ दै नीसांन ॥३९२॥
जब इतते लोदी गयौ, दल बल लयें अपार ।
गढ़ई भयौ हिसामदी, नाहि सक्यौ करि रार ॥३९३॥

फतननैं हिसामदी मांडौकौ पातसाह मार्यो

येक द्यौस बहलोलनैं, फत्तन लयौ बुलाइ ।
प्यार कियौ आदर दियौ, बात कही बिरदाइ ॥३९४॥
दादै तेरैं क्यामखां, कैसे कीने काम ।
फतिह करौ रिनथंभकौ, फतिह तिहारै नाम ॥३९५॥
फतिहखानुं ह्वैकै बिदा, चले लगे गढ़ जाइ ।
आगै साह हिसामदी, लर्यौ सनमुख आइ ॥३९६॥
खोलि पौरि हिसामदी, देख्यौ थोरौ संग ।
आपुन बहु दलबल लह्ये, आये लरन उमंग ॥३९७॥

॥ अर्धभुजंगी छंद ॥ इतहि चहुवानं, उतहि सुल्लतानं ।
चले नाल बानं, पर्‌यौ घमसानं ॥३९८॥
बहै सांग भारी, गडै तन कटारी,
लगै चोट कारी, मरै बहु जुझारी ॥३९९॥
परे राव रानं, पर्‌यौ सुल्लितानं ।
जित्यौ फतिहखानं, भयो जस जहानं ॥४००॥

॥ दोहा ॥ दुहूं वीर सूरा कटे, बहुत परचो घमसांन ।
बादै हन्यौ हिसामदी, जैत भई दीवांन ॥४०१॥
काट्‌यो सीस हिसामदी,पठयो ढिग पतिसाह ।
हर्षवंत छत्रपति भयो, देख्यौ नीकैं चाहि ॥४०२॥
फतिह करचो रिनथंभ तन, पैठौ गढ़मै जाइ ।
पातसाह बहलोलनैं, पाछै देख्यौ आइ ॥४०३॥
गढ़ लै दिल्लीकौं चल्यौ, लोदी साह पठांन ।
फतिहखांनु चहुवानकौ, दीनौ मनसब मान ॥४०४
जैत पत्र लै फतिहखां, आयौ अपनैं देस ।
थर हर कंपै भौमिया, जबते कर्‌यौ प्रवेस ॥४०५॥
नारनोलते अखनकी, आई यहै पुकार ।
मेवाती सबही मिले, माड्‌यौ चाहै रार ॥४०६॥
कै तुम आवहु आपहीं, कै दल देहु पठाइ ।
भय्यनकौ यहु काम है, संकट होंहि सहाइ ॥४०७॥
नारनोलकौ फतिहखां, दलबल दये पठाइ ।
अंखिन खिल्यो अति देखकै, फुल्यो अंग न माइ ॥४०८॥
मेवाती उतते चले, लागे ढोसी आइ ।
इतते चढ़ि इखतारखां, सनमुख लीने आइ ॥४०९॥
मार परी दहुं वीरते, जूझि गये जूझार ।
मेवाती दल निबल ह्वै, हारि चले तजि रार ॥४१०॥

बादा पहुंच्यौ चिमनकौ, दुंदुभ लयो छिड़ाइ ।
जैत भई सब जग सुनी, अंखन न अंग समाइ ।।४११

फतिहखानुं दल फतिह कर, आये लै नीसांन ।
सदा फतिहपुरमें बजै, रससौं सुजस जहांन ।।४१२।।

फतिहखानुंके दल प्रबल, भये येकतें येक ।
कौन कौनकौ जांवल्यौ, सौहे सुभट अनेक ।।४१३।।

कांधिल रिनमलराइकौ, दयो खेत बिचराइ ।
सीस कटें बहु गुन लर्‌यो, बहु गुन दये दिखाइ ।।४१४।।

सारौ सांगै रानकौ, अजा सांखलौ नांव ।
फतिहखांनकै कटकनै, मारि गिरायो ठांव ।।४१५।।

तिहं समये चीतौरहौ, आपुन फतंन मुछार ।
स्वामि बिना सेवक लरे, सुजस भयो सैंसार ।।४१६।।

जेते हैं दल फतनके, राठोरनसौं रार ।
जो आपन ह्वै सापुरस, तिहं सेवक जूझार ।।४१७।।

तैसी ही बुधि उपजत, बैठत तैंसे पास ।
जांन कहै यामै नहीं, अंत आदिकी रास ।।४१८।।

फतननै मुसकीखां किररांनी मार्‌यो

किररांनी हौ जातकौ, मुसकीखां तिहिं नांम ।
आयो फत्तनसों लरन, खोवन अपनी मांम ।।४१९।।

इतने फतिहखां चढ्यो, दलबल साजि अपार ।
सरसैमैं मिलि दुहुंननै, सरस मचाई रार ।।४२०।।

।।त्रिभंगीछंद।। उतहि पठानं, इत चहुवानं, गज केकानं जोधजुरे ।
गोली बहु छुटैं, करपग टुट्टै, मस्तक फुटै नांहि मुरे ।।४२१।।
लगे तन बानं, निकसै प्रानं, जूझै ज्वानं थकि न रहै ।
बरछी अंनियारी, तेग दुधारी, काटैं भारी सूर सहैं ।।४२२।।

॥ दोहा ॥ बहुत भयो जुध ना मिटै, तब बादैं असु डरि ।
नारि काटि करवारसौं मुसकी दीनौं डारि ॥४२३॥
जैतपत्र लै फतिहखां, आये अपनी ठौर ।
बहुरि करी आंबेर पर, चाहुवांन दै दौर ॥४२४॥
लूंटि लई आंबेर सब, गये भोमियां भाजि ।
नीकी बिधिसौं लरि मुये, हौ जिनके मुंह लाज ॥४२५॥
आयो फतन फतिह कर, फूल्यो अंग न माइ ।
बहुरि भिवानी पर चल्यो, नीको सैन बनाइ ॥४२६॥
जाइ भिवानी घेर ली, दल-बल अमित अपार ।
आगै जाटू जावले, भले लरे जूझार ॥४२७॥

फतननैं भिवानी मारी बंधकी करी

॥धवल छंद॥ उत जाटू चहुवान है, भयो जुद्ध पर्‌यो घमसांन है ।
उडि धूरि गई असमांन है, कहूं दिष्ट न आवत भांन है ॥४२८॥
चलै गोली बानं अपार ही, बहै जमंधर अरु करवार ही ।
बरछी ह्वै जा हिंदु सार ही, परे जाटू होइ सु मार ही ॥४२९॥
॥ दोहा ॥ फतिह फतिहखां की भई, जाटू हारे अंत ।
लूटि भिवांनी बंधकी, आने पकर अनंत ॥४३०॥
नीके मारे जोध दल, फतिहखानुं चहुवांन ।
अैसौ कौन जु लरि सकै, कहौ भोमिया आंन ॥४३१॥
जोधैकैं जियमें परि, करौ फतनसौं सुक्ख ।
नातौ करिहौ ज्यौं मिटै, दुहू वोरकौ दुक्ख ॥४३२॥
जोधै पठियो नारियर, फतन लीनौ नाहि ।
कांधिल बहु गुनहन्यौ हौ, रिस राखत मन मांहि ॥४३३॥
महमदखां सुत समंसखां, तबहि जूझनूं नांहि ।
उतहि नारियल लै गये, उनहू कीनी मांहि ॥४३४॥

बहुरि समसखां जो कह्यो, उत ब्यांहनको जाइ ।
जौ न रहौ करवार संग, डोला देहु पठाइ ।।४३५।।
यहै बात वै करि गये, डोला दयो पठाइ ।
मीरांजी जो कह्यौ हौ, मिल्यौ समै वहु आइ ।।४३६।।
पातसाह बहलोलनै, फत्तन लयो बुलाइ ।
निस दिन राखे निकट ही, छिन छिन प्यार जनाइ ।।४३७।।
येक द्योंस बहलोलनैं, असैं कह्यौ बिचार ।
हम तुम नातो चाहिए, बढ़ै प्यारमें प्यार ।।४३८।।
अदल बदलको साक ह्वै, इंछ्या पूजै प्रान ।
हम लोदी हैं जातके, जो तुम हो चहुवांन ।।४३९।।
तबही कह्यो जो फतननें, बदले साक न होइ ।
मेरे तो नाही सुता, अब अनब्याही कोइ ।।४४०।।
पातसाह मान्यौ बुरौ, फतन चढ्यौ रिसाइ ।
बहुरौं दिल्ली नां गयौ, बैठ्यौ अपने आइ ।।४४१।।
समसखांनु चहुवानसौ, कहि पठयो पतिसाह ।
अदल बदल नातौ करै, जूहै जीवमें चाहि ।।४४२।।
सुनी बात यहु समसखां, बहुत बधाई कीन ।
उहि तनया अपसुत बरी, बहन आपनी दीन ।।४४३।।
फत्तन जीयो जबहि लौं, नाहिंन बद्यो पठांन ।
सीस न नायो दिल्लीकौं, जानत सकल जहांन ।।४४४।।

॥ सवैया ॥

ताजंन अंस बिध्वंस धरा सबहि भुमियां भुज पानि पजाये ।
मारि लयो सुलतान हिसामदी, जाटू भिवानीके धूरि मिलाये ।
चिमनको हंन लीनौ नीसांन, भजाये हैं कांधिल जादौखिसाये ।
लूंटि आंबेर लयो रिनथंभ, जहानमें फत्तनको जस छायो ।।४४५।।

श्री दीवान जलालखाँके पुत्र

१ दौलतखां, २ अहमद खां, ३ नूरखां, ४ फरीदखां, ५ निजामखां,

६ पहाड़खां, ७ लाडखां, ८ दाऊदखां, ९ अबन, १० महमदसाह ।
दौलतखां, अहमद अबंन, लाड फ़रीद निजांम ।
महमद नूर पहारखां, खां दाऊद समांम ।।४४६।।

जलालखांको बखान

जबहिं भये बस कालके, फतिहखांनु सिरमौर ।
तब जसवंत जलालखां, भये पिताकी ठौर ।।४४७।।
कोट करयो हौ फतिहखां, तापर कीनौ और ।
कीनी खांन जलालनै, बडड़ी बाँकी पौर ।।४४८।।
दिल्लीकै पतिसाहकौं, बदैनखांनु जलाल ।
नागौरीको दुख दये, लूटि लूटि लै माल ।।४४९।।
नागौरीखां रिस भर्यो, दल कीने अनग्यांन ।
बीरौ फेर्यो सभामैं, लयो मुगल चौपांन ।।४५०।।
कटरा थल जागीर ही, इत दल साजे आइ
सुनियत बात जलालखां, बैठ्यौ सेन बनाइ ।।। ४५१।।

जलालखां चौपानखां मुगल आगै जीत्यौ

उतते आयो रोसमै, लरन चौप चौपांन ।
इतते दोर्यौ अतुलि बल, खां जलाल चहुवांन ।।४५२।।
येक बार छाडे भले, ताते मुगलनि बांन ।
किते येक घाइल भये, मानस अरु केकांन ।।४५३।।
जबहिं जलौ सब संगसौं, लई येक बर बाग ।
सके न बान चलाइकै, गये मुगलवा भाग ।।४५४।।
जांन तक्यौ चौपानखां, पुंहच्यौ खांनु जलाल ।
मनहु बाज चिरिया गही, पकर लयो ततकाल ।।४५५।।
छाडि दयौ चौपानखां, दयो नितंबनु दाग ।
हाथी घोड़े दर्ब रजु, लाज गयो सब त्याग ।।४५६।।

तब घर आयो जीतिकै, देत जैत नीसांन ।
खां जलालकी सर करै, को है अैसौ आंन ॥४५७॥

जलालखांनैं छापौरी आंबैर फतिह की

॥ दोहा॥ छापौरी ऊपर चढ्यो, फिर चकवै चौहान ।
उतके अनगंन भोमियां, मारि कर्‌यो घमसांन ॥४५८॥
बहुरि गये आंबेर पर, मारि मिलाई धूर ।
पै भुमिया नीके लरे, मरे लाज संपूर ॥४५९॥
हाथीखान जलाल को, भुमियनि घेर्‌यो आंन ।
दलमै काहू ना लख्यो, तक्यो आप दीवांन ॥४६०॥
लोग लगे हैं लूटकौ, काहूको सुधि नांहि ।
अपनी भुज बर खां जलो, आइ पर्‌यो उन मांहि ॥४६१॥
करी लये वै जात हे, पुंहचे जल्लोखांन ।
छाडि गये ज्यों लै भजे, अैसे लाये बांन ॥४६२॥
तब घर आये जीतिकै, खां जलाल चहुवांन ।
सूरत्तनकौ जगतमैं, सब कौ करत बखांन ॥४६३॥
समसखांनु जब मरि गयौ, फतिहखांनु तिह ठौर ।
ब्याह्यौ हो बहलोलकै, बदत न काहू और ॥४६४॥
भाई और बिमात है, तिनही न बांटौ देत ।
जो कछू उपजै जूंझनू, सबै आपही लेत ॥४६५॥
तब जोधापै चलि गयो, नांव मुबारकसाह ।
नांनां जू उपर करहु, ज्यों हम होइ निबाह ॥४६६॥
तब जोधैनै यों कह्यो, मोते कछू न होइ ।
मामू तेरे निकट है, बीका बीदा दोइ ॥४६७॥
तबहि मुबारकसाह उठि, आयो मामू पास ।
वैहू भीर न कर सकै, तब उठि चल्यो निरास ॥४६८॥

उतते आयो फतिहपुर, ताक्यो खांनु जलाल।
बहुत प्यारसेती मिल्यौ, भर लीनो अंकमाल ॥४६९॥
कह्यो मुबारक साहनै, हौं आयो तुम ताक।
जोधै बीकै हौं फिर्‌यौ, गनै न कोऊ साक ॥४७०॥
सबै डरै बहलोलते, ऊपर करै न कोइ।
काम हमारो जल्लोजू, तुमते ह्वै तो होइ ॥४७१॥
जलो कह्यौ बहलोलते, डर्‌यो न मेरो बाप।
अब जो हौं वातें डरौं, खोर लगाऊं आप ॥४७२॥
खां जलाल तब कटक करि, गये जूंझनू मांहि।
फतिहखांनुके दल भगे, जूझ सक्यो को नांहि ॥४७३॥
तबहि मुबारकसाहकौ, दयो जूंझनू राज।
फतिहखांनु उत मरि गयो, पूजे सब मन काज ॥४७४॥
फतिहखांनु जब मरि गयो, सुत समस सिरमौर।
महमदखां टीकौ कर्‌यौ, गई मुबारक ठौर ॥४७५॥
रह्यौ लुहागर जाइकै, खांनु जलाल जुधार।
नागौरीकौ देत दुख, पकरें वोट पहार ॥४७६॥
सूनो फतिहपुर सुन्यो, चित बीदा ललचाइ।
जानत काहू भांतिकै, गढ़मै पैठौ जाइ ॥४७७॥
बीदा दल बल जोरिकै, नरहर उतर्‌यो जाइ।
खानुं दिलावरसौं मिल्यौ, बात कही समझाइ ॥४७८॥
नांहि फतिहपुरमैं कोउ, तुम चलि मोकौं देहु।
देउं रुपया दस सहस, अरु इक तनया लेहु ॥४७९॥
सुनियहु बात पठांन कैं, भाई है मन मांहि।
देइ दमामो उठि चल्यो, गहर लगाई नांहि ॥४८०॥
आवत आवत गोवरै, उतरे दोउ आइ।
भलो महूरत ना लहै, पैठे गढ़में जाइ ॥४८१॥

मानस दोर्‌यौ नगरकौं, गयो लुहागर मांहि ।
यहै कहै दीवानजू, फिर गढ़ पावो नांहि ॥४८२॥
बीदा आया कटक करि, खांनु - दिलावर संग ।
अैसौ कौन जु करि सकै, तुम बिन उनसौं जंग ॥४८३॥
जल्लौको बेटो बड़ौ, दौलतखां तिह नाम ।
बात सुनत ही चढ़ि चल्यो, अचवन नीर हरांम ॥४८४॥
आइ रही थोरी निसा, तब गढ़ पैठ्यो आन ।
दौलतखां जल्लो नंदन, देत जैत नीसांन ॥४८५॥
तब बीदा बिड्डरन लगे, लाग्यो डरुन पठांन ।
दहदह हल खलभल भई, आये दौलतखांन ॥४८६॥
आप आपकौ भजि गयै, कमधज और पठांन ।
बास परे ज्यों बाघकी, भग्गे गऊ उद्यांन ॥४८७॥
पाछैते आयौ उतहि, खां जलाल चहुवांन ।
जैत भई है पुत्रकी, बहु सुख उपज्यो प्रांन ॥४८८॥

॥ सवैया ॥

खां जलाल, मरद मुंछाल, चौपानकौ घान मैदानमें कीनौ ।
छार करी है, छपोलिय जरिकै, मरिहिंकै जु लुहागर लीनौ ।
गंज अंबेर, भये सब बरिय, टाक संमसखा ह्वै रह्यौ हीनौं ।
जूंझनू आनि, बिठायो भुजा गहि, टीकौ मुबारकसाहको दीनौं ॥४८९॥

श्री दीवान दौलतखांके पुत्र

१ नाहरखां, २ होंबनखां, ३ बाजीदखां ।

॥ दोहा ॥ नाहरखां बाजीदखां, होबनखां जुझार ।
दौलतखां नंदन नरिंद, तीनौ मरद मुछार ॥४९०॥

दौलतखांको बखांन

जबहिं भये बस कालकै, खां जलाल सिरमौर ।
तब दौलतखां जांन कहि, बैठे उनकी ठौर ॥४९१॥

दौलतखांसौ खेत चढ़ि, लरै सु ग्रैसौ कौन।
भै मानै भरमैं फिरै, दुर्जन छांडै भौन ॥४६२॥
बैरी आये नाक सब, घर झांकनकी आंन।
आक ढ़ाक छपते फिरै, हाक धाक चहुवांन ॥४६३॥
बिरद बहत इन बातके, दौलतखां दीवांन।
ना भाजौं जो आइ हैं, लरन सात सुलतांन ॥४६४॥
और करी ही आन यहु, नाहिन लेउ अकोर।
जैसी कौड़ीकौ गनौं, तैसी लाख करोर ॥४६५॥
और कहत हे बात यहु, जौ बिन पावै कोइ।
कौड़ी हाथ न लाइ हौं, अरब खरब जो होइ ॥४६६॥
आवै जिती अंगुस्ट तर, सींव न दाबंन देउ।
और पराई भूमिकैं, रंचक दाबंन लेउ ॥४६७॥
दौलतखांमै ही कछू, रचनहारकी जोत।
बचन जु मुखते उच्चरत, सोई निहचै होत ॥४६८॥
बीका ढोसी गयो हौ, उतते आयो भाजि।
.....रंन चित चोख घरि, चल्यो उतहि दल साजि ॥४६९॥
पाट्येधै डेरा भयो, तब पठये परधांन।
लूनकरन चिट्ठी लिखी, करिकैं बहुत गुमांन ॥५००॥
दौला चीठी देखितैं, बैगौ मोपै आइ।
जौ अपनौ चाहैं भलौ, तौ कछु भुगत पठाइ ॥५०१॥
बांचत ही अति पर्जर्‌यो, खां जलालकौ पूत।
कह्यौ कांम लै भाड़कौं, या चीठीमै मूत ॥५०२॥
परधांननिकै देखते, मूत्यौ चीठी मांहि।
जरि बरिकै क्वैला भये, बोल सके कछु नांहि ॥५०३॥
बांधी अंचर बसीठके, बारू रेत मंगाई।
लूनैकै सिर रेत है, जो नां लरिहैं आई ॥५०४॥

लूनैंसेती यौ कह्यौ, जो तूं चढ्यौ तुषार ।
आई जो आयो नहीं, तौ रासिन्भ असवार ।।५०५।।
परधांननिकौ धके दै, काढ़े वाही बार ।
कह्यो बसीठ न मारिये, नांतर डारत मार ।।५०६।।
जबहि गये परधांन उठि, सोच भयो पुर मांहि ।
तब दौलतखां यों कह्यौ, बाकैं धर सिर नांहि ।।५०७।।
लूनकरनकैं ढिग गये, फीकै मुख परधांन ।
सकल बचन परगट करे, कहे जु दौलतखांन ।।५०८।।
लूनकरन सुनि रिस भर्‌यो, तब यहु कर्‌यो विचार ।
आवत याकौ मारिहैं, पहलें ढोसी मार ।।५०९।।
उतते चढ़ि ढोसी गयो, दलबल लये अपार ।
आगै रहत पठांन हे, नीके लरे जुझार ।।५१०।।
तुरक मान कीनी मदत, जाँनत सकल जहांन ।
हेंदू मारे खेत घर, भलौ पर्‌यौ घमसांन ।।५११।।
लूनकरन मार्‌यौ उतहि, लूटि लयो सब साथ ।
तुरक मांन कवि जांन कहि, भले लगाये हाथ ।।५१२।।
पहलें हीते जो कह्यो, दौलतखां दीवान ।
सोई निबर्‌यो होइकै, अचल बचंन चहुवांन ।।५१३।।
दौलतखां बांकौ बली, नां कौ गंजै ताहि ।
डांकौ बाजै जैतकौ, सांकौ मानहि साहि ।।५१४।।
बांकै बांकै ही बने, देखहुं जियहि बिचार ।
जो बांकी करवार ह्वै, तौ बांकौ परवार ।।५१५।।
बांकैसौं सूधौ मिलै, तौ नाहिंन ठहराइ ।
ज्यों कमांन कबि जांन कहि, बानहि देत चलाइ ।।५१६।।

सुलतांन बाबरसुं दौलतखां मिल्यौ

बाबर काबिलते चल्यौ, ढीली देखन चाहि ।
भेख कलंदरको कर्‌यौ, येक बाघ संग ताहि ।।५१७।।

आवत आवत फतिहपुर, इक दिन निकस्यौ आइ।
मिलि दीवांनसौं यों कह्यौ, येक मंगावहु गाइ ॥५१८॥
भूखौ है दिन तीनकौ, बाघ हमारौ आज।
दीजै गाइ मंगाइकै, ज्यौं पूरै मन काज ॥५१९॥
दौलतखां दीवाननें, दीनी गाइ मंगाइ।
देखौ मेरे देखतै, बछुवा कैसे खाई ॥५२०॥
मारनको बछुआ उठ्यौ, निकट तकी जब गाइ।
हाक दई दीवांननै, सिंघ सक्यौ नहिं जाइ ॥५२१॥
बाघ चलै उठि गाइकै, फिर हटकै दीवांन।
उहि ठौर ठाढ़ौ रहै, गऊ न पावै खांन ॥५२२॥
तब बाबरनै यौं कह्यौ, खां देखह जु गाइ।
जौ तुम यासौं यों करी, तौ······रि जाइ ॥५२३॥
डिस्ट करेरीं सापुरस, सिंघ न सकै सहार।
मद कुंजरकौ सूकि है, सुनिकै सुभट हकार ॥५२४॥
बाबर जब इतते गयो, देख्यो अलवर जाइ।
हसनखांनकैं कटककैं, देखि रह्यो भरमाइ ॥५२५॥
उतते ढीलीको गयौ, तक्यों सिकंदर साह।
पाछै काबिलकौ गयो, सकल हिंद अवगाह ॥५२६॥
पूछन आये लोग सब, ढिली मंडलकी बात।
तब बाबरनैं यों कह्यौ, तकी तीनही जात ॥५२७॥
तीन पुरष अैसे तके, सगरे हिंदसतांन।
तिनकी सम कौ जगतमैं, डिस्ट न आवै आंन ॥५२८॥
येक सिकंदर आपही, ढीलीको पतिसाह।
पुनि मेवाती हसनखां, जाकै कटक अथाह ॥५२९॥
तीजौ दौलतखां तक्यौ, नगर फतिहपुर आइ।
जाके डरते बाघहूं, मार सक्यो नां गाइ ॥५३०॥

दौलतखां चहुवानकै, कीजै कहा बखांन।
दीनदार दातार है, पुनि जूझार दीवांन ॥५३१॥

दौलतखांनैं गौर निरबांन मारे

लूंट चले नागौरके, गांव गोरि निरबांन।
दौलतखां यहु बात सुनि, चढ्यौ बजे निसांन ॥५३२॥
मारगमें घेरे सकल, गौर और निरबांन।
मच्यौ जुद्ध नारद नच्यौं, पर्‌यौ बहुत घमसांन ॥५३३॥
जीते अंत दीवानजू, दुर्जन मारे कूट।
दौलतखां चहुवाननें, लूट लइ सब लूंट ॥५३४॥
चढ्यौ अहेरै येक दिन, दौलतखां दीवांन।
बाज कुही बहरी जुरे, बासे संग अनग्यांन ॥५३५॥
बहरी छाडी कूंजको, गई निकट आकास।
डिष्ट कहूं आवै नहीं, उठि आये तजि आस ॥५३६॥
जात जात बहरी गई, उतरी जाइ हिसार।
उतहि बुलावत बाजकूं ठाढ़ें मीर सिकार ॥५३७॥
सौंपी लै सिकंदारकौं, राखी करिकै प्यार।
दौलतखां यहु बात सुनि, लई हिंसार कतार ॥५३८॥

दौलतखां आगै मुहबतखां साराखांनी भाग्यो

हौ सिकदार हिसारकौ, नांव मुहबतखांन।
साराखांनी सैन सजि, आयौ लरन पठांन ॥५३९॥
दौलतखां यहु बात सुनि, नासौ उतरे जाइ।
उतते वहु उतते चढ़े, मिली सैन द्वै आइ ॥५४०॥
महबतखांनै दूरतें, देख्यौ दौलतखांन।
मुख फीकौ उर धकधकी, बिचलन लागे प्रांन ॥५४१॥

सूधी कही पठांननैं, अपनै दलसौं बात ।
दौलतखां चहुवानसौं, मौपें लर्‌यौ न जात ।।५४२।।
यौं कहि मिटि कै उठ चल्यौ, छूट गयौ है धीर ।
निकसि गयौ ज्यौ बाटमैं, तन उपजी भै पीर ।।५४३।।
देत दमामें जेतके, आयौ दौलतखांन ।
कोट सुभट संमडिष्टहीं, मारत है चहुवांन ।।५४४।।
खां सहाबसौं खेत चढ़ि, नीकौ कर्‌यौ बचाव ।
जो को नांतौ पालिहै, सो ना ताकत दाव ।।५४५।।
आपहि मारत आपही, सु कर्माहिंसो जात ।
गोत घाव जो कीजीये, मनहु करी अपघात ।।५४६।।
डारी येक डुराइये, डोरि हिंडारि अनेक ।
जे उपजे रज येकते, है तिनकी रज येक ।।५४७।।
जो रज खोवै गोतकी, लजत नांहि ज्यो मांहि ।
कै वाहूमें रज नहीं, कै उहि रजकौ नांहि ।।५४८।।
दुख पावत दुख गोतकै, है सु तिलक कुल औंन ।
फलिका पाइ पिरातु है, नींद न आवत नैंन ।।५४९।।
दौलतखांके सुभ वचन, सुनहु सबै दै चित्त ।
तीन बात दीवांनजू, कहत रहत यो नित्त ।।५५०।।
करता जानहु येक करि, जिन मन आनहु दोइ ।
सब रचना आपै रची, संगी लयो न कोइ ।।५५१।।
धीरज देहु न छाड़िकैं, डरहु न बिन करतार ।
कहा भयो दुर्जन भये, जौपैं लाख हजार ।।५५२।।
कहा भयो कवि जांन कहि, बैरी बकी कुबात ।
कबके गिर गिर कहत हैं, पै गिरना गिरजात ।।५५३।।
और कहत दीवांन जू, समझहु बात बिबेक ।
न्याइ समै दुर्जन सजन, दोऊ जानहु येक ।।५५४।।

भयो सिकंदर छत्रपति, मर्‌यो जबहिं बहलोल ।
दौलतखां नाहिंन बदै, भुजबर करै किलोल ॥५५५॥

॥ सवैया ॥

दौलतखा चहुवान अपनै भुजनि पांनि
होइ मतिवारौ हाथी अरि चीर मारी है ।
देखै गज सैंन तब रंचक बदै न कछु
सूकै मद गज बाघ होइकै बिदारी है ॥
सिंघकौं तकेते पल कल सारदूल होइ
सारदूल देखकै भुजंनि बर मारि है ।
नंदन जलालखांकौ बाज होइ ततकाल
धावै खल दल जब तीतुर निहारि है ॥५५६॥
दौलतखां चहुवांन मलिकै नागोरी मान
तिमरके दलबल भीलि भांत भंजे हैं ।
महबतखांन साराखांनी हू भजाइ दीनौ
गौर निरवान मारे गढ़ कोट गंजे है ।
अरिनं नारि बंन बंन..................
पानीयो न पावै अंग मंजनन मंजे है ।
तनमै न भूषन न बसन भूखी डोलत
मुख न तंबोर द्रिग अंजन न अंजे है ॥५५७॥

॥ दोहा ॥ भयो मुबारक साहकै, बड़ड़ो खांन कमाल ।
ताकौं दीनी झूंझनू, और सबै बित माल ॥५५८॥
दूजौ पुत्र सहाबखां, ताकौ नौहां दीन ।
जीयौ तौलौ उत रह्यौ, भईयाको आधीन ॥५५९॥
दोउ भइया जब मुये, गोनें छाड़ि जहांन ।
पूत रहे इंन दुहुनके, तिनकौ करौ बखांन ॥५६०॥
बेटा खांन कमालको, भीखनखां तिह नांव ।
राज झूंझनमैं करै, वाकै बस पुर गांव ॥५६१॥

बेटा खांन सहाबकौ, महबतखां तिह नांम।
भीखनखांसूं चोख चित, पै नित करत सलाम ॥५६२॥
भीखनखांहूनै लख्यौ, कपट महोबतखांन।
तबते डिस्ट न जोरिहै, मनमें बढ़ी रिसांन ॥५६३॥
तब नौहांकौं, छाडिकै, चल्यौ महोबतखांन।
आइ फतिहपुरमैं रह्यो, राख्यौ दौलतखांन ॥५६४॥
महबतखां बेटीं दई, फदनखांनकौ चाहि।
ज्यों लै दैहै झूंझनू, दैन जोड़ाये आहि ॥५६५॥
केतक दिन सेवा करी, बहुरि बीनती कीन।
मोकौं भीखनखांननैं, देस निकारौ दीन ॥५६६
दौलतखां तब यों कह्यो, नौंहां तेरी आहि।
देखैं कौन निकारिहै, तूं उत बेगौ जाहि ॥५६७॥
जो भीखनखां ना रहै, मानस देहि पठाइ।
वाकों नीकी भांतसों, राखौंगौं समझाइ ॥ ५६८॥
नौंहां बैठ्यौ जाइकै, जबहि महबतखांन।
भीखनखां यहु बात सुनि, दल साजे अनग्यांन ॥५६९॥
महबतखां तब सुनत ही, मानस दयो पठाइ।
नाहरखां इतते चढ्यौ, पुंहच्यौ, बेगो जाइ ॥५७०॥
इतते महबतखां चढ्यौ, उततें भीखमखांन।
आभूसरकै ताल पर, भलौ पर्यौ घमसांन ॥५७१॥
नाहरखांकौं देखिकै, भीखनखां थहराइ।
जैसें नाहरकैं तकें, बिझुकै भज्जै गाइ ॥५७२॥
भीखनखां तब भजि गयो, जीत्यो नाहरखांन।
महबतखांकौ झूंझनू, लै बैठाओ आंन ॥५७३॥
नाहरखां जुध जीतिकै, आये बजत नीसांन।
गरै लगायो प्यारसौं, दौलतखां दीवांन ॥५७४॥

जौलौं दौलतखां जिये, साके किये अपार ।
अंत न कोउ थिर रहै, या झूठै सैंसार ॥५७५॥

दीवान नाहरखांके पुत्र

१ फदनखां, २ बहादरखां, ३ दिलावरखां ।

॥ दोहा ॥ बड़ौ फदनखां जानियों, और बहादरखांन ।
पुनहि दिलावरखांन है, जानि लेहु कहि जांन॥५७६॥

नाहरखांकौ बखान

॥ दोहा ॥ जबहि भये बस कालकैं, दौलतखां सिरमौर ।
तब नाहरखां जांन कहि, भयौ पिताकी ठौर ॥५७७॥
करता दीनी लच्छिमी, निसदिन करत कलोल।
पातुर चातुर रूप बर, बहुत लई है मोल ॥५७८॥
नचैं अखारौ रैंन दिन, छिन छिन कौतिग होइ ।
राज मांन दीवान ये, रागलीन है दोइ ॥५७९॥
मरद मुछार जुझार है, उठ्यो लहे बहु बंक ।
भौ मानत है भोमियां, करै सिंवारी संक ॥५८०॥
बीकावतनै सोचि कै, दूरि करि चित चोख ।
लूनकरन बेटी दई, उपज्यो अति संतोख ॥५८१॥
पहलै बोल कियो हुतौ, जीवत लूनकरन ।
दई वजीरनि ब्याहि कै, आये चरन सरन ॥५८२॥
जबहि सिकंदर मरि गयो, भयो बिराहिम साह ।
वाकौ हनि दिल्ली लई, बाबर दई इलाह ॥५८३॥
भयो हमाउं पातसाह, बाबर पाछैं जान ।
सेरसाह पाछै भयौ, समये नाहरखांन ॥५८४॥
सेरसाह आदुर दयौ, नाहरखांनु निहार ।
मामूं कहि बातैं कहत, और करत बहु प्यार ॥५८५॥
सेरसाह अैसैं कह्यौ, नगर आपुनै जाहु ।
कर्‌यो फतिहपुर पेसकस, घर बैठे तुम खाहु ॥५८६॥

चोवा नाहरखानकै, निकसत उत्तिम आहि ।
बास मगंन ह्वै रीझिकैं, मांग लयो पतिसाहि ।।५८७।।

महलकौ सबता

॥ दोहा ॥ अपनें मनकी उकत सौं, महल चिनायो येक ।
वैसौ जगमै और नां, घन दीवाँन बिवेक ।।५८८।।
पंद्रह सै जु तिरानुंवै, महल रच्यो दीवांन ।
भादौ सुदि आठैं हुती, सोमवार कहि जांन ।।५८९।।

नाहरखांनै जगमाल पंवार भजायो

॥ दोहा ॥ नागौरी खां पर चढयो, राना दल बल साज ।
इनहू सुनि मांडे चरन, ही आगैकी लाज ।।५९०।।
कूरम कमधज सकल ही, मांनत खांकी आन ।
दिल्लीकौं जानत नहीं, बदत न मुगल पठांन ।।५९१।।
आये गांगा जैतसी, सूजा पिर्थी राज ।
और भोमिया निकटके, सब आये करि साज ।।५९२।।
नागोरी चिठ्ठी लिखी, टेरे नाहरखांन ।
रानैकौ आंवन सुन्यौ, चढ्यो तंत दीवांन ।।५९३।।
नीकी सैन बनाइ कै, चक्रवती चहुवांन ।
निकट गये नागौरकै, देत जैत नीसांन ।।५९४।।
उतहि जाइ असैं सुन्यौ, नागोरी गढ़ मांहि ।
रानौ बाहर कोस पर, निकसि लरत है नांहि ।।५९५।।
रिस उपजी चहुवान चित, नां पैठ्यौ नागौर ।
तीन कोस आगै गयो, सुभटनिकौ सिरमौर ।।५९६।।
खां सुनि पाई बात यहु, मानस दयो पठाइ ।
चले अकेले तुम कहां, हमपै उतरौ आइ ।।५९७।।
नाहरखां तब यों कह्यौ, रानौ उतर्यौ पास ।
वोट गही तुम कोटकी, नाहिन लेत निकास ।।५९८।।

हौं पाछै आवत नहीं, आगै उतर्‌यौ जाइ ।
जो मिलबेकी हौंस है, इतहि मिलहु तुम आइ ॥५९९॥
नागौरी खां सुनत ही, चढ्‌यौ बजे नीसांन ।
आयो नाहरखांनपै, मिलि सुख उपज्यो प्रान ॥६००॥
तब रानों यहु बात सुनि, निसही गयो पराइ ।
हाक धाक सुनि सुभटकी, काइर क्यों ठहराइ ॥६०१॥
खाँ उठि दौर्‌यौ खोजहीं, जित जित निकस्यो रांन ।
आगै पाछै जात है, जैसें रैन बिहान ॥६०२॥
राना बर्‌यौ पहाड़मैं, फिरी सैन नागौर ।
गांव लये सब लूंटि कै, बंची न कोऊ ठौर ॥६०३॥
आवत है ये उमंगसौं, लूंट चले चित चाइ ।
तब जगमाल पंवारनै, मांनस दयो पठाइ ॥६०४॥
करत जाहु रजपूत मुहि, जो तुम में रज होइ ।
पहुँचौ जौ ठाढ़े रहौ, पहर येक कै दोइ ॥६०५॥
रानैनै अजमेर मुहि, सौंपी ही कर प्यार ।
देस लूंटि कै तुम चले, करत जाहु इक रार ॥६०६॥
किनही मुख लायो नहीं, तब उठि चल्यो बसीठ ।
काहूकौ नाहीं बदै, गार देत मुख ढ़ीठ ॥६०७॥
नाहरखां यहु बात सुनि, नाहिनं सक्यो सहार ।
मानस तबही पंवार कौ, अपतन लयो हंकार ॥६०८॥
हरयें हरये आइयहु, भाषहु जाइ पँवार ।
हौं नाहरखां बागरी, जाउं न बिना जुहार ॥६०९॥
नाहरखां ठाढ़े रहे, और गये सब छाडि ।
नां राखी पहिचान कछु, ना रजवटकी आडि ॥६१०॥
नागोरी नगरी तकी, बीकै बीकानेर ।
सूजै ताक्यौ अमरसर, आंबैरै आंबेर ॥६११॥

नाहरखाँ निहचल रह्यौ, धरि अपनै मनि धीर ।
क्यों न होइ जिह बंसमैं, पिरथी रा हमीर ॥६१२॥
मारग तकै पंवारकौ, मकरानैंकै ताल ।
ताही मै बहु दल लये, आयो डिठ जगमाल ॥६१३॥
फौजदार अजमेरकौ, हौ जगमाल पँवार ।
रानैंकै दल बल लये, हय नर अमित अपार ॥६१४॥
दहूं वोर बांटी अनी, बनी सैंन जूझार ।
छूटत है गोली घनी, बरिषा बान अपार ॥६१५॥
॥ गैनन्दछन्द ॥ उमडे कटक दहुं वोरके, घमंडे मनौ घनस्याँम ।
हथियार चमकत देखीये, ज्यों बीजुरी अभिरांम ॥६१६॥
इंद जैसै गज्जिहै, त्यों बज्जिहै नीसांन ।
बुंद नाईं बरसिहै, बरिखा लग्गी बहु बांन ॥६१७॥
छेद करिहै अंगमैं, चलिहै छछोहे बांन ।
कटिहै कटि मुंड कर, जित लागि है किरपांन ॥६१८॥
चहुवांन पंवार मिलिकै, कर्‌यौ है घमसांन ।
सुभट सुभटनि लरि मरै हैं, पर्‌यौ कीचक धान ॥६१९॥
खेल जुद्धकै खेले भले, जोध रची धमाल ।
लरत नांहिन मिटे रंचक, कटे मरद मुंछाल ॥६२०॥
चले नारे खार रत भयो, लाल सगरो ताल ।
अंत जीत्यो खांन नाहर, भाजियो जगमाल ॥६२१॥
॥ दोहा ॥ नाहरखांनै खेत चढ़ि, पूठ कहूं ना दीन ।
दौलतखांकै नंदनै, आगै ही धस लीन ॥६२२॥
॥ सवैया ॥ दौलतखां नंदन जग बंदन नाहरखां नाहर है मानौ ।
चढ़ै तुरंग कुरंग होहिं अरि गउवनकी ज्यों परत भगाँनौ ।
मकरानै जगमाल भजायौ हाक धाक भै मानत रानौ ।
जाकी भुजा प्यारकर पकरी महबतखां ज्यों पार लगानौ ॥६२३॥

श्री दीवांन फद्नखांके पुत्र

१ ताजखाँ, २ पेरोजखाँ, ३ दरियाखां ।

॥ दोहा ॥ ताजखांनु पेरोजखां, तीजौ दरियाखाँन ।
फदनखांनुके नंद हैं, पर्गट सकल जहांन ॥६२४॥

अथ फद्नखांको बखांन

॥ दोहा ॥ जबहिं भये बस कालके, नाहरखां सिरमौर ।
तबहि फदन खां जांन कहि, बैठे उनकी ठौर ॥६२५॥
फदन खांन दीवानकैं, ग्यान दयौ करतार ।
सम लुकमाँन हकीमकी, देत सकल सैंसार ॥६२६॥
दिल्ली मांह सलेम साह, भयो जबहि पतिसाहि ।
कीनी बहुत पठांननै, फदन खांनकी चाहि ॥६२७॥
महबतखां सुत खिदरखां, फदन खांनके पास ।
ठाढ़ौ हौ पतिसाहनै, असैं कर्यौ प्रकास ॥६२८॥
फदन खांन तूं आव इत, वहन तिहारी ठौर ।
कहा भयौ भइया भये, तूं सबमैं सिरमौर ॥६२९॥
बहुर हुमायों आइ कैं, भयो दिल्ली सुलतांन ।
फदन खांनुकौ टेरकैं, दीनौ आदुर मांन ॥६३०॥
जब अकबर दिल्ली भयो, साहिनकी मनसाह ।
फदन खांन दीवांनसौं, कीनौ हेत निबाह ॥६३१॥
अमित प्यार निसदिन करत, अकबर साह सुजांन ।
फदन खांनु चहुवांनकौ, जगुमैं बाढ्यौ मान ॥६३२॥
करी बीनती बीरबल, देखि छत्रपति प्यार ।
इत्ती मया तुम करत हौ, या पर कौंन बिचार ॥६३३॥
पातसाह तब यों कह्यौ, सुनि बर बीर बिचार ।
और बड़े मेरे किये, ये कीने करतार ॥६३४॥
साढ़े तीन कुली कहै, रंजपूतनकी जात ।
तोहि कहौं समुझाइ कै, सुनि लै तिनकी बात ॥६३५॥

चाहुवाँन तुंवर दुतीय, तीजौ आहि पंवार ।
आधेमें सगरे कुली, साढ़े तीन बिचार ।।६३६।।
जैसें सब बाजित्रमें, है बड़डौ नीसांन ।
तैसें सब ही जातमैं, बडो गोत चहुवांन ।।६३७।।
फदन खांनु सौं यों कह्यो, छत्रपति अकबर साहि ।
हमसौं तुम नातौ करहु, पूजै मनकी चाहि ।।६३८।।
अकबरकौं बेटी दई, फदन खानुं चहुवांन ।
बढ्यौ प्यार बहु प्यारमैं, अति सुख उपज्ये प्रांन ।।६३६।।
पातसाहकौ नां परै, भुमियनकौ पतियार ।
हेंदू गुमरह होत हैं, फिरत न लावै बार ।।६४०।।
तौ हौं मनसब देउं तुम, जो तुम देहु जमांन ।
तब सबके जामिन भये, फदन खानुं चहुवांन ।।६४१।।
राइसालकी बांहि गहि, फदन खानुं सुलतांन ।
दरबारी करवाइ कैं, द्यायो मनसब मांन ।।६४२।।

फदन खांनै बीदावत भगायो

।। दोहा ।। बीदावत नाहिंन रहत, चोरी करि करि जांहि ।
फदन खांन दीवाननें, रोस धर्यो जिय मांहि ।।६४३।।
बदत न बीकानेरकौ, फदन खांनु दीवांन ।
दल कर बीदाहद गये, देत निडर नीसांन ।।६४४।।
पहुंचे छापर दूंनपुर, बीदे गये पराइ ।
लर न सके दीवांनसौं, छूटे सबके पाइ ।।६४५।।
बीदाहदहि विध्वंस कै, आये हैं दीवांन ।
बीदावत बन्यों चले, करि चोरीकी आंन ।।६४६।।

फदन खांनै छापौली वा पूष मारी

।। दोहा ।। निरब़ाननि ऊपर चढ़े, करि कै कोप दीवांन ।
लये सुभट पखरैत बहु, देत जैत नीसांन ।।६४७।।

निरबांननि पर जांन कहि, बहुत परी है मारि ।
छापौरी अरु पूंख पुनि, जारि बारि की छारि ॥६४८॥

फदन खांनसौं लरि सकै, अैसौ कौन जूझार ।
नाहरखांकै नंदकौ, मानत सब संसार ॥६४९॥

॥ सवैया ॥ नाहरखाँनु नरिंद नराधिप नंदन फदनखांनु सिर मौर ।
करि दल गयो दून पुर छापर, ना ठहराइ सके राठौर ।
छापौरी अरु पुंख रौष ह्वै धूरि मिलाई यैक्कै दोर ।
भये सहाइ बहादरखांके ले कै दई झूंझनू ठौर ॥६५०॥

श्री दीवांन ताजखांके पुत्र

१ महमदखां, २ महमूदखां, ३ सेरखां, ४ जमालखां,
५ जललखां, ६ मुजफरखां, ७ हैबतखां, ८ हबीबखां ।

॥ दोहा ॥ महमदखां महमूदखां, सेरखांनु दीदार ।
खांन जमाल जलालखां, मुजफरखां जूझार ॥६५१॥

हैबतखां जु हबीबखां, अष्ट ताजखां नंद ।
ये लागत हैं चंदसे, और सिंवारी मंद ॥६५२॥

ताजखांकौ बखांन

॥ दोहा ॥ जबहि भये बस कालके, फदन खानुं सिरमौर ।
तबहि ताजखां जाँन कहि, बैठे उनकी ठौर ॥६५३॥

ताजखांनकै रूपकी, परी जगतमें रौर ।
बिन पूछयौ ही जानिये, आहि बंस सिरमौर ॥६५४॥

उजियारें दौलत खां, सुन्यो रूप दीवांन ।
तब चितराइ मगांइ कै, रीझ्यो देखि पठांन ॥६५५॥

ताजखांकी फतिह

॥ दोहा ॥ अलवर ते दल कर चढ़ें, ताजखानुं चहुवांन ।
मारी सारां खरकरी, पुनि. गढ़ येदल खान ॥६५६॥

मलिक ताजकौ लूंटि कै, ताजखानुं चहुवांन।
थांनौ रैबारी हन्यौ, जानत सकल जहांन ॥६५७॥

॥सवैया॥ अलवर ते दलबल कर धायो तरवार ताजखानुं चहुंवांन ।
मारी सारां और खरकरी लूटि लयो गढ येदलखांनु ।
मलिक ताजकौं भंजि गंजिकै राइमलहिं हरखे दीवांनु ।
बिचरायौ रैवारी थांनौं प्रगट्यौ है जसु सकल जहांनु॥६५८॥

॥ दोहा ॥ ताजखांन कौ बड़ौ सुत, महमदखांनु चहुवान ।
ग्यानवंत दाता सुभट, सम को नांही आन ॥६५९॥
अरथ दुर्‌यो ततछिन लहत, चातुर ग्यान अपार।
इंछया पूरत सकल की, महमदखां दातार ॥६६०॥

श्री दीवांन महमदखांके पुत्र

१ अलिफखां, २ इबराहिमखां, ३ सरमसतखां ।

॥ दोहा ॥ अलिफखांनु कुल तिलक है, पुनि इबराहिमखांन ।
तीजौ खां सरमसत है, जानि लेहु कहि जांन ॥६६१॥

महमदखांकी फतिह

॥ दोहा ॥ महमदखां साधे भलै, क्यारौ पुनि बैराठ ।
करवर कैंबर जांन कहि, जेर करी है राठ ॥६६२॥
कुंभकरन मांडन नंदन, कूंपावत राठौर ।
दीनौ खेत खिसाइ कै, महमदखां सिरमौर ॥६६३॥

॥ सवैया ॥ ताजखांनु सुत तिलक सुभट मैं महमदखांनु मरद मुछार ।
क्यारौ अरु बैराठ तेग बर साधे अरि लागे पग हार ।
कुंभकरन मांडनको नंदन खैत खिसम्य दयो जूझार ।
दीनदार सरदार छबीलो भोज करन सम बुद्धि दातार ॥६६४॥

॥ दोहा ॥ भर तरुनापै मरि गये, महमद खां चहुवांन ।
पूत पितापहलैं मरै, यातैं कठिन न आँन ॥६६५॥

अति दुखि पायो ताज खां, पै कछू नांहि बसाइ ।
रुदन करै असुवां बिना, कछू हाथ नहिं आइ ॥६६६॥
पाछैं रह्यौ सपूत अति, अलिफ खाँनु चहुवान ।
पं.तैंकैं सिर कर धर्यो, ताजखानुं दीवांन ॥६६७॥
पातसाह पैं ले गये, पोतैंकौ दीवांन ।
मेरे घरमैं यहु बड़ौ, याकौ दीजै मांन ॥६६८॥
कीनौ प्यार जलालदी, सुनी ताजखां बात ।
होनहार बिरवा तक्यो, चिकनें चिकने पात ॥६६९॥
जोलौं जीये ताजखां, रखे अलिफ़खां संग ।
पल न्यारे नाहिंन करै, है मानौं अरधंग ॥६७०॥

श्री नवाब अलिफखांके पुत्र

१ दौलतखां, २ न्यामत खां, ३ सरीफखां, ४ जरीफखां,
५ फकीरखां ।

॥ दोहा ॥ बडड़ौ दौलत खाँनु है, दूजौ न्यामत खांन ।
खांन सरीफ जरीफ़ खां, पुनि फकीर खां जांन ॥६७१॥

नवाब अलिफखांन बखांन

॥ दोहा ॥ जबहिं भये बस कालके, ताजखाँनु सिरमौर ।
अलिफखांनु दीवांन तब, बैठै उनकी ठौर ॥६७२॥
टीकै दयो जलाल दी, गज घोड़ा सरपाव ।
नगर फतिहपुर पुनि दयो, छत्रपति आयो भाव ॥६७३॥
पातसाह कीनी मया, बाढ्यौ मनसब मांन ।
दयो फतिहपुर छत्रपति, लिखि अपनो फुरमांन ॥६७४॥
अलिफ खांनु दीवानकै, आनंद बढ्यो प्रांन ।
पठय दयो फुरमांन घर, अलिफखांनु ततकाल ।
स्यांमदास मानैं नहीं, कूरम सुत गोपाल ॥६७५॥
हुतौ फतिहपुरमैं तवही, सेरखांनु सिकदार ।
कूरम दये निकारि कै, जीत्यौ राइ मुछार ॥६७६॥

नंद बहादुर खांनकौ, समसखांनु सिरमौर।
पिता मुवौ तब झूँझनू, बैठ्यौ उनकी ठौर ॥६७७॥
भइया और बदै नहीं, निस बासुर दुख देत।
अलिफ खांन दरगह गये, संग आपुनै लेत ॥६७८॥
समसखांनकी बांहि गहि, अलिफखांन दीवांन।
लै मिलयौ पतिसाहकौं, द्यायो मनसब मांन ॥६७९॥
अबलौं यों आई चली, ऐसौ करम इलाहि।
वहै झूंझनू ह्वै बड़ौ, करै फतिहपुर जाहि ॥६८०॥
अकबर झुक्यौ पहारसौं, वहुत भयो चितभंग।
जगतसिंघ पठयो उतहि, अलिफखानु दै संग ॥६८१॥
पैंठे जाइ पहारमैं, जगतसिंघकै साथ।
द्रुवनिनिकौं दीवान जू, नीके लाये हाथ ॥६८२॥
मारी जाइ धमेहरी, और तिहारा गांव।
बासो बिचरचो खेत चढ़ि, भलौ भयो जगु नांव ॥६८३॥
राजा आप तिलोकचंद, डरत मिल्यौ है आइ।
संग लाइ कै ले गये, पातसाहकैं पाइ ॥६८४॥
रानै ऊपर जब चढ़े, रिस धर साह सलेम।
अलिफखानुं पतिसाहि पै, मांगि लये करि पेम ॥६८५॥
बाटे थाने जाइ उत, साहि सलेम विचार।
थानौं दीनो सादरी, अलिफखांन सरदार ॥६८६॥

दीवाननै रानैंकौ थानौ मारचो

॥दोहा॥ रानैंकौ थानौ तक्यौ, अलिफखानुं सिरमौर।
चक्रवती चहुवाननै, उत कौं कीनी दौर ॥६८७॥
परी लराई अति भली, चली बात सैंसार।
रानैंकै दल अलिफखां, मारे अमित अपार ॥६८८॥
तबहि चिनायो चौंतरा, अरि सिर काटि अपार।
लूंट बहुत ही कर चढ़ी, सुजस भयो सैंसार ॥६८९॥

तब रानौ यह बात सुनि, काटि काटि कर खाइ ।
पै अमरा दीवानकै, थानै सक्यौ न आइ ॥६९०॥
ऊंटौलै हौ समसखां, उत आयौ कर साथ ।
रानैकौ चहुवांननै, भले लगाये हाथ ॥६९१॥
सहजादै यह बात सुनि, कीनौ प्यार अपार ।
कह्यौ अलिफखां समसखां, जुगल बड़े जूझार ॥६९२॥
जबहि भये बस कालके, अकबर साह जलाल ।
बैठ्यौ तबही तखत पर, साह सलेम मूंछाल ॥६९३॥
जबते बैठे तखत पर, जहांगीर हुव नाम ।
निस दिन आठौं जाममैं, देबै ही सूं कामं ॥६९४॥
अलिफखांन दीवानसौं, बहुतै किरपा कीनें ।
नगर फतिहपुर प्यार कर, लाल मुहर करि दीन ॥६९५॥
राइ मनोहर अलिफखां, पठय दये मेवात ।
मेव सेव लागे करन, भेट देहिं दिन रात ॥६९६॥

दलपत ऊपर बिदा भये

॥ दोहा ॥ दलपत बीकानेरीये, कटक करे अनग्यांन ।
बंदत नहीं पतिसाहकौ, लूंटत फिरत जहांन ॥६९७॥
दलै भजायो ज्याव दी, कर दल सरसै जाइ ।
बित लूट्यौ पतिसाहकौ, फूल्यौ अंग न माइ ॥६९८॥
बात सुनत पतिसाहकैं, रिस न समाई अंग ।
पठये सैख कबीर पुनि, अलिफखांनु जुग संग ॥ ६९९॥
बीस और उमराव संग, चले लरनकै चाइ ।
दलपति रहि नांही सक्यौ, सरसे उतरे आइ ॥७००॥

सरसै मांहि लराई भई उमरावनिसौं

॥ दोहा ॥ पांनी ऊपर आपमैं, मच्यौ येक दिन जुद्ध ।
अपने अपने कटक लै, आये सबै विरुद्ध ॥७०१॥

येक भये उमराव सब, आपुनमैं करि आंन।
येक वोर इकईस है, येक वोर दीवांन ॥७०२॥
छूटे गोली नाल बहु, फूटैं हय गय मुंड।
कूटैं कर करवार लै, टूटै सुभटनि झुंड ॥७०३॥
गज सेती गज लरत है, बजत सारसौं सार।
सुभट सुभट लट पट भये, करत मार ही मार ॥७०४॥
इत उत कै मूये सुभट, साहस सत सधीर।
बीच परे तब आइ कै, आपुन सैख कबीर ॥७०५॥
कीनी सैख कबीरनै, मनोहार दीवांन।
पहलैं हाथ लगाइ अति, पाइ लगाये आंन ॥७०६॥
येक लर्‌यो इकईस सौं, करता रखी पटीठ।
सबकौं भंजत अलिफखां, सैख न होत बसीठ ॥७०७॥
अलिफखांन उमराव सब, करे तेग बरजेर।
मालामैं मनके बहुत, पै पूजत ना मेर ॥७०८॥
बहुरौं येक मतौ कियो, सबननि मिलि दीवांन।
दलपति पर दल कर चढ़ें, बजत जैत नीसांन ॥७०९॥
भाठूमैं दलपति हुतौ, संग बहुत सरदार।
उमंडे दल पतिसाहके, ज्यों घन घटा अपार ॥७१०॥
गोल चंदोल भये जब कोउ, जरंगोल बरंगोल।
अलिफखांनु दीवान तब, अपुन भयो हिरोल ॥७११॥
जबहि आइ सनमुख भये, अलिफखांनु सिरमौर।
सही न हौंल हिरौलकी, भाजि चल्यौ राठौर ॥७१२॥
दलनि दबायो जाइ कै, तब दलपत बिललाइ।
खांन जलाल मुछालसौं, पठयो यहै कहाइ ॥७१३॥
तुम मेरे भइया बड़े, और कहूं हौं काहि।
अलिफ खांन जू सौं कहौ, थांभै दल पतिसाहि ॥७१४॥

लूंनकरन परतापसी, राजा जोधा माल ।
उनकौ नातौ देखि कै, होहुं अबहि प्रतिपाल ॥७१५॥
इन पांचों दीनी सुता, सु तौ इहिं दिन काज ।
तुम विन असौ कौन है, जिहि भुमियांकी लाज ॥७१६॥
तब दल थांभे अलिफखां, दलपति भयो उबार ।
फिर पठयो पतिसाह पैं, कीनौ प्यार अपार ॥७१७॥
टेरयो सेख कबीर जब, दिल्लीके सुलतांन ।
आयो वाकी ठौर तब, इतहि मुबाराखांन ॥७१८॥

भिवांनी फतह की

॥ दोहा ॥ तब दीवांन पठान मिलि, चले भिवानी कोप ।
आगै जाटू जावले, रहे भलैं पग रोप ॥७१९॥
लागे गढ़ई जाइ कै, गोली चली अपार ।
को आगै पग नां धरै, डरपैक असवार ॥७२०॥
तब उमड़ै दीवांन दल, डारी गढ़ई तोरि ।
जो जाटू सनमुख भयो, मारयो मींड मरोरि ॥७२१॥
दंत तिनौलेकै भजे, जाटू तजिकै ठांव ।
सुजसु भयो दीवांनकौ, लूटि लयो सब गांव ॥७२२॥

मेवातकी फौजदारी पाई

बोलि लयो पतिसाहनै, अलिफखांनु सिरमौर ।
कह्यौ अबहिं मेवात पर, करहु येक तुम दौर ॥७२३॥
दै हय गज सरपाव अरु, मन सब वहुत बढ़ाइ ।
बिदा किये मेवातकों, चाहुवांन चित चाइ ॥७२४॥
आवत हीसारां प्रथम, मारि मिलाई छार ।
जे भाजे तेई बचे, मरे करी जिन रार ॥७२५॥
कारहंडै डेरे कीये, फिरूं सारां को मार ।
मेव मिले उत आइ कै, असी मानी हार ॥७२६॥

पेस करी घोरी तुपक, बसे तलहटी ग्राइ।
इनहि साधि तबघन हटौ, नीकै मारचौ जाइ ।।७२७।।
उतहू मेव भले लरे, मरे परे ह्वै टूक।
उपजी रौर पहारमैं, धार धारमें कूक ।।७२८।।
सगरै जंबू दीपमै, पुहंची है यह बात।
ग्रलिफखांन नीकी करी, पात पात मेबात ।।७२९।।

दच्छिनकौं बिदा भये

बिदा कीये पतिसाहनै, दच्छिनकौं दीवांन।
सहिजादै परवेज संग, दलकौ ग्राइ न ग्यांन ।।७३०।।
पुंहचे जब बुरहानपुर, थानें बांटे सर्ब।
तब मलिकापुर ग्रलिफखां, लीनों रजवट गर्ब ।।७३१।।
सहिजादे चढ़ि ग्रापहू, गये येदलाबाद।
ग्रागैकौं पठये कटक, चले लये मंनबाद ।।७३२।।
खांननि खां आपुन चढ़े, लोदी खांन जहांन।
ग्रबदुल्लह जखमी चढ़े, ग्रौर चढ़े बहु खांन ।।७३३।।
मानसिंघ कूरम चढ़े, राइसिंघ राठौर।
काको काकौं नांत्र ल्यौं, चढ़े बहुत सिरमौर ।।७३४।।
ग्रंबर ग्रायौ साजि दल, गनती ग्रावै नांहि।
जैसे बादर देखियें, ग्रनगन ग्रंबर मांहि ।।७३५।।
येकल राईकी भली, ग्रबदुल्लह सिरमौर।
ग्रंत चरन पै छूटि गये, ठाहर सके न ठौर ।।७३६।।
ग्रबदुल्लहके बिचरतै, बिचर भई दल मांहि।
ग्राये सब बुरहानपुर, कहूं रह्यो को नाँहि ।।७३७।।
थांने सबही उठि गये, रह्यौ नहीं को ठोर।
मलिकापुर बैठे रहे, ग्रलिफखांनु सिरमौर ।।७३८।।
सब मीतनि चिठी लिखी, तुम रहिहों किहि काज।
पंच करै सो कीजिये, यामैं कैसी लाज ।।७३९।।

उतर लिख्यो दीवान जू, तुम पीरत मो पीर ।
पं हौं कैसे आइ हौं, लागै लाज हमीर ॥७४०॥
दच्छिनके दल अति प्रबल, चलि आये चहुंवोर ।
दिस दिस धुखासे धसे, दुंदभ घंनकी घोर ॥७४१॥
मलिकापुर घेरौ कीयौ, दच्छिनके दल आंन ।
दहूं वोर छूटन लगे, गोली गोला बांन ॥७४२॥
दहूं दलतैं गोली चलै, जांन सु यहै सुभाइ ।
मरन संदेसै देत है, जुगल वोरते आइ ॥७४३॥
मलिकापुर लै ना सके, करि बहुत ही रार ।
दछनी दल दीवानके, आगे भाजे हार ॥७४४॥
बात सुनी परवेजनें, रहे न थानें आंन ।
मलिकापुर लरिकै रख्यौ, अलिफखानुं चहुवांन ॥७४५॥
सहजादै तब यों कह्यो, अलिफखानुं चहुवांन ।
अटलखांन है साचलौ, ऐसौ सुभट न आंन ॥७४६॥

दीवांन नै थांने साधै

॥ दोहा ॥ भीलनकौ थानौं कठन, लेत न को उमराइ ।
मलिकापुरते अलिफखां, तब उत दयो पठाइ ॥७४७॥
ढील नैकु लाई नहीं, भील हने तब जाइ ।
परी पपीलक बापरी, तरै पीलकैं पाइ ॥७४८॥
बहुर जालवापुर गये, साधे सब मैवास ।
सगरै जगमैं पर्गटी, सुजस फूलकी बास ॥७४९॥
उतते कीनी जाइ कै, फतिह फतिहपुर गांव ।
अलफखांन दीवांनकौ, भयौ जगतमैं नांव ॥७५०॥
ना छाड़ै मेवासकौ, यहै अलिफखां टेव ।
आइ मिले स्यो गांवके, लागै करनै सेव ॥७५१॥
अलिफखानुं चहुवान पर, आयो छत्रपति भाव ।
मनसब बहुत बढ़ाइ कै, करचौ बड़ौ उमराव ॥७५२॥

दच्छिनमै दीवान जू, घरहौ दौलत खांन ।
सीवारी सब दल मलं, अपनै ही भुज पांन ।।७५३।।
बीदावत चोरी करै, बरज्यौ मानत नांहि ।
दौलतखां दल कर चढ्यौ, रोस धरयो मन मांहि ।।७५४।।
बीदावत लरि नां सके, भाजे बदन दुराइ ।
गांव फूंक बहुरे मियां, जैत नीसांन बजाइ ।।७५५।।
पाटौधै जु रसूलपुर, कूरम बसत अपार ।
मग मारत चोरी करत, दरगह भई पुकार ।।७५६।।
कह्यौ महोबंत खांनसूं, तब अैसें पतिसाहि ।
कूरम धूर मिलाइ है, अैसौ कोऊ आहि ।।७५७।।
कह्यौ महोबत खांन तब, अैसों दौलत खांन ।
सुनत छत्रपति मया करि, टेरे लिख फुरमांन ।।७५८।।
मिले जाइ अजमेरमैं, दूलह दौलत खांन ।
जहांगीर बहु प्यार करि, दीनौं आदुर मांन ।।७५९।।
पातसाह अैसे कह्यौ, सूजावत हैं चोर ।
छीन लई है सगर पैं, पटी आपनै जोर ।।७६०।।
पटी लेहु जागीरमैं, उनको देहु निकार ।
जो तुम तें यों होत नां, उतर देहु बिचार ।।७६१।।
दौलतखां तसलीम करि, अैसें कियौ विचार ।
लरहिं तौ काटौं सीस उन, ना तर देऊं निकार ।।७६२।।
दयो तुरी सरपाव तब, जहांगीर परबीन ।
जुगल पटी दीवांनकै, मनसबमैं लिख दीन ।।७६३।।
बिदा होइ पतिसाहतें, आये दौलत खांन ।
अपनी रज भुज बल मंगन, गनत न काहू आंन ।।७६४।।
कछवाहनिसौं यों कह्यौ, दौलतखां चहुवांन ।
पटी हमारी छाड़ि कै, जाहू कहूं तुम आंन ।।७६५।।

लरिबेकौ सांमौ करहु, जो तुम छाडि न जात ।
द्वै बातिनमैं सोच कै, करि निबरौ इक बात ।।७६६।।
कछवाहनि तब यों कह्यौ, अैसौ कौन मुछार ।
जो इन पटिइन मांहि तैं, हमकौ दैत निकार ।।७६७।।
राइसिंघ रानौ सगर, सके न हमकौ काढ़ ।
छाड़ि दई जागीर ही, तुम नहीं उनते बाढ़ ।।७६८।।
खुसरों बीतरबीत खां, और अंबिया सेख ।
साधि हमैं नांही सके, तुम भूले का देख ।।७६९।।
दौलतखां ये बात सुनि, दल करि चढ़यौ रिसाइ ।
भाजि गये कूरम सकल, सके नांहि ठहराइ ।।७७०।।
दुंदभ सुनि कूरम गये, आप आपकौ नासि ।
गऊंवनमैं मानौ परी, पंचाननकी बास ।।७७१।।
माधो नरहर कुटंब लै, भाजे ज्यों म्रिगडार ।
नाहरखां अैसैं गयो, जैसैं जात सियार ।।७७२।।
गोकल गिरधरकै नंदन, कीनौं आइ जुहार ।
दौलतखां की दिष्ट को, द्रुवनं न सके संहार ।।७७३।।
पटिइनमैं ते कोप करि, काढ़यो नरहर दास ।
कुटंब सहित तब जाइकैं, कीयो लुहारू बास ।।७७४।।
भादौंवासीमैं रह्यौ, माधौ करि मनुहार ।
निस बासुर चोरी करै, सगरै हुई पुकार ।।७७५।।
दौलतखा चहुवांन तब, मानस दयो पठाइ ।
भादौंवासी छाड़ि दै, कै हौं मारो आइ ।।७७६।।
तब माधोने यों कह्यौ, हौं मारयौ नां जात ।
पातसाहकौ नां बदौं, नांहि सुनी तुम बात ।।७७७।।
दौलतखां यह बात सुनि, साजे कटक अपार ।
तबल निसांन बजाइकै, चढ़यौ न लाई बार ।।७७८।।

आगै माधो दल कीयो, लै सेखावत सर्व ।
अनगंन कटक निहार कै, बहुत बढ्यौ मन गर्व ॥७७६॥
दौलतखां चहुवांन जब, नेरैं लाग्यौ आइ ।
तब माधो लर नां सक्यौ, डरकैं गयौ पराइ ॥७८०॥
बित बसई सब तजि गयो, जब दल पहुंचे आइ ।
लूटी नांहि दयाल ह्वै, दी चहुवांन पठाइ ॥७८१॥
जुद्ध करै ताकौ हनै, दूलहु दौलतखांन ।
भाजेकौं मारे नहीं, यहै बांनि चहुवांन ॥७८२॥
नरहर पाई अलिफखां, दीनी आप दिलेस ।
तबहिं चढ्यौ दल साजि कै, दौलतखांनु नरेस ॥७८३॥
नरहर नाहर दल सजे, लरि नां सके निदांन ।
नाहरखांकौं दी सुता, गहे चरन चहुवांन ॥७८४॥
अलिफ खांन दीवांनकी, बहुत बढ़ी परतीति ।
दयो उदैपुर बारुवो, पातसाह करि पीति ॥७८५॥
गिरधर अलखांसु लिख्यो, उनको दखल न देह ।
जो वै आवै लरनकौं, तौ सनमुख ह्वै लेह ॥७८६॥
दौलतखां अैसे लिख्यौ, अलखां जाहि पराइ ।
आपुनते निकसै नहीं, तौ हौं काढ़ौं आइ ॥७८७॥
अलखां तब अैसैं लिख्यौ, मेरे पाइ पतार ।
अैसौ जोधा कौन है, सकै जु मोहि निकार ॥७८८॥
दौलतखां यहु बात सुनि, कर दल चढ्यौ रिसाइ ।
सनमुख ह्वै नाहिन सक्यौ, अलखां गयो पराइ ॥७८९॥
अलखां भाजत फिरत है, बचन गये सब भूल ।
पवन लगें ज्यों जांन कहि, उड़त अर्कको तूल ॥७९०॥
रहि न सक्यौ खीरोरमैं, दुर्‍यौ खोह मैं जाइ ।
दौलतखां दुंदभ बजत, वरे उदैपर आइ ॥७९१॥

परी खंडेलै खल भलो. रैवासैमें रोर।
दौलत खां चहुवांन की, हाक धाक सब ठौर ॥७६२॥

तीजी बार मेवातकी फौजदारी पाई

॥ दोहा ॥ दच्छिनतें दीवांन जू, टेर लये पतिसाहु।
कह्यौ अबहि मेवातकू, बहुरौ साधन जाहु ॥७६३॥
फौजदार मेवात के, तीजे भये दीवांन।
भले पजाये भोमिया, संग हौ दौलतखांन ॥७६४॥
बाकी खेरी चोरटी, अति गाढ़ा मैवास।
तिनकौ दौलतखांननै, करचौ कौपकै नास ॥७६५॥
लरे बहुत ही भोमिया, मरे होइ घन घाइ।
बंध कर आनी तिन सुता, डारे धूर मिलाइ ॥७६६॥
फिर पठये दीवांन जू, दच्छिन कौ छत्रपत्ति।
दच्छिन दच्छिना मांगि है, भये हीन बल अत्ति ॥७६७॥

कांगरैकौं बिदा कीने

॥ दोहा ॥ सार पर्‌यौ जब कांगरै, फिर टेरे दीवांन।
राजा बिक्रमजीतकै, संग दये दै मांन ॥७६८॥
सूरज मल हौ नूरपुर, आये दल पतिसाह।
अनी जोरि ताकी बनी, बनी न मनकीं चाह ॥७६९॥
सूरजमल लरि नां सक्यौ, भाजि बचायौ प्रांन।
आइ बिराजे नूरपुर, राजा पुनि दीवांन ॥८००॥
सूरज मल दल साहकैं, घरतैं दयौ भजाइ।
खोद मुवौ बिल चौखरां, लीनौं नाग छिड़ाइ ॥८०१॥

॥ सवैया ॥

भाजि गयौ तजि मंदिर कौ गिरकंदर अंदर आपु दुरायौ।
छाड़ि कै बाग बगीचा बनै बहु थोहरकै बिरवै मनु लायौ॥

सूरज़मल फिरै बनमैं मनकौ बिधु ठांव कैं ठांव पुरायो ।
खोद मुवौ बिल चोखर ज्यौं छत्रपत्ति भवंगम कोप छिड़ायो ।।८०२।।

अनगंन दल आयो साहि जहांगीर जू के
बाटे हू न आवै गढ़ कांगुरै के कांगुरे ।
डर भयो घर घर थर हरो गिरवर
भाजि न सकै पहारी कीने भव पांगुरे ।
चंबै कीनं छूटै वोट ढाहे वैसे कोट कोट
उडि हैं तू नाल चोट पावहि न गांगुरे ।
कहै कबि जांन सुनि सूरजमल अजांन
वेग आइ पाइ गह दांन जिय मांगुरे ।।८०३।।

॥ दोहा ॥ सूरजमलकौं खेद कैं, बहुरै दल पतिसाहि ।
जीति फिरे जीतन चले, नगर कोटकी चाहि ।।८०४।।

अलिफखांन दीवांनकूं, दयो नूरपुर थांन ।
सूरजमल कौ बहुत डर, रहि न सकै को आंन ।।८०५।।

नगर कोट राजा गयो, सूरजमल सुनि बात ।
आयो दल बल साजि कैं, पै कछु बनी न घात ।।८०६।।

साहसीक मल अलिफखां, जाके निहचल पाइ ।
लरि न सक्यौ दीवांनसू, सूरज सनमुख आइ ।।८०७।।

सूरज नांव कहाइ है, उलटौ सबै सुभाइ ।
छप्यौ रहत है द्योंसकूं, निसकौं निकसत आइ ।।८०८।।

जाइ कांगरै बिक्रमां, करी अरिनसौं बात ।
करि आयो भुस लीपनो, नांही बनी कछु घात ।।८०९।।

आइ नूरपुर बिक्रमां, यहै कह्यौ दीवांन ।
काहलूर ऊपर चढ़ौ, हौं रहिहौं इह थांन ।।८१०।।

उततैं चढ़े दीवांन जू, जस नीसांन बजाइ ।
तबहिं तुंड करि ग्वारियर, डेरे दीनै आइ ।।८११।।

बात सुनी कहलूरिये, ग्रावतु है दीवांन ।
ग्राइ मिल्यौ दै पेसकस, दमका गज केकान ॥८१२॥
पठय दयो कहलूरिया, राजा ढिगु दीवांन ।
देख बिकरमांजीत तब, लाग्यो करन बखांन ॥८१३॥
जहांगीर मानी नहीं, बिक्रम करी जु बात ।
यहै लिख्यो तुम कांगुरो, लीजहु जिह तिह घात ॥८१४॥
नगरकोट घेरौ पर्यो, बहुरि लगे दल साहि ।
टूट्यौ गढ़ छत्रपत्तिकै, पूजी मनकी चाहि ॥८१५॥
राजा बिक्रमजीतनैं, हेंदू तुरक बुलाइ ।
सगरै दलसौं जांन कहि, बात कही समझाइ ॥८१६॥
कर ग्रायो है कांगरौ, राखहु करि कै गाढ़ ।
जोया गढ़ ऊपर चढ़ै, बढ़ै मान ह्वै बाढ़ ॥८१७॥
तब हिंदुवन मिलि यों कह्यौ, बिदाम कैकौं देहु ।
कै तुम गढ़ मैं रहनकौं, नांव न हमसौं लेहु ॥८१८॥
राजा विक्रमजीतनै, तक्यो वोर दीवांन ।
हौं रहिहौं कै तुम रहौ, रहि न सकत को आंन ॥८१६॥
डिष्ट करी करतार पर, रहे उतहिं दीवांन ।
पातसाह हरखे सुनत, बढ़यो मन सब मांन ॥८२०॥
छत्रपतिकै चित्तमै भई, गढ़ देखन की चाहि ।
हित सौं ग्राये कांगरै, जहांगीर पतिसाहि ॥८२१॥
जहांगीर दीवांनकौं, पठयो यहै लिखाइ ।
तुम जिनसौं है ग्राइहौ, हम देखैंगे ग्राइ ॥८२२॥
पातसाह गढ़ पर चढ़े, लगे पाइ दीवांन ।
दिलीपतिनै दिल सहित, दीनौ ग्रादुर मांन ॥८२३॥
नौछावर पतिसाह पर, कीनी बहुत दीवांन ।
जहांगीर ग्रति प्यार कर, दीनौं गज केकांन ॥८२४॥

पातसाह उतते उतरि, चले वीर कसमीर ।
अलिफखांन राखें उतहि, साहस सत्त सधीर ॥८२५॥
सोर भये फिर ठटामैं, तब टेर्‌यो दीवांन ।
उतहिं पठायो छत्रपति, दै बहु आदुर मांन ॥८२६॥
ठटा जाइ साध्यो भलैं, अलिफखांन दीवान ।
हरख वंत सुन कै भयो, जहांगीर सुलतांन ॥८२७॥
सोर पर्‌यो फिर कांगरै, सुन्यो दिली सुलतांन ।
तब दल बल बहु संग दै, पठयो सादक खांन ॥८२८॥
भये पहारी येक सब, भले लगाये हाथ ।
आगै पांव न धर सकै, सादक खांकौ साथ ॥८२९॥
बात सुनत पतसाहनै, पठय दयो फुरमांन ।
तबहि ठटातैं कांगरै, फिर आये दीवांन ॥८३०॥
आये जबहि दीवांन जू, कंपे हार पहार ।
मिलके सकल पहारिये, आये करन जुहार ॥८३१॥
सादिक खां देखत रह्यौ, आवत ही दीवांन ।
मिले पहारी आइ कैं, धन रजवट चहुवांन ॥८३२॥
काविलके भुमिया फिरे, परी बहुत ही रौर ।
तब आपुन पतिसाह चलि, आये हैं लाहौर ॥८३३॥
टेर लये हैं अलिफखां, काबिल पठवन काज ।
चक्रवती चहुवांन तब, आयो दल बल साज़ ॥८३४॥
लक्खी जंगलकी तबहि, आई बहुत पुकार ।
भटी ढुढ़ी डोगर वटू, कीनौं मुलक उजार ॥८३५॥
बादसाह सोचत यहै, को पठऊं उह ठौर ।
लक्खी जंगलके भोमिया, गहि आनैं लाहौर ॥८३६॥
आसिफखां तब यों कह्यौ, ग्रैसो ग्रौर न कोइ ।
अलिफखांन चहुवांनतैं, यहु मुहिम सर होइ ॥८३७॥
बिदा कीये तब अलिफखां, दे घोरा सरपाव ।
चाहुवांन दल साजकै, चले जैतकै चाव ॥८३८॥

लखी जंगलकौ बिदा भयो

अलिफखानुं चहुवांन जब उतरे आइ कसूर ।
डरत भाजि पतिसाह पै, गयो भटी मनसूर ।।८३९।।
गढ़ी तकी अरि वरनकी, चढ़ि आये दीवांन ।
वैहूं आगै तें लरे, भलौ पर्‌यौ घमसांन ।।८४०।।
करवर बर अरवर हनै, कटे तीन सै मुंड ।
कोऊ निकसन नां लह्यो, बंध परि अरि झुंड ।।८४१।।
अरवर छार मिलाइ कै, डोगर तके दीवांन ।
आप आपकौं भजि गये, आवत सुनि चहुवांन ।।८४२।।
उतते फिर ताके बटू, सके सहारि न हाक ।
ऐसौ कौन जु सहि सकै, अलिफ खांनकी धाक ।।८४३।।
उततें चढ़ि दीवांन जू, खाई डेरौ कीन ।
आइ मिले भुमिया सकल, होइ दीन आधीन ।।८४४।।
फिर चिहुंनी देपालपुर, आये हैं दीवांन ।
पाक पटंन ज्यारत करी, पूजी इछया प्रांन ।।८४५।।
आइ मिल्यौ आधीन ह्वै, टुढ़ी बहादर खांन ।
भेट दई दीवांनकौं, पायो आदुर मांन ।।८४६।।
जंगल साध्यो अलफखां, मिले भोमिया आंन ।
लाग्यौ करन बखांन सुनि, जहांगीर सुलतांन ।।८४७।।
मिले भोमियां भेट दै, सोलै कै दीवांन ।
पठय दई पतिसाहकौं, सुजस भयो चहुवांन ।।८४८।।
चिहुंनी अरु देपालपुर, महमदौट सु नांम ।
और तिहारौ बिठंडौ, पट्टन भरिहैं दांम ।।८४९।।
आलमपुर पेरौजपुर, भेट दई भटनेर ।
मिले जलालाबादके, दल दीवांनके हेर ।।८५०।।
धिंग कबूला रहमता, बाद रहीमांबाद ।
लक्खी जंगल दल मल्यो, मिले छाड कै बाद ।।८५१।।

भटी समेजे जाइये, टुढी बटू नैपाल।
बैरियाह डोगर खरल, अरवर सब बेहाल ।।८५२।।
धोला खेरा भेजि दल, मारि मिलायै धूरि।
डारी भलै उखारि कै, सब दुर्जनकी मूरि ।।८५३।।
हौ पहार सरदार खां, जबहि भयो बस काल।
तबहि पहारी फिर गये, उपज्यो बहुरि जंजार ।।८५४।।

श्री दीवांनजी कांगरै आये चौथी बार

।। दोहा ।। जहांगीर पतिसाहनै, लये अलफखां टेर।
हुकम कर्यौ तुम जाइ कै, करहु पहारहिं जेर ।।८५५।।
अलफखांन तसलीम करि, चल्यौ राइ जूझार।
गहर न लाई पंथमैं, पैठ्यौ आइ पहार ।।८५६।।
भाजे फिरैं पहारीये, सनमुख आवत नांहि।
छपते डोलहिं वोट लै, ज्यों सूरज तें छाहि ।।८५७।।
काहलूर लै कै लये, मंडई और सुखेत।
लीनौ बहुरि सिकंदरौ, अलफखान जस हेत ।।८५८।।
उतहि तुरक को नां गयो, बिना सिकंदर साह।
कै उत पहुंचे अलफखाँ, साहस सत्त अगाह ।।८५९।।
भाजे फिरहिं पहारिये, छूटि गये घर बार।
सार धार नां सहि सकै, डोलै धार पहार ।।८६०।।
तबहिं पहारी येक ह्वै, कीनौं यहै विचार।
लरहिं जाइ दीवानसौं, सब मिल एकै बार ।।८६१।।
जगत सिंघ पैठाँनिया, अरु विसंभर चंब्याल।
चंद्रभान गढ़ भौनकौ, पुनि फतू जसवाल ।।८६२।।
भोपत और अमूल पुनि, बूला सूरजचंद।
ठकर कल्यानां स्यामचंद, सबै जुद्ध केकंद ।।८६३।।
जगतमाल अलिया चढ़े, आयो राइ कपूर।
कौन कौन कौ नांव ल्यौं, सब ही भये हजूर ।।८६४।।

नगरोटै डेरे कीये, जगतै दल बल साज।
तलवारै कै गोरवै, है चहुवांन सकाज ।।८६५।।

पहली लराई

।। दोहा ।। अलिफ खांन इतते चढ़े, उतते कटक पहार।
लूमि भूमि आई मनौं, भादौं घटा अपार ।।८६६।।

भुजंगी छंद

इतही क्यामखांनी, उतही सब पहारी।
बनी सैन गज की, घटा मेहकारी।
परै बूंद गोली, भयौ जुद्ध भारी।
मनौं कौंध कौंधा, बरच्छी दुधारी ।।८६७।।
लरै जोध जोधा, भई मार मारं।
लगै बान बानं, बजै सार सारं।
थकै नांहि मारत, हनै बार बारं।
मिटे तब पहारी, भजे हार हारं ।।८६८।।
परे टूक टूकं, मरे सूर बीरं।
गज ह्वै किरच्चे, बिरचे सधीरं।
पहारी सुभट नां, भजे ह्वै अधीरं।
सु तौ रंच रंचक, करे चीर चीरं ।।८६९।।

।। सवईया ।।

सतके रजके गज सैन बदै न झुकै न रुके रहै आंडनके।
खां अलिफ बिरचि किरची कीये पै पहारी नहीं पग छांडनके।
भये रंचक टूट गये उडि पौन रहे नजरावंन गांडनके।
लह्यो ईसं न सीस न मांस सियारहु ये न हडाहल हांडनके ।।८७०।

।। दोहा ।। जगतसिंघ सब संग सौं, भाजि गयो तजि लाज।
जैत भई दीवांनकी, पूजे मनसा काज ।।८७१।।
दूजै दिन दल साजि कै, लगे पहारी आइ।
जबहिं पर्‌यो घमसांन घन, बहुरौ गयो पराइ ।।८७२।।

तीजै दिन आये बहुरि, दल बल साज अपार ।
जैत भई दीवांनकी, गये पहारी हार ॥८७३॥
बहुरौं आये भोमियां, चौथे दिन दल साज ।
मार परी तब मरि परे, उबरे गये जु भाजि ॥८७४॥
फिर आये दिन पाचवें, जूझ करनकै चाइ ।
मिटे पहारी खेत तें, अंत होइ घन घाइ ॥८७५॥
बहुर छठै दिन आइ कै, नीकी बाही रार ।
हाथ लगाये अलफ खां, अंत चले वै हार ॥८७६॥
सादक खां पैठांन हौ, चीठी दई पठाइ ।
कै दल मोपै पठइयो, कै तुम मिलियो आइ ॥८७७॥
रोस होइ दीवांननै, तब दल दयो पठाइ ।
दुर्जन उतर्‌यो सांम है, हौं क्यौं छांडौ पाइ ॥८७८॥
चिंत नहीं रंन मरन की, सुजस रहै सैंसार ।
जो जिय गयौ तौ जान दे, रज राखे करतार ॥८७९॥
सुनी बात यहु जगतसिंघ, दल थोरे दीवांन ।
ठट्टु कटकनिके साजकैं, चढ्यौ देत नीसांन ॥८८०॥
खरे भये दीवांन चढ़ि, तलवारैके खेत ।
संपूरन रज लाज के, साहस सत्त समेत ॥८८१॥
अनी तीन कीनी तबहि, अलिफखांन भोपाल ।
येक वोरकौ रूपचंद, इक बासो डढ़वाल ॥८८२॥
बीच भये दीवांन जू, चित लरिबेको चाइ ।
रज अपनी नां जान दे, जौ जिय जाइत जाइ ॥८८३॥
घेरो कर्‌यौ पहारीयों, कटत अपार अनंत ।
आडौ आये घूमते, मद बहते मैंमंत ॥८८४॥
जुध भयो अतिहि प्रबल, परयो महा घमसांन ।
कौरी पांडौसे लरे, कै कीचककौ घांन ॥८८५॥

रूपचंद बासो भगे, जबहिं परयो बहु भार।
सत साहससौं अलिफखां, खरे रहे जूझार ॥८८६॥
जुद्ध सरकी धार पर, दई लिखे द्वै आंक।
जो जूझै तिहिं सिर कटै, जो भाजै तिहि नांक ॥८८७॥
अंक बि दीसे जुद्ध समै, जानहू सेवक स्वांम।
जे आगे ते दस गुने, पाछे के नहिं कांम ॥८८८॥
गांनिपु अपनी राखि है, सूरा यहै सुभाइ।
जिय तन हान न गनत है, जो रज नांहीं जाइ ॥८८९॥
सूरबीर अरु मीन जल, इनको येक सुभाइ।
तरफि तरफि दोऊ मरै, जौ पानी घटि जाइ ॥८९०॥
रहै न केहूं हीन जल, सहे न दोऊ गार।
सूरबीर पुनि मीनकौ, पानी ही सौं प्यार ॥८९१॥
येक बात कवि जांन कहि, बढ्यौ मीन तें सूर।
मीन मरै पानी घटे, सूर मरै जल पूर ॥८९२॥
रूप रूपचंदको गयौ, भाज्यो ह्वै बेहाल।
सत नास्यो बासो नस्यो, डाढ़ी बिन डढ़वाल ॥८९३॥
भार परयो दीवांन पर, जूझत अचल जूझार।
येक वोर चहुवांन है, इक दिस सकल पहार ॥८९४॥

॥ सवईया ॥

उतहिं पहारी इत संभरी नरेस धायौ
उधम मचायौ जुध सुमिर इलाह जू।
परी बहु मार करवार भई आर
रतनारे रतनारे चले गहर अथाह जू।
बाल तरु नाई ब्रिध तीनों पनपाइ सिध
आद अंत नीकौ करयौ करता निबाह जू ॥
कहा चली ढाढी भाट चारन कलावत की
सांहस अलिफखां सराह्यो पतिसाह जू ॥८९५॥

॥ दाहा ॥ हय गय नर कटि कटि परें, टूटत हैं हथियार ।
फिर फूटै गुरजें लगें, छूटत है रतिधार ॥८९६॥

॥ सवईया ॥

लरत अलिफखांनु परत है घमसांन
दे दै बहु दांन सिव कीनौ है निहाल जू ।
भसम हसम धूरि रत सत सिध मूरि
आवधि त्रिसूल लहे खपर हैं ढाल जू ॥
बोलत है घाव सू सुभाव डमरू कौ अैन
पायो सरभाव भयौ चाव गज खाल जू ।
निरत करत हरखत हर हेर हार
सुंडनके व्याल और मुंडनिकी माल ज्यूं ॥८९७॥

साह जू के काज कुल लाजकौं अलिफ़खांन
गाढ़े पाइ कीने है पहारसें पहारमैं ।
बाने बहु बाने लगे सूरिवां सुहाने अैसै
जैसै फुलवारी फूल रही है बहारमैं ।
कीचकको घांन घमसान परचौ दहूं वोर
घाइल धुकत मतवारेसे अहारमैं ।
धाई गज सैन आई अैंन ही नबाब पर
मार बिचराई भाजो सिंधकी दहार मैं ॥८९८॥

मांतौ गजराज आयो कितौं परबत धायौ
झरना बहायौ मद सैन घहरानी है ।
रूंख ज्यौं उखारत तुणं नर डारत
निहार रूपचंद बासो भाजवेकी ठानी है ॥
भये सनमुख आनि नबाब अलिफखांन
कुंजर भजानो माथै बरछी लगानी है ।
गैवर घटा सो बग पंत सो लगत दंत
तामैं साह धार मानो बीज चमकानी है ॥८९९॥

॥ पेडी ॥ आवै हाथी घूमते, घूमैं मतवारे ।
जैसी सावनकी घटा, वै तैसे कारे ।
कै परबतसे देखिये, वै भारे भारे ।
ज्यों घन गरजै भादुवै, त्यों गरज चिंघारै ॥६००॥
हाथी ठाड़े ही रहे, वे थर थर करि है ।
जैते पाव उचाइ है, आगै ना परि है ।
घाव लगे बहु अंगमें, तिनतें रत ढरि हैं ।
गिरवर तें कवि जांन कहि, झरनासे झरि हैं ॥६०१॥

॥ दोहा ॥ करी कहा पशु बापुरे, सहैं जु डिष्ट करूर ।
सूर देखि गज यों चलें, ज्यों निस देखे सूर ॥६०२॥

॥ सवइया ॥ जुध मच्यौ विरच्यौ चहुवांन
संजोव गयौ उड़ि सांगनि लागै ।
राते भये रत सौं सत सौं असौ
कौन लरयौ है कसूंभल बागै ।
खां महमदकौ नंद अलिफखां
मेर करे पग केहूं न भागै ।
जोधा भये हैं जितने बसुधा पर
कांन गह्यौ है दीवांनके आगै ॥६०३॥
सेन अनंत झुकंत पहारी लरंत कहंत न असो बियौ है ।
मारत डारत पारथ जों अलिफखां को धन हाथ हियौ है ।
स्रोनि समुद्र न घुंटनि टुटत जुगिन जुथ अघाइ पियौ है ।
मुंडनि भार गई झुकि नार मनोहर हार जुहार कियो है ॥६०४॥

॥ दोहा ॥ मुंड माल हर पहरि हैं, जानत कौंन सुभाइ ।
सुभटनिके सिर देखि कैं, गरै लेंत है लाइ ॥६०५॥
मुंड बिना तन धर परे, तरफत हैं इहं भाइ ।
मानों पगिया गिर गई, करिहै सैख समाइ ॥६०६॥

खुले देख द्रिग सुभटके, डरपैं गिर्भ सियार।
बिकट लगै ह्वैबै निकट, जौ मरि गये मुछार ।।६०७।।
रुहिर जुगिनी भछि गई, स्यार मांस अरु चांम ।
हाड न कोऊ लेत है, असत कहावत नाम ।।६०८।।
घाव जु बोलें सुभटके, कहत मार ही मार ।
जीभ थकी तब अंगही, लाग्यौ करन पुकार ।।६०६।।
साहिमखानी को लरचौ, अलिफखांनकै संग ।
धार मुरी हथियारकी, पै नहिं मोरचौ अंग ।।६१०।।

।। सवईया ।।

हैदल गैदल पैदल जोर के,आये अनंत अपार पहारी ।
नाचत है हरखे हरि जुगिन छूटत नाल बंदूक सुतारी ।
भीरपरी बिचले तब भीरक सांहिमखां समसेर संभारी।
काहू को मुंड कटी कटि काहू की ही
मिसरी पै लगी आईखारी ।।६११।।

।। दोहा ।। सूर सुभट दीवांनके, बहुते आये कांम ।
केते येक गनाइ हैं, लै लै उनको नांम ।।६१२।।
येदल अरिके दल हनत, पुनि भाईया कमाल।
द्वै काइम नीके लरे, नाथा और जंमाल।।६१३।।
करे मुजाहद मेर पग, भीखन पुन बहलोल ।
लाडू अरु पेरोज खां, राख्यौ अपनौ तोल ।।६१४।।
द्वै खानू दौला अबू, इसकंदर रज रास ।
अरु मारू उसरीफ पुनि, कीनौ नांव प्रगास ।।६१५।।
ऊदा परता चतुरभुज, जगा मनोहरदास ।
पुनि कौ जू हरदास ये, परे येक ही पास ।।६१६।।
द्रोंद राज मोहन जुगल, मुये येक ही ठौर ।
कौन २ को नांव ल्यौं, कटे बहुत ही और ।।६१७।।

जे जूझे दीवांन संग, अमर भये सैंसार ।
जों जिहाजमैं पैठ कै, सागर कीजत पार ॥९१८॥
मार मार ही उचरै, अलिफखांन चहुवांन ।
जोर पर्‌यो करवार कर, अरि मारे दीवांन ॥९१९॥
हाथी येक दीवांनकौ, नांव चतुर गज ताहि ।
खलनि उखारत ब्रिच्छ ज्यों, अैरापति सम आहि ॥९२०॥
कछु हाथी हाथी हने, कछु हने दीवांन ।
जोधा पाइन तर मथे, भलौ भयौ घमसांन ॥९२१॥

॥ सवईया ॥

धायौ है मातो गयंद अधीर ह्वै काहू नहीं तब धीर धरी है ।
खानु अलिफ खरे इतही गज आइ दबाये नहिं ढील करी है ।
बाही भलैं करवार चरन कौं सावन ताबर की ज्यों निकरी है ।
टूटके पांव करी यों गिर्‌यो मनौं फूटिके खंभ चौखंडी परी है ॥९२२॥

॥ दोहा ॥ जबहि जुद्ध भारी भय, बिरचे कटक पहार ।
तब दिवांन पाछैं परे, बहुत गिराये मार ॥९२३॥
तेरहसै मानस हने, पर्‌यो बहुत घमसांन ।
इनहूंके बहुतै मरे, गनत न आवै ग्यांन ॥९२४॥
देख्यो जबही पहारी यों, भाजे छाडत नांहि ।
येक मतौ करिकैं फिरे, आइ मिले तब मांहि ॥९२५॥
बहुर लड़ाइ फिर परी, जूझे जोध अपार ।
भये सही दीवांन जू, सुजस रह्यो सैंसार ॥९२६॥
खेत मांहि जो मरि पड़े, है ताहीको खेत ।
जाके पाइ न छूटि हैं, जैत दई तिहं देत ॥९२७॥
जिय जान्यो जान्यो मरन, अलिफखांन चहुवांन ।
अैसी विध ना मर सकै, कोऊ राजा रांन ॥९२८॥

॥ सवईया ॥

प्रबल सबल सत लाज सौं अलिफखां
जूझत झुकंत अकुलात नहीं दलतें ।

जुद्ध कौ समुद्र है सहादत कै नग भर्‌यौ
बूडकलै पावे जो न डरै काल जलतैं।
महमद खांन अंग जीते नित जोरि जंग
आरन अभंग बडौ साकौ कीयो चलतैं।
बड़े बड़े राजा राव रानां उमराव भूप
असी भांति मरिबेको मुये हाथ मलतैं ।।९२६।।

बासोहद कीनी बस चंबे दीनी पेसकस
जस भयो जीत्यौ है नगरकोट भौनकों।
काहलूर जैतवा मंडई सुखेत मां
बिकट पहार पैठे मारग न पौंनकौ।
भाजे भाजे फिरत पहारी हार येक भये
कोरनिसौं लरै असौ साहस है कौनकौ।
गए अमरापुर अलिफखां अमर भये
संभरी नरेशनें चढायो लौंन लौंनकौ ।।६३०।।

।। **दोहा** ।। जो लौं जीये जगत मैं, अलिफ खांन सिरमौर।
गढ़ मनसब लेते रहे, आज और कल और ।।६३१।।

।। **सवईया** ।।

दोइ बार दछिन में वाती तीन बार मली
कछवाहै तीन बार खेत तें खिसाये हैं।
साधी है मेवार दोइ बार औ ठटा हूं साध्यो
मार २ कै भिवानी भोम भोमिया मिलाये हैं।
चार बार कांगरौ पजायो करवर बर
जंगल लखी के मारि डंड भखाये हैं।
खरे ईसरस भये सरसै अलिफखांन
गंजे उमराव दलपति हूं भजाये हैं ।।६३२।।

।। **दोहा** ।। सोरहसै जु तियासिया, सन सहस पैंतीस।
अलिफ खानुं बैकुंठ गये, रोजै अठ्ठाईस ।।६३३।।

करामात परगट भई, ज्यारत करत जहांन ।
देखत ही दरगाहकौ, पूजत इछ्या प्रांन ॥६३४॥
करामात दीवांनकी, हैं हाजिरा हजूर ।
गिरवर पर बादुर रहै, ज्यौं रोजै पर नर ॥६३५॥

॥ सवईया ॥

होत दुख दूर देखैं नूर दरगाहकौ
निरधन पावै बितु निरसुत पावै सुत
अैसी अद्भुत बात करम इलाहकौ ।
निरबुधि पावै बुधि बेसुधको होत सुधि
मारग लहत जु भुलानौ आवै राहकौ ।
अलिफखां चहुवांन लोभ नहीं कीनौ प्रांन
पायो फल राख्यौ स्वांमधर्म पतिसाहकौ ।
न्यामत संपूर है जहूर हाजिरा हजूर
होत दुख दूर देखें नूर दरगाहकौ ॥६३६॥

ह्वै सुख लीजिये नाम सकारे ।
व्याध असाध ते होत समाध
मिटै अपराध अगाध जै न्यारे ।
चिंत कछू चितमैं न रहै
उमहैं कलप ब्रिछ की डारैं ।
खांन अलिफ करामात पूरन
चूरन है है सब रोस विकारें ।
देखिये ना चुखहूं दुख को मुख
ह्वै सुख लीजिये नाम सकारे ॥६३७॥

प्रांनकी इंछ दीवांन पुजावै ।
न्यामत और करामत पूरन
होहिं सुखी जे दुखी तकि आवैं ।
पीर महा परगट्यौ पुहमी ।

परपीर पिराये की पीर पिरावैं'।
खान अलिफ समुद्र अथाह है
जो मनसा सोई धावत पावैं ।
कान गहैं तेई मान लहैं जगु
प्रान की इच्छा दिवान पुजावैं ।।६३८।।

।। **दोहा** ।। सोरह सै इक्यानुवै, ग्रन्थ कर्‌यौ इहु जांन ।
कवित पुरातन मैं सुन्यौ, तिह बिध कर्‌यौ बखांन ।।६३९।।
दौलतखां दीवांनकौ, अब हौं करौं बखांन ।
तेग त्याग निकलंक है, जानत सकल जहांन ।।६४०।।

श्री दीवांन दौलतखांके पुत्र

१ ताहरखां, २ मीरखां, ३ आसफखां ।
ताहरखां कुल को तिलक, रचि कीनौं करतार ।
मीर खांन पुनि असद खांन, भइया ताहि विचार ।।६४१।।

दौलतखांकौ बखांन

॥ **दोहा** ॥ जबहिं भये बस काल के, अलिफखांन दीवांन ।
बैठे उनकी ठौर तब, दूलह दौलत खांन ।।६४२।।
जहांगीर पतिसाह जू, दे कै मनसब मान ।
सौंप्यौ है गढ़ कांगरौ, दौलत खां चहुवांन ।।६४३।।
पातसाह असौ कह्यौ, तुम बिन असौ कौन ।
जाते निहचल रहत है, नगर कोट अरु भौन ।।६४४।।
आइ बिराजे कांगरै, दौलतखां चहुवान ।
भुमियनको भै उपज्यो, संके राजा रान ।।६४५।।
बासी सकल पहारके, जेर करे चहुवांन ।
डंड भरै सेवा करै, थहरै ज्यौं तर पांन ।।६४६।।
जहांगीर कीनौं गवन, तब उपजी जग रौर ।
सब थानै उठि उठि गये, रह्यौ न कोऊ ठौर ।।६४७।।

दौलतखां दीवांन तब, कीने गाढ़े पाइ।
दुर्जन दलतें ना डुरे, रहे अचल ठहराइ ॥६४८॥
सबै पहारी येक ह्वै, घेरो कीनौ आइ।
मेद चरन दीवांनके, डुरहि न लागें बाइ ॥६४६॥
अपनै दलसौं यों कह्यौ, दौलतखां दीवांन।
निकसि लरहु मारहु मरहु, करहु महा घमसांन ॥६५०॥
तब दल सबल दीवांनके, निकसे लरन रिसाइ।
नीकौ जुध मचाइ कैं, घेरौ दयौ छिड़ाइ ॥६५१॥
मरे पहारी जे लरे, उबरि गये जो भाजि।
बहुरे दल दीवांनके, लै उनकी रज लाज ॥६५२॥
साहिजहां बैठे तबहि, तखत दिलीके आइ।
बात सुनी दीवांनकी, भले रह्यो ठहराइ ॥६५३॥
और न कोऊ ठाहर्‌यो, तजि तजि आये थांन।
नगर कोट राख्यो भलैं, दौलतखां चहुवांन ॥६५४॥
मनसब बढ़यो छत्रपति, दै के आदुर मांन।
जग सगरे नामी भये, दौलतखां चहुवांन ॥६५५॥
रहे चतुरदस बरस उत, साध्यो भलैं पहार।
पाछै काबलकौं चले, चाहुवांन मुछार ॥६५६॥
काबिल और पिसौरमैं, रहे भली ही भांति।
सीवाली सब मिल चले, सहि न सके मुखक्रांति ॥६५७॥
बेटा दौलत खांनकौ, ताहरखांन सपूत।
जुध खर्ग दामिन दमक, दानझरी पुरहूत ॥६५८॥
साहिजहांसौं मिलनकौं, गये अकबराबाद।
प्यार कियो मनसब दीये, अति बाढ्यो अह्लाद ॥६५६॥
अमरसिंघ गजसिहकौ, हन्यो सलाबत खांन।
छत्रपतिकै दरबारमें, उपजि पर्‌यो घमसांन ॥६६०॥

साहिजहां फुरमान दिय, मारि लेहु राठौर।
असी बेअदबी बहुर, ज्यों न करै को और ॥६६१॥
तबहि गुरजबरदार सब, चहुंधा लगे अपार।
गुरजनि सौं ढाह्यो बुरज, गिरत लगी बहुबार ॥६६२॥
जे सेवक अमरेसके, हुते आगरै मांहि।
ते सुनिकै सब लरि मुये, कोऊ भाज्यो नांहि ॥६६३॥
राव कुटंब नागोर हौ, जोधावत बहु पास।
को नां लै नागौरकौ, असी उनकी त्रास ॥६६४॥
नटे बहुत उमराव तब, ताहरखां सिरमौर।
आगै ह्वै अैसैं कह्यो, मैं पाऊं नागौर ॥६६५॥
का मजाल जोधानकी, उतहि सकै ठहराइ।
हुकम रावरौ है बली, पलमें देऊं उडाइ ॥६६६॥
सुनि आनंद्यो छत्रपति, लिख दीनौ नागौर।
ताहरखां पतिसाहके, जियमैं राखी ठौर ॥६६७॥
पातसाह फुरमान लिख, टेरै दौलत खांन।
मनसब हूं डेढ़ौ कर्यो, और बढ्यो बहु मांन ॥६६८॥
काबलमें दीवांन हे, चल्यौ जात फुरमांन।
ताही मैं यौं छत्रपति, पूछे ताहर खांन ॥६६९॥
पिता तिहारौ आइ है, तब जैहै नागौर।
कै तूं पहले जाइ कै, काढहिंगौ राठौर ॥६७०॥
इन्हन कह्यौ फुरमांन हौं, बांधौं अपने सीस।
अबहि जाइ जोधानिकौं, काढ़ौं बिसवा बीस ॥६७१॥
हर्षवंत हौ छत्रपति, दयौ आनि सिरपाव।
आदुर दै नागौर दै, कियौ वड़ौ उमराव ॥६७२॥
इनको सुत सरदारखां, संग हुतौ दुतिरास।
मनसब दैकै छत्रपति, राख्यौ अपने पास ॥६७३॥

उतते ताहरखां चले, वतन आपने आइ।
कूच कियौ नागौरकों, अनगन कटक बनाइ ॥६७४॥
जात जात नागौरकैं, निकट लगे जब जाइ।
जोधावत गढ़ छाड कै, निकसे तबहिं पराइ ॥६७५॥

॥ सवईया ॥

मिटे उमराव राव साहिजहां जू कै आगे
तहां लायौ बीरानं करी है बात थोरी सी।
हाथौ दयौ पोरकै पै माथौ दै सके न जोधा
गरद दबायें भाज गये खेल होरी सी।
चहुरंग चमू बानि नागवर लीनौ आनि
भये हैं खिसाने जे कहत बात भोरी सी।
ताहरखां कीरति अकीरति बिपछनकी
जगमैं रहैगी गंग जमुनाकी जोरी सी ॥६७६॥
पाखर संजोव गज जूहमें धुकार धौंसा
सघन घटामैं मानौ घन घहरतु है।
प्रबल सबल दल साजि चढ़े ताहरखां
खुरनि तुखारनि सौं जगु थहरतु है।
धूरि उडि नभ छायौ सूरज न डिठ आयौ
तिमर जनायौ अरि हीयौ हहरतु है।
पवन घन जानि कौ डुरावत समूह सैन
सागर समांन है सु जानौं लहरतु है ॥६७७॥
मूंछनि ताव सुभावहि देत बरा बरा जानि कै प्रान डरै जू।
जौं करवार निकार निहारत तौ द्रिगबाल सबै थहरे जू।
होत पलांन तुरंग कुरंग ह्वै भाजै बिपछ न धीर धरै जू।
ताहरखांकी धाक दसौं दिस सेल चढ़े जगु ऐ लरैं जू ॥६७८॥
हिम्मतके बर मोह्यो छत्रपति साहिजहां मुख तेरी ये बातें।
जोध न कोऊ बिरोध सकै तुहि जानत तूं सब जुध की घातैं।

ताहरखां तुव तेगकी त्यागकी फैली कीरति दीपनि सातैं।
दानके बीज धरा रसना कविनीके बये जसके बिखातैं ॥६७६॥
दुरजनसाल मरद मुछाल है ताहरखाँ तरवारको रावत।
कूरम धूरमें डारे मिलाइ कै सिंघ हुते तेऊ गाइ कहावत।
बंक रह्यौ नहीं बीकनिमैं अरु पाइ लगे तजि बाद बिदावत।
दौलतखानकों नंद नरिंद, अनंद भयौ अति देसमें आवत ॥६८०॥

॥ दोहा ॥ जैगढ़में डेरौ कीयौ, अमरसिंघके धाम।
हिमतकै बर जगतमें, कीनौ अपनौ नाम ॥६८१॥
सुखमें मास चतुरं गये, आये दौलतखान।
पूत पिता दोऊ मिले, अति सुख उपज्यो प्रांन ॥६८२॥
जुगल रहत नागौरमें, बाढ्यौ हर्ष हुलास।
मुंछारनकी मानि है, सीवांरी सब त्रास ॥६८३॥
सात आठ ही मास लौं, रहे उतहि दीवांन।
पुनि आयो पतिसाहकी, अैसी बिध फुरमांन ॥६८४॥
बांचत ही फुरमांनकैं, ना रहियौं नागौर।
अब तुम गहर निवार कैं, बेगे जाहु पिसौर ॥६८५॥
उततें सहिजादौ चलै, बलख लैनके चाइ।
तब तुम उनके संग ह्वै, फतिह कीजियहु जाइ ॥६८६॥
तब दीवांन उतकौं चले, मियां रहे नागौर।
आठ मास बैठे रहे, सुखसौं वाही ठौर ॥६८७॥
फौज चलाई बलखकूं, सुनी मियां नागौर।
छत्रपतिकौ पठई अरज, जै पुंहची लाहौर ॥६८८॥
तामै अैसैं लिख्यौ हौ, सुनियै सहनसाह।
मोहूकौं जो हुकम ह्वै, तौ आऊं दरगाह ॥६८६॥
येउ तबहि बुलाइ कै, दीने बलख पठाइ।
लघु साहिजादै कटक लै, फतिह करी है जाइ ॥६६०॥

पठये सहजादै जुगल, रुसतमखां दीवांन ।
पुंहचे है सतरज लये, इंद खोहकै थांन ॥६६१॥
नीकी बिध थानै रहै, मलि उजबकको मांन ।
इक रुसतमखां दखिनी, दौलतखां दीवांन ॥६९२॥
ताहरखां है बलखमैं, सहिजादै के पास ।
मींच निगोड़ी पांपनी, आइ गई अनयास ॥६६३॥
कैसै कहियै जीभ सौं, कैसै सुनिये कान ।
तरवर ताहरखान जू, जगते कीयो पयान ॥६६४॥
ताहरखांको मर्न सुनि, आयौ तनं जु प्रसेद ।
रोम रोम रोवन लगे, जियको उपज्यौ खेद ॥६६५॥
ताहरखां कीनौ गवन, स्रवन सुने ये बैन ।
बस्त भगौहे ह्वै गये, रत रोये जुग नैन ॥६६६॥
तरुनापै ही उठि गयो, दै तरवर बैराग ।
ब्रिधपनकौं पहुंच्यौ नहीं, बाव लोगके भाग ॥६९७॥
पूनौकौ पहुंच्यौ नहीं, भाग कमोदनि मंद ।
यह बपरीत लागै बुरी, गह्यो सप्तमी चंद ॥६६८॥
थारी के मुक्ता भये, ढरे ढरे ही जाहि ।
सुरतर ताहरखांन बिनु, केहूं न द्रिग ठहराइ ॥६६६॥
हियो कमल नाहिं न खुलत, मुर्झित पल पल मांहि ।
छबि रवि ताहरखांन जू, डिष्ट परत है नांहि ॥१०००॥
कहु कैसै कै ऊपजै, नैन चकोर अनंद ।
कहु वा डिष्ट परै नहीं, ताहरखां मुख चंद ॥१००१॥
मरि करि ताहरखांन जू, हितुवन यह दत दीन ।
नैन बहन हिरदै दहन, मनहि गहन तन छीन ॥१००२॥
प्यारे ताहर खांन बिन, क्यों करि हैं मन गाढ़ ।
उन डाइन बैरन बलख, लयो करेजा काढ़ ॥१००३॥

धर्मराज कैसे कहूं, कौन धर्म यहु आहि ।
काटत ऐसौ कलपतर, कृपा न उपजी काहि ।।१००४।।
मन भावन बिन तप्ततन, बढ़ी सु मेटै कोइ ।
असुंवनि छाती छिरकिये, पै नां सीरी होइ ।।१००५।।
ताहरखां बिनु चित्तकौ, चिंता भई असंख ।
चन्द्रकांति मन भाति नित, चुयो करत है अंब ।।१००६।।
सज्जन द्रुजन येक सम, करे सु भली न कीन ।
जीवत हित बनि सुख दयौ, मरि अनहित बन दीन ।।१००७।।
सज्जन द्रिग अरहट घरी, भरि २ ढरिरे जांहिं ।
दुर्जन विहसत फिरत है, दसन अधर रस मांहि ।।१००८।।
ताहरखां या देसमैं, येक बार फिर आव ।
सज्जन द्रुजन को अबहि, है परखंनकौ दाव ।।१००९।।
मरि कर आयो देसमैं, घर २ उपज्यौ सोग ।
ऐसी बिधकै मिलनमैं, क्यों सुख पावैं लोग ।।१०१०।।
दुर्जन सौ नाहिन झुके, कीया न सज्जन प्यार ।
काहू तन चित यो नहीं, रंचक नैन उधार ।।१०११।।
देखत ही ताबूतकौ, रोर परी पुर मांहि ।
कौन नींद सूते मियां, तौऊ जागे नांहि ।।१०१२।।
येक बार जियकी कथा, सुनी न प्यारे आइ ।
मनकी मनही मैं रही, बिधु सौं कछु न बसाइ ।।१०१३।।
सीत पवन लूं घाम घन, सहै रहै दुख मांहि ।
जांनहि जिन सिरतें गई, कल्प ब्रिछकी छांहि ।।१०१४।।

॥ सवैया ॥

काल कौ तौ नाम कालकूटतें कटुक लागै
ताहरखां सौ कलपतर जिन दाह्यौ है ।
रतननिकौ समुद्र पल मैं सुखाय डार्‌यौ
मिटत न काहू भांति करता जु चाह्यौ है ।

भर तरुनांपै ही कुबैरतें कुबेर लूंट्यौ
सोनें को सुमेर काहू करि कोप ढाह्यौ है।
रोम रोम दीनो दुख दया न करी है चुख
डाइन बलखतौ करेजा हाथ बाह्यौ है ॥१०१५॥

॥ दोहा ॥ मरन पूतको सुन पिता, कैसे धीर धरंत।
रोवनहार हि रोईये, यहु दुख आहि अनंत ॥१०१६॥
बात सुनी दीवान जू, अति दुख उपज्यो गात।
करता करहि सु सीस पर, कछु बर नाहिं बसात ॥१०१७॥
पातसाह यह बात सुनि, काहू अग्या दीन।
खां सरदार बुलाइकै, बहुत दिलासा कीन ॥१०१८॥
फिरी मुहिम बलाखकी, काबुल आई सैन।
बहुर पठाई फौज तब, गढ़ खंधारकौ लैन ॥१०१९॥
जैगढ़को घेरौ कीयौ, पै बर नांहि बसाइ।
और फौज गढ़की कुमक, दीनी साही पठाइ ॥१०२०॥
इत दल साहिजहांनके, उत दल साहि अबास।
आपुनमैं लागे लरन, पुंहची धूरि अकास ॥१०२१॥
तबहि फौज लागी डिगन, तब रुस्तम दीवांन।
जै सनमुख लरन, बैरनि पर्‌यौ भगांन ॥१०२२॥

॥ सवईया ॥

साहिजहां करि क्रौध खंधारके लीबेकौ आपुनी फौज पठाई।
जुद्ध मच्यौ है नच्यो तहां नारद आगै तें फौज अबासकी आई।
दच्छिनी दच्छिन वोर भयो है दींवांन अनी तव लीनी है बाई।
दौलतखां दलनाइक साहिकी सैन भलैं लरिकै बिचराई ॥१०२३॥

॥ दोहा ॥ भाजी फौज अबासकी, जीते दल पतसाह।
लरे सु मरे परे उहां, भांजि बचे गुमराह ॥१०२४॥
जब तुसार मौसिम भये, सके न दल ठहराइ।
घेरो तजि खंधारकौ, काबुल बैठे आइ ॥१०२५॥

जबहि गयौ मिटि जगततें, जांमैकौ हंगाम ।
तबहि पठये बहुर दल, जाइ करहु संग्राम ॥१०२६॥
बहुर जाइ घेरौ कीयौ, पै ना ग्रायौ हाथ ।
तजि खंधार काबल तबहि, ग्रायौ सिगरौ साथ ॥१०२७॥
तीजै बहुर हुकम भयौ, तब फिर लागे जाइ ।
ना कछु छत्रपतिसौं चले, गढ़सौं कछु न बसाइ ॥१०२८॥
जुझां होत है रैन दिन, छूटत गोली नाल ।
जाकैं लागत जात है, तिहं जिय गोली नाल ॥१०२९॥
दौलतखां दीवान जू, चढ़ि चढ़ि दोरैं ग्राप ।
बिचकर कछुकी कछु भई, चढ़ी कालकी ताप ॥१०३०॥
केतक दिनमें मरि गये, यहै जगतकौ भाव ।
कालतें काहू न बचे, रानों होइ कि राव ॥१०३१॥

॥ सवईया ॥

जा दिनते चाहुवांन कलजुग प्रगटान्यों
ता दिनते येते भूप ज्याइ कीने नये हैं ।
दत्तिकौ करन मति भौज सति हरचंद
परदुख काटिबेकौं विक्रम ही भये हैं ।
हठकौ हमीर देव छाड़ी नहीं हठ टेव
प्रथीराज बलकौं सुजस जगु छये हैं ।
दौलतखां जीवत हे राजा षट इनकै मरत
इनकैं मरत ग्राज वैउ मरि गये हैं ॥१०३२॥

॥ कवित्त ॥ प्रथम गंजि राठौर बहुरि भंजे कछवाहे ।
जहांगीरसौं बचन कहे ते भले निबाहे ।
बहुरि कांगरौ साध बलख खंधार सिधारे ।
कटक साहि ग्रबास खेत चढ़ि बहुत संघारे ।
श्रीदौलतखां दीवांन तौ सप्तदीप नामी हुवौ ।
ग्रैसै मरद मुछारको, कैसैं कै कहिये मुवौ ॥१०३३॥

दौलतखाँ दीवांन जबहि बैकुंठ सिधायौ।
सुख दाइक बिन बहुत लोगन दुख पायौ।
अबहिं कहौं वह बरस छाड़ि दीनौ जगु जामें।
चार भेद समुझिग्गो गुप्त प्रगट है जामैं ॥१०३४॥
संन सहस पचास पुनि तेरह लैहु प्रमांन जी।
११० १७५ ६६ ५२ ६१५ ४५ = १०६३०
संवत सत्रह सै जु दस गवन कर्‌यो दीवांन जी
००० ६६ ५० २३७ ८४ ००० = १७१०
यहु करबित तुरकी लिखहुं, बहुरहि दसके काढ़।
संन संबत तूं देख लै, आवै घाट न बाढ़ ॥१०३५॥
जब यहु खबर दीवांनकी, पुंहची जाइ नरेस।
तबहि खांन सरदारकौं, दीनौ इनकौ देस ॥१०३६॥
देस दयो सरपाव दै, बहुत दलासा कीन।
पुनि दयाल ह्वै छत्रपति, बिदा वतनकूं दीन ॥१०३७॥
तब घर आये वतन लै, खां सरदार मुंछार।
हितुवन मन आनंद भयो, द्रुजन भये बिकार ॥१०३८॥
सीवारी सब थरहरे, अैसी उपज़ी त्रास।
घर घरनी सब छाड़िकै, जाइ गह्यौ बनवास ॥१०३९॥
दल सुनि खां सरदारके, द्रुवननि परी दहल।
घटा देख फोरचों घटा, तुरियो टोडरमल ॥१०४०॥
तरवर ताहरखांन तन, साहस सत सपूत।
सरदारां सरदार है, रजपूतां रजपूत ॥१०४१॥

॥ सवईया ॥

दान खग निकलंक राख्यो न दरिद्र रंक
सुभट असंक जसु प्रगट मुछारकौ।
गुनीजन दै आसीस सत्रनि काटै सीस
बच्यौ जिन भाजि मग लीनो दधपारकौ।

कुलको तिलक सब मुलककौ सुख देत
अजर अमर रहौं थंभ परवारकौ ।
करतकरम करि कीनो है अनूप भूप
जग पर जागै कर खांन सरदारकौ ॥१०४२॥
रूप उजागर बागरकौ पति
लागत है दिन ही दिन नीकौ ।
जो लौ है ससि सूरज धू नभ
है जगमै जल गंग नदीकौ ।
तोलौं करि करतार कृपाल ह्वै,
काइम क्यामल खांनकौ टीकौ ।
नैनको तारो है प्रांनको प्यारौ
है खां सरदार अधार है जीकौ ॥१०४३॥
चाहत हैं मीन जल मिले ही परत कल
चाहत चकोर चंद चकई बिहानकौ ।
चाहत मयूर घन चाहत बसेत बन
चाहै मनोरथ मन कंवल ज्यों भांनकौ ।
अंध चाहै नैन चाहै पग गैन
गुम चाहै बोलौ बैन घट चाहै प्रानकौ ।
जैसें येती बातनकौ येती बात चाहत है
तैसे मेरे नैन चाहे सरदार खांनको ॥१०४४॥
पूत पिताकौ देखिकै, बाढ़त है अनुराव ।
फदनखां सरदारखां, कोट वरषकी आव ॥१०४५॥

॥ इति रासा सम्पूर्णम् ॥

परिशिष्ट

श्री अलिफखांकी पैडी लिखते

पहलैं अल्लहु सुमिरिये । जिन्ह सुभट उपाया ।
बोल जिलांवण कारणैं । रक्खैं नहीं काया ।।
मांणसदै सारै नहीं । सोकर सुभाया ।
सोई जित्तै जांन कहि । जिस वोड़ खुदाया ।।१।।
नांव महंमद लीजिये । सुभटां सिरदार ।
पंथ दिखाल्या दीनदा । सगलै सैंसार ।।
जिन्हां कलमां अक्खिया । ते लगों पार ।
दिल विच जिन रखी दगा । ते सटे मार ।।२।।
जहांगीर अकबर हंदा । दिली सुलिताणां ।
चार चक नव खंड विच । फिरवाई आणां ।।
सत्ताँ दीपाँ ऊपरे । तपियां ज्यौं भाएां ।
तिन थिर थप्या अलिफखां । टिका चौहाणां ।।३।।
दादै तेडैं क्यामखां । केंही गल किती ।
केती धरती मार कर । तेगां बल लिती ।।
मलूखाँसूं खेत चढ़ि । जुध बाजी जिती ।
खिदरखांनकी बांहि गहिं । दिली ले दिती ।।४।।
[टि]क्का क्यामलखांनदा । खानां सिरताज ।
वड्डा होई जु गोत विच । तिस वड़ी लाज ।।
भुंमियां फिरे पहाड़दे । सज्जहु दल साज ।
मांरण मरंण भिडंनदा । रजपुत्तां काज ।।५।।
बासो पहली होत तैं । कर जुध्ध भगाया ।
पछैं सूरजमल्ल भी । तैं खेत खिसाया ।।
इब जगतैं ऊपर चढ़ौ । उन सीस उठाया ।
तुम्ह बिण येहा कौण है । जिस लोभं न काया ।।६।।

साके तैंडे बड़ बड़े। नां जांहि गिणाये।
बिदा कीया तूँ जंहानो। ते भै पजाये ।।
राणैं जेहे भूपति। तैं खेत खिसाये।
चारौं चकदे भूमियां। गहि आंण मिलाये ।।७।।
नगरकोटदे भूमियां । हैं नितदे आकी।
लुट्टे सगले परगंने। छड्डी नहीं बाकी।
फौजदार सिकदारदी। कुंह रही न नांकी।
तहां पठाया अलिफखां । दे गज औराकी ।।८।।
पातसाह बड़ मोलदा। सरपाव पिन्हाया।
बीड़ा दिता प्यार कर। खां पैर लगाया ।।
बिछा होइ तसलीम कर । डेरैनौं आया।
तद हीं डेरैथैं चढचा। चुख नां ठहराया ।।९।।
हिक धापही अलिफखां। परबत पर धाया।
गहर न किता पंथ विच। बहला चलि आया ।।
तद थरराये भूमियां। यदि यों सुणि पाया।
जगतैसूं चगता खिझ्झया। चहुवाण पठाया ।।१०।।
खां चड़िया नगारची । नीसांण बजावै।
जेही भादौंदी घटा । घणहर घररावै ।।
झूझ करणनौ अलिफखां। आनंदसूं धावै।
जाणौं नौसहु चौंपनाल । ब्याहंणनौ आवै ।।११।।
पैठा आइ पहाड़मैं । दमांमे बज्जे।
सोर होवा सैंसार विच। परबत मिलि गज्जे ।।
नाहर देखें गउ ज्यौं। राजे हंभ भज्जे।
जीव बँचाथा रज तजी। अपजस नाँ लज्जे ।।१२।।
अग्गे अग्गे भूमियाँ । पछै दीवाणं।
मिरग डार ज्यौं भज्जदे। हंढै उदयाणं।
निंद्द भूख त्रिसनां मिटी। छूट्टी सुखबाणं।
गिरवर गिरवर पंछ ज्यौं। वै लेहं उडाँणं ।।१३।।

नर नारी मिल सेज पर । नां करहि किलोल
अंखी कजल नां रह्या । मुंह नाँहि तंबोल ।।
पत्रांहदे कपड़ कीये । फटि बसंन अमोल ।
कदहीं दर्पण हथ्थ लै । नां तकहिं कपोल ।।१४।।
भगे फिरैं पहाड़िये । भारी दुख पावैं ।
पैर थके परबत चढ़त । संगती बिललावैं ।।
अन्न पकावणनों नहीं । तरु छाल पकावैं ।
दल देखें दीवानदे । छड़ि आप भगावैं ।।१५।।
मौपै ठाण धमेहड़ी । मारी असराल ।
जंबूदा जंबू हुवा । चूहा चंब्याल ।।
नगरकोट अपबस कीया । असु चढ़ि ततकाल ।
मंडई और सुखेत ले । कड्डी रिप खाल ।।१६।।
कीता नगर सिकंदरा । बहु साह सिकंदर ।
तहां अलिफखां जाइ । करि ढाहं अ...।
भगे फिरैं पहाड़ियै । ज्यों गिर गिरकंदर ।
रुक्खां उपर कुददे । हंढ़ै ज्यौं बंदर ।।१७।।
हंभ पहाड़ी हिक होइ । यह गल विचारी ।
खां जीवत छड्डै नहीं । हम निजर निहारी ।।
उड़ि न सकै फट्टैं नहीं । धर काठी भारी ।
करैं लड़ाई बागले । हभ येकै बारी ।।१८।।
जगता चढ़्या पठाणियां । बिसभर चंब्याल ।
सीबैंदा अभू चढ्या । फतू जसवाल ।।
चड़्या सुखेतड़ स्यांमदा । चंद सूरज मंडाल ।
भोपत बिलूदा चड़्या । ठक्कर चिड़ियाल ।।१९।।
अंनरुध चड़िया राजपुर । और टलू कपूर ।
चड्या कल्याण कूलूदा । चंदा कहलूर ।।
अरु बूला कुटलहरिया । आइ हुवा हजूर ।
चंद्रभाण तत्ता चढ्या । ज्यौं उगै सूर ।।२०।।

····ड़च दल सज्जिकैं। चड़िया पठियाड़।
खणिहाड़ चभी छड़िकैं। आया खड़िहाड़॥
मन महेस भूटंतदे। ढूढंदे·····राड़।
किसदा किसदा नांव ल्यों। हभ जुड़्या पहाड़॥२१॥
मिलकर सकल पहाड़िये। दल सजे अपार।
गिणत न लेखा आंवदा। उंमड़ा सैंसार॥
चड़ कर आये खांन पर। नां लग्गी वार।
आंगै हाथी घूंमदे। करदे हाकार॥२२॥
तब यह गल दीवांणजी। येही सुंणि पाई।
अगणित फौंज पहाड़दी। मुझ उप्पर आई॥
अलिफखांन नीसांन दे। तद सैंण बंणाई।
जस लालचदे लालची। मिलि करैं लड़ाई॥२३॥
अलिफखां फुरमाईया। ल्यावहु केकांण।
तद उठि दौड़्या सांहणी। दौला सहनांण॥
अणौं निल्ला नचदा। देख्या विच ठांण।
चौंर फुलांया पुंछदा। पाये अहन····॥२४॥
कीया खरहरा सांहणी। असु अंग दिपाया।
आण्यां नीर विवाहदा। केकांण न्हवाया।
पांणी सट्टया पुंछ कर। रूंमाल फिराया।
आद लंगाम बणाइकै। सिरजोट पिन्हाया॥२५॥
बांध गलतंणी मखमली। खौगीर धराया।
जींन कीया साखत सजी। ले तंग तणाया॥
जेवंध अगवंद कसि। पाखर पखराया।
दुमची और रकेब कढि। हभ साज बणाया॥
सिरी धरी सिर बाग रखि। बंधण खुलवाया।
सिंध ऊपर पाखर पड़ी। ताजी पीड़ाया।
इंद उचीस्रव छड्डिकै। देखणंनों आया॥२६॥

नीला आया नच्चदा । ज्यों मोर कलाइर ।
ऊप्पर पखर फरसरै । लहरी रैणांइर ।।
चाबक लगें उच्छलै । बिण छेड़्या साइर ।
गज्जां हंदी सैंण बिच । नां होवै काइर ।।२७।।
....बैठा अलिफखां । जिन सभ जग जित्ता ।
चंगा नीर समोइ कर । खां गुस्सल कित्ता ।।
अच्छै कपड़े पेंन्ह कर । रज प्याला पित्ता ।
राग जिरह तन सज्जिकै । खोल सिर पर दित्ता ।
सगले आवध बंधिकै । हथ बरछा लित्ता ।।
बैरी डिठां दौड़ाई । ज्यों मिरगां चित्ता ।।२८।।
दिता पाव रकेब बिच । सुमिर्‌या चित सांई ।
चड़िया खां केकाण पर । हभ सैंण बणाई ।।
अणियां रखी बंडिकै । दिस दखिण बाई ।
अग्गै घुमैं चतुर गज । अैरापति नांई ।।२९।।
कोतल अग्गै खाँनदै । चलै उछलंदे ।
धुर अैराक अरब्बदे । चंगे दीसंदे ।।
लगै भारी सोहणें । आवैं हीसंदे ।
जेही मूरत कांमदी । मंनणों मोहंदे ।।३०।।
सुनैं जेही कंध हैं । वै जरदे पीले ।
रूपैदे मंदिर जिहे । वै निकुरे नीले ।।
मंकल चांदणी रैंणसे । अबलक छबीलै ।
पंख लगैं चाबक लगैं । बिण छेड़ै ढीले ।।३१।।
पोते क्यामलखांनदे । हभहीं मरदानें ।
दूनौं पखौं निरमलै । दादक अरु नांनें ।।
बिरद बहै रजवट्टदा । राखंदे बांनें ।
दिलीदै पतिसाहदै । दिल अंदर मांनें ।।३२।।
पिरथीराज हमीरसे । हैं जिनदै पच्छै ।
जुद्ध समैं फुले फिरैं । भिड़दे मन अच्छै ।।

पेन्ह संजोवा खोल धर। जोगी गत कच्छै।
खाती हो रिप ब्रिछनों। तच्छै ही तच्छै ।।३३।।
ताजनदे पोते तिलक। सुभटां सिरताज।
स्वांम धरमनौं पालदे। इंनदा इह काज ।।
खेत छड्डिकैं लूंणनौं। लावैं नां लाज।
बैरी दिट्ठां दौड़दें। ज्यों तित्तर बाज ।।३४।।
कूरम कमधज देवड़े। आये चौहाणं।
चाहिल मोहिल सांखुले। अरु मुगल पठाणं ।।
कुली छतीसौं बंणि रही। कुंदै केकांणं।
गज अगै करि भिड़ननौं। चड़िया दीवाणं ।।३५।।
रजपूतांसूं........कहै। आपै दीवांणं।
जग विच जोइ जनमिया। सो मरै निंदाणं ।।
मरण वड़ा सोई वड़ा। सिख रखौ कांणं।
सत साहससूं जो मरै। जीतब तिह जाणं ।।३६।।
निल्ले पीले उज्जले। वैबोर कुमैत।
अबरस मुसकी मंगसी। खिंग हरियल अैत ।।
हुये संजोईल सूरिवां। घोड़े पखरैत।
खुरी करांवै चौंपनाल। रावत बिरदैत ।।३७।।
करनांयों घर रावदी। बजै सहनाइ।
मारूं सींधू सुभट सुंणि। नां अंग समाइ ।।
सत प्यालै मते हुये। रज छाक छकाइ।
दोड़े परदल विच पड़ै। सुधि गई हिराइ ।।३८।।
जुद्ध रागदी सुरति सुंणि। होवा चित चाइ।
भुजां फरकै भिडणनों। यह सूर सुभाइ ।।
फुल्ले सुभट संजोव विच। तन नांहि समाइ।
कदली दल ज्यों कापुरुस। डरि डरि थरराइ ।।३९।।
चड़े कटक दहुं वोड़थैं। रिस धरि मंन धाये।
हुवा अंधेरा धूल उड़ि। नभ सूर छपाये ।।

बिण बोलें को ना लखै। आपणें पराये।
जेही दरियादी लहर। दूंनौं दल आये ॥४०॥
धरण धसमसी खुंद खुर। गिरवर थरराये।
कमठ कलमल्या कसमस्या। धौंलै सुख पाये।
सेस सांस रूंध्या हीया। अंग अंग भै छाये।
करन अहेड़ा जिंददा। दूनो दल धाये ॥४१॥
जांण संजोइ लहैं घटा। गरजत नीसांणं।
गोली वोलेसे पड़ै। अरु बूंदै बांण।
चंद्रबांण निस बिच बणें। बिजली चमकारं।
अंधी ल्याई मेहनौं। दल धूलन जांणं ॥४२॥
असु हींसै मैमंत गज। मद बहै हंकारैं।
मार मार ही सूरिवां। मुंह बैण उचारैं॥
दुंद मच्या बिरचै कटक। मारैही मारैं।
दिनकूं दिन को नां कहै। हभ रैंण बिचारै ॥४३॥
चटकैं तीर चलावदैं। कर सुभट कमाणं।
अटकैं विचही आंवदैं। बांणैसू बाणं॥
सटकैं मिसरी म्यानथैं। वाहैं करपाणं।
लटकै सिर वै नस लगै। नालक दूजाणं ॥४४॥
दुंह दल अग्गैं गज बणें। उमँड़े घण काले।
गुंज गरज बगपंतसे। है दंत उजाले॥
मद बरसणि अंकस असणि। धूमंणि मतवाले।
मंदिर जेहे गज बणं। अरु सुंड पनाले ॥४५॥
हाथीसूं हाथी लड़ै। मद बहत अपार।
मिली जांण काली घटा। वरसंदी जल धार॥
बाव चली है जोरदी। कवि कीया बिचार।
तर तमालदे ज्यौं मिलैं। तेंही उणिहार ॥४६॥
हाथी देखे आंवदे। सुख सुभट अपार।
घटा देख ज्यों होइ सुख। संजोगिण नार॥

काइर कंपै थरहरै । अंखी अंधियार ।
इनकूं गज येहे लगें । निसदी उणिहार ।।४७।।
देखि तुरंग कुरंगसे । कुंजर पये धाइ ।
भज्जि चले असु चमक्किकैं । गज पहुंचे आइ ।
कहत जांन कवि जाणियों । यहु हुवा सुभाइ ।
पिच्छै हो काली घटा । अग्गैं हो बाइ ।।४८।।
तट सुभटा कर ताजणां । सनमुख असु आंणै ।
घाव लगाये रोस विच । जेहे मन मांणें ।।
अग्गे हथी भग्गदे । असु गैल लगाणें ।
जेहे बदल बावथैं । वै फिरैं भगाणें ।।४९।।
साथी अल्लिफखांदे । हथी मद बहंदे ।
गुरज मोगरी नां बदैं । गड़ सांगै सहंदे ।।
अंधियारी हल धूलदे । राखें नां रहंदे ।
चरखी बांण न मांणदे । हंढै रिंप गहंदे ।।५०।।
लाई भारी जांण कर । हो सूर करूर ।
गज तन वरछी गड गई । बैठी भरपूर ।
कीये महावत वहुत बल । न होंदी दूर ।
परबत ऊपर देखिये । जाणूं पड़े खिजूर ।।५१।।
रोस होइ करि सूरिवैं । गज मारे भारी ।
बाद बाद बाही भलैं । समसेर दुधारी ।।
लीक कसौटी देंखियें । कबि उक्ति बिचारी ।
कै मिलि बैठी मोटियार । सिंदूर सँवारी ।।५२।।
जोधा क्रोध विरोधसौं । गज सौंहैं धाये ।
हथियारौं हाथी हंणें । हथ चंगे लाये ।।
सुंड कटी करवार लगि । ये भेद बताये ।
नाग जांण डिग रूंखथैं । धरती पर आये ।।५३।।
सुभट अमिट गजसूं लड़ै । चित्त हंदै चाइ ।
कट्टि सटि है क्रोध विच । किरमांणी धाइ ।

सुंड मुंड भू टुट पये । यह हुवा सुभाइ ।
गिरवरथे उखली खिजूर । लग्गें जणुं बाइ ॥५४॥
घोड़े हसती सैंण विच । सोंहणि उछलंदे ।
झुकि आई काली घटा । जाणू मोर नचंदे ॥
टूटि टूटि फल सांगदे । गज अंग गडंदे ।
तारे काली रैंणमें । तेहे चमकंदे ॥५५॥
हाथी दोड़ै रोस विच । वैं मिटहि न मेटे ।
सौहैं आया सूरवां । सुभटांदें बेटे ॥
पकड़ फिराये जे लहे । गहिं सुंड समेटे ।
आई वधूलें जांन कहि । जाएू तिंएँ लपेटे ॥५६॥
कुहक बांण गज लगिकै । छुट्टै चिणंगार ।
तिसदी उपमां देख कर । जांन कीया बिचार ॥
हथ्थी पखर जल उठी । येही उणिहार ।
परबत पर भांही लगी । घाहु जल्या अपार ॥५७॥
मद बहंदे रहदे नहीं । नां मंनै सार ।
गोली केती लगिकैं । निकली दुसार ॥
गोलै भनां पेट गज । कबि कीया विचार ।
ज्यों कंदरा पहाड़ विच । तेहीं उंणिहार ॥५८॥
सुंड कटो जाएूँ गिरै । मंदिरथै नाले ।
पड़े महावत सथ्थ ही । घावांदे घाले ॥
वांदर जानूँ धर पये । टूटे तर डाले ।
कै ज्यौं आवै परबतथें । ढुलदे मतवाले ॥५९॥
हाथी दौड़े क्रोधसूँ । बंधण जद खोला ।
दल कंप्या ज्यों तर कंपै । लगि पवन झकोला ॥
पीलवांन उड़ि धर पड़े । लग्या तन गोला ।
चिड़ी पड़ै भू रूंखथैं । ज्यों लग्गि गिलोला ॥६०॥
पीलवान पग डिग गये । लग्गे सर भाल ।
धरती पड़देही मुये । आइ दब्बे काल ॥

छुट्टे जग-दलं विच फिरनि । तिन्ह येहा हाल ।
भैंही पसर उछेर कर । जाणू सूते ग्वाल ॥६१॥
गोली निकली अंग गज । चलणी उणिहारे ।
दीसैं घाव दुसार यों । ज्यों नभ विच तारे ॥
पड़े रुंख धर पवनथैं । कबि वेद बिचारे ।
कै जाणू मन्दिर ढह गये । बरषादे मारे ॥६२॥
हसती मारणिं कोह कर । जे सुभट सुजात ।
हाथी धरती पर पये । तिन्हंदी सुणि बात ॥
येहे लग्गे जांन कहि । काले गज गात ।
पड़छाहीं सी देखिये । कै सुती रात ॥६३॥
तीन पाव कुंजर कटे । तरवारी घाव ।
डिग हथ्थी भू पर पया । मगरादं दाव ॥
हिक्क पाव उप्पर खड़ा । सुणि येहा भाव ।
तल तर जड़ उप्पर हुई । उखल्या लगि बाव ॥६४॥
मद बहंदे रहंदे नहीं । दौड़ै मैमंती ।
दंती दंती आप विच । होवै चौ दंती ॥
धोलै धोलै दंत मुह । जेही बगपंती ।
घंटा घण विच बीजली । जाणूँ चमकंती ॥६५॥
हाथी आया खान पर । चीर दंसार ।
खांजी आग्गै तमक कर । बाही तरवार ॥
सुंड पई कटि देखियें । येही उणिहार ।
पइया नाग पहाड़थैं । कवि किया विचार ॥६६॥
और गज आया खान पर । गति परवत जेही ।
झरणैंदी उणिहार ही । मद बहंदा देही ॥
बरछी मारी खांनजी । सुंड पैठी केही ।
बंबई विच नागण वड़ी । वहं लगै येही ॥६७॥
आगैं परैं न धर सकैं । दंती मैमंत ।
बाव हलावै रूंखनौं । त्यों गज थररंत ॥

बरछी सुंड झकोल कर । काढ़ी इह भंत ।
सर्प सर्पनों देखिये । निगलत उगलंत ॥६८॥
खांदे चक्कर सूँरिये । बहुले गज मारे ।
हार गई भुज मारदैं । चित नाहीं हारे ॥
बरछी पोये पीलवांन । कबि भेद बिचारे ।
जाणू कांपा लाइकैं । तर पंछ उतारे ॥६९॥
लोहूदे नाले चले । नदियां सीग्रांणी ।
गोला लग हाथी पये । धरती कंपाणी ॥
उछली बुंदै रगतदी । तिसक्या नीसाणी ।
जाणु कराड़ा टुट्टिकै । पइया विच पांणी ॥७०॥
बजैं झुझाऊँ दुहु दल । नीसांण गमकै ।
तीर चक्र छंणके करैं । अरु सांग धमंकै ॥
सुंकारे गोली करैं । तरवार झमंकैं ।
जाणुं कालीं घटा बिच । वै बीज चमंकै ॥७१॥
हथ्थी हथ्थी जुद्ध करैं । और लड़ै महावत ।
पाइकसूँ पाइक भिड़ै । रावतसूं रावत ॥
सुभटसूं निपट निसंक होइ । मारणनों धावत ।
काइर कोट जतंन करै । जिद वोट बंचावत ॥७२॥
भले भिड़ै भिड़ आपमैं । कुद्दैं कर छालैं ।
वोट होइ कर चोटनों । बै नांही टालैं ॥
सांगौ मारे धर पये । तरफैं कर डालैं ।
लहरी लैंदे देखियें । खाये अहि कालैं ॥७३॥
लगे ताजणौं कोह कर । असु करी जगंद ।
हस्तीदै मस्तक चढ्या । चित्त बीच आनंद ॥
नाल रह्या गड़ि सीस गज । सुणि उकति निरंद ।
जाणूं निकल्या दूजनों । दुतियादा चंद ॥७४॥
सुभट सुभट लड़ रत रंगे । कर खेल धमाल ।
सभनांदै गल बिच होवै । हैं कपडे लाल ॥

उछलंदे असवार यों। लगि गोली नाल।
बंदर लेदें देखिये। उलटी कर छाल ॥७५॥
भिड़दे भार आप बिच। सुभटाँदे झुंड।
हाथ पांव कटि कटि पवैं। अरु फुट्टै मुंड ॥
टूटि गई करवार भी। हथी रहे टुंड।
चंगे न्हाये सूरिवां। धारांदै कुंड ॥७६॥
बरछी बाही सूरिवैं। जेही विच जांणी।
चोट लगी रत उछलैं। विच सिप्पर आँणी ॥
सिप्पर बरछी पोइली। तिसक्या नीसाँणी।
जाणूं किरछित नालियां। भीगंदै पांणी ॥७७॥
लोहैंसूं लोहा मिलै। सुणियै ठणकार।
झाल सहारै लोहदी। सापुरस झुझार ॥
गज्जैं जोधा क्रोध बिच। अरु बज्जै सार।
कुंभ फुटि सिर टुट्टिदे। छुट्टैं रत धार ॥७८॥
फड़फड़ाहिं सिर सुभटदे। वै तनथै न्यारे।
मार मार बिण और कुछ। नां वैण विचारे।
तड़फड़ाहिं धर धरणि पर। सिर बिण बेचारे।
डगमगाहि घाइल चरण। मदुवैं उणिहारे ॥७९॥
लोहू नदी सुरस्सती। जमनां गज मांरे।
गंगा जेहे दंद मुंह। करतार सँवारे।
तिरवैणी संगम होवा। जांन भेद बिचारे।
सुभट परे रत न्हांवदे। जाणूं पूजारे ॥८०॥
पड़े सूरिवां खेत बिच। अरु कुंजर पास।
सुंड लगी मुँह सुभटदै। सुणि उकत प्रगास ॥
जाणूं सुत्ते देख कर। पीवणदी प्यास।
निकल्या सर्प पहाड़थैं। पीवंदा स्वास ॥८१॥
अंदादे धगे कीये। हौर मणके सीस।
गज सुंडांदे मेर कर। माला कीनी ईस ॥

करै कपरदी रत डिहूँ। सूंमिरण जगदीस।
अति हरिखिदा जांन कहि। दे सुभट असीस ।।८२।।
मुंडहदीं माला करी। पुजे सिव काज।
गलै लग्गि सुभटां मिल्या। मन फुल्या आज ।।
सूरांदे लोइण खुले। अति रहे बिराज।
गिरझै दौड़े अंख पर। ज्यौं दल वै बाज ।।८३।।
पड़े सूरिवां खेत बिच। घाव भकभक बोलैं।
पास न आवैं गिदड़े। वै भगदे डोलैं ।।
·······वेखै मुंछां हलदी। जद पवन झकोलैं।
गिरझ अखंदा त्यौर तकि। मुंह नांही खोलै ।।८४।।
धूल पई उड़ नैंण विच। डिठ त्योर छिपाये।
निडर होइ द्रिग सूरदे। तद गिरझौं खाये ।।
अंख बाझ तन सुभटदे। दिट्ठां रहसाये।
तद सियाल डिठ बंधकै। खांणेंनौं आये ।।८५।।
अत किलकंदी चौंपनाल। जुग्गिन उठि धाई।
घांण पया जित सुभटदा। तित प्यासी आई।
खप्पर भर छांणहि रगत। दिल विच हरखाई।
रैंणी जांण कसूंमुदी। रंगरेज चढ़ाई ।।८६।।
हाथी कटि धरती पये। घाइल होइ भारी।
जिद निकाल्या सूरवैं। सांगोदी मारी ।।
जुगिणं गज उतरैं चढैं। जेही उणिहारी।
टिब्बै चड़ि चड़ि कुद्ददी। ज्यों कन्या कवारी ।।८७।।
रिण विच वस जुगणीं। मिलि करी धमाल।
पिचकारी गज सुंड कर। छिड़कै रत बाल ।।
लाल हुये रंग हभांदे। रंग रगत गुलाल।
मुंड कुंड विच न्हाइ कर। वै हुई निहाल ।।८८।।
पीवे प्यालै खोपरी। मिलि जुगिणीं बाली।
मद लोहूथैं हढ़िहैं। हंभै मतवाली ।।

गजक कलेजेदी करी। अंखा विच लाली।
अंदा विच गिरभाँ फँधी। ज्यों पंखी जाली ॥८९॥
मुंड किथांहूँ कटि पये। धड़ सिरथैं न्यारे।
रज सहदा प्याला पीया। डर मरंण निवारे॥
राह केत अंम्रित लिया। वैं मरहिं न मारे।
अमर हुये मरि सूरिवां। ग्रहदी उणिहारे॥९०॥
दिती अंदै गिरभनौं। होर अंख कराल।
लोहू दित्ता जुगणी। होर सिंभ कपाल॥
हड्ड सुधर तीनों दये। चंम मास सियाल।
हभ तन दित्ता वंडि कर। जस लंया मुछाल ॥९१।
सांहिमखां सिरदार है। जिस वड्डा तोल।
सही भतीजा खांनदा। जग रख्या बोल॥
येदल नाथा भाइया। कम्माल अमोल।
काइम दोइ जमालखां। रिए करहि कलोल॥
तुग्गू हंदे मुजाहदा। भीषंन बहलोल।
लाडू अरु पेरोजखां। पइया हिक कोल॥
खानूं अबू सरीफ भी। रंगिया रंग चोल।
अरु मारूफ सिकंदरै। सहिया झकझोल॥
खानूं खासा खांनदा। भिड़िया दै ढोल।
उदा परता चतुरभुज। रांणां खग खोल॥
कौजू हरदा मनोहर। जग्गा घमरोल।
दोदराज मोहन जुगल। तेगां तन छोल॥
किसदा किसदा नांव ल्यौं। झूझे हभ टोल।
यों खधी तलवार मुंह। ज्यों खांहि तंबोल।
खां उपर हभ सथ्थनैं। जीव सट्या बोल॥९२॥
सुभट मुये दुंह वोड़दे। आवै नां गिणाए।
हय गय नर मिलकै पया। कीचक धमसांए॥

पातसाहदै कंमनों । झूझै दीवांए ।
हूर भिसत बिच ले गई । बैठाइ बिवांए ॥६३॥
अलिफखांदी जोडनों । उमराव न आंए ।
जहाँगीर पतिसाह भी । यों किया बखांए ॥
जीवंदे बहु गढ़ लीये । जाएंत जहांए ।
मुयें भिसत ली जाइ कर । धंन धन दीवांए ॥६४॥
येहा जुध संसार बिच । किनहीं न मचाया ।
दुहूं वोड़दे सूरिवां । हिक जीव तन पाया ॥
बिरचे जोधा आप बिच । किरचेकी काया ।
जगतै बिसंभर भगि कर । जिंद आप बंचाया ॥६५॥
स्वांम धरम पाल्या भलैं । चिकवै चौहाँए ।
पातसाहदै कंमनौ । दित्ता जीव दांए ॥
जारत आवै खांनदी । चलि सकल जहांए ।
करामात परगट हुई । सिझे······दीवांए ॥६६॥
नांव घिएंदे अलिफ़खां । दुख दालद भग्गै ।
मनदी मनसा पुज्जवैं । भाग सुत्ता जग्गै ॥
पावै धन सुत लखमी । जोई दिल मग्गै ।
हम कुह पावै भोर उठि । जो पैरा लग्गै ॥६७॥
सुभट सुएँ गल हथ्थियार । तौ रथ्थी लीजै ।
जेही कीती अलिफखांनु । जेतेही कीजै ।
पांएी हथियारा हंदा । अंम्रित ज्यों पीजै ॥
कड़ही नांव मरै नहीं । जै देही छीजै ॥६८॥
ढाढ़ी पठ पंजाबदी । बोली पहिच···(चानी ?)
वह तौ सुध आवै नहीं । जे करूं बढ़···(बढानी ?)
भाषादी चिंता नहीं । गल सची ज···(जानी ?)
उकत बिसेख जु कहि गये । सोई परव···(बानी ?) ॥६९॥

सोलहसै ईकईसमें । जनमें दीवांए ।
कीये ऊजले क्यामखां । चकवै चौहांए ।।
संवत हुवा तियासिया । लँखै परवांए ।
बैकुंठ पहुंचे अलिफखां । छड्ड दीया जहांए ।।१००।।

।। इति श्री दीवांन अलिफखांकी पैड़ी संपूर्ण ।।

स्म(मा)प्ता ।अथ संवत् १७१६ मिती कातिक बदी ११ सनीसरवार । तारीख २३ मा० मुहरंम सन् १०७० लिखाइतं पठनार्थ फतैहचंद लिखंत भीखा ।।

———०———

क्यामखां रासाके टिप्पण

पृष्ठ १, पद्यांक ९. नूर महम्मदको रच्यो......

ग्रन्थकर्ताने, मुसलमान होनेके कारण, जगत्‌की सृष्टिकी मुसलमानी परम्पराका अनुसरण किया है।

पृष्ठ ४, पद्यांक ३८. वाकै राजा आद हुव......

इस पद्यसे जाँनने हिन्दू परम्पराको मुसलमानी परम्परासे जोड़नेका प्रयास किया है। इसके अनुसार आदमसे अनेक पीढ़ियोंके बाद आदि, अनादि, पुराणदि, ब्रह्मादि, मेरु, मंदर, कैलास, समुद्र, वशिक, राहु, रावण और धुंधुमार हुए। धुंधुमार चक्रवर्त्ती राजा था।

शायद यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि यह कल्पित वंशावली पुराणसम्मत नहीं है।

पृष्ठ ४, पद्यांक ४४. प्रगट्यो तिहिं मारीच सुत......

सम्राट् धुंधुमारको मरीचि ऋषिका पिता बताना शायद चौहानोंके भाटोंकी कल्पना रही होगी। मरीचि तो केवल ऋषि मात्र थे।

पृष्ठ ४, पद्यांक ४९. वाकै राजा जमदग्गिन......

मरीचिका जमदग्नि, जगदग्निका परशुराम, परशुरामका सूर, सूरका वत्स, वत्सका चाह और चाहका चन्द्रमाके स्मरणसे उत्पन्न चाहुवान—यह नवीन चौहान-परम्परा किसी अंशमें कल्पित होती हुई भी महत्त्वपूर्ण है। सभी चौहान अपनेको वत्स गोत्री मानते हैं; किन्तु सभी अपनेको वत्सकी संतान माननेके लिये तैयार नहीं हैं। क्योंकि वत्स गुरु-गोत्र भी हो सकता है। क्यामखां-रासामें स्पष्टतः इन्हें ऋषि वत्सकी संतान माना गया है, और यही संभवतः ठीक है। क्योंकि अनेक प्राचीन प्रमाणों द्वारा इस कथनकी पुष्टि की जा सकती है। बिजोल्याके शिलालेख (सं. १२२६) में स्पष्ट लिखा है कि प्रथम चौहान राजा अहिच्छत्र पुरका वत्स-गोत्री 'विप्र' अर्थात् ब्राह्मण था। सूंधाके संवत् १३१९ और अचलगढ़ (आबू) के संवत् १३७७ के शिलालेखोंमें भी चौहानोंका वत्स ऋषिसे सम्बन्ध, प्रायः इतना ही स्पष्ट है। केवल पृथ्वीराज-रासाके आधार पर उन्हें अग्निवंशी मानना इतिहास-विरुद्ध है। वस्तुतः आरम्भमें चौहान ब्राह्मण थे; धर्मकी रक्षाके लिए क्षत्रियो-चित कार्य संभालनेके कारण, बादमें उनकी गणना क्षत्रियोंमें की गई। प्राचीन कालमें इसी तरह ब्राह्मणोंसे अनेक क्षत्रिय-वंशोंका और क्षत्रियोंसे अनेक ब्राह्मण-वंशोंका प्रवर्त्तन हुआ है।

पृष्ठ ५, पद्यांक ५०. संभर लयो निकास जिहं......

पृथ्वीराज-विजय एवं बिजोल्याके शिलालेखमें वासुदेव चौहानको सांभरका उत्पादक माना गया है। शायद उसका यह मतलब हो कि इसी राजाने सर्व प्रथम शाकम्भरी क्षेत्रको झीलका रूप देकर नमक निकालना आरंभ किया हो।

पृष्ठ ५, पद्यांक ५४. क्यामखान देवरे सीसोदिये......

चौहानोंकी शाखाओंकी यह सूचि महत्त्वपूर्ण है; किन्तु इनमेंसे कुछ अपने आपको अब चौहान नहीं मानते। विषय गवेषणीय है।

नैणसीके अनुसार चौहानोंकी निम्नांकित शाखाएँ थीं–

सोनगरा, खीची, देवड़ा, राकसिया, गीला, डेडरीया, बगसरिया, हाडा, चीबा, चाहिल, सेलोत्त, बेहल, बोडा, बोलत, गोलासण, नहरबण, बैस, निर्वाण, सेंपटा, ढीमडिया, हुरडा, म्हालण और वंकट।

कर्नल टॉडके अनुसार २४ शाखाएँ ये थीं–

चौहान, हाडा, खीची, सोनगरा, देवडा, पबिया, सांचोरा, गोहेलवाल, मदोरिया, निरवाण, मालण, पुरबिया, सूरा, मादडेचा, संकरेचा, भूरेचा, बालेचा, तरसेरा, चाचेरा, निकुंभ, रोसिया, चांदू, भांवर, बंकट।

पृष्ठ ६, पद्यांक ५८. राज कियो है दिल्ली में मानक दे चहुवांन......

दिल्लीमें मानिकदे आदि चौहानोंका शासन राजभाटों और कवियोंकी कल्पना मात्र है। विग्रहराज चतुर्थसे पूर्व दिल्लीमें चौहानोंके राज्यके लिये कोई प्रमाण नहीं दिया जा सकता। क्यामखां रासाकी वंशावली और घटनावलीका यह भाग अधिकांशमें कल्पित है।

पृष्ठ ७, पद्यांश ८२ से. घंधका अप्सरासे सम्बन्ध और उससे क्यामखांके पूर्वजोंकी उत्पत्ति......

ऐसी कल्पित कथायें अन्य ऐतिहासिक व्यक्तियोंके विषयमें भी प्रचलित हैं।

पृष्ठ १०. पद्यांक ११०, ताके गूंगा वैरसी......

क्या यही ददरेवेका वीर चौहान है? हम एक पोढ़ीके लिये लगभग चौबीस वर्ष रखें तो गूंगा महमूद गज़नवीके समकालीन बैठता है।

पृष्ठ ११, पद्यांक ११६. तिहुंनपाल सुत ऊपज्यो मोटेराई सकाज......

ददरेवेमें चौहानोंका राज्य पर्याप्त प्राचीन समयसे है। डाक्टर टैसीटोरी द्वारा संपादित संवत् १२७० के शिलालेखमें मंडलेस्वर गोपालके पुत्र राणा जयतसिंहका उल्लेख है।

(एशियाटिक सोसाइटी बंगालका मुखपत्र, पु० १६, पृ० २५७)

पृष्ठ ११, पद्यांक १२७. उतरें हे हिसारमें आइ......

इस पर पृष्ठ ११४ की क्यामखांकी मृत्यु पर की टिप्पणी देखें।

पृष्ठ १४, पद्यांक १६२. फौजदार करि क्यामखां, सौंपी दिल्ली ताहि।
आपुन दलबल साजिकै, चले ठटाकौं साहि॥

फिरोजसाह तुगलकने सन् १३६२ में ९०,००० सैनिक लेकर ठटा पर आक्रमण किया। सिंधियोंने तुगलक सुल्तानका इतनो वीरतासे सामना किया कि उसे ठटाका घेरा उठा कर

कुछ समयके लिए गुजरात लौटना पड़ा। सेनाके बहुतसे आदमी भूख, प्यास और बीमारीसे रास्तेमें मर गये। दिल्लीमें भी बहुत दिनसे कोई समाचार न पहुँचनेके कारण घबराहट फैल गई। केवल प्रधान मन्त्री मलिक मक़बूलकी सावधानीसे स्थिति संभली रही। बादशाहकी अनुपस्थितिमें दिल्लीका कार्यभार इसीके हाथमें था। चौहानवंशी क्यामखांकी तरह मकबूल भी किसी समय हिन्दू था। किन्तु उसकी जाति राजपूत नहीं, ब्राह्मण थी और वह शुरूमें तेलिंगानेका रहने वाला था। उसको मुसलमान बनानेका श्रेय भी फिरोज तुगलकको नहीं, मुहम्मद बिन तुगलकको है। मकबूलकी मृत्यु सन् १३७२-७३ में हुई। क्यामखां उससे कहीं अधिक समय तक जीवित रहा। उसकी मृत्यु सन् १४१९ में हुई। (देखें, शम्से सिराज अफीफकी तारीख फिरोज शाही)

पृष्ठ १५, पद्यांक १७७. क्यामखांनको नाम तब, राख्यो खांनु-जहान......

रासाके कथनानुसार क्यामखांने मुगलोंको हराया। इससे प्रसन्न होकर सुल्तान फिरोज़शाहने उसे 'खान जहां' की उपाधि दी। किन्तु यह कथन भी अशुद्ध है। फिरोज़शाहके समय मुगलोंसे युद्ध प्रायः बन्द ही रहा। वास्तवमें क्यामखानी क्यामखां तो जीवनके अन्त तक क्यामखां ही रहा। खां जहांकी उपाधि तो उस मकबूलको मिली, जिसका हम उपरोक्त टिप्पणमें निर्देश कर चुके हैं। मकबूल (खां जहां) की मृत्युके उपरान्त फिरोज़शाहने उसके पुत्रको खां जहांकी उपाधि दी।

रासाके रचयिताने यह भूल क्यों की इसका हमने अन्यत्र विशद रूपसे विचार किया है। यहाँ इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि मकबूलको भी खां जहां बननेसे पूर्व क़िवांम-उल-मुल्ककी पदवी मिल चुकी थी। अतः एक किवामके कार्योंको अनेक सदियोंके बाद दूसरे प्रायः तत्सामयिक ही अन्य किवामके समक्ष लेना कोई बड़ी बात न थी। (देखें, ईलियट और डाउसन, ३, ३६८)।

पृष्ठ १६, पद्यांक १८०. जबहि भयौ बस कालकैं फेरोसाह सुतलान।
तब महमद महमूदनैं, फेरि जगुमें आन॥

वास्तवमें फिरोज़शाहके उत्तराधिकारियोंकी परम्परा निम्नलिखित थी—

१. गियासुद्दीन तुग़लक़ द्वितीय सन्	१३८८
२. अबूबक तुग़लक़	१३८९
३. मुहम्मद तुग़लक़	१३९०
४. अलाउद्दीन सिकन्दर तुग़लक़	१३९४
५. नासिरुद्दीन महमूद तुग़लक़	१३९४
६. नसरत तुग़लक़	१३९६ (५ का प्रतिपक्षी)
७. महमूद तुग़लक़	१४०१ (पुनः स्थापित)

रासाके रचयिताने केवल मुहम्मद और महमूदके नाम दिये हैं। संभव है कि क्यामखांका मुख्य कार्यकाल १३८८ से १४१३ का यही अशांतिका समय रहा हो।

पृष्ठ १६, पद्यांक १८२. तब नसीरखां पुत्र उहिं, ठौर यही ततकाल।......

नसीरखांसे मतलब संभवतः नासिरुद्दीन महमूदसे है। इसके लिये हमारा मल्लूखां पर टिप्पण देखें। यह कुछ समय तक दिल्लीका नाममात्र सुल्तान था।

पृष्ठ १६, पद्यांक १८५. मल्लूखां चेरौ हतो......

मल्लूखां दीपालपुरके सूबेदार सारंगखांका भाई और सुल्तान महमूद तुगलकके समयका प्रभावशाली सरदार था। अपने प्रतिद्वन्दी सादतखांसे विद्वेषके कारण जब सुल्तान महमूद बयाना जाता हुआ ग्वालियर पहुँचा, तो मल्लूखांने एक षड़यंत्रकी रचना की। भेद खुलने पर मल्लूखांके अनेक साथी मारे गये; किन्तु स्वयं मल्लूखां बच निकला। दिल्ली पहुँच कर उसने मुकर्रबखां नामके अन्य प्रभावशाली सरदारके यहाँ आश्रय ग्रहण किया और उसकी सहायतासे केवल क्षमा ही नहीं, इकबालखांकी पदवी भी सुल्तानसे प्राप्त की। सादतखां भी मौन न रहा। कई अमीरोंको अपने पक्षमें कर फिरोजशाहके एक पुत्रको उसने नसरतशाहके नामसे गद्दीनशीन किया। जून सन् १३९८ में, मल्लूखां नसरतशाहसे जा मिला और कुरान पर शपथ खाकर उसे दिल्ली ले आया। दो दिनके बाद मल्लूखांने नसरतशाह पर धोखेसे हमला किया और उसे पहले फिरोजाबाद और फिर पानीपतकी तरफ भगा दिया। अपने शरणदाता मुकर्रबखांको भी इसी तरह उसने धोखा दिया, और उसे मार कर महमूद तुगलकके नाम पर, कुछ समय तक राज्य-शासन अपने अधिकारमें रखा।

इसी साल तिमूरने भारत पर आक्रमण किया। मल्लूखांको हराना उसके लिये बांये हाथका खेल था। सुल्तान महमूदने गुजरातमें शरण ली। मल्लूखां बरान (बुलन्दशहर) भाग गया। वहां भी उसने किसी अंशमें अपना आधिपत्य जमाया, और अपने कुछ प्रतिद्वन्दियोंको धोखेसे मारा। सन् १४०५ में दिल्ली लौट कर मल्लूखांने सुल्तान महमूदको वापिस बुलाया और उसे एक महलमें कैद कर उसके नामसे राज्य किया। एक साल बाद सुल्तान महमूदने कन्नौजमें अपना डेरा जमाया। सन् १४०४ में मल्लूखांने सय्यद खिज्रखां पर चढ़ाई की और पाकपट्टनके निकट युद्धमें मारा गया।

उसके जीवनकी उपर्युक्त घटनाओंसे स्पष्ट है कि मल्लूखां वास्तवमें पक्का बेईमान था। किन्तु रासाकारने यह बात माननेमें भूल की है कि उसने नासिर महमूद शाहका वध किया था। उसने केवल जहाँ तक संभव हुआ उसे कैद रखा। यह बहुत संभव है कि मल्लूखांकी बेईमानीसे रुष्ट होकर सन् १४०१ में क्यामखांने उसका विरोध किया हो। (मल्लूखांके विशेष विवरणके लिये देखें, तारीख मुबारकशाही, इलियट एण्ड डाउसन, खंड ४, पृष्ठ ३२-४०)।

पृष्ठ १९, पद्यांक २२२-२४. तक का वर्णन......

रासाने इस पृष्ठके वर्णनमें क्यामखांको प्रायः उत्तर भारतका सम्राट् बना दिया है। यह वर्णन स्पष्टतः अतिशयोक्ति-पूर्ण है।

पृष्ठ २०, पद्यांक २३७. खिदरखांनूंकौं सौंपकै, दिली चले पतिसाह......

तिमूरने खिज्रखांको दिल्लीका राज सौंपा या नहीं इस विषयमें इतिहासकारोंमें मतभेद है। उस समयके इतिहास तारीख मुबारकशाहीमें केवल इतना लिखा है कि कुछ दिन बाद खिज्रखां जो तिमूरसे डर कर मेवातके पहाड़ोंमें भाग गया था, बहादुर नाहिए, मुबारकखां और जिरकखांके साथ तिमूरसे मिला। तिमूरने खिज्रखांके सिवाय सबको कैद कर लिया। तिमूरने खिज्रखांको मुल्तान और देपालपुरकी जागीर दी और उसे वहाँ भेज दिया। (इलियट और डाउसन, खंड ४, पृष्ठ ३५-३६)।

पृष्ठ २१, पद्यांक २४१.—

रासाका यह कथन ठीक नहीं है कि तिमूरके चले जाने पर खिज्रखांने दिल्ली पर अधिकार कर लिया और मल्लूखां दिल्लीको वापस लेनेके प्रयत्नमें मारा गया। वास्तविक घटनाके लिये मल्लूखां पर टिप्पण देखें।

पृष्ठ २१, पद्यांक २४२ से.—

रासाकारने एक नवीन खिदरखांकी असत्य कल्पना की है। एकको उसने दिल्लीमें तिमूरका अधिकारी बनाया है और दूसरेको मुल्तानका सूबेदार माना है। वास्तवमें मुल्तानके सूबेदारका ही नाम खिज्रखां था और कुछ इतिहासकारोंके मतानुसार तिमूरने हिन्दुस्तानमें अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया था। रासाने गल्तीसे दौलतखांको खिज्रखां पठानका नाम दिया है। सय्यद खिज्रखांका प्रतिद्वन्दी और क्यामखाँका शत्रु था। उसीसे खिज्रखांने दिल्ली छीनी। (इलियट और डाउसन, ४, ४५)।

पृष्ठ २४, पद्यांक २८२-८३.—

खिज्रखांने भाटियों, क्यामखानियों, सांखलों आदिकी सहायतासे राठौड़ बीर चूंडा पर चढ़ाई की। जब खिज्रखां मरोट पहुँचा तो भाटी राजकुमार चाचाने उसका अच्छा स्वागत किया। जांगलूसे देवराज सांखलेने मुसलमानोंको सहायता दी। नागोरके दुर्गका द्वार स्वयं चूंडाने खोल दिया और वीरतापूर्वक युद्ध करता हुआ धराशायी हुआ। (देखें, छंद राउ जइतसी)।

पृष्ठ २५, पद्यांक २८६ से. क्यामखांका मुल्तानके खिनरखांको सहायता देना......

मल्लूखांकी मृत्युके बाद दौलतखांके हाथमें राजकार्यकी बागडोर आई। महमूद नाममात्रके लिये सुल्तान बना रहा। सन् १४०७में खिज्रखांने दौलतखां पर आक्रमण किया। दौलतखांके सब साथी खिज्रखांसे जा मिले। इनमें क्यामखां भी रहा होगा। खिज्रखांने विजयी होने पर हिसारका जिला (सिक्क)क्यामखांको सौंप दिया। दिसम्बर १४०७ में सुल्तान महमूदने हिसार पर आक्रमण किया और क्यामखांने उससे संधि कर अपने पुत्रको सुल्तानके पास भेज दिया। रासाने इसी आक्रमणको हिसार पर खिद्रखां पठानका आक्रमण मान लेनेकी भूल की है। विजय भी दूसरे पक्षकी हुई; क्यामखांकी नहीं। सन् १४१२ में सुल्तान महमूदकी मृत्यु

हो गयी और दिल्लीके अमीरोंने दौलतखांको गद्दी पर बैठाया । रासाने फिर भूलसे यह मान लिया है कि अमीरोंने खिद्रखां पठानको गद्दी पर बैठाया । खिद्रखां पठानके स्थान पर दौलतखां करने पर, रासाकी बातें प्रायशः ठीक और उक्तिसंगत बैठ जाती हैं ।

रासामें लिखा है कि खिदरखां पठान (वास्तवमें संभवतः दौलतखां) के हिसार पर आक्रमणसे क्रुद्ध होकर क्यामखां मुल्तान पहुँचा और वहांके सूबेदार खिजरखांको दिल्ली पर चढ़ा लाया । शायद यह कथन ठीक ही है । कमसे कम यह तो निश्चित है कि क्यामखांने खिज्रखांका पक्ष लिया था । सन् १४११ में उसने खिज्रखांसे हिसारकी शिकदारी प्राप्त की थी । सन् १४१४ के मई मासमें जब खिज्रखां ने दिल्ली पर कब्जा किया तो उसने दौलतखांको किवामखां (क्यामखां) को सौंप कर हिसारके किलेमें कैद कर दिया । (देखें, इलियट और डाउसन, ४,४२–४५) ।

पृष्ठ २६, पद्यांक ३०१. येक द्यौंस तो क्यामखां, ठाढे हुते सुभाइ ।
खिजरखानु दीनो धका, परो नदीमें जाइ ॥

ख़िज्रखांके हाथ क्यामखांकी मृत्युका तारीख-मुबारकशाहीमें निम्नलिखित वर्णन है—

"सन् १४१९ – खिज्रखां बदाऊंकी तरफ बढ़ा और कस्बा पटियालीके पास उसने गंगाको पार किया । जब (बदाऊंके अमीर) महाबतखांने यह सुना तो उसका हृदय धक्से रह गया, और उसने घेरा सहनेकी तैयारी की । खिज्रखां ६ महीने तक घेरा डाले रहा । जब वह दुर्ग को हस्तगत करने वाला ही था, उसे मालूम हुआ कि दिवंगत सुल्तान महमूदके कुछ अमीरोंने उसके विरुद्ध षड़यन्त्रकी रचना की है...इनके अन्तर्गत किवाम (क्याम) खां इख्त्यारखां थे । ज्योंही खिज्रखांको यह मालूम हुआ उसने घेरा उठा लिया, और दिल्लीकी तरफ कूच किया । रास्तेमें गंगाके किनारे २० जुमादल अव्वल, ८२२ हिज्री सन्के दिन किवामखां (क्यामखां) इख्त्यारखां और सुलतान महमूदके दूसरे अफसरोंको पकड़ कर उसने राज्य-द्रोहके अपराधमें मरवा डाला और फिर स्वयं दिल्ली वापस गया । (तारीख मुबारकशाही, पृष्ठ ५१, इलियट एण्ड डाउसन, भाग ४) ।

रासाके वर्णनानुसार क्यामखां निरपराध था । केवल सन्देह और व्यर्थके भयके वशीभूत होकर ख़िज्रखांने उसे मार डाला ।

पृष्ठ २६, पद्यांक ३०४. जीयो बरस पचांनुवै क्यामखानु चहुवांन ।......

क्यामखांनुंका ९५ वर्षकी आयुमें मरना कई कारणोंसे असंगतपूर्ण प्रतीत होता है—

(१) षड्यन्त्रका नेतृत्व ही नहीं, सेनामें ख़िज्रखांके साथमें रहना भी, सिद्ध करता है कि क्यामखां उस समय अतिवृद्ध न रहा होगा । ९५ वर्षका बुड्ढा सेनाके साथ जानेका क्या साहस करेगा ?

(२) रासाके अनुसार फ़िरोज़शाह करमचंद (क्यामखां) को उस समय पकड़ ले गया जब वह हिसार आया । हिसारकी स्थापना सन १३५१ के बादकी है । करमचंद उस समय नादान बालक था । मृत्युके समय ९५ वर्षकी आयु माननेसे वह फ़िरोज़शाहके राज्यके प्रारंभमें भी सत्ताइस या अट्ठाइस सालका होगा ।

(३) क्यामखांका कार्यकाल विशेषतः फ़िरोज़शाहकी मृत्युके बाद है। रासा वाली आयु मानने पर हमें यह भी मानना होगा कि क्यामखांके मुख्य युद्ध आदि उसके ६४ वर्षके हो जानेके बाद हुए।

(४) रासाके अनुसार क्यामखांका पुत्र ताजखां बहलोलखां लोदीके राज्यमें वर्त्तमान था। बहलोल सन् १४५१ में गद्दी पर बैठा। ताजखांको उस समय ६० सालका मानें तो उसका जन्म सन् १३९१ में होना चाहिये। रासा द्वारा दी गई क्यामखांकी आयु स्वीकृत करने पर हमें यह मानना पड़ेगा कि क्यामखांके सब से बड़े पुत्रका जन्म उस समय हुआ जब क्यामखां ६७ वर्षका हो चुका था।

पृष्ठ २७, पद्यांक ३११. खिजरखानुपै ना गये, रह्यौ बुलाइ बुलाइ।
बैठे रहे हिसारमैं कर्‌यो जूहार न जाइ॥

रासाके इस कथनके अनुसार कायमखांके पुत्रोंने हिसारको अपने अधिकारमें रखा; किन्तु तारीख मुबारकशाहीसे स्पष्ट है कि अपनी मृत्युसे कुछ पूर्व ख़िज़्रखांने हांसी और हिसार मलिक रजब नादिरको दिये थे। ख़िज़्रखांके पुत्र मुबारकशाहने हिसार अपने सम्बन्धी मलिक-उश्शर्क मलिक बदाको सौंप दिया।

पृष्ठ २७, पद्यांक ३१३–१५.—

रासाने सय्यद वंशकी सूची इस प्रकार दी है–

(१) खिज्रखां

(२) मुबारक

(३) मुहम्मद फरीद

(४) अलाउद्दीन

(५) अमानतखां

इनमें तीसरे सुल्तानका नाम अशुद्ध है। वास्तवमें यह नाम न मुहम्मद था, और न फरीद ही। ठीक नाम मुहम्मद शाह बिन फरीदशाह है। रासाने पिता और पुत्रके नाम मिला दिये हैं। फरीदशाह सुल्तान मुबारकशाहका पुत्र था। अमानतखांके राज्यका वर्णन हमें मुस्लिम इतिहासमें नहीं मिलता। अलाउद्दीनके समयमें ही दिल्लीका राज्य सय्यदोंके हाथसे निकल गया। केवल बदाऊंका जिला ले कर उसने दिल्लीकी बागडोर अपने सामन्त बहलोलशाहके हाथमें सौंप दी।

पृष्ठ २७, पद्यांक ३१७. ढोसी ऊपर अखन है......

अखन शायद इख्त्यारखांका नाम है। (देखिये, अग्रिम ३१८ वां पद्य)।

पृष्ठ २८, पद्यांक ३२१. ताजखांनुं महमदखां, दोउ रहे हिसार।
ठौर पिता राखी भले......॥

रासाके इस पद्यमें फिर क्यामखानियोंके हिसार पर अधिकारका वर्णन किया गया है।

किंतु जैसा ऊपर निर्देश किया जा चुका है, कुछ समयके लिये तो हिसार अवश्य क्यामखानियोंके हाथसे निकल गया था, और इसी कारण सम्भवतः ताजखां और महमूदखांको कुछ समय तक नागोरीखां (फिरोजखां) के यहाँ आश्रय ग्रहण करना पड़ा।

पृष्ठ २९, पद्यांक ३४० से. राणा मोकलसे नागोरके खां और क्यामखानी भाइयोंका युद्ध......

रासाने मेवाड़के स्वामी राणा मोकल और नागोरीखांका अच्छा वर्णन दिया है। राणाकी विजय इतिहास द्वारा समर्थित है। क्यामखानियोंकी राणा पर विजय संभवतः कल्पित है।

सम्वत् १४८५ (सन् १४२९) के श्रृङ्गी ऋषिके शिलालेखमें इस युद्धका प्रथम उल्लेख है। क्यामखानी भाई सन् १४१९ में किवामखां (क्यामखां) की मृत्युके बाद ही हिसार छोड़ कर नागोर पहुँचे होंगे। वास्तवमें उन्होंने यदि इस युद्धमें भाग लिया हो तो हम युद्धको सन् १४१९ और १४२९ के बीचमें रख सकते हैं। शिलालेखमें राणा मोकलके दो प्रतिपक्षियोंका वर्णन है—एक फिरोजखांका और दूसरा महमद का। फिरोजखां नागोरका स्वामी था। क्या यह संभव नहीं कि महम्मद उसका मित्र एवं अनुगामी क्यामखानी महमूद हो?

पृष्ठ २९, पद्याङ्क ३४१. पहलै तौ गोली चली, और छुटी हथनाल।......

गोलियोंका भारतमें प्रयोग शायद मुगलकालसे आरंभ हुआ। यह उससे पूर्वकी बात है।

पृष्ठ ३१, पद्यांक ३६५.—

रासाके अनुसार नागोरीखांसे सर्वथा हारने पर ताजखां वापिस हिसार पहुँच गया। यह बात सर्वथा असंभव नहीं है। क्योंकि सय्यद वंशके परतर सुल्तान बहुत निर्बल थे। किन्तु यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण है कि केवल नागोरका खां ही उससे न डरता था; निरवाण, चौहान, तंवर, कछवाहे एवं अनेक अन्य जमींदार भी उसे कर देते थे और उसने खेतड़ी, खरकरा, रेवासा, बौहाना, पाटन, गबरगढ़ आदिको लूट लिया था।

पृष्ठ ३१, पद्यांक ३७४. ताजखांनुं जब चलि गये, फतिहखानुं सिरमौर।
बैठौ कोट हिसारमैं, भलै पिताकी ठौर।

फतहखांके राज्यका हिसारमें आरम्भ होना भी संभव है। किन्तु यह अवश्य ध्यानमें रहे कि फतहपुरकी स्थापनासे पूर्व बहलोल लोदीने इस पर अधिकार कर लिया था। सय्यद सुल्तान अलाउद्दीनके समय लोदी सरहिन्द, स...सन्नाम, हिसार और पानीपतके स्वामी थे। (तारीखे खांजहां लोदी, खंड ५)।

पृष्ठ ३२, पद्यांक ३७९–८०.—

सम्वत् १५०८ में फतहपुरकी स्थापना हुई। उस समय चैत्र शुक्लकी पंचमी थी। हिज्री सम्वत्की यही तिथि सन् ८५७ तारीख २० सफ़रके रूपमें दी हुई है। इन दो तिथियोंमेंसे हमें एकको अशुद्ध मानना होगा। सन् सत्तावन आठसेके स्थान पर सन् पचावन आठसे होने पर यह अन्तर दूर हो सकता है। इसी सालमें बहलोल भी दिल्लीके सिंहासन पर बैठा।

पृष्ठ ३२, पद्यांक ३८२-८३.—

पल्हू, सहेवा, भादरा, भारंग आदि फतहपुरसे बहुत दूर नहीं है। संभव है कि यहाँ क्यामखानियोंने अपना आधिपत्य स्थापित किया हो।

पातसाहकी चोखसौं रहि ना सके हिसार ।......

पातसाहसे मतलब बहलोलसे है। किन्तु जैसा ऊपर बताया जा चुका है बादशाह होनेसे पूर्व ही बहलोलने हिसार ले लिया था।

पृष्ठ ३३, पद्यांक ३८६-८७.—बहलोलका रणथंभोर पर आक्रमण और फतहखांका जुहार करना...

तबकाते अकबरीके अनुसार बहलोलने सन् ८८६ हिज्री अर्थात् सन् १४८२ ई० में रणथंभोर पर आक्रमण किया। फतहखांने सचमुच इसमें भाग लिया हो तो इससे कायमखानियोंके इतिहासमें निश्चित तिथि मिलती है। हम इसके आधार पर कह सकते हैं कि फतहखांने सन् १४५१ से कमसे कम सन् १४८२ ई. तक राज्य किया।

पृष्ठ ३३, पद्यांक ३९३. मांडूका सुल्तान हिसामदीन......

मांडू मालवा राज्यकी राजधानी था। वहाँ हिसामुद्दीन नामका कोई सुल्तान न था। बहलोलके समय खल्जी महमूद प्रथम मालवेकी गद्दी पर वर्तमान था। बहलोलका इस सुल्तानसे दिल्लीके सुल्तान मुहम्मदके समय सन् १४४१ में सामना हुआ। महमूद जब दिल्लीके सुल्तानसे सन्धि कर वापिस जा रहा था, बहलोलने उस पर आक्रमण किया और किसी अंशमें विजय प्राप्त की।

हिसामखां नामके एक व्यक्तिका नाम भी इस समय सुननेमें आता है। वह दिल्लीका वजीर और सुल्तान मुहम्मदका परम हितैषी था। बहलोलने मुहम्मदकी सहायता इस शर्त पर की कि हासिमखां कत्ल कर दिया जायगा। (तारीखे खां जहां लोदी, इलियट और डाउसन, खंड ५, पृष्ठ ७२)।

पृष्ठ ३४, पद्याङ्क ४०६. नारनौलते अखनकी, आई यहै पुकार।......

अखन इख्तयारखांका ही नाम है। देखो पृष्ठ २७ और इस वर्णनका पद्य ३१८।

पृष्ठ ३५, पद्याङ्क ४१४. फतहखांका कांधलको हराना और प्रजाको मारना......

हार शायद क्यामखानियोंकी हुई न कि बीकानेरके संस्थापक बीका के चाचा कांधलकी। इस युद्धमें बहुगुनके मारे जानेसे फतहखां बहुत नाराज हुआ। (देखिये, पृष्ठ ११९ पर का टिप्पण)। प्रजा सांखला शायद सांगाका साला रहा हो। ख्यातोंके अनुसार सांगाने २८ विवाह किये थे। इनमें संभवतः एक सांखली रानी भी रही हो।

पृष्ठ ३५, पद्याङ्क ४१६. मुस्कीखां किरांनाका वध......

रासाने युद्धस्थलका नाम सरसा दिया है। इतिहासमें मुश्कीखां किरानीका नाम अप्राप्य है। किन्तु जौनपुरके सुल्तान मुहम्मदने सन् १४५२में दिल्ली पर आक्रमणकी इच्छासे

सरसेमें अवश्य मुकाम किया था, वहां बहलोलके पक्षसे फतहखांका उससे युद्ध करना असम्भव नहीं है। परन्तु क्यामखानियोंने सन् १४८२ में ही लोदियोंसे मेल किया हो (देखो, पृष्ठ ११७ का टिप्पण) तो ऐसा अनुमान अवश्य असंगत होगा।

पृष्ठ ३६, पद्यांक ४२४. फतहखांका आमेर और भिवानी पर आक्रमण......

इस वर्णनमें कितनी सत्यता है और कितनी अतिशयोक्ति, यह कहना कठिन है।

पृष्ठ ३६, पद्यांक ४३३. कांधिल बहु गुन हन्यौ हो, रिस राखत मन मांहि।......

रासाके पिछले वर्णनमें कांधल की पराजयका वर्णन है, (देखें, पृष्ठ ११७ का टिप्पण) परन्तु इस पंक्तिसे प्रतीत होता है कि उसने क्यामखांनियोंको हराया था।

पृष्ठ ३७, पद्यांक ४३६. झुंझनूके शम्सखांका जोधाकी पुत्रीसे विवाह......

यह कथन असत्य प्रतीत होता है। जोधपुर राज्यके संस्थापक और महाराणा कुम्भासे लोहा लेने वाला जोधा क्यामखानियोंसे न कमजोर था और न दबा हुआ जो उन्हें अपनी पुत्रीका डोला भेजता।

पृष्ठ ३७, पद्यांक ४४५: चिमनको हंन लीनो नीसांन......

चिमन न जाने कौन था। रासाने इससे पूर्व फतहखांकी जीवन-घटनाओंका वर्णन करते हुए इसका नाम नहीं दिया है। इस श्लाघापूर्ण सवैयेमें जादो (संभवतः भाटियों) को भी फतहखांके परास्त शत्रुओंमें सम्मिलित कर दिया गया है। जान कवि ही तो ठहरा, अत्युक्तिका उसे अधिकार है।

पृष्ठ ३८, पद्यांक ४४६. दिल्लीके पतिसाहकौं, वदै न खानुं जलाल......

यह अतिशयोक्ति प्रतीत होती है। किन्तु झूंझनूके बारेमें सुलतान बहलोल और जमालखांमें वैमनस्य असंभव प्रतीत नहीं होता। (देखो, पृष्ठ ३९)

पृष्ठ ३९, पद्यांक ४५८-४५९. छापौरी और आमेर पर हमले......

आम्बेर फतहपुरसे काफी दूर है। शायद उस राज्यके किसी भूभाग पर आक्रमण किया गया हो।

पृष्ठ ३९, पद्यांक ४६६-६७. बीका और बीदाका भानजा मुबारकशाह......

बीदा बीकानेर राज्यके संस्थापक बीकाका छोटा भाई और द्रोणपुर, छापर आदिका स्वामी था। मुबारकशाहसे इन भाइयोंके सम्बन्धके विषयमें पृष्ठ ११९ का दूसरा टिप्पण देखें।

पृष्ठ ४०, पद्यांक ४७७-७८. बीदाका फतहपुर पर आक्रमण......

बीकानेरकी ख्यातोंमें बीदाके इस आक्रमणका वर्णन नहीं मिलता। 'छन्द राउ जइतसीरउ' में अवश्य यह लिखा है कि बीकाने फतहपुर और झूंझनूको अधीन किया और उन्हें बांहका सहारा दे कर कायम रखा (छंद ४६)।

पृष्ठ ४०, पद्यांक ४७८ से. बीदाका सहायक दिलावरखां......

इसका उल्लेख "छंद राउ जइतसीरउ" में भी है। यह नाहड और नरहडका स्वामी था। बीकानेर राज्यके संस्थापक वीर बीकाने उसे इस प्रदेशसे निकाल दिया (छंद ४५)

पृष्ठ ४२, पद्यांक ४९९. बीका ढोसी गयो हो उतते आयो भाजि......

बीकाकी अनेक विजयोंका सूजा नगरजोतरचित, 'छंद राउ जइतसीरउ' में वर्णन है। इसने दिल्ली तक धावा किया था (छंद ४६)। यह संभव है कि ढोसीके आसपास उसे विशेष सफलता न मिली हो।

पृष्ठ ४३, पद्यांक ५१० से. लूणकरणका ढोसी पर आक्रमण......

बीकानेरके इतिहाससे सभी को ज्ञात है कि ढोसी पर आक्रमण बीकाके पुत्र लूणकरणके जीवनकी अंतिम घटना थी। 'छंद राउ जइतसीरउ'के अनुसार क्यामखानियोंने लूणकरणकी अधीनतामें अपनी फौज भेजी थी (छंद ८०)। यह वर्णन ठीक हो तो हमें मानना पड़ेगा कि बीदावतोंकी तरह लड़ाईके समय इन्होंने राव जैतसीका साथ छोड़ दिया था।

क्यामखानियों और राठौड़ोंका वैर काफी पुराना था। रासासे हमें ज्ञात है कि राव बीकाके चाचा रावत थे। कांधलने इन्हें खूब दुःख दिया था और उनकी बहुतसी पैतृक भूमि पर उसने अधिकार कर लिया। रावके विषयमें यह प्रसिद्ध है कि उसने फतहपुरके बहुतसे गाँव जीत लिये (देखिये, दयालदासकी ख्यात; 'सादूल प्राच्य ग्रन्थमाला', पृष्ठ २८) । स्वयं रासाने दौलतखांकी बड़ाई करते समय केवल इतना ही लिखा है कि न उसने दूसरोंकी भूमि दबाई और न दूसरोंको अपनी भूमि दबाने दी (पृष्ठ ४२, पद्य ४६७)। एक गाँवकी जीतको एक प्रान्तकी जीत लिखने वाला कवि जब अपने एक पूर्वजकी स्तुतिमें केवल इतना कहनेको विवश हो तो यह सिद्ध है कि दौलतखां निर्बल शासक था और उसके समय कायमखानियोंको संभवतः अपने राज्यका कुछ भाग छोड़ना पड़ा।

पृष्ठ ४३, पद्यांक ५११. तुरकमान कीनी मदत, जाँनत सकल जहांन......

ढोसीके स्वामी पठान अवश्य थे, किन्तु यह बताना कठिन है कि उनके सहायक तुर्कमान किस स्थानके अधिकारी थे।

पृष्ठ ४४, पद्यांक ५१८. बाबरका दौलतखांसे मिलना......

यह मनगढंत कथा है। हां, इससे इतना अवश्य प्रतीत होता है कि क्यामखानी गोवधके विरोधी थे; वे सर्वथा अपने हिन्दू संस्कारोंको न छोड़ सके थे।

पृष्ठ ४४, पद्यांक ५२५. अलवरमें हसनखां......

हसनखां मेवाती अपने समयका प्रसिद्ध वीर पुरुष था। गुजरातके प्रसिद्ध एवं प्रताप-शाली सुल्तान बहादुरशाहको इसने शरण दी थी। बाबरके प्रबल विरोधियोंमें यह एक था और इसका प्रभाव इतना अधिक था कि बाबरने इसे विद्रोहियोंकी जड़ लिखा है। (तुजके

बाबरी, इलियट और डाउसन, खंड ५, पृष्ठ २६३)। खानवाके युद्धमें इसने राणा सांगाका साथ दिया था। लगभग चौदहवीं शताब्दीके आरम्भसे उसके पूर्वज मेवातमें राज्य करते आये थे, और उन्होंने अंशतः ही दिल्लीके सुल्तानोंका प्रभुत्व स्वीकार किया था। बाबरने दिल्लीकी विजयके कुछ समय बाद मेवात पर आक्रमण किया। हसनखांने कुछ विरोधके बाद अधीनता स्वीकार की। बाबरने अलवरका दुर्ग और तिजारा अपने अफसरोंको सौंपे और अलवरका खजाना हुमायूंको दिया, किन्तु हसनखांको भी उसने नाराज न किया। मेवातके बदले बाबरने कई लाखकी एक अन्य जागीर उसे दी। (वही, पृष्ठ २७३-४)।

पृष्ठ ४५, पद्याङ्क ५३२. निरबांन......

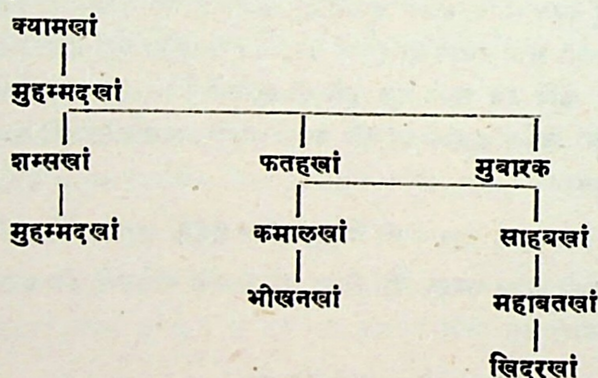
यह चौहानोंकी प्रसिद्ध शाखा है। इस समय नागौरका खां मुहम्मद प्रतापी था। शायद क्यामखानी उसकी तरफसे लड़े हों।

पृष्ठ ४५, पद्याङ्क ५३६. मुहब्बत साराखानी......

इतिहाससे इसका कुछ पता नहीं चलता। शेरशाहके सामन्तोंमें अनेक सरवानी थे। शायद उनमेंसे किसीसे मतलब हो।

पृष्ठ ४७, पद्याङ्क ५७३. झूंझनू......

झूंझनूमें क्यामखानियोंकी एक शाखा राज्य करती थी। रासामें इसका बार बार जिक्र है। उसकी वंशावली इस प्रकार है :—



पृष्ठ ४८, पद्यांक ५८१. नाहरखांसे बीकानेरके राव लूणकरणकी बेटीका विवाह......

रासाने लिखा है कि अपने जीते ही लूणकरणने अपनी बेटी नाहरखांसे विवाहनेका वचन दिया था। जो राजपूत क्यामखानियोंसे कर मांगता और शायद लेता भी था, वह उन्हें बेटी देनेका वचन दे, यह संभव प्रतीत नहीं होता।

पृष्ठ ४९, पद्यांक ५८८. नाहरखांका महल चिनवाना......

इसका सम्वत् १५९२ भादवा सुदी अष्टमी है। यह क्यामखानी इतिहासकी पुनः एक

निश्चित तिथि है। इससे लगभग चार साल बाद शेरशाह दिल्लीका बादशाह हुआ। रासाके अनुसार नाहरखांने उसकी अच्छी सेवा की।

पृष्ठ ५०, पद्यांक ५९०. नागोरी खां और राना......

रासामें राना और नागोरीखां इन दोनोंके नाम नहीं हैं। इसलिए यह घटना संदिग्ध है। इस समयके आसपास हजखांका अजमेर और नागोर दोनों पर अधिकार था, और उसे उदयपुरके महाराणा उदयसिंहसे युद्ध भी करना पड़ा था। किन्तु इस घटना का समय सन् १५५७ ई. होनेके कारण गांगा और जैतसी आदि कई राजा और सरदार जिनके नाम रासाने गिनाये हैं, वास्तवमें उसमें वर्तमान नहीं हो सकते। उनका देहान्त इससे पूर्व ही हो चुका था।

पृष्ठ ५४, पद्यांक ६४२. फदनखांन......।

मुगल मनसबदारोंमें इसका नाम नहीं मिलता। अकबरको इसने किस सालमें बेटी दी वह भी मालूम नहीं होता। किन्तु घटना रासाकी रचनासे अधिक दूर नहीं है, अतः इसकी सत्यतामें सन्देह करनेकी आवश्यकता नहीं। अनेक सामन्तों और राजाओंको वैवाहिक सम्बन्धों द्वारा अपनी तरफ करना अकबरकी नीतिका एक अंग था।

पृष्ठ ५४, पद्यांक ६४२. रायसाल की बांही......।

यह जातिका शेखावत था। इसके दादा रायमलके यहाँ शेरशाहके पिता हसनखां सूरने कुछ दिन नौकरी की थी। रायसाल अकबरी दरबारमें जनानखाने पर तैनात था। इसकी जहाँगीरके समय दक्षिणमें मृत्यु हुई। अच्छा वीर पुरुष था। तबकाते अकबरीके अनुसार इसका मनसब २००० था। फदनखांसे यह कहीं अधिक प्रभावशाली रहा होगा। इसलिये रासाका यह कथन कि फदनखांकी जमानत पर बादशाहने रायसालको नौकर रखा था, संगत प्रतीत नहीं होता।

पृष्ठ ५४, पद्यांक ६४३. बीदावत......।

ये राव बीकाके भाई बीदाके वंशज थे।

पृष्ठ ५७, पद्यांक ६७४. ताजखांका अलवरसे रेवाड़ी पर आक्रमण......।

अकबरके राज्यमें ३४वें सालमें शेखावतोंने मेवातसे रेवाड़ी तक गड़बड़ की। ३४वें सालमें अकबरने शाहकुलीको उसे दबानेके लिए भेजा। संभव है ताजखां उस समय सेनाके साथ रहा हो।

पृष्ठ ८२. पद्यांक ६६५, दयो फतिहपुर छत्रपति लिखि अपनौ फुरमांन......।

अग्रिम पंक्तियोंसे प्रतीत होता है कि फतेहपुर कुछ समयके लिए क्यामखानियोंके हाथसे जाता रहा था।

पृष्ठ ५८, पद्यांक ६८१. अलिफखांका पहाड़ पर आक्रमण......।

कछवाहा जगतसिंहकी अधीनतामें यह अकबरके ४२वें राजवर्ष अर्थात् सन् १५९३ ई. में

हुआ। राजा बसु, तिलोकचन्द आदिने अकबरकी अधीनता स्वीकार की। (देखें, अकबरनामा; तृतीय खंड, पृ. १०८१ और ११३३)।

पृष्ठ ५८, पद्यांक ६८५. सलीमका राणा पर आक्रमण......।

सलीमका राणा पर यह आक्रमण सन् १५९९ ई. में हुआ। राजा मानसिंह, शाहकुली आदि अनेक सेनापति उसके साथ गये। इस समय अलिफखांका पहली बार अकबरनामेमें वर्णन मिलता है। उसमें लिखा हैः—"जब शाहजादा सलीम राणाको दंड देने के लिए भेजा गया, तब अपनी आरामपसन्दगी, मद्यप्रियता और बुरी संगतीके कारण कई दिन तक अजमेरमें ठहर कर वह उदयपुरकी ओर चला। राणाने दूसरी तरफसे निकल कर मालपुरा तथा अन्य उपजाऊ इलाकोंको लूट लिया। इस पर शाहजादेने माधोसिंहको सेनाके साथ उधर भेजा। राणा पहाड़ोंमें लौट गया और लौटते हुए उसने रातके समय शाही फौज पर हमला किया। राजकुली, लालबेग, मुबारिकबेग और आलिफखां टिके रहे, जिससे राणा लौट गया।" (अकबरनामेका अंग्रेजी अनुवाद; खंड ३, पृ. १११५)।

पृष्ठ ५९, पद्यांक ६९१. ऊँटालै हो समसखां, उत आयो कर साथ......

डाक्टर गौरीशंकर हीराचंद ओझाने वीरविनोदके आधार पर लिखा है कि सलीमने मेवाड़में प्रवेश कर मांडल, मोही, मदारिया, कोसीथल, बागोर, ऊँटाला आदि स्थानोंमें थाने बिठला दिये। ऊँटालेके गढ़में उसने बडे सैन्यके साथ क्यामखानी शम्सखांको नियत किया।

ऊँटालेका युद्ध मेवाड़के इतिहासमें विशेष प्रसिद्धि रखता है। चूंड़ावत और शक्तावत दोनों ही हरावलमें रहना चाहते थे। राणा अमरसिंहने आज्ञा दी कि हरावल उसीकी रहेगी जो दुर्गमें प्रवेश पहले करेगा। शक्तावत बल्लूने किस प्रकार अपने शरीरको भालोंसे छिदवा कर हाथियों द्वारा दरवाजा तुड़वाया और चूंड़ावत किस प्रकार सीढ़ियों द्वारा किले पर चढ़े यह पठनीय कथा है। जैतसिंह चूंड़ावत घायल हो कर नीचे गिर पड़ा। गिरते ही उसने अपने साथियोंको आज्ञा दी कि वे उसका सिर काट कर किलेमें फेंक दें। इस प्रकार चूंड़ावत ही सर्व प्रथम किलेमें पहुंच पाये, और हरावल उन्हींकी रही।

राजप्रशस्ति महाकाव्यमें लिखा है कि--दिल्लीपतिका भृत्यवर क्यामखां इस युद्धमें मारा गया। क्यामखांसे आपाततः क्यामखानी शम्सका अर्थ लिया जा सकता है। किन्तु शम्सखां युद्धमें मारा नहीं गया। संभवतः काव्यका क्याम्रखां शुजातखांका पोता क्यामखां हो, जिसे तरबियतखांकी उपाधि मिली थी, और जो अकबरके राज्यके पांचवे वर्षमें अलवरका फौजदार बनाया गया।

पृष्ठ ५९, पद्यांक ६९६. राइ मनोहर......

राय मनोहर लूणकरण शेखावतका पुत्र था। अकबरके समय मेवाड़, गुजरात आदिके युद्धोंमें इसने अच्छी ख्याति प्राप्त की थी। जहांगीरके राज्यके दूसरे वर्षमें, यह १५०० जात ६००

सवारका मनसबदार नियुक्त किया गया। इसके नौ वर्ष बाद दक्षिणमें उसकी मृत्यु हुई। राव मनोहर फारसीका अच्छा कवि था।

पृष्ठ ५९, पद्यांक ६९७. दलपत बीकानेरीये......।

यह राजा रायसिंहके बाद बीकानेरकी गद्दी पर बैठा। सन् १६१२ ई. में जहांगीरने उससे अप्रसन्न हो कर सूरसिंहको बीकानेरकी गद्दी दी। दलपतसिंहने हिसारके आसपास विद्रोहका झंडा खड़ा किया।

पृष्ठ ५९, पद्यांक ६९८. ज्यावदी......।

संभवतः जहांगीरके मनसबदार जियाउद्दीन काजवानीसे मतलब है। जहांगीरने उसे एक हजारी मनसबदार बनाया और तबेलेके हिसाब-किताब पर नियुक्त किया। (देखें, तुजुके जहांगीरी, अंग्रेजी अनुवाद, पृ. २५)। दयालदासने अपनी ख्यातमें इसका नाम जावदीन दिया है (पृ.१४४-६)।

पृष्ठ ५९, पद्यांक ६९९. शेख कबीर......।

यह शेख सलीम चिश्तीका वंशज था। इसकी दूसरी उपाधियां शुजातखां और रुस्तमे जमा थीं। यह मऊका रहने वाला था। जहांगीरने गद्दी पर बैठनेके समय इसे १००० का मनसबदार बनाया। बंगालमें उसने बड़ी बहादुरीसे बादशाही सेवा की। इसकी वीरताके कारण ही बादशाहने उसे रुस्तमे जमाकी उपाधि दी थी।

पृष्ठ ६१, पद्यांक ७१७. फिर पठयो पतिसाह पैं......।

तुजुके जहांगीरीमें दलपतको पकड़ कर भेजनेका श्रेय खोश्तके फौजदार हाशिमको दिया गया है।

पृष्ठ ६२, पद्यांक ७३०. दक्षिणमें अलिफखां......।

यह वास्तवमें दक्षिण पर खांजहांके आक्रमणके समयका वर्णन है। मलिक अम्बर (अग्रिम टिप्पण देखें) के अहमदनगर राज्यमें अत्यन्त प्रबल हो जाने पर जहांगीरने १६०८ में अब्दुर्रहीम खानखानाको उसके विरुद्ध भेजा। खानखाना असफल रहा। अहमदनगरका दुर्ग भी मुगलोंके हाथसे निकल गया। नाम मात्रके लिये इससे कुछ पूर्व जहांगीर शाहजादे परवेज़को दक्षिणका सिपहसालार नियुक्त कर चुका था। उसकी मददके लिये खांजहां लोदीकी अध्यक्षतामें बादशाहाने एक बहुत बड़ी फौज भेजी जिसमें अलिफखां भी सम्मिलित था। सन् १६११ में यह निश्चय हुआ कि अब्दुल्ला गुजरातसे नासिक और त्र्यम्बककी तरफ बढ़े, और बरार एवं खानदेशसे खांजहां, मानसिंह आदि उसे सहायता प्रदान करें। किन्तु अब्दुल्लाने बिना परवाह किये एकदम हमला बोल दिया। दौलताबाद पहुँचते पहुँचते उसकी बहुत सी फौज क्षीण हो गई। बाकी फौजका बहुत सा अंश बागलाना पहुँचनेसे पूर्व नष्ट हो गया। अब्दुल्लाको हारते देख कर बाकी शाही फौजें भी पीछेकी तरफ लौट पड़ी। रासा कारने ठीक ही लिखा है :–

अब्दुल्लहके बिचरते, बिचर भई दल मांहि ।
आये सब रहानपुर, कहूँ रह्यो को नांहि ॥

पृष्ठ ६२, पद्यांक ७३५. अंबर आयौ साजि दल, गनती आवै नांहि......।

अंबरका अर्थ यहां मलिक अंबर है । ऐसे राजनीतिज्ञ दक्षिणने कम ही उत्पन्न किये हैं। शासन-प्रबन्ध एवं सैन्य-संचालन इन दोनोंमें यह निपुण था । खानखाना, खाने जहां आदिको परास्त करना इसी वीर हब्सीका कार्य था । अहमदनगरके राजाकी इसने अच्छी सेवा की । सन् १६२६ में इसकी मृत्यु हुई । इसके विस्तृत वर्णनके लिये जहांगीरका कोई इतिहास देखें ।

पृष्ठ ६२, पद्यांक ७२३. अब्दुल्लह......।

अब्दुल्ला जहाँगीरका प्रसिद्ध सेनापति था । मेवाड़में इसने अनेक विजय प्राप्त की । इससे प्रसन्न हो कर जहाँगीरने इसे फिरोज जंगकी उपाधि दी । मेवाड़से यह गुजरात भेजा गया ।

पृष्ठ ६४, पद्यांक ७६०. सगरपै......।

सगर महाराणा अमरसिंह प्रथमका चाचा था । शाहजादे परवेजको मेवाड़ पर भेजते समय बादशाह जहांगीरने इसे मेवाड़के राणाकी उपाधि दी और मुगलों द्वारा अधिकृत मेवाड़का अधिकांश प्रदेश इसे दे दिया । मेवाड़से संधि होने पर जहाँगीरने इससे राणाकी उपाधि ले कर रावतकी उपाधि दी । सन् १६१७ ई० में इसका देहान्त हुआ ।

पृष्ठ ६५, पद्यांक ७६९. खुसरो बीतर बीतखां......।

पद्यांक ८०० के टिप्पणका अन्तिम भाग देखें । यह इसका सामान्य उदाहरण है कि जहाँगीरके राज्यमें दिल्लीके निकट भी गड़बड़ थी ।

पृष्ठ ६७, पद्यांक ७९८. राजा विक्रमजीतकै......।

यह राजकुमार खुर्रमका अत्यन्त विश्वासपात्र था । सन् १६१८ में जहाँगीरकी आज्ञासे सोरठके जामको इसने दिल्लीके अधीन किया । सन् १६१९ में शाहजादे शाहजहांकी तरफसे यह कांगड़े पर भेजा गया । इसीके साथ अलिफखां भी रहा होगा । दक्षिणमें अम्बरके विरुद्ध शाहजहाँकी सफलताका पर्याप्त श्रेय विक्रमजीतको है । शाहजहाँके विद्रोही होने पर विक्रमजीतने आगरेको लूटा दिल्लीके निकट बिलोचपुर नामके स्थान पर शाहजहांके पक्षमें शाही सेनाके विरुद्ध युद्ध करता हुआ यह मारा गया । इसका असली नाम सुन्दर था ।

पृष्ठ ६७, पद्यांक ८००. सूरजमल......।

यह मऊ नूरपुरके राजा वसुका पुत्र था । सन् १६१५ में जब मुर्तजाखांने कांगड़ा लेनेका प्रयत्न किया तो यह भी शाही फौजदारोंमें था । शाही विफलतामें सूरजमलका षड्यन्त्र भी शायद कुछ कारण रहा हो । इसके विरुद्ध शिकायतें होने पर भी बादशाहने इसे क्षमा कर दिया । दक्षिणमें शाहजादा शाहजहांकी इसने अच्छी सेवा की । मुर्तजाकी मृत्युके बाद इसे शाही सेनाका मुख्य सेना-

पति बना कर बादशाह जहांगीरने कांगड़ेके विरुद्ध भेजा, किन्तु भाई-बन्धुओंसे लड़ना इसे अभीष्ठ न था। यहाँ विद्रोह कर इसने पहाड़ी राजाओंका एक प्रबल संघ तैयार किया।

सय्यद सफी बर्हाको इसने युद्धमें हराया और शाही परगने लूटे, किन्तु विक्रमजीतके सामने इसका कुछ वश न चला। इसकी राजधानी मऊ नूरपुर पर विक्रमजीतने अधिकार कर लिया। रासासे प्रतीत होता है कि अलिफखांको इस स्थान पर विक्रमजीतने शाही सेनाके कुछ भागके साथ रखा। इसके कुछ दिन बाद सूरजमल बीमार हो कर मर गया। जहाँगीरने इसके स्थान पर उसके भाई जगतसिंहको नियुक्त किया और उसे १००० जात, ५०० सवारकी मनसबदारी दी। (कुछ विशेष वर्णनके लिये अवशिष्ट टिप्पण देखें)।

पृष्ठ ६९, पद्यांक ८१४. जहांगीर मानी नहीं, बिक्रम करी जु बात......।

इस पंक्तिसे प्रतीत होता है कि विक्रमाजीत सर्वप्रथम साम द्वारा कार्य सिद्ध करनेका प्रयत्न किया करता था !

पृष्ठ ६९. पद्यांक ८१५, टूट्यो गढ़......।

गढ़की विजयका समय नवम्बर १६ सन् १६२० है।

पृष्ठ ७०, पद्यांक ८२७. ठटा......।

यह भी पहाड़ी दुर्ग है। सिन्धका ठटा नहीं।

पृष्ठ ७२, पद्यांक ८४४. सरदारखां......।

सरदारखां पचास वर्षका हो कर ११ मुहर्रम सन् १०३५, तदनुसार सं० १६८२ आश्विन सुदी १३–१४ को दस्तोंकी बीमारीसे मर गया। बादशाहने यह सुन कर पंजाबके पहाड़ोंकी फौज-दारी अलिफखांको दी जो उसके मददगारों में से था। (जहांगीरनामा)

पृष्ठ ७२, पद्यांक ८४४.

पहाड़ी नेताओंके स्थानादिके लिये इस पुस्तकके परिशिष्ट रूपमें प्रकाशित अलिफखांकी पैड़ी देखें।

पृष्ठ ७३, पद्यांक ८६५. नगरोटै डेरे कीये जगतै दल बल साज......।

जगतसिंह राजा बसुका दूसरा पुत्र था। (पद्य ८०१ वाला ऊपर का टिप्पण देखो) जब शाहजहांने विद्रोह किया तो उसका कृपापात्र होनेके कारण जगतसिंहने पहाड़ोंमें पहुँच कर उपद्रव किया। (ग्लैडविन, जहांगीर, पृष्ठ १४३) ।

पृष्ठ ७४, पद्यांक ८७७. सादकखां पैठान हो, चीठी दई पठाय......।

सादिकखां पंजाबका सूबेदार बनाया जा कर जगतसिंहके विरुद्ध भेजा गया। इस कार्यमें उसे विशेष सफलता न मिली। जहांगीरकी मृत्युके बाद आसफखांने इसे शाहजहांकी तरफ कर

लिया। (तुजुके जहांगोरो अंग्रेजो, अनुवाद, खंड २, पृ. २५९; इकबाल नामा, पृष्ठ २०३)।

पृष्ठ ८०, पद्यांक ९३३. अलिफखांका मृत्यु सम्वत्......।

सं० १६८३ जहांगीरके राज्यका अंतिम वर्ष था। अलिफखांकी पैडीके अनुसार इसका जन्म संवत् १६२१ था। इसलिये ६२ वर्षकी अवस्थामें रण-प्रांगणमें इस वीरने अपने प्राण दिये।

पृष्ठ ८२, पद्यांक ९३९. ग्रन्थका रचनाकाल......।

संवत् १६९१ रासाके मुख्यांशका रचनाकाल है। इसके बादका भाग इसकी अनुपूर्ति मात्र है।

पृष्ठ ८२, पद्यांक ९३९. कवित पुरातन मैं सुन्यौ, तिह बिध कर्‌यो वखान......।

क्या इन शब्दोंसे यह अर्थ लिया जाय कि अलिफखांके मृत्युके कुछ ही समय बाद, किसी अन्य कविने इस विषय पर कोई कवित्त लिखा और जांनने उसे अपनी रचनाका आधार बनाया। अधिक संभव तो यह प्रतीत होता है कि केवल रासाके आदि भागके लिये कविने उसका आश्रय लिया है। अन्य बातें उसके प्रायः समसामयिक थीं।

पृष्ठ ८३, पद्यांक ९६०. अमरसिंह राठौरका आगरेमें काम आना......।

मुसलमानी इतिहासकारोंने इस विषय पर जो कुछ लिखा है उसका सारांश निम्न-लिखित है –

अमरसिंह दरबारसे कुछ दिनोंसे अनुपस्थित रहा था। जब वह जुलाई २६, १६४४ ई० सन्‌के दिन वापस आया तो मीरबख्शी सलावतखां उसे दाराके स्थान पर बादशाहसे मिलनेके लिये ले गया। अमरसिंह बांई तरफ खड़ा था और बादशाह शामकी नमाजके बाद कुछ हुक्म लिखा रहा था। सलावतखां मुल्ला करामतसे कुछ बातचीत करने लगा। अमरसिंहको संदेह हुआ कि सलावतखां उसकी शिकायत कर रहा है। अचानक ही अमरसिंहका खंजर सलावतखां पर पड़ा और सलावतकी इह लीला समाप्त हो गई। खलीलुल्लाखां और अर्जुनने एक दम अमरसिंह पर हमला किया, और शीघ्र ही कुछ और मनसबदार और गुर्जबदार उनसे आ मिले। अमरसिंह मारा गया। अमरसिंहके साथियोंने अर्जुनसे इसका बदला लेनेका प्रयत्न किया और इसी झगड़े में मीर तुजुकखां मीरखां, मुशरिफ मुलकचंद आदि मारे गये। अन्ततः सय्यदखां जहां और रशीदखां अन्सारी आदिने अमर-सिंहके आदमियों पर आक्रमण किया और उन्हें मार डाला।

इसी घटनाका अतिरंजित रूप अनेक राजपूती ख्यातोंमें मिलता है। सबसे विश्वस्त वर्णनकी दो जैन कृतियां हैं जिन्हें श्री अगरचंद नाहटाने 'भारतीय विद्या' खंड २ में प्रकाशित किया था। इनके अनुसार वास्तविक घटनाका रूप यह था :–

बीकानेर और नागोरके बीचमें कुछ सरहदी झगड़ा पैदा हो गया था। इसीके बाद अमरसिंह शाहजादा दाराशुकोहकी हवेलीमें बादशाहसे मिलने गया। बादशाह गुसलखानेमें था। सलावतखांसे अमरसिंहका कुछ वाद विवाद हो गया और अमरसिंह कह बैठे "अच्छा खबर

पड़ेगी।" सरहदी झगड़ेमें सलाबतखांने ताना देते हुए कहा, "क्या खबर पड़ेगी? बीकानेर तो खबर पड़ी। क्या रावजी गंवारी करते हो?" इतना सुनते ही अमरसिंहने कटारी चलाई। वह सलाबतखांके पेटमें घुस गई। शाहजहांने अमरसिंहको पहले तो घर जानेका हुक्म दिया, किन्तु दाराशिकोहके कहने पर मनसबदारोंसे कहा, "देखो, न जाने पाये। अमरसिंहको मार लो।" गौड़ विट्ठलदासके लड़के अर्जुनने धोखेसे वार कर अमरसिंहको गिराया और गुर्जबदारोंने आ कर अमरसिंहका काम तमाम किया। जब लाश बाहर भेजी गई तो गोकुलदास, मीरखां और हरनाथ भाटीने बख्सी मूलकचंदको मार डाला। गोकुलदास और हरदास अमरसिंहके दस अन्य नौकरों सहित यहीं लड़ कर काम आये। प्रातःकाल होते ही राठौड बल्लू, राठौड भावसिंह, गिरधर व्यास आदिने अमरसिंहकी रानियोंको सती किया और फिर अर्जुनसे बदला लेनेका विचार किया। बादशाहने उनके विरुद्ध खांजहां सैयदको भेजा। बल्लू राठौड़ आदि अमरसिंहके ६४ आदमी वीरतासे लड़ते हुए काम आये।

संवत् १७०१ श्रावण शुक्ला द्वितीयको तीन या चार घड़ी बीतने पर अमरसिंहने सलावतखांको कत्ल किया और स्वयं मारा गया। लाशके बाहर आते ही उसी समय उनके १२ साथियोंने भी लड़कर वीर गति प्राप्त की।

बल्लू राठौड़का सैयद खांजहांसे युद्ध श्रावण सुदी ३ के तीसरे पहर हुआ।

पृष्ठ ८७. पद्यांक ९९३, ताहिरखां हैं बलखमैं साहिजादै के पास......।

शाहजादा मुरादने सन् १६४६ ई. जुलाई सातके दिन बलखमें प्रवेश किया।

पृष्ठ ८७, पद्यांक ९९१. इंद खोहकै......।

इसका असली नाम अन्दखुद है। इस स्थान पर मुगल सेनाने अस्त्राखानी नज्रमुहम्मदको परास्त किया।

पृष्ठ ८९ पद्यांक १०१९, फिरी मुहिम बलखकी......

औरंगजेबने सन् १६४७ अक्तूबर ३ के दिन बलख से प्रयाण किया।

पृष्ठ ८९, पद्यांक १०१९. बहुर पठाई फौज तब, गढ़ कंधारकौं लैन......।

ईरानके बादशाह अब्बास द्वितीयने फरवरी १६४६ में मुगलोंसे कंधार जीत लिया। शाहजहांने औरंगजेबको कंधार जीतनेकी आज्ञा दी। शाहमीरकी लड़ाईमें, जिसका संभवतः रासामें वर्णन है, मुगल सेनापति रुस्तमखां विजयी हुआ। सितम्बर ३, १६४९ के दिन औरंगजेबने दुर्गका पहला घेरा उठाया।

पृष्ठ ८९, पद्यांक १०२३. कंधार पर दूसरा आक्रमण......।

यह सन् १६५२ में फिर औरंगजेबकी अध्यक्षतामें हुआ।

पृष्ठ ९०, पद्यांक १०२६. कंधार पर तीसरा आक्रमण......।

तीसरा आक्रमण सन् १६५३ में दाराकी अध्यक्षतामें हुआ।

पृष्ठ ९०, पद्यांक १०२०. दौलतखांकी मृत्यु......।

संवत् १७१० अर्थात् सन् १६५२ में हुई।

अवशिष्ट टिप्पण

विक्रमाजीत द्वारा कांगड़ाकी विजय–

सूरजमल पर विक्रमाजीतके आक्रमण और कांगड़ाकी विजयका शाहजहांके मुन्शी जलालातिबा द्वारा रचित शश फतह कांगड़ामें अच्छा वर्णन है। इससे पहाड़ी प्रान्तके भूगोल और तत्सामयिक राजनैतिक परिस्थिति पर पाठकोंको कुछ अधिक प्रकाश मिलेगा। अतः इसका सार यहाँ प्रस्तुत करते हैं :–

बादशाहने सूरजमलके विद्रोहके विषयमें सुनते ही उसे दबानेके लिये शाहजहांको नियुक्त किया और उसे कांगड़ा जीतनेकी भी आज्ञा दी। सूरजमलने पंजाबके कई परगनोंमें लूटमार मचा रखी थी। शाहजहांने विक्रमाजीतको सेनाका नायक बनाया, और बादशाह जहांगीरके १२वें वर्षके शहीरयार महीनेमें (१ शाबान. हिज्री सन १०२७) उसे गुजरातसे एक बड़ी फौजके साथ रवाना किया। सूरजमल यह सुनते ही पठानकोटकी तरफ भागा और मऊके दुर्गमें जा कर ठहरा। मऊ चारों तरफसे पहाड़ों और जंगलोंसे घिरा हुआ है, देशके बहुत विशाल और मजबूत दुर्गोंमें उसकी गिनती है। राजा विक्रमाजीतने शीघ्र दुर्गको घेर लिया। सूरजमलने सामना किया, किन्तु पराजित हुआ। उसके ७०० व्यक्ति, मर्द और औरत मारे गये। स्वयं सूरजमल राजबसुके बनाये हुए नूरपुर नामके किलेमें कुछ साथियों सहित भाग गया। विक्रमाजीतने यहाँ उसका पीछा किया, और सूरजमलने चम्बाके राज्यमें घुस कर तारागढ़के किलेमें आश्रय लिया। चार दिनके घेरेके बाद विक्रमाजीतने यह किला भी हस्तगत किया। यहां उसकी फौजके बहुतसे आदमी मारे गये। सूरजमल फिर भागा और उसने चम्बाके राजाके यहाँ शरण ग्रहण की।

विक्रमाजीतने तारागढ़की विजयके बाद हारा, पहाड़ी, ठठा, पकरोटा, सूर और जावालीके किले जीते। इसी बीचमें सूरजमलके भाई माधोसिंहने कुछ उपद्रव किया। विक्रमाजीतने नूरपुर और कांगड़ेके बीचके कोटिला दुर्गमें उसका मुकाबला किया। भयंकर रक्त-पातके बाद शाही सेना किला जीतनेमें समर्थ हुई। कुछ ही दिनोंमें विक्रमाजीतने सब पहाड़ी प्रदेश पर अधिकार कर लिया। शत्रुके थाने उठा कर उसने शाही थाने बिठाये और शाही नौकरोंको अनेक जागीरें दीं। सूरजमलका चम्बाके राजाके दुर्गमें देहान्त हो गया। चम्बाके राजाने उसकी तमाम सम्पत्ति, जिसमें चौदह बड़े हाथी और २०० अरबी और तुर्की घोड़े शामिल थे, विक्रमाजीतको सौंप कर बादशाहसे क्षमा प्राप्त की।

इसके बाद विक्रमाजीतने कांगड़े पर घेरा डाला। अन्तमें शाही सिपाहियोंने एक जगह दुर्गकी दीवार तोड़ डाली। भयंकर लड़ाई हुई। शाही तोपखानेने शत्रुको भून डाला। शत्रु भाग निकले। राजा विक्रमाजीतने कांगड़ेमें घुसकर विश्वस्त अफसरोंको नियुक्त किया और जिन शूरोंने इस युद्धमें वीरता दिखाई थी उनके मनसब बढ़ाये। इससे पूर्व कांगड़े पर कोई विजय प्राप्त न कर सका था। (इलियट और डाउसन, भाग ६, पृष्ठ ५१८–५२१)।

क्यामखां रासा

हिन्दी अनुवाद

भूमिका

क्यामखां रासो कायमखानी वंश पर प्रकाश डालने वाली सबसे पहली रचना है। इस ग्रंथ के रचयिता इसी वंश के नवाब अलफखां के पुत्र न्यामतखां है। इस ग्रन्थ के लेखक के बारे में प्राचीन काल में बड़ी भ्रान्तियाँ रही हैं। पुरोहित हरिनारायण, पंडित झाबरमल्ल शर्मा आदि लेखकों ने अलफखां को ही क्यामखां रासो का रचयिता बताया था। आगे चलकर जब इस सम्बन्ध में शोध हुई तो यह बात निराधार सिद्ध हुई। साथ ही यह तथ्य भी उजागर हुआ कि इस रासो का कवि एवं रचनाकार नवाब अलफखां नहीं किन्तु उसका पुत्र न्यामतखां उपनाम जान कवि था। आज इस बात में कोई सन्देह नहीं रह गया है क्योंकि इस कवि की अनेक रचनायें प्रकाश में आ चुकी हैं।

जान की रचनायें विविध विषयों वाली हैं। इनमें चरितकाव्य, मुक्तक, श्रृंगार वर्णन काव्य, कोष, प्रेम कथायें, ऐतिहासिक कथायें आदि हैं। इनके अलावा रस एवं रीति पर भी जान के ग्रंथ उपलब्ध हैं जिनमें रस कोष, श्रृंगार तिलक, रस तरंगिणी आदि प्रमुख हैं।

'जान' बड़ा सशक्त कवि था। अपने समय का वह एक प्रमुख साहित्यकार था। मुनि श्री जिन विजय जी का यह कथन सत्य है कि जितनी विविध प्रकार की रचनायें जान ने की हैं उतनी उस समय के अन्य किसी हिन्दु या जैन विद्वान् ने नहीं की हैं।

जान की रचनाओं को देखने से ज्ञात होता है कि वह विविध विषयों का ज्ञाता था। उसे हिन्दु धर्म-शास्त्रों, काव्य की रीति-नीति, प्रचलित मान्यताओं धर्म कथाओं आदि का गहरा ज्ञान था। उसके काव्यों में जगह-जगह ऐसे प्रसंग आते हैं जिनसे ज्ञात होता है कि वह इन विषयों में निष्णात था। जान के मन में अपने चौहान होने का बड़ा गर्व है। जगह-जगह वह

चौहान कुल की श्रेष्ठता प्रतिपादित करता चलता है। उसके अनुसार चौहान कुल राजपूत कुलों में सर्वश्रेष्ठ है। स्मरण रहे कि मुस्लिम धर्म स्वीकार करने के पूर्व कायमखानी चौहान वंश के ही थे। ऐसी स्थिति में धर्म परिवर्तन के पश्चात् भी अपने पूर्वजों के प्रति कवि का यह ममत्व वस्तुतः स्पृहणीय है।

आज मुस्लिम समाज में अनेक जातियाँ हैं जो अपने पूर्वजों का गर्व पूर्वक स्मरण करती हैं। वे अपने नाम के आगे चौहान, भाटी, जोड परिहार आदि लगाते हुये एक सविशेष गर्व एवं आनन्द का अनुभव करते हैं। इस प्रकार के विचार रखने वाले लोग नव मुस्लिम संप्रदाय से सम्बन्धित हैं और मोटे रूप से अपने को कायमखानी वर्ग में रखते हैं।

क्यामखां रासो का संपादन एक ही प्रति के आधार पर हुआ है फलस्वरूप भाषा, छन्द, वर्ण संयोजन आदि की दृष्टि से जगह-जगह शिथिलता एवं अशुद्धियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। प्राचीन जमाने में मूल प्रति की प्रतिलिपि करने वाले लेखक विशेष सावधानी नहीं बरतते थे फलस्वरूप प्रतिलिपि का पाठ मूल पाठ से भिन्न स्वरूप वाला हो जाता था। इससे ग्रंथकार का मूल भाव या तो तिरोहित हो जाता या विकृत रूप में प्रकट होता था। लेखक मूलप्रति के पाठ पर एक नजर डालकर लिखना प्रारम्भ कर देता और भूल से किसी शब्द का वह रूप प्रयुक्त कर बैठता जो उसके क्षेत्र में प्रचलित होता। इस प्रकार अनेक प्रतिलिपियाँ अपने मूल से बहुत दूर चली जाती। उनमें भाषा भ्रष्टता का प्राचुर्य उपलब्ध होना स्वाभाविक है। प्रस्तुत क्यामखां रासो भी इसका अपवाद नहीं है।

जान की भाषा प्राचीन राजस्थानी है जिसमें ब्रजभाषा के शब्दों का समावेश है। इन शब्दों के अतिरिक्त स्थानीय बोली के शब्दों का भी जगह-जगह प्रयोग किया गया है। जान की भाषा सरलता लिये हुये है तथा वह भावानुकूल है। जान उर्दू और फारसी के शब्दों का कम प्रयोग करता है। चारणों की भाषा में जो क्लिष्टता होती है जान की रचनाओं में उसका सर्वथा अभाव दृष्टिगोचर होता है।

जान ने तत्सम शब्दों का प्रयोग अपेक्षाकृत कम किया है। उसकी प्रस्तुत रचना में तद्भव शब्दों का बाहुल्य है। उदाहरण के लिये दृष्टि के लिये डिठि, जीत के लिये जैत, दिवस के लिये द्योस, सम्बन्ध के लिये शाक आदि। तत्सम शब्द भी उसकी रचना में मिलते हैं जैसे विध्वंस, भुजा, अतुलित, विद्वान, दुर्जन और अमित। जान की भाषा भावानुगामिनी है। युद्ध का वर्णन करते समय जान चारण भाटों वाली शैली का अनुकरण करते हैं। कुछ उदाहरण अपेक्षित हैं।

चढ़े जुझार मारके वदे न घाव सार के ।
लटे कटे हटे नहीं, मरे परे जहीं तहीं ॥
करी करी लरे मरे, तुरी तुरी किते परे ।
सुभट्ट ठट्ट खेत में सु घूमि है अचेत में ॥
मूवो सब साथ ही, रह्यो न प्रान हाथ ही ।
चल्यौ पठान भज्जि कै, दयो न जीव लज्जिकै ॥
उतहिं पठानं, इत चहुंवानं, गज केकानं जोधजुरे ।
गोली बहु छूटै, कर पग टुट्टै मस्तक फुटै नांहि मुरे ।
लगे तन बानं निकसे प्रानं, जूझे ज्वाने थकि न रहें ।
बरछी अनियारी, तेग दुधारी, काटैं भारी सूर सेहे ॥

जान ने 'ससितुंड' और बोलने के अर्थ में 'बकना' आदि असामान्य प्रयोग भी किये हैं । जान में शब्दों की तोड़ मरोड़ भी है पर वह सीमित है । वीररस प्रधान होने के कारण 'रासो' की भाषा भी शैली के अनुरूप अपनी विशिष्टता रखती है । कवि ने भाषा के द्वारा रस संचार में पर्याप्त सहायता ली है । भाषा पर उसका अधिकार है । भाषागत सौन्दर्य की अभिवृद्धि हेतु कवि ने जगह-जगह सुन्दर उक्तियाँ की हैं ।

येक बात कवि जान कहि, बढ्यो मीन ते सूर ।
मीन मरे पानी घटे, सूर मरे जल पूर ॥

* * *

धावत पीछे हरनकै, हरनंछी विघ दीन ॥

* * *

अनंत भरतारहि भखि गयी, नैकु न आवत लाज ।
येक मरे दूजै धरै, यहै दिल्ली को काज ॥

* * *

पूनौ को पहुँच्यौ नहीं भाग कमोदनी मंद ।
यह विपरीत लगे बुरी, गहयौ सप्तमी चंद ॥

कवि ने 'रासो' में काव्य के सभी उपादान जुटाये हैं । रस, अलंकार, रीति, भाव एवं छन्द योजना उसी प्रकार की है जैसी किसी रीतिकालीन निष्णात कवि की होती है । चंद्रचकोर, सूरज कमलिनी, प्रकृति नदी, पर्वत सभी जान की रचना में यत्र तत्र उपस्थित रहते हैं ।

कवि ने अलंकारों का प्रयोग यत्र तत्र किया है पर यह प्रयोग सप्रयास नहीं है । वर्णन करते-करते वह स्वाभाविक रूप से अलंकारों का प्रयोग करता है । उसकी रचना में श्लेष, यमक उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, विरोधाभास आदि अलंकारों का अतीव स्वाभाविक प्रयोग दृष्टिगत होता है ।कुछ उदाहरण निम्नलिखित रूप से है ।

'फूलनं मधि गुलाबं, चूनियनि जैसों लाल,
राइन मैं तैसो गोत चकवै चौहान को ॥' उपमा

* * *

कलपव्रिछ चौहान है जाके अनगन साख ।
जो हौं जानो जान कवि, सुतो सुनाऊं भाख ॥ रूपक
छलकै छौनां छपि गयो, भयो नरेश उदास । वृत्यानुप्रास

* * *

नैन वहन हिरदै दहन मनहि गहन तन छीन ॥ अनुप्रास

* * *

जोति गई मिटी तिमर ते भाज दुरयौ बन जाई । विरोधाभास

* * *

कबके गिर गिर कहत है पर गिर ना गिरजात । यमक

* * *

लोहूदे नाले चले, नदियां सीआंणी ।
गोला लग हाथी पये, धरती कपाणी ॥
उछली बूंदै रगतदी, तिसक्या नीसाणी ।
जानु कराड़ा टुट्टिकै, पड़या बिच पाणी ॥
धोले धोले दंत मुंह जेही बगपंती ।
घटाघण विच बिजली, जाणू चमकती ॥उत्प्रेक्षा

* * *

हैदल गैदल पैदल जोर कै आये अनंत अपार पहारी ।
नाचत है हरखे हरि जुगिन छूटत नाल बंदूक सुतारी ।

भीर परी विचले तब भीरक साहिबखां समसेर संभारी।
काहू को मुंड कटि कटि काहू की ही मिसरी पै लगी आई खारी ।।
(विरोधालंकार)

कवि ने अलंकारों का प्रयोग स्वाभाविक रूप से किया है। रीतिकालीन आचार्यों और कवियों की तरह अलंकार के लिये अलंकार का प्रयोग उसकी रचना में दृष्टिगोचर नहीं होता हैं।

जान की रचना एक ऐतिहासिक काव्य है अत: युद्ध का वर्णन ही मूल वर्ण्य विषय है। इस काव्य में वीर रस मुख्य है। दूसरा रस वीभत्स है। कहीं कहीं करुण रस की भी छटा देखने को मिलती है। जगह-जगह काव्य में वीर रस का सुन्दर परिपाक दृष्टिगोचर होता है।

लरत अलिफखान परत है घमासान
दे दे बहु दान सिव कीनौ है निहालजू।
भसम हसम धूरि रत सत सिंध भूरि
आवधि त्रिसूल लहै खपर है डाल जू,
बोलत है घाव सू सुभाव डमरु को अैन,
पायो सरभाव भयो चाव गज खालजू।
निरत करत हरखत हर हेर हार
सुंडन के व्याल और मुंडनि के माल जू ।।

* * *

सतके रजके गज सैन बदै न झुकै न रुकै रहे आडन के।
खां अलिफ बिरचि किरची कीये पै पहारी नहीं पग छाडनके।
भये रंचक टूटिगये उडी पौन रहे न जरावन गाडन के।
लह्यौ ईस न सीस न मांस सियारहु ये न हडाहल हाडनकै ।।

* * *

वीभत्स रस का भी कविकृत वर्णन द्रष्टव्य है।

मुंडबिना तन धर पड़े तरफत है इंह भाइ।
खुले देख द्रग सुभट के डरपे गिर्झ सियार।
विकट लगे ह्वैबे निकट जो मरि गये मुद्दार ।।
रुहिर जुगिनी भछि गई, स्यार मांस अरुचाम।

हाडन कोऊ लेत है असत कहावत नाम ।।
घावजू बोले सुभट के कहत मार ही मार ।
जीभ थकी तब अंग ही लाग्यौ करण पुकार ।।

करुण रस का भी सुन्दर वर्णन रासो में उपलब्ध है ।

ताहरखाँ कीनौ गवनं, सुवन सुने ये वैन ।
बस्त भगौहे ह्वै गये, रत रोये जुग नैन ।।

* * *

पून्यै को पहुँच्यो नहीं, भाग कमोदनी मंद
यह विपरीत लगै बुरी, गह्यौ सप्तमी चंद ।।
मरिकर ताहरखांनजू हितुवन यह दत दीन ।
नैन बहन हिरदे दहन, मनहि गहन तन छीन ।।

जान कृत कायम रासो वंस्तुत: एक वीर काव्य है जिसमें युद्धों का एवं चरितनायकों की वीरता का वर्णन ही कवि को अभीष्ट है । दूसरे रसों के वर्णन का जरा भी अवकाश नहीं है । कवि ने अपने जिन पूर्वजों का वर्णन किया है उनमें उनके वीर कृत्यों का प्रकाशन ही मुख्यतया किया गया है । पिता के मरने पर गद्दी पर बैठना और विभिन्न स्थानों पर जाकर शौर्य का प्रदर्शन करना ये ही वीरों के कार्य हैं जिनका वर्णन रासो में मिलता है । नवाबों का जन्म, उनका बाल काल, उनका विवाह, प्रेम, रंगरलियाँ आदि इस काव्य के वर्ण्य विषय नहीं हैं । नवाबों के जीवन के एक पक्ष-शौर्य पक्ष की ही झलक इसमें मिलती है । जीवन का समग्र स्वरूप यहाँ नहीं मिलता । अनेक नायकों वाले काव्य में यह सब संभव भी नहीं है ।

जान ने रासो में अनेक युद्धों के वर्णन किये हैं । क्यामखां का मुगलों से युद्ध, क्यामखां मल्लूखां युद्ध, क्यामखां मौजदी युद्ध, क्यामखां खिदरखां पठान युद्ध, ताजखां महमदखां का राणा से युद्ध, फतेहखां का रणथंभौर युद्ध, मुसकीखां किरानी से युद्ध, जलालखां का मुगल चौपानखां से युद्ध, दौलतखां का मुहब्बतसाराखानी से युद्ध, नाहरखां का जगमाल पंवार से युद्ध, और दीवान अलफखां के विविध स्थानों पर किये गये युद्धों का रासो में प्रमुखता से वर्णन किया गया है ।

जान कवि की रचनाओं पर एक सरसरी निगाह डालने पर ज्ञात होता है कि वह मूलत: प्रेम का कवि है । युद्धों के वर्णन में उसका मन नहीं रमता । यही कारण है कि उसके युद्धों के वर्णन संक्षिप्त हैं । दूसरी बात यह है कि उसके द्वारा किये गये युद्धों के वर्णन अधिकतर

पारंपरिक हैं । उनमें वैयक्तिकता कम देखने को मिलती है । सेना का प्रयाण, धूलि का अम्बर में छा जाना, सूर्य का छिप जाना, वीरों का उत्साह, कायरों का कंपन, हाथी घोड़ों का समूह, योगिनियों का रक्तपान, शिव का मुंडमाल ग्रहण आदि पारंपरिक बातों का ही वह वर्णन करता है ।

रासो के विविध युद्धों के वर्णन में उसने सशक्त भाषा का प्रयोग किया है तथा अवसरानुकूल छन्दों का चयन किया है । उसकी इस कृति में दोहा, सवैया, चौपाई, भुजंगी, अर्द्ध भुजंगी, नाराच, घनाक्षरी (सवईया) आदि हैं । सवैयों में अधिकतर मत्तगयंद है तथा घनाक्षरी या मनहर छंद 31 अक्षरों वाले हैं । जान ने जगह-जगह सुन्दर सवैये एवं घनाक्षरियाँ कही हैं जो उसके काव्य कौशल की सशक्तता की साक्षिणी हैं ।

जान की प्रस्तुत रचना साहित्यिक न होकर ऐतिहासिक है । इतिहास सम्बन्धी इस रचना में भी जान ने साहित्यिक सौन्दर्य भर दिया है । उसकी यह रचना साहित्यिक दृष्टि से चाहे उतनी उच्चस्तरीय न हो जितनी हिन्दी साहित्य की एतद् विषयक अन्य रचनायें हैं पर जान की महानता की झलक इस ऐतिहासिक काव्य में भी यत्र तत्र परिलक्षित हो जाती है । श्री परशुरामजी चतुर्वेदी के इस अभिमत को मैं पूर्णतया उचित मानता हूँ । वे लिखते हैं कि इस कवि की विशेषता इसकी रचनाओं की पंक्तियों की द्रुतगामिता में देखी जा सकती है । जान पड़ता है इसकी प्रत्येक पंक्ति तत्क्षण अपने आप बनती चली जाती है । न तो इसे उसके लिये कुछ सोचना पड़ता है और न कोई परिश्रम ही करना पड़ता है । कथानक की रूपरेखा इस कवि के केवल संकेत मात्र से ही भरती चली जाती है और कुछ काल में एक प्रेम गाथा प्रस्तुत हो जाती है ।

जान कवि के बारे में अधिक बातें ज्ञात नहीं हैं । वह कायमखानी घराने में जन्मा था और प्रसिद्ध नवाब अलफखां का दूसरा पुत्र था । दूसरे भाई जब युद्ध में अपना कौशल दिखा रहे थे तो जान साहित्य सृजन में व्यस्त रहता था । वह एक ऐसी सृष्टि का निर्माण कर रहा था जिसे काल के क्रूर हाथ मिटा नहीं सकते ।

जान के समय फतेहपुर में अनेक कवि और रचनाकार साहित्य सृजन में रत थे । स्वयं स्वामी सुन्दरदास नवाबों के गढ़ से अनतिदूर अपने दादूद्वारा में काव्य रचना के पुनीत कार्य में व्यस्त थे । उनके अनेकों शिष्य प्रशिष्य भी सतत साधना रत रहकर काव्य का निर्माण और आस्वादन कर रहे थे । अन्यों में भीखजन, बालकदास आदि प्रमुख थे । स्वामी सुन्दरदास शास्त्रज्ञ संत होने के साथ-साथ सशक्त रचनाधर्मी थे. उन्होंने विशाल साहित्य का सृजन किया है । यह आश्चर्य की बात है कि न तो स्वामीजी के साहित्य में तथा न जान कवि की रचनाओं में इन समानधर्मियों का जरा भी उल्लेख नहीं है । स्वामी सुन्दरदास के नवाब

अलफखां से निकट सम्बन्ध की बात सुज्ञात है। आगे चलकर दौलतखां से भी उनका निकट का संपर्क रहा था।

जान हिन्दु भावनाओं से और विचारों से ओतप्रोत कवि था। वह जगह-जगह इस भावना को प्रकट करता चलता है। वह बहिश्त की जगह बैकुण्ठ शब्द का प्रयोग करता है। बादशाह की अपेक्षा उसे छत्रपति शब्द अधिक प्रिय है। चौहानों के वंशज होने का उसे अत्यन्त अभिमान है। उसके चरित नायक ऐसा कोई भी कार्य करने में संकोच का अनुभव करते हैं जिससे उनके पूर्वज पृथ्वीराज और हम्मीर लज्जित हों। कवि नवाब दौलतखां के विविध गुणों की प्रशंसा करता हुआ जिन छ: राजाओं से उसकी तुलना करता है वे सबके सब जान ने हिन्दु राजा लिये हैं। दौलतखां दान में कर्ण के समान, बुद्धि में भोज के समान, सत्य में हरिश्चन्द्र के समान, परदुख विनाशन में विक्रम, हठ में हम्मीर और बल में पृथ्वीराज के समान हैं। इनमें एक भी अपने क्षेत्र में विख्यात किसी मुस्लिम नवाब या सुल्तान का नाम नहीं है।

जान की रचनाओं को देखने से ज्ञात होता है कि वे पूर्णरूप से हिन्दु रंग में रंगी हैं। अगर नाम ज्ञात न हो तो यह कहना अतीव कठिन हो जाता है कि ये रचनायें किसी मुस्लिम धर्मानुयायी की हैं। इस संबंध में मुनि जिन विजय का अभिमत सर्वथा यथार्थ है।

"यद्यपि जाति और धर्म से वह मुसलमान था लेकिन उसकी रचनाओं के पढ़ने से मालूम होता है कि वह भाव और भक्ति की दृष्टि से प्राय: हिन्दु था। उसका शरीर मुस्लिम था परन्तु आत्मा से हिन्दु था। यदि उसने अपनी रचनाओं में अपने व्यक्तित्व के परिचायक कोई उल्लेख न किये होते तो पाठकों को इन रचनाओं का कर्त्ता कोई हिन्दुइतर है ऐसी कल्पना का होना भी असंभव लगता।"

ऐतिहासिक पक्ष

जान रचित क्यामखां रासो वस्तुत: एक ऐतिहासिक रचना है। इस ऐतिहासिक काव्य में कवि ने कायमखानी वंश के अनेक नवाबों के वीर कृत्यों का बखान किया है। कायमखां से लेकर सरदार खां तक के नवाबों के वृत्त का इसमें समावेश है। यह ग्रंथ विक्रम 1691 में संपूर्ण हुआ ऐसा स्वयं ग्रंथकार ने कहा है। रासो की प्राचीन घटनाओं का वर्णन कवि ने किसी प्राचीन कविता के आधार पर किया है। आगे के काल की घटनायें उसके समय के आसपास की है। इस प्रकार जान ने कायमखानी वंश की उत्पत्ति से लेकर अपने समय तक के नवाबों के क्रिया कलाप पद्यात्मक रूप में प्रस्तुत किये हैं। प्राचीन कविता के आधार पर वर्णित वृत्त में कुछ तथ्यात्मक भूलें एवं अतिशयोक्तियाँ हैं जो स्वाभाविक हैं। कायमखां से लेकर जान के अपने समय तक की समयावधि को देखते हुये तथ्यों में जो त्रुटियाँ रही हैं वे स्वाभाविक हैं। इन पर आगे चलकर प्रकाश डाला जावेगा।

कायमखानी वंश पर क्यामखां रासो सर्व प्रथम रचना है अत: सर्वप्रथम रचना के गुण दोष इसमें पाये जाते हैं ।इस ग्रंथ को छोड़कर दूसरी अन्य रचना प्रकाश में नहीं है जिसमें इस वंश के नवाबों पर विस्तृत विवेचन प्राप्त हो । वाकयात कौम कायमखानी आधुनिक कृति है जो उर्दू भाषा में है । इसके अनेक तथ्य दोष पूर्ण हैं । वस्तुत: यह समग्र कायमखानी वंश पर न होकर मुख्यत: **एलमाणों** पर ही है । इसी प्रकार फखरुतवारीख भी पीरजादाओं का वृत्त है । इसमें प्रारम्भ में नवाबों का संक्षिप्त इतिहास है । हाल ही में लेखक का "कायमखानी वंश का इतिहास" प्रकाशित हुआ है जिसमें इस वंश के नवाबों की उपलब्धियों का विस्तार से वर्णन है । "कायमखानी" आज और कल नामक पुस्तक भी प्रकाश में आयी है । इस प्रकार इन विविध रचनाओं के माध्यम से इस वंश की उपलब्धियों का वर्णन लोगों के सामने आया है ।

कायमखानी एक वीर जाति है जिसके वीरतापूर्ण कार्यों की एक झलक रासो में मिलती है । इस वंश का मूल स्थान शेखावटी एवं उसके आसपास का क्षेत्र रहा । दिल्ली के बादशाहों से इनके घनिष्ठतापूर्ण संपर्क रहे । अनेक नवाबों ने बादशाहों से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये । प्राय: सभी नवाब मुगलों के मनसबदार रहे । शेखावटी में इनके साथ ही पठान आये और आगे चलकर शेखावत वंश के लोग भी इस क्षेत्र में चले आये । कायमखानियों का विस्तृत राज्य एक ओर पठानों से और दूसरी ओर शेखावतों से घिरा था । उस शक्ति के युग में वीर कायमखानी नवाबों ने अपने राज्य को इन लड़ाकू शक्तियों से केवल बचाये ही नहीं रखा पर उसकी अभिवृद्धि भी करते रहे । इसके पीछे एक ओर मुगलों का वरदहस्त काम कर रहा था तथा दूसरी ओर उनका अतुलित शौर्य ।

संपादन

रासो का संपादन प्रथम बार सन् 1953 में हुआ था । राजस्थान पुरातन ग्रंथ माला का यह 13 वां ग्रन्थ है । तबसे इसकी कई आवृत्तियाँ हो चुकी हैं पर प्रथम आवृत्ति में कोई परिवर्द्धन एवं परिष्कार नहीं हुआ है । इसका प्रकाशन राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान से किया गया है । संपादक त्रय ने इसका संपादन किया था । संपादन में रासो का कथा सार दिया गया था तथा कुछ अन्य बातों के साथ ऐतिहासिक टिप्पण लगाये गये थे ।

इन टिप्पणों में जहाँ तक देहली सुलतानों के साथ कायमखानियों के सम्बन्ध की बात है काफी सावधानी बरती गयी थी । विद्वान् संपादकों के टिप्पण विस्तृत एवं विद्वत्तापूर्ण थे । जिनसे रासो को समझने में सहायता मिलती थी । इस विशिष्टता के साथ-साथ इन टिप्पणों में एक मूलभूत कमी थी । वह यह कि शेखावटी के इतिहास सम्बन्धी विवरण या क्रिया कलापों पर कोई टिप्पण नहीं लगाये गये थे । उन्हें पूरी तरह वैसा का वैसा छोड़ दिया गया था । इससे रासो के पाठकों के सम्मुख रासो के तद्विषयक वृत्त को समझने में कठिनाई आती

थी । रासो में अधिकतर उन घटनाओं का समावेश है जो स्थानीय इतिहास से सम्बन्धित है अतः एतद् विषयक टिप्पण परमावश्यक हैं । जब 'ठौर ठौर अलखो फिरै' या 'नाहरखां ऐसे गयो जैसे गयो सियार' जैसे पद्यांश आते हैं तो समुचित टिप्पणों के अभाव में पाठक मुँह ताकता रह जाता है । यह मूलभूत कमी अब आवश्यक टिप्पण देकर दूर कर दी गयी हैं । इनसे रासो को समझने में पाठकों को सहायता मिलेगी ।

रासो वस्तुतः अपूर्ण है । इसमें बाद के कायमखानी नवाबों का वृत्त नहीं है । विद्वान् संपादकों ने आगे का वृत्त 'फतेहपुर परिचय' नामक एक गाइडनुमा पुस्तक से उद्धृत किया है । अच्छा तो यह होता कि इस बारे में शोध करके उसके आधार पर आगे का वृत्त दिया जाता ।

कायमखानी नवाबों का शेखावटी एवं आसपास की भूमि पर विस्तृत राज्य था । दिल्ली में नवाब सरदारखां दूसरे के समय सैयद बन्धुओं का जोर था । छोटे सैयद हसनखां को सरदारखां कायमखानी की बहिन ब्याही थी अतः इस सम्बन्ध से वह और भी शक्तिशाली हो गया था । एक बड़ी शाही फौज फतेहपुर में डेरा डाले पड़ी रहती थी ।

उधर सैयद बन्धुओं की जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह से शत्रुता थी । इसमें सरदार खां उनकी बराबर सहायता करता था । जयसिंह चाहते हुये भी सरदारखां का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता था ।

आगे चलकर परिस्थिति में परिवर्तन आया । सैयदबन्धु मारे गये । उनके सहायकों को एक-एक कर कुचला गया । फतेहपुर के नवाब सरदार खां पर जयपुर की फौज चढ़ आई जिसमें शेखावत सरदार भी सम्मिलित थे । फतेहपुर के पास मांड्रण नामक स्थान पर लड़ाई हुई जिसमें नवाब पराजित हुआ और उसका राज्य जयपुर के महाराजा के हाथ में चला गया । कामयाबखां थोड़े समय तक नाममात्र का नवाब बना रहा अन्त में उसे भी जाना पड़ा । झुंझुनू एवं आसपास के नवाबों की भूमि छीनली गयी और शेखावतों को इजारे पर दे दी गयी । इस प्रकार कायमखां से लेकर वस्तुतः फतेहखां से लेकर सरदारखां दूसरे तक प्रायः 280 वर्षों से चला आ रहा कायमखानी राज्य मिट गया । संक्षेप में कायमखानी नवाबों का यह वृत्त है । कायमखां रासो का वृत्त विशेषकर प्राचीन वृत्त कुछ विसंगतियाँ लिये हुये प्रतीत होता है । कायमखां के पुत्रों का विवरण देता हुआ रासो मौनखां के बगड़ में बसने तथा कुतुबखां के बारवे में बसने की बात कहता है । बगड़ में उस समय पठानों का सुदृढ़ राज्य था अतः यह संभव नहीं लगता कि मौनखां बगड़ में बसा हो । 'वाकयात' एवं भाट तथा चारण उसे फतेहाबाद (हरियाणा) का हाकिम बताते हैं । वह कभी राजस्थान में नहीं आया । मौनखां के दो पुत्र थे एलमानखां और वाहिद खां । प्रथम पुत्र की संतान एलमाण और दूसरे की मून्याण

कहलाती है । ये दोनों आगे चलकर झुंझुनू आये और यहीं बस गये । कुतुबखां का बारवे में रहना भी संदिग्ध है ।

रासो ने किसी प्राचीन कविता के आधार पर (कवितदेत हैं साख) यह कहा है कि अखन (इख्तियारखां) बड़ा शक्तिशाली सरदार था । उसे आमेर वाले दस लाख और अमरसर के मोकल और शेखा आठ लाख कर स्वरूप देते थे । यह संभव प्रतीत होता है । यहाँ अखन सम्बन्धी एक बात पर चर्चा कर लेना ठीक रहेगा ।

'राव शेखा' नामक पुस्तक में शेखा के हाथ से अखनखां को मरवाने की निराधार कल्पना लेखक ने की है । शेखा की उत्तर दिशा की यात्रा हिसार को मोड़ तोड़कर ढ़ोसी में परिवर्तित किया गया । अलफखां को अखनखां बताया गया । पुराने गीतों में आये अलफखां एवं केसरी सिंह समर में आये अलफखां को बलपूर्वक अखनखां बताया गया । अखनखां की एक रानी निरवाण थी जो शामपुरे (खेतड़ी) की थी । वहीं वृद्धावस्था में उसकी प्राकृतिक मृत्यु हुई थी । उस पर एक मकबरा वहाँ बना हुआ है । अलफखां उसी का प्रतापी पुत्र था जिससे संभवत: शेखा की लड़ाई हुई थी । इतिहास के तथ्यों को किस हद तक तोड़ा मरोड़ा जा सकता है 'राव शेखा' पुस्तक का वृत्त इसका साक्षी है । अखन की संतान आगे चलकर झुंझुनू आ गयी और वहीं बस गई । वे अखन्याण कहलाते हैं । रासो में और भी कुछ कथन हैं जिनके औचित्य में शंका की जा सकती है पर उनका विवेचन यहाँ संभव नहीं है । अखन्याणों की तरह ही भुवाण हैं । ये नवाब भुवनखां की संताने हैं । शम्सखां प्रथम का छोटां भाई नवाब भुवनखां था । यह वीर था अत: हरियाणा के सीमांत भाग पर राज्य की सुरक्षा के लिये इसकी नियुक्ति थी । ये भुवाण बिजावे में रहते थे । आगे चलकर ये फर्रुखाबाद के नवाब बिलौच पठान के पास चले गये जिसने इन्हें गढ़ झूलरी का इलाका दिया । भुवाण भी आज झुंझुनू में यत्र तत्र फैले हुये हैं ।

क्यामखां रासो कायमखानी वंश का सांगोपांग वर्णन प्रस्तुत करता है और भारतीय इतिहास के अज्ञात तथ्यों को उजागर करता है । इसने कई विषयों पर नये सिरे से प्रकाश डाला है ।

रासो ने कायमखानी नवाबों के शेखावतों और पठानों से संपर्क और संघर्ष की बात का प्रकाशन किया है । रासो से ही हमें ज्ञात होता है कि अनेक शेखावत फतेहपुर और कटराथल पट्टियों में बसे हुये थे जिन्हें दौलतखां ने बलपूर्वक निकाल बाहर किया । टोडरमल और अल्खा टकणेत के पराजय की बात भी सर्व प्रथम रासो से ज्ञात होती है ।

कायमखां रासो के पद्यों का यह हिन्दी गद्य में अनुवाद है । लम्बे समय से यह अनुभव किया जाता रहा है कि रासो के पद्यों का सरल गद्य में अनुवाद होना चाहिये ताकि

सामान्य पाठक के लिये यह सुगम हो सके। कायमखानी वंश का वृत्त होने से अनेक कायमखानी इसे पढ़ने को समुत्सुक रहते हैं पर पद्यवृद्ध होने से उनके सामने इसे समझने में कठिनाई आती है।

इन सब बातों को ध्यान में रखकर क्यामखां रासो के पद्यों का यह गद्यात्मक अनुवाद प्रस्तुत किया जा रहा है। आशा है सामान्य इतिहास प्रेमी पाठकों विशेषकर कायमखानी वंश के लोगों को यह अनुवाद अच्छा लगेगा।

मूलपाठ में अशुद्धियों के कारण और कहीं कहीं कवि के आशय को कथन की दुररूहता के कारण ठीक नहीं समझ पा सकने के कारण कुछेक स्थानों में अनुवाद में स्पष्टता का अभाव दृष्टिगोचर होना संभव है। इसका दायित्व अनुवादक सहर्ष स्वीकार करता हुआ प्रिय पाठकों से अग्रिम क्षमा का प्रार्थी है।

डॉ. रतनलाल मिश्र

1

मंगलाचरण के रूप में इस ग्रंथ के कर्ता जान कवि सर्वप्रथम ईश्वर का बखान करते हुये कहते हैं कि उस ईश्वर ने संसार को तथा अपार आकाश, पृथ्वी, पहाड़, पेड़, जल, पवन, नर, पशु और पक्षियों का निर्माण किया। ग्रन्थ की निर्विघ्न समाप्ति के लिये परमपिता का स्मरण भारतीय परम्परा के अनुरूप है।

2

परमात्मा ने इस संसार में तरह तरह की बहुत सी जातियाँ और गोत्र बनाये हैं जिनकी गिनती करना संभव नही है। इस प्रकार संसार के गोत्र और जातियों का निर्माता भी वही ईश्वर है।

3

इसके बाद दूसरे नम्बर पर मैं मुहम्मद[१] का स्मरण करता हूँ जिनके भले के लिये ईश्वर ने यह सारा साज सजाया है।

4

जान कवि कहते हैं कि अब मैं अलफखान का वर्णन करता हूँ। वे मेरे पिता हैं यह सोचकर मैं बात को बढ़ा चढ़ाकर नही कहूँगा किन्तु बिना किसी अत्युक्ति के सत्य बात का ही वर्णन करूँगा।

5

दीवान अलफखान का गोत्र बहुत बड़ा है। चौहान कुल के समान और कोई दूसरा कुल नहीं हैं। जान ने इस पद्य में चौहान कुल की श्रेष्ठता की बात कही है। स्मरण रहे कायमखानी मुस्लिम धर्म स्वीकार करने के पूर्व चौहान वंश के थे।

6

अलफखान के वंश में बड़े बड़े राजा लोग हुये हैं। जान कवि कहते हैं कि मैं इनमें से कुछ का वर्णन कर रहा हूँ। सबका बखान कौन कर सकता हैं।

---

१. पैगम्बर मुहम्मद साहिब इस्लाम धर्म के प्रवर्त्तक

7

इन सब बड़े बड़े राजाओं के वर्णन के बाद मैं अलफखान का वर्णन करूंगा जिसमें यह बताऊँगा कि वे किस प्रकार इस संसार में जीये और अन्त में किस प्रकार मरे ।

8

इस वीरवर अलफखान ने बड़े बड़े शाके[१] किये अर्थात् वीरतापूर्ण कार्य किये । इसने बादशाह के किसी भी काम को अधूरा नही छोड़ा ।

9

उस संसार के बनाने वाले ने सबसे पहले मुहम्मद के नूर को रचा । उसी से आगे चलकर सारे संसार की उत्पति हुई ।

10

इसी नूर से सृष्टिकर्ता ने आकाश, सूर्य, तारे, चन्द्रमा और स्वर्ग का निर्माण किया तथा फरिश्ते बनाकर उन्हें नवी के आधीन कर दिया ।

11

इसी नूर से पृथ्वी, पहाड़, समुद्र, दानव और देवता बनाये । उस अदृश्य परमात्माने अन्त में मनुष्यों की रचना की जिनके अनगिनत भेदों का वर्णन नहीं किया जा सकता ।

12

इसके बाद जब परमात्मा के मन में मनुष्यों के बनाने की इच्छा पैदा हुई उस समय पहले जिनको बनाया गया उनकी कथा आप लोग ध्यान लगाकर सुनिये ।

13

जान कवि कहते हैं मैंने अनेक ग्रन्थों में यही मत पाया है । सबसे पहले आदम पैदा हुये । मिट्टी से उत्पन्न होने के कारण इनका आदम नाम हुआ ।

---

१. शाका शब्द का प्रयोग सामान्य रूप से किया गया है ।

14

जान कवि के कथनानुसार संसार में जितने आदमी हैं वे सभी आदम से ही उत्पन्न हुये है । हिन्दू तथा मुसलमान दोनो ही आदम से पैदा हुये हैं ।

15

ये दोनों हिन्दू और मुसलमान एक ही पिण्ड से उत्पन्न हुये हैं । इनमें रक्त और चर्म का कोई भेद नहीं है । इतना होते हुये भी इनका करणीय अलग-अलग है अतः काम के अनुसार इनके नाम भी भिन्न हैं ।

16

उस आदम से बहुत सी संताने हुयी जिनकी कोई गिनती नहीं कर सकता । पैगम्बर आदम इस संसार में एक हजार वर्षो तक जीवित रहे ।

17

आदम को ईश्वर ने अपना प्रेम दिया अतः वह पैगम्बर हुआ । परमात्मा ने पहिले उसे वैकुण्ठ में रखकर फिर संसार में भेजा ।

18

आदम के जितने पुत्र हुये उसमें सबसे बड़ा सीस हुआ[१] उसने हूर से विवाह सम्बन्ध स्थापित किया तथा वह नबी हुआ । उस पर ईश्वर की बराबर कृपा रही ।

19

यह सीस नौसो बारह वर्ष इस संसार में रहा । उसने कर्ता की सेवा की । इस सेवा-कार्य में उसने जरा भी शिथिलता नही बरती और पूरी लगन से सेवा करता रहा ।

20

इस सीस के बड़ा पुत्र उनूस हुआ । इसने भी ईश्वर की रातदिन शुद्ध मन से सेवा की ।

---

१. जान ने सृष्टि निर्माण की मुस्लिम परम्परा का अनुसरण किया है ।

21

उनूस इस संसार में नौ सो पैंसठ वर्षों तक रहा । इससे संसार में तरुवर, तरल और खजूर पैदा हुये ।

22

उनूस का पुत्र कीनान हुआ । इस कीनान ने नौ सो बासठ वर्षों तक संसार में रहकर सुख का प्रसार किया ।

23

कीनान ने इस संसार में सुन्दर आवास, कोट और किले बनाये । इसके पहिले इस प्रकार के निर्माण सुनने में नहीं आये थे ।

24

कीनान का पुत्र महलाइल हुआ । यह बड़ा रूपवान था । संसार के लोग इसके रूप को देखने के लिये आते थे ।

25

महलाइल का पुत्र यजद हुआ । ईश्वर ने इसे अच्छी समझ नहीं दी । इसने अपने धर्म को छोड़कर एक नया पंथ चलाया ।

26

जान कवि कहते हैं कि इस यजद का पुत्र इदरीस हुआ जो पैगम्बर था । वह इधर उधर घूमकर अपने कार्य करता रहता था, और ईश्वर में भक्ति रखता था ।

27

इदरीस इस संसार में 365 वर्षों तक जीवित रहा । आज तक भी वह स्वर्ग में जिन्दा है और जब तक प्रलय नही होगी तब तक जीवित रहेगा ।

28

इदरीस का पुत्र मसतूस हुआ जिसने अपने धर्म को छोड़ दिया । उसका पुत्र लमक हुआ जो सेवा से हीन था ।

29

मसतूस का पुत्र नूह नवी हुआ जो इस संसार में 950 वर्षों तक जिन्दा रहा । इसने धर्म के पंथ को संसार में अच्छी तरह प्रकाशित किया ।

30

नूह की बातें सब लोग अच्छी तरह जानते हैं । इसका वृत्त ग्रन्थों में प्रकट है । इसी कारण से जान कहते हैं कि मैंने अपनी ओर से इसमें कुछ नही जोड़ा है ।

31

इस नूह के तीन पुत्र हुये जिनके नाम याफस, हांम और सांम थे । इनमें सबसे बड़ा सांम था । उससे छोटा हांम एवं सबसे छोटा याफस था ।

32

सांम के अरबी, रूमी, ईराक, खुरसान, अरबी, ताई, अस, अरी, अजदी और मसरान हुये ।

33

अरा, अरमन, पारसी, नबी और जहान ये सभी सांम के वंशज है । इसी सांम के वंश में चौहान और पठान हुये है ।

34

इसी प्रकार हाम के वंश में निम्नलिखित जातियाँ उत्पन्न हुयी । इनमें उजवफ, हिन्दी, बखरी, हबसी, कुवती सम्मिलित हैं ।

35

याफस के फिरंगी, रूसी, मुगल, तुर्क, चीमा और चीनी हुये ।

36

नूह का बड़ा पुत्र सांम था जिसने धर्म का मार्ग ग्रहण किया। उसका लड़का इमन हुआ। वह भी किसी बात में कम नही था।

37

इरम का पुत्र उज हुआ। उसका पुत्र समूद था। ये सभी काल की ज्वाला से जल मरे अर्थात् समय पाकर मृत्यु को प्राप्त हुये।

38

इसका पुत्र राजा आद हुवा। उसका पुत्र अनाद था। उससे संसार में जुगाद आया जिसके प्रहलाद नामक पुत्र उत्पन्न हुआ।

39

प्रहलाद का पुत्र मेर हुआ। उसका पुत्र मंदिर था। जान कहते है कि मंदिर के घर पर पुत्र रूप में कैलाश उत्पन्न हुआ।

40

इसका पुत्र समुद्र था। उससे फेन हुवा। उसका पुत्र वासिग अतुलित बलशाली था जिसकी समानता राजा बलि और बेन भी नहीं कर सकते।

41

वासिग का पुत्र राहू हुआ जो बड़ा वीर और साहसी था। वह दुर्जन मनुष्य को इस प्रकार पकड़ लेता था जैसे राहू सूर्य को ग्रस लेता है।

42

राहू का पुत्र रावन हुआ। उसके धुंधमार पुत्र पैदा हुआ। यह संसार में चक्रवर्ती सम्राट हुआ जिसकी समानता कोई नही कर सका।

43

धुंधमार के वैभव आदि की कथा सारे संसार में प्रसिद्ध है । मैं इसका कहाँ तक वर्णन करूं । उदय से लेकर अस्त तक की भूमि पर धुंधमार की आन थी । ऐसा वह शक्तिशाली नरेश हुआ ।

44

उसका पुत्र मारीच हुआ जिसका राज्य पूर्व और पश्चिम में था । उसका मुख किरणों की तरह जगमगाता था । उसका तेज सूर्य और मरीचि के समान था ।

45

उसका पुत्र जमदग्नि हुआ जो चन्द की सी कांति से युक्त था । चारों दिशाओं में राज्य करने वाला उसका प्रतापी पुत्र परसुराम हुआ ।

46

परशुराम के सारे युद्धो का वर्णन नहीं किया जा सकता । अगर वर्णन करूं भी तो उस को लिखने वाला कोई नही मिलेगा ।

47

परशुराम का पुत्र सूर हुआ । उसके कांतिवान पुत्र का नाम बच्छ था । इस संसार में जितने चौहान है वे सब बच्छ गोत्री है ।

48

बच्छ का सुपुत्र चाइ हुआ जिसके मुख की कांति चांद की तरह थी अथवा जिसे चन्द्रमा ने प्रेमपूर्वक स्मरण किया । उसका पुत्र चौहान हुआ जिसे ईश्वर का प्रेम प्राप्त था ।

49

चारों दिशाओं में अपनी आन रखने के कारण उसे चौहान कहा जाता था । सारे जंबू द्वीप में चौहानों के बराबर उतकृष्ट गोत्र दूसरा नहीं है ।

50

उनका निकास सांभर से हुआ जिसके बराबर तालाब (झील) दूसरा नही है । सभी लोग चौहान का ही नमक खाते हैं । सांभर से ही नमक उत्पन्न होता है तथा सांभर पर चौहानो का अधिकार रहा है ।

51

सांभर की लवणयुक्त भूमि में लवण उत्पन्न होता है । चौहान इस भूमि से उत्पन्न नमक को खाते हैं अथः इसकी लज्जा की रक्षा में वे कोई कोताही नही करते । कोई भी चौहान इस लवण को लजाता नहीं है । भाव यह है कि इस भूमि की रक्षा में वे सर्वस्व समर्पण की भावना रखते हैं ।

52

जान कवि कहते हैं कि जैसे देवताओं में देवराज इन्द्र उत्कृष्ट है, हाथियो में गजराज श्रेष्ठ है, पक्षियों में गरूड सर्वोपरी है, ग्रहों में सूर्य का ताप उत्कृष्ट है, नदियों में समुद्र, नौकाओं के समूह में जहाज, ताराओं में चांद , पत्तो में जैसे पान, पहाड़ों में सुमेरू पर्वत, दरगाहों में अजमेर, खानो में सोने की खान, फूलो में गुलाब, लाल रत्न कणो में लाल श्रेष्ठ है उसी प्रकार राजाओं में चक्रवर्ती चौहानों का गोत्र श्रेष्ठ है ।

53

चौहान कल्पवृक्ष के समान है जिनकी अनंत शाखायें हैं । जान कवि कहते हैं कि मैं जितनी जानता हूँ उन्हीं शाखाओं का बखान कर रहा हूँ ।

54

क्यामखानी, देवड़े, सीसोदिये, भदौरिये, चितोरिये, बाघोर, मल, खीची, निरबान, चाहिल, मोहिल, माहों, दूगर, बालेसे, जौर, सोनगरे, गिलखोर, मांदलेचे, गुहिलोत, उमट, सांचोरे, गोधे, राकासिये, हाले, झाले, दाहिमे, गूंदल, बालौत, हाड़े, छोकर, घंघेरे, खैल आदि सभी शाखाओं का मूल चौहान वंश है ।

55, 56

इनके अलावा बारोरिये, धुकारने, चीबे, गोव लवाल, हुल तावर, डल, होल, पंडसूर, आसोफ, पीपारे, गोतम, दागी, मरिल इन सब शाखाओं का मूल चौहान वंश है ।

57

चौहान वंश में अनेकों छत्रपति राजा हुयें । इनकी कथा कह रहां हूँ तथा इनके नामों का भी उल्लेख कर रहा हूँ ।

58

दिल्ली में मानकदे चौहान ने दो वर्ष छह महीने और सतरह दिनों तक राज्य किया ।

59

इसके बाद दिल्ली पर देवराज चौहान ने दो वर्ष तीन मास और सतरह दिनों तक शासन किया ।

60

इसके पीछे दिल्ली में रावलदे सुल्तान हुआ जिसने नौ वर्ष सात दिनों तक राज्य किया ।

61

इसके बाद दिल्ली में देवसिहं चौहान हुआ जिसने छह वर्ष तीन महीनों तक राज किया ।

62

इसके पश्चात दिल्ली पर स्योदेव ने दस वर्ष एक महीना और बाईस दिनों तक राज्य किया । सभी लोगों ने इसकी सेवा की ।

63

इसके बाद कुल की लज्जा रखने वाले बलदेव ने दिल्ली पर पांच वर्ष और ग्यारह दिनों तक राज्य किया ।

64

इसके बाद दिल्ली पर पृथ्वीराज ने शासन किया । इसका शासन काल 22 वर्ष 11 दिनों तक रहा ।

65

इसने काबुल से दूब मंगाकर दिल्ली में लगायी । इसको घोड़े खाते रहते पर वह बार बार हरी हो जाती थी ।

66

पृथ्वीराज के वीर कार्यों का वर्णन मुझसे नही हो रहा है । उनके शाकों (वीर कृत्यों) की गिनती भी मैं नही कर सकता उन्हें ठीक तरह से समझाना तो अलग बात है ।

67

इस चौहान वंश में और भी अनेक वीर राजा हुये हैं । इनमें वीसल,[१] आना[२] और हठी हम्मीर[३] हैं ।

68

सारे हिन्दुस्तान में जितनी राजपूतों की जातियॉ है उनमें निश्चय ही चौहान गोत्र सबसे बड़ा और श्रेष्ठ है ।

69

चाहुवांन का पुत्र मुनि हुआ इसके अलावा अरिमुनि, मानक और जयपाल हुये । इनमें एक अमर योगी हुआ तथा शेष तीन राजा हुए ।

---

१. वीसलदेव चतुर्थ
२ . अर्णोराज
३ . रणथम्भौर का हम्मीरदेव

70

मानकदे के कुल में पृथ्वीराज हुआ जो सोमेश्वर का पुत्र था। जितने राठ चौहान हैं वे सब अरिमुनि के वंशज हैं।

71

चाहुवांन के मरने पर उसकी जंगह मुनि बैठा। वह कितने ही दिन कुचौरे नामक स्थान पर रहा।

72

मुनि के राई हुआ जो राजा बना। उसके कहकलंग हुआ जो शूरवीरों के गोत्र की रक्षा करने वाला था।

73

इसके घंघराय हुआ जिसने घांघू [१]नामक गांव बसाया। उसने अपनी भुजाओं के बल पर जाति में अच्छा नाम कमाया।

74

एक दिन घंघराय शिकार खेलने गया। उसने सुन्दर हिरण के बच्चे को बाग में चरते हुये देखा।

75

राजा के मन में इच्छा हुई कि इसके गले में धनुष डालकर इसे पकड़ लिया जावे। उसने सारे दल को वहीं छोड़ा और आप अकेला मृगशिशु को पकड़ने चला।

76

घंघराय तब रथ छोड़कर घोड़े पर सवार होकर मृग शावक के पीछे चले। आगे आगे मृगछौना भागे जा रहा था।

---

१. घांघू गाँव वर्तमान में चूरु जिले में पड़ता है ।

78

जब बहुत देर हो चुकी और राजा लौटकर नहीं आया तो सारे सेवक व्याकुल होकर उसे जंगल में खोजने लगे। वन में सब जगह राजा की खोज में सेवक घूमते रहे। उनके शरीर और मन दुखी थे। इन्हे अनेकों प्रकार की चिंतायें सता रही थी जिनकी कोई गिनती नहीं थी।

79

अब राजा की बात सुनो। हिरण को देखकर राजा के मन में बड़ा चाव हुआ। उसने घोड़े को दौड़ाया। इस प्रकार घोड़ा और हिरण आगे पीछे दौड़ने लगे।

80

इस प्रकार मृग राजा के आगे भागता रहा। अचानक वह मृग छौना लुहागर[१] (शेखावाटी का प्रसिद्ध तीर्थस्थल) के पहाड़ों में छलकर अदृश्य हो गया। इस प्रकार शिकार हाथ से निकल जाने पर राजा उदास हुआ।

81

राजा ने हिरण को बहुत ढूंढा पर उसे कहीं मृग दिखायी नहीं दिया। इस पर राजा एक वृक्ष की छायां में बैठ गया। इसके नेत्रों में जल भर आया।

82

वहां पर सरल और तरल वृक्ष खड़े थे तथा गर्म जल व निर्मल कुण्ड था। वहां अप्सराओं का समूह नहाने के लिये आया था। ये अप्सरायें हरिण के समान नेत्रों वाली तथा चन्द्रमा के समान मुखवाली थीं।

83

चार अप्सरायें थीं जिनकी अलग अलग छवि थी। उनके अंग से लगने पर पानी भी अधिक सुन्दर हो उठा था।

---

१. लुहागर (लोहगिल) शेखावाटी का प्रसिद्ध तीर्थस्थल हैं।

84

वे रूपमती अप्सरायें तालाब में स्नान कर रही थीं । वे अतीव सुन्दर स्त्रियां थीं । जान कवि उनके सौन्दर्य की उपमा देते हुये कहते हैं । उनके अंग की चमक दमक ऐसी लगती थी मानो काले बादलो में बिजली चमक रही हो । यहाँ क्रमंक की जगह मूल पाठ में चमक होना चाहिये । अथवा उनके तन की कांति इस प्रकार शोभित होती है मानो चन्द्रमा की परछाई जल के बीच दिखाई दे रही हो । अथवा ऐसा प्रतीत होता है मानो जल में प्रकट होने वाली उनकी अंग कांति जल में लगी अग्नि का प्रतिबिम्ब हो । जल में लगने वाली अग्नि बड़वानल कहलाती है ।

85

उन अप्सराओं ने तालाब की पाल पर अपने वस्त्र रख दिये और स्नान के लिये जल में प्रविष्ट हो गयीं । राजा घंघ ने अपनी इच्छा को पूर्ण करने के लिये उनके वस्त्र उचक लिये ।

86

उन अप्सराओं ने राजा को वस्त्र लेते हुये जब देखा तो वे बड़ी दुखी हुई और मुरझा गयी । उस समय उनकी शोभा उस कमल की तरह मंद हो गयी जो सूर्य के छिपने पर कुम्हला जाता है ।

87

उन अप्सराओं के नेत्र आंसुओ से पूर्ण हो गये थे । उनका हृदय धकधक कर रहा था । मुख मुरझा गया था । अब वे अप्सरायें बिना वस्त्र उड़ नहीं सकती थीं । वे पूरी तरह निर्वस्त्र थीं ।

88

उन्होने राजा से कहा कि हम नग्न हैं इस लिये हमारे वस्त्र हमें दे दो । हम नंगी खड़ी लाज कर रही है तथा हमें बड़ा कष्ट हो रहा है । तुमसे प्रार्थना करते हुये हमारी जीभ थक चुकी है पर हमारी विनती को सुनकर भी तुम्हारे कान नही थके । हम स्नान करने हेतु यहां आयी हैं अतः हमें जाने दो । हमें रोकने में कौनसा पुण्य है । हम अबतक जल को ही अपना वस्त्र बनाकर खड़ी रही हैं इस लिये अब हमारे वस्त्र हमें दे दो ।

89

तब राजा घंघ ने उनसे कहा कि सत्य बात यह है कि अगर तुम मे से एक मुझसे शादी करेगी तभी तुम तुम्हारे शरीर को वस्त्रों से ढक सकोगी ।

90

तब उन अप्सराओं ने राजा से कहा कि यह बात संभव नहीं है । तुम मनुष्य हो और हम अप्सरायें हैं । हमारे और तुम्हारे गौत्र और जाति भिन्न-भिन्न हैं ।

91

अप्सराओं ने राजा को समझाते हुये कहा कि तुम मनुष्य हो और हम अप्सरायें हैं अतः यह बात बन नही सकती । अब तक किसी भी मनुष्य ने क्या रात और दिन को एक साथ रहते देख़ा है । तुम्हारा और हमारा साथ इसी तरह का है ।

92

इस पर राजा ने कहा कि तुम्हें मन में एक बात अच्छी प्रकार समझ लेनी चाहिये कि जब शरीर में प्रेम उत्पन्न होता है तो जात और गोत्र का कोई ख्याल नही करता । ऐसी स्थिति में जात और गोत्र गौण हो जाते हैं ।

93

मै जब तक संसार में जीवित रहूँगा तुमसे अलग नही होवूंगा ।[१] अगर तुम जीव हो तो मैं अंग हूं और तुम अगर घट होती मैं उसकी परछाई हूँ ।

94

राजा ने कहा कि तुम मुझे अपने में मिलालो जो तुम्हारे साथ उड़ता फिरता रहूँ या फिर मैं तुम्हे मनुष्य बनालूं पर बिना तुम्हारे साथ सम्बन्ध स्थापित किये मैं वस्त्र नहीं दूँगा ।

---

१ यहां मूल पाठ अशुद्ध प्रतीत होता है ।

95

तुम किसलिए विलाप कर रही हो। तुम चाहे जितना रो लो मुझे तुम पर कोई दया नहीं आयेगी। अगर मैं तुम्हे वस्त्र न दूं तो तुम्हारा मन बदल जावेगा इसलिये मैं तुम्हे वस्त्र कैसे दूँ।

96

अप्सराओं ने मन में सोचा कि यह जब तक हमें वस्त्र नहीं देगा जब तक हम में से किसी एक को नहीं चुन लेगा।

97

यह हमें हमारे वस्त्र दे नहीं रहा है यद्यपि हमने अनेकों प्रयत्न किये हैं। अब हम कितनी देर जल में निर्वस्त्र खड़ी रहें अतः अच्छा है कि हममें से एक इसको दे दें।

98

तब उन अप्सराओं ने राजा से कहा कि हमारे वस्त्र हमें दे दो और जिससे तुम्हारे नेत्र उलझे हैं उस एक को तुम चुन लो।

99

तब उन अप्सराओं में जो सबसे छोटी थी उसको राजा ने चुन लिया। उस समय राजा को ऐसा संतोष हुआ जैसा जंगल में भटकते प्यासे आदमी को जल मिलने पर होता है। राजा अप्सरा को पाकर बड़ा आनन्दित हुआ।

100

राजा ने उनसे प्रतिज्ञा करवाके उनके वस्त्र लाकर दे दिये। इसके बाद तरह तरह के वेश सजाकर वे अप्सरायें राजा के सामने उपस्थित हुईं।

101

तब उन्होंने रीति के अनुसार विवाह करके एक अप्सरा राजा को दे दी । यह विवाह अप्सराओं की रीति एवं विधि से हुआ । राजा उस अप्सरा को अपने साथ ले चला । इस प्रकार उसके मन की इच्छा पूरी हुई ।

102

जान कवि कहते है इस प्रकार फल लेते सुहारी भी प्राप्त कर ली । राजा ने हिरण का पीछा किया और बदले में मृगनयनी प्राप्त करली । यह विधाता का वरदान था ।

103

उस अप्सरा से तीन पुत्र उत्पन्न हुये जिनके नाम कन्ह, चन्द और इन्द थे । ये तीनो भाई बड़े सुकुमार थे । ये तीनों ही राजा बने ।

104

चंद ने चंदवार [१] नगर बसाया और इंद ने इन्दौर नगर की स्थापना की । कन्ह अपने पिता की गद्दी पर बैठे ।

105

घंघराय और अप्सरा ने दीर्घकाल तक सुख पूर्वक जीवन बिताया । अन्त में वे मृत्यु को प्राप्त हुये क्योकि संसार की यही रीति है । जो जन्मता है वह मरता है ।

106

अन्त में कन्ह भी समय पाकर मृत्यु को प्राप्त हुआ । इस पर उसकी जगह अमरा जो चौहानों में सिरमोर था राजा हुआ और कन्ह की गद्दी पर बैठा ।

107

कन्ह के चार पुत्र थे जिनके नाम अमरा, अजरा, सिधरा और बछरा थे ।

---

१. संभवत चन्देरी से तात्पर्य है ।

108

अजरा से चाहिल उत्पन्न हुये, सिधरा से जौड़ उत्पन्न हुये, बछरा से मोहिलों का सूत्रपात हुआ और अमरा से चौहान उत्पन्न हुये ।

109

अमरा का पुत्र जेवर हुआ जिसने संसार में राज्य किया । बहुत दिनों तक राज्य करने के बाद अन्त में मृत्यु को प्राप्त हुआ क्योंकि इस संसार में कोई भी अजर अमर नहीं है ।

110

उसके गूंगा, वैरसी, सेस और धरह नामक चार पुत्र थे । इन्होंने कितने ही वर्षों तक राज किया और अन्त में संसार को छोड़कर चल दिये ।

111

गूंगे के नानिग नामक पुत्र हुआ । सेस निस्संतान मरा । धरह के दो पुत्र हुये जिनके नाम भोथर और भरह थे ।

112

बरसी का पुत्र उदयराज हुआ । उसका पुत्र जसराज था । उसके पुत्र का नाम केसो राय था जो सब कार्यो के लिये समर्थ था ।

113

विनयराज और हरराज केसोराम के पुत्र थे । जान कवि कहते हैं कि हरराज की संताने पर्वतीय प्रदेश में बसती हैं ।

114

विजयराज के पुत्र का नाम पदमसी था । उसका पुत्र पृथ्वीराज हुआ । इसने खूब अच्छी तरह शासन किया ।

115

उसका पुत्र लालचन्द हुआ। उसका लड़का अजयचन्द था। उससे गोपाल उत्पन्न हुआ जो लोगो के कष्टो को दूर करने वाला था।

116

उसका पुत्र जैतसी हुआ जिसकी समानता कोई नही कर सकता था।उसका पुत्र पुन्यपाल हुआ। वैसा पुत्र पुण्य से ही प्राप्त होता है।

117

जैतसी के मूलराज, असरथ, दौंका, सांगा, रातू,पातू और महियल नामक पुत्र हुये।

118

पुन्यपाल का पुत्र रावन उसी का प्रतिरूप था। उसके तिहुनपाल नामक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसने अपने गोत्र की लज्जा रखी।

119

तिहुनपाल का पुत्र मोटेराय था जो बड़ा समर्थ था। उसने रात दिन सुखपूर्वक ददरेवे में राज्य किया।

120

उसके कर्मचन्द नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसको बादशाह ने मुसलमान बना लिया और उसका ऩाम क्यामखां रखा।

121

मोटेराव के चार पुत्र थे। क्यामखां, जैनदी, सदरदी और जगमाल। इनमें तीन मुसलमान हुये और जगमाल हिन्दू रहा।

क्यामखान को बंखान

122

अब मैं कर्मचन्द की कथा का वर्णन करूंगा। जिस प्रकार विधाता ने उसे हिन्दू से मुसलमान बनाया। एक दिन कुंवर कर्मचन्द खेलता हुआ घूम रहा था तथा मुख से अच्छे वचन बोल रहा था।

123

एक दिन सुबह ही सभी लोगों को भाई बान्धवो को साथ लिये शिकार के लिये चढा। उसने बहुत से सावर, हिरण और रोज देखे। सभी उनको पकड़ने को ललचाये।

124

सभी शिकार के मद में मस्त थे अतः इधर उधर पशुओं की खोज में भटक रहे थे और वे रास्ता भूल गये।

125

करमचन्द ने घूमते हुये एक वृक्ष देखा। वह बहुत थका हुआ था अतः उस वृक्ष की डाली में घोड़ा बांधकर शरीर की थकावट दूर करने के लिये वृक्ष की छांया में सो गया।

126

इस समय उसे नींद आ गयी और वह वहां सो गया। दोपहर होने पर पेड़ की छांया ढल गयी। फिरोजशाह तुगलक दिल्ली का सुल्तान था। चारों दिशाओ में उसकी आन थी।

127

फिरोजशाह हिसार में आया। वहां से एक दिन शिकार करने के लिये निकला। चलता चलता वह वहां आ निकला जहां कुंवर कर्मचन्द वृक्ष के नीचे सो रहा था।

128

और सारे वृक्षों की छाया दोपहर होने पर ढल गयी थी पर जिस वृक्ष के नीचे कर्मचंद सोया हुआ था उसकी छाया नही ढली थी । यह आश्चर्य जनक बात देखकर बादशाह बड़ा भ्रमित हुआ ।

129

बादशाह ने सैयद नासिर को पास बुलाया और जो कुछ देखा था वह कह सुनाया । बादशाह और सैयद दोनों को यह बात देखकर बड़ा अचरज हुआ । उन्होंने समझ लिया कि यह कोई महापुरूष है ।

130

उन्होंने कहा कि इस करामाती पुरूष को जगाकर हम इसके चरण छूयें । आज हमारा सोया भाग्य जग उठा है । उन्होंने साहस करके कुंवर कर्मचन्द को जगाया पर उन्हे यह देखकर बड़ा भ्रम हुआ कि यह पुरूष तो हिन्दू है ।

131

उनकी मान्यता थी कि हिन्दुओं में करामात नहीं होती । इसको खुदा की यह देन कैसे मिली । सैयद ने कहा मेरे मन में ऐसी बात आती है कि अन्त में यह मुस्लिम पंथ को ग्रहण करेगा ।

132

उसे उठाकर उन्होंने पूछा तुम्हारी क्या जात है और तुम कहां रहते हो । इस पर कर्मचंद ने उत्तर दिया मेरे स्थान का नाम ददरेवा है तथा मेरे पिता का नाम मोटेराव है ।

133

हमारा वंश चौहान है तथा मेरा नाम कर्मचंद है । तब बादशाह ने उसे पास बुलाया और उसे प्रेम से अपने गले लगाया ।

134

बादशाह ने कहा कि चौहान मेरे साथ चलो । मैं तुमको मान सम्मान दूंगा ।

135

उसने कर्मचन्द को बदलकर उसका नाम क्यामखां रखा । बादसाह उसे अपने साथ लेकर अपने स्थान पर आया ।

136

तब सैयद नासिर ने इस प्रकार कहा कि तुमने मेरे भाग्य से ही इसे प्राप्त किया है । इसे मुझे दे दो । मैं इसे पढ़ाऊंगा और योग्य बनाकर इसे तुम्हारे पास लाऊंगा ।

137

बादशाह ने इस पर कहा कि हमने यह रत्न प्राप्त किया है । इसे संभाल कर रखना । क्यामखान के साथ जो शिकारी चढ़े थे वे लौटकर अपने डेरे चले गये ।

138

इधर जब क्यामखां घर नही आया तो ददरेवे में बड़ी हलचल मची । इस समय सैयद ने एक संदेश वाहक भेजा जो इसी बीच आ पहुंचा ।

139

इस पर मोटेराव हिसार गया बादसाह ने उससे बहुत प्रेम किया । उसने कहा तुम्हारे जो मनमें आवे सो लेलो पर कर्मचंद मुझे दो ।

140

कर्मचंद के मुसलमान होने की जरा भी चिंता मत करना । मै इसे बड़े प्रेम से मित्र और पुत्र की तरह रखूंगा । मैं इसे पांच हजारी मनसबदार बनाऊंगा । मैं सत्य कहता हूं कि यह हमारा सहारा बनेगा ।

141

राव ने प्रणाम कर कहा कि दिल्ली पति जो करे वही न्याय है । जो बादशाह की सेवा करेगा वही बढ़ेगा । वास्तव में फूल वही श्रेष्ठ है जो शिवजी पर चढ़ता है । शेष तो व्यर्थ हैं ।

142

बादशाह जब दिल्ली जाने लगा तो उसने क्यामखां को सैयद को दे दिया ।

143

मीरां के बारह पुत्र थे उनमें क्यामखां सर्वश्रेष्ठ था । ये सब एक स्थान में पढ़ने जाते थे तथा बाल स्वभाव के कारण कभी कभी आपस में लड़ बैठते ।

144

एक दिन बालक रोते हुए तथा लड़ते हुये आये । ये बालक क्रोध से भरे हुए थे । उस दिन हांसी से कुतूबनूरदी नूरजहां वहां आये हुये थे ।

145

उन्होंने क्यामखां को उदास देखकर अपने पास बुला कर बिठाया । उस समय पीर ने कहा कि तुम किस लिये रोते हो ।

146

मै थप्पड़ मारूं और दंड स्वरूप नमक खिलाऊँ पर चमत्कारी बालक को कौन मारे । तब नूरदी नूरजहान ने नींबू और गंदोरा लाकर क्यामखान को दिये ।

147

तब इनमें से जो क्यामखां के मन को अच्छा लगे वे उसने ले लिये । पहले नींबू लिये फिर गंदोरा । इस पर नूरदी नूरजहान ने कहा कि इनके गोत्र में पहले खट्टे होकर फिर मिट्ठे होने की रीति रहेगी ।

148

कितने ही दिन पढ़ते पढ़ते बीत गये और क्यामखां पूरी तरह सब कुछ पढ़ गया । तब सैयद ने कहा कि आप नमाज पढ़ो, सुन्नत करा वो और दीन में शामिल हो जावो ।

149

तब क्यामखां ने विनती कर कहा कि मेरा भी मन इस्लाम धर्म में आने का है पर मुझे निरन्तर यह चिंता लगी रहती है कि धर्म परिवर्तन के बाद हमसे सम्बन्ध कौन करेगा।

150

नासिर सैयद करामातों से पूर्ण थे। उनकी कही हुई बात दूर तक सत्य होती थी। उसने क्यामखां को कहा कि इस प्रकार की चिंता से पीड़ित मत होवो और मेरे वचनो को सत्य समझो।

151

सैयद ने कहा कि संसार में बड़े बड़े रावराजा होंगे। वे प्रेम पूर्वक तुम्हें अपनी लड़की देंगे। मंडोवर का राव राठोड़ होगा वह अपनी लड़की का डोला तुम्हारे घर भिजवायेगा।

152

बहलोल दिल्ली का सुल्तान होगा। इसे निश्चित जानो कि वह अपनी लड़की तुम्हे देगा। मीरा के मुखसे जो वचन निकले थे वे आगे चलकर सत्य सिद्ध हुए।

153

तब क्यामखां दीन में आ गया अर्थात् विधिवत मुस्लिम धर्म स्वीकार कर लिया। अब वह निर्मल मोमन मुसलमान हो गया। जब सैयद ने इसे सब बातो में शुद्ध पाया तो उसे दिल्ली ले गया।

154

बादशाह उसे देखकर प्रसन्न हुआ। उसने मनसब देकर सैयद को ऊंचा बड़ा किया। इस प्रकार बादशाह और सैयद नासिर का प्रेम दिनानुदिन बढ़ता रहा।

155

कालान्तर में मींराजी रोगी हुये तो उनकी कुशल क्षेम पूछने बादशाह घर पर आया। उस समय मींरा ने कहा कि मैने क्यामखां को पुत्र बनाकर रखा है।

156

जब कभी मैं मर जावूं तो मेरा मनसब और मेरा माल इस क्यामखां को देना । मेरे पुत्रो में कोई योग्य नहीं है जो तुम्हारी सेवा कर सके ।

157

बादशाहं ने कहा ठीक है वास्तव में क्यामखां ही टीके के लायक है । बादशाह उठकर अपने डेरे पर आ गये । उधर मींरा ने अपने सभी पुत्रो को बुलाया ।

158

मींरा ने अपने पुत्रो से कहा कि मैने क्यामखां को बड़ाई दी है अर्थात् बड़ा माना है । उसे तुम लोगो का सिरमोर बनाया है । तुम इसे मेरी जगह समझना ।

159

अपने पुत्रों को शिक्षा देकर सैयद ने क्यामखां से कहा कि इन्हे प्रेम से रखना ऐसा कहकर मींरा चले गये क्योकि इस संसार में कोई भी अमर नही रहा है ।

160

जब मींरा मर गये तो क्यामखा को इसका मनसब और संपति मिल गयी ।

161

बादशाह ने कृपा करके क्यामखां को बावनी दी । उसने उसे बड़ा उमराव बनाया और हाथी घोड़ा और सिरोपाव दिया ।

162

बादशाह के मन में ठठ्ठा लेने की इच्छा उत्पन्न हुई तब उसने दया कर क्यामखां को दिल्ली की देखभाल के लिये रखा ।

163

क्यामखां को फौजदार बनाकर उसे बादशाह ने दिल्ली का भार सौंप दिया । वह स्वयं दल बल सजाकर ठठ्ठा की ओर रवाना हो गया ।

164

सभी देशों में यह बात चली कि बादशाह दिल्ली में नहीं हैं । ऐसी अवस्था में क्यामखां को छोड़कर दिल्ली में कोई नही रहा अर्थात् यह गुरूतर भार दूसरे किसी ने नही संभाला ।

165

मुगल विलायत से चलकर हिंद पर कब्जा करने हेतु आये । उन्होंने छल बल से दिल्ली को आकर घेर लिया ।

166

यह बात सुनकर क्यामखां चौहान बड़ा उत्तेजित हुआ । वह निसान लगाकर सामने लड़ने को आया ।

167

युद्ध का शब्द सुनकर जहां वीरों के मन में उत्साह का संचार हुआ वहीं कायर लोगो का शरीर कांपने लगा । धौंसा धौं धौं शब्द करके बज रहा था । ऐसा शब्द सुनने को कब मिल सकता है ।

168

चौहान क्यामखां बहुत सेना सजाकर मुगलों से युद्ध करने को आ खड़ा हुआ । शुत्रुओं को मारने के लिये उसने निशान सजाये । वह इस प्रकार चला जैसे शत्रुरूपी वृक्ष को मूल से उखाड़ने के लिये गयन्द चलता है । हाथी के दंतो को उखाड़ने के लिए कर्ता ने इस वीरवर को पैदा किया । यह क्यामखां शत्रु दल पर इस प्रकार टूट कर पड़ता है जैसे मृगो के झुंड पर चीता ।

169

विलायत से आये मुगल और दि्लली से आया क्यामखां लड़ाई कर रहे हैं । एक ओर वीर मुगल जूझ रहे हैं तो दूसरी ओर वीर चौहान की सेना जूझ रही है ।

170

क्यामखां चढ़ा । उसने हाथ में दुधारी तलवार ली । इधर वीरवर क्यामखां था तो उधर शक्तिशाली मुगल थे ।

171

युद्ध के बाजे बज रहे हैं, निशान दमक रहे हैं और रण में लड़ने वाले वीर जूझ रहे हैं । उन्होंने हाथ में धनुष ले रखा है और बाण चला रहे हैं ।

172

वीरो के जोड़े आपस में लड़ रहे हैं । वे रणनदी को पार करना चाहते हैं । वे एक दूसरे को झकझोर रहे हैं । पीछे हटाने की हर कोशिश के बावजूद पीछे नहीं हट रहें हैं । पीछे नहीं फिरते हैं । वे वीरता से शत्रु को तोड़ डालते हैं और धूल में मिला देते हैं । भयंकर हाथियो को मार डालते हैं । इनकी संख्या में निरन्तर कमी हो रही है ।

173

रण में जूझने वाले वीर बहुत लड़े । बहुत से यौद्धा शूरवीर रण में खेत रहे । उनके रक्त से सारी भूमि लाल हो उठी । इस प्रकार युद्ध पूरा हुआ । भयंकर शस्त्रों के लगने पर उनका सारा अभिमान छिन्न भिन्न हो गया । मुगलो की सेना हार गयी । इनके वीर भाग गये ।[१]

174

चौहान क्यामखां बड़ी वीरता से लड़ा । उसका यश संसार में छा गया । हाथी और घोड़े कटाकर मुगल पीछे हट गये । जब सुल्तान ने यह सुना कि खान जीत गया है तब उसका बहुत सम्मान किया एवं तरक्की दी ।

---

१ 'करे रज तोरे' का अर्थ स्पष्ट नही हैं । संभवतः पाठ ठीक नही है ।

175

जो मुगल लड़े वे मारे गये और जो बचे वे भाग गये। वे बिचारे मेंढकों की तरह हैं जबकि क्यामखां काले नाग के समान है जो उन्हे खा जाता है।

176

क्यामखां नें मुगलों के इराकी और तुर्की घोड़ों को द्रव्य के साथ लूट लिया। यह सब उसने बादशाह के पास भेज दिया अपने पास कुछ नही रखा।

177

बादशाह ने खुश होकर उसे आदर सम्मान दिया। उस समय उसने क्यामखां का नाम खानजहॉन रखा।

178

बादशाह ने क्यामखां को हाथी, घोड़े और सिरोपाव दिये तथा उसके मनसब में वृद्धि की और उसे बड़ा उमराव बनाया।

179

बादशाह फिरोजशाह जितने दिन जीवित रहा उतने दिन क्यामखां का सम्मान दिनानुदिन बढ़ता रहा।

180

जब बादशाह फिरोजशाह तुगलक मृत्यु को प्राप्त हो गया तो उसकी जगह महमद महमूद ने अपनी आन संसार में फिराई।

181

जिस प्रकार उसका पिता नित्य क्यामखां से प्रेम करता था उसी तरह इसने भी क्यामखां को इस तरह रखा जैसे कोई अपने भाई या मित्र को रखता है ।[१]

182

जब महमद महमूद की मृत्यु हो गयी तो उसकी जगह उसका पुत्र नसीरखां गद्दी पर बैठा ।

183

उसने भी क्यामखां से प्रेम के सम्बन्ध बनाये रखे । इन्होंने यह बात पूरी तरह सोच विचार कर की ।

184

जब नसीरखां रोगी हो गया तो उसका स्वभाव बदल गया । ऐसी स्थिति में मल्लूखां को छोड़कर दूसरा कोई उसके निकट नही जाता था ।

185

मल्लूखां गुलाम था जिसे फिरोजशाह तुलगक ने पाल पोस कर बड़ा किया था । उसको आगे चलकर प्रधान बनाया गया था । यह बात सभी जानते हैं ।

186

जब नसीरखां मर गया तो लोगो में यह चर्चा चली कि इस मल्लू गुलाम ने गद्दी के लिए बादशाह की हत्या की है ।

---

१ रासोकार जानने क्यामखां के मुगलों से लड़ने और विजय पाने की बात का विस्तार से उल्लेख किया है । वस्तुस्थिति यह है कि फिरोजशाह की गद्दीनशीनी के समय मुगल दिल्ली के नजदीक देखे गये । तत्काल उनपर आक्रमण किया गया । इसमें सुल्तान स्वयं मौजूद था । मुगलों की करारी हार हुई । इसके बाद फिरोज के शासन में मुगलों से कभी युद्ध नही हुआ । देखें तारीखी फिरोजशाही-शम्स-ई-शिराज अफीक (डाउसन) । रासो के अनुसार क्यामखां को खानजहान की पदवी मिली । इस पर संपादक की टिप्पणी पृष्ठ 111 देखे ।

187

मनुष्य की बुद्धि उसके वंश के अनुसार होती है ऐसी बात चतुर लोग बराबर कहते आ रहे हैं । अगर नीचे कुल कें व्यक्ति को मुँह लगा लेते हैं तो इसका अंत अच्छा नही होता ।

188

नीचे कुल का व्यक्ति सुधरता नहीं है चाहे जितने प्रयत्न कर लिये जावे । अगर गुलाम दीवान हो जाता है तो वह सिर के बल चलने लग जाता है । अर्थात् इसकी गति उल्टी हो जाती है ।

189

जिसका पृष्ठभाग भारी नहीं होता अर्थात् जो उच्चकुल का नहीं होता वह पग छोड़कर चला जाता है । वह कुल की लाज का कोई ध्यान नहीं रखता । बिना पूंछ की गुड़िया जिस प्रकार उलट कर सिर के बल गिर जाती है उसी प्रकार का व्यवहार नीच कुल का व्यक्ति करता है ।

190

बादशाह नसीरखां निस्संतान मर गये और गद्दी पर बैठने वाला कोई नहीं रहा । उस समय मल्लूखां के मन में बादसाह बनने की इच्छा उत्पन्न हुई ।

191

सारे राज के कामदार मल्लू से प्रेम रखते थे । इन्होंने कहा कि इस सूने तख्त पर बैठकर तुम बादशाह बनो ।

192

क्यामखां ने जब यह बात सुनी तो उसने क्रोध में भरकर सबसे यह बात कही कि बादशाह के तख्त पर गुलाम कभी नहीं बैठ सकता ।

193

बादशाह उत्तम व्यक्ति को बनाना चाहिये जो अच्छे कुल में जन्मा हो । अगर कोई गुलाम का चाकर हो जाता है तो उसकी जरा भी शोभा नहीं होगी ।

194

इतना सुनकर प्रधान ने गढ़ किले की चाबी लाकर दीवान क्यामखां के आगे रख दी ।

195

सबने मिलकर क्यामखां से कहा कि अगर ऐसी बात है तो आप तख्त़ पर बैठो और अपनी आन फिरावो ।

196

तुम दिल्ली के बादशाह हो और हम सब तुम्हारे सेवक हैं । इसलिये अब देर न करो तख्त पर बैठो अगर बादशाह बनना चाहते हो ।

197

उन्होंने क्यामखां से कहा कि तुम्हारे सात पूर्वज दिल्ली के तख्त पर बैठ चुके हैं । इस प्रकार तुम्हारे बादशाह बनने में कोई नयी बात नही है ।

198

इस पर क्यामखां ने कहा कि मुझे दिल्ली की बादशाहत नहीं चाहिये । मुझे कर्ता की सौगन्ध अगर मैं गद्दी पर बैंठू ।

199

उसने प्रधानों से कहा कि आप लोग यह न समझें कि मेरे मन में दिल्ली लेने की इच्छा है । दो दिनों के सुख के लिये कौन निरन्तर दुख को ग्रहण करे । इसका यह भी अर्थ हो सकता है कि कौन अपनी संतान हेतु दुख मोल ले ।

200

पीछे बादशाह बनने में चित्त में क्रोध उत्पन्न होता है । बादशाह अपनी संतानो को गद्दी जाने के डर से जीवित नहीं छोड़ते ।

201

यह सुनकर प्रधानों ने क्यामखां से कहा कि अगर आप दिल्ली की गद्दी पर नहीं बैठते हो तो हम यह गद्दी मल्लूखां को देते हैं ।

202

(कवि जान इस समय की परिस्थिति को ध्यान में रखकर एक सुन्दर बात कहते है ।) यह दिल्ली एक कुलटा स्त्री के समान है जिसने अनेकों पतियों को खा डाला है । इसे ऐसा करते हुये जरा भी शर्म महसूस नहीं हुई । यह तो एक के मरने पर दूसरे को अपना पति बना लेती है । इस दिल्ली रूपी कुलटा स्त्री का यही कार्य है ।

203

यह कुलटा अपने पति की जात या गोत्र का कोई ख्याल नहीं करती है । चाहे वह उच्चकुल का हो चाहे नीच कुल का सभी को पति रूप में स्वीकार कर लेती है । इसका जो हाथ पकड़ता है वह पति बन जाता है उसी से प्रेम करने लगती है और अन्त में उसे भी खा जाती है ।

204

दीवान लोग ऐसी बात कह कर उठ कर चले गये । वे मल्लूखां के पास गये और उसकी बांह पकड़ कर तख्त पर बिठा दिया ।

205

जब चौहान क्यामखां ने यह बात सुनी तो निशान सजाकर अपने दल बल सहित अपने घर की ओर रवाना हो गया ।

206

क्यामखां के चले जाने की बात सुनकर मल्लूखां बड़ा उत्तेजित हुआ और हाथी घोड़े एवं दल सजाकर उसे मारने को चला ।

207

बीस कोस तक मल्लूखां ने पीछा किया पर क्यामखां को पकड़ नही सका। दोनो आगे पीछे चलते रहे। मल्लूखां उसे पकड़ नही सका और क्यामखां को मल्लू के पीछा करने की बात ज्ञात नही हुई।

208

जब क्यामखां ने यह सुना कि मल्लूखां सदल बल उसका पीछा कर रहा है तो वह उल्टा मुड़ा और मल्लूखां के सामने चला जैसे तीतर पर बाज चलता है।

209

इधर मल्लूखां और इधर क्यामखां एक दूसरे के आमने-सामने आये। हाथियों की घटा छाई हुई थी। उनके घंटो का स्वर मुखरित था तथा दुंदुभियों की गरज सुनाई पड़ रही थी।

210

चौहान क्यामखां रण करने को चढ़ा। घमासान युद्ध होने लगा। नाल से गोलियां छूटने लगीं। हाथ से तलवारे बहने लगी। शीघ्र गति से जाने वाले बाण छूटने लगे, कमानों की चटकार होने लगी, सांग और भालों की चोटें होने लगी। जो शरीर फाड़ कर दूसरी ओर निकल गयी।

212

सिर पर शस्त्र की चोट लगने पर मनुष्य मर कर पृथ्वी पर गिरने लगे।[१] कटारियों के चलने पर भारी कवच कटने लगे।

213

भारी मार काट हुई और शूरवीर जूझने लगे। वीर लोग मन लगाकर लड़ने लगे। अब उनका शरीर के प्रति कोई मोह नही रहा।

---

१ यहॉं मूल पाठ 'ससतर' होना चाहिये।

214

जो बड़े बड़े शूरवीर थे उनके टुकड़े टुकड़े हो गये । कहीं उनका धड़ पड़ा, कहीं सिर गिर पड़ा और कहीं हाथपैर कटकर गिर पड़े ।

215

हाथी आपस में बहुत लड़े । वे मदमाते हाथी मस्ती करते मर गये । बहुत से घोड़े युद्ध क्षेत्र में गिर गये । इस प्रकार युद्ध भंयकर हो गया ।

216

युद्ध में धूम छा गयी और पृथ्वी वीरों के रक्त से लाल हो गयी । घाव लगने पर वीर चक्कर खाने लगे मानो हाथी घूम रहे हों ।

217

भारी युद्ध हुआ जिसमें मल्लूखां की सेना पराजित हुई । सारा जहान जानता है कि इस युद्ध में क्यामखां की जीत हुई ।

218

मल्लूखां युद्ध से भाग गया । उसने अपना सब कुछ लुटा दिया । वह दिल्ली चला गया वहीं उसने अपनें आप को छिपा लिया ।

219

वह भगोड़ा मल्लू इधर उधर भागता फिरता है । मेरा नाम क्यामखां है अतः में उसके पीछे अपना सत नही छोड़ूंगा । अर्थात् युद्ध से भागने वाले का पीछा नही करूंगा ।

220

इस प्रकार इस यद्ध में मल्लूखां को भगाकर क्यामखां ने हाथी, घोड़े और बहुत सा द्रव्य लूट लिया । वह जीत के नगाड़े बजाते हुए हिसार चला आया ।

221

क्यामखां की शक्ति बहुत बढ़ गयी थी । उसने मल्लू से फिर लड़ने की इच्छा की पर मल्लूखां का इस करारी हार के बाद लड़ने का होंसला नहीं रहा ।

222

देश देश से क्यामखां के पास पेशकश आने लगी । उसने भोमियों[१] अर्थात् छोटे बड़े राजाओं को बहुत दबाया इस कारण वे सभी उसकी सेवा करने लगे ।

223

क्यामखां चौहान ने खान और सुल्तानों को वश में किया । उसने राव रानों को जीता और सारे भोमियों को दबाया । कमधज, कछवाहे, वैरिया, हुमर, भाटी, तंवर, गोरी और जाटू ने पराजित होकर उसके चरण पकड़े । इनके अतिरिक्त तावनी, सरोने, नारू, खोखर, चंदले कालू, झाब, साहुसेन, अकलीमसा को रण से भगा दिया । साह महमद, ममरेजखां, इदरीस, मौजूद्दीन और मुगलों को उसने हराकर युद्ध से भगा दिया ।

224

क्यामखां ने हिसार में बैठकर चारों दिशाओं के राजाओं, जवानों पर विजय प्राप्त की । इनमें दूनपुर, रिणी, भटनेर, भादरा, गरानो, कोठी, बजवारा, कालपी, इटावा, उज्जैन, धार और इनके बीच में छोटे शासक सम्मिलित थे । इस प्रकार क्यामखां ने पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण सभी दिशाओं के राजाओं को वश में किया । मल्लू के किवाड़ दिल्ली में उसके डर से नही खुलते थे । वह क्यामखां मोटेराव चौहान का पुत्र अपने तप से सभी को पराभूत कर सका था ।अंतिम पंक्ति मूल में नही है ।

---

१ भोमिया शब्द वस्तुतः भूमि के अधिकारी के लिए प्रयुक्त होता है । राजा के मरने पर बड़े पुत्र को राजगद्दी मिलती । शेष भाइयो को जीवन निर्वाह के लिये कुछ गांवों की भूमि मिल जाती । ये लोग भोमिये कहलाते थे । इनमें एक दो गांव के ठाकुर से लगाकर एक दो खेतों पर अधिकार रखने वाले भी सम्मिलित थे । रासोकार ने इस शब्द का प्रयोग बहुत किया है । कभी वह बड़े बड़े अधिपतियो के लिये भी इस शब्द का प्रयोग करता है । शेखावाटी में सारी उदयपुरवाटी तहसील ऐसे भोमियों से भरी पड़ी थी ।

225

क्यामखां अपने घर हिसार में रहा और मल्लूखां दिल्ली में रहा । दोनो के मन में एक दूसरे के प्रति बड़ा क्रोध था इस कारण कभी एक दूसरे से नही मिलते थे ।

226

इस समय काबुल में तैमूर बादशाह था । वह सातों द्वीपो में सूर्य की तरह प्रकट हुआ था ।

227

उस तैमूर की उत्तर दक्षिण पूर्व, पश्चिम ईशान, आग्नेय, नैत्कृत्य और वायव्य इन आठों दिशाओं में आन फिरती थी ।

228

चंगेज खां के वंशजो नें अल्लाह का काम किया जब जगत में आये । ये उस समय से बादशाही भोग रहे हैं और बादशाह ही इनकी जाति बन गयी है ।

229

तैमूर ने रूम, साम, ईराक पर अधिकार कर लिया । उसने खुरासान अपने कब्जे में करली । जब तैमूर का मन हिंद को लेने का हुआ तब वह इधर चला आया ।

230

मल्लूखां ने तैमूर के आने की बात सुनी तो दल सजाकर लड़ने को चला । मुगलों को देखते ही वह डर गया और अपना सत और वीरता की लाज छोड़ दी ।

231

तैमूर के दल के द्वारा उठी हुई धूल से सर्वत्र अधंकार छा गया । तैमूर क्रोध करके आगे बढ़ा । मल्लू ने जहां डेरा कर रखा था वहीं तैमूर आया ।

232

उसका नाम तिमिर था पर वह अपने तेज से तिमिर (अन्धकार) को हरने वाला था। उससे कोई भी नही लड़ सकता था। उससे सिकन्दर और जूलीकरन ही लड़ सकते हैं अगर वे इस संसार में मौजूद हों।

233

बिचारा मल्लूखां क्या चीज है जो तैमूर के सामने टिक सके। तिमिर (अंधकार) से उसका प्रकाश नष्ट हो गया और वह भागकर वन में छिप गया। अर्थात् तैमूर से हारकर वह जंगल में जा छिपा।

235

मल्लूखां आक के फल की रूई की तरह था जिसे तैमूर रूपी हवा ने पल में कहीं उड़ा दिया। वह पल भर भी सामने नही ठहर सका।

236

तैमूर अपने दल का एक भाग मल्लूखां के पीछे भेजकर आप दिल्ली चला गया। उसने मल्लूखां को दिल्ली मंडल में नहीं रहने दिया अर्थात् दिल्ली से दूर खदेड़ दिया।

237

दिल्ली पर कब्जा करने के कुछ समय बाद तैमूर के मन में काबुल लौटने की इच्छा हुई। तब उसने खिदरखां को दिल्ली सौंपकर काबुल की राह ली।

238

वीर खिदरखां पठान दिल्ली में रहने लगा। उसके पास पचास हजार पठानों का दल था जो सब एक समान वीर थे।

239

जब तैमूर के लौट जाने की बात मल्लूखां ने सुनी तो वह बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने खिदरखान की जरा भी परवाह नही की।

240

मल्लूखां ने दल सजाकर आकर दिल्ली को घेर लिया । खिदरखान ने भी सेना एकत्रित कर मल्लूखां का सामना किया ।

241

शूरवीर रण में जूंझ मरे जब उन पर भार पड़ा । मल्लूखां भाग नही सका और मरकर भूमिपर गिर पड़ा ।

242

इस प्रकार इस युद्ध में तैमूर के दल की विजय हुई और मल्लूखां युद्ध में मारा गया । खिदरखान अपनी जीत पर बड़ा प्रसन्न हुआ और गर्व गुमान करने लगा ।

243

जब खिदरखान मल्लू की तरफ से निश्चिंत हो गया तो उसने आस पास के छोटे बड़े राजाओं को वश में कर लिया । अब वह दिल्ली को कुछ नही समझता था ।

244

जब खिदरखान ने यह सुना कि क्यामखां चौहान सुल्तानों की कोई परवाह नहीं करता तो उसके मन में क्रोध उत्पन्न हुआ ।

245

खिदरखान (खिज्रखान) ने मोज्जुदीन अगवान को फरमान भेजा कि क्यामखां चौहान को मारकर निकाल दो ।

क्यामखां मोजदी जुद करत है ।

246

मोजुदीन की जन्म भूमि रोहतक झज्झर थी । वह लाहौर का फौजदार था । तथा उसके पास असंख्य सेना थी ।

247

उसने क्यामखां को कहला भेजा कि तुम हिसार का किला छोड़ दो । अगर तुम किला छोड़ने में देर लगाओगे तो फिर हमें आने में देर नही लगेगी ।

248

तुम बादशाह की कोई परवाह नहीं करते और उसे कुछ नही समझते । न तुम उसकी सेवा करने जाते हो । उस बादशाह ने तुम्हे बावनी दी है उसे किस बल पर खा रहे हो ।

249

पत्र पाकर क्यामखां ने उत्तर में लिखा कि मूर्ख अगवान कौन किसको देता है । देने वाला तो करतार है ।

250

जिस करतार ने खिदरखां को दिल्ली दी है उसी ने मुझे हिसार दी है । ऐसा कौन है जो कर्ता द्वारा प्रदत हिसार को मुझसे छीन सके ।

251

अगर खिदरखां स्वयं चलकर आये तो भी मैं हिसार नहीं छोड़ूँगा । अगर अब डर से मैं हिसार छोड़ दूं तो संसार में मेरी हंसी होगी ।

252

कुतुबशाह हमारी सहायता करते है यह बात तुम अच्छी तरह समझलो । अगवान, अगर अपना भला चाहते हो तो हिसार पर चढ़कर मत आवो ।पीर मोहम्मद कवि के गुरू थे । कुतुब पीर मोहम्मद के पूर्वज थे ।

253

यह चिठ्ठी पढ़कर अगेवान के मन में बड़ा क्रोध हुआ । उसने बड़ी शक्तिशाली सेना सजाई और निशान लेकर युद्ध के लिये आ उपस्थित हुआ ।

253

यह बात सुनकर क्यामखां ने लड़ाई का साज सजाया । युद्ध से भागने में जो लज्जा होती है उसे जुझांर ही समझ सकते हैं ।

254

आते आते मौजुदीन पास आ गया और उसने चिठ्ठी लिखकर एक आदमी को क्यामखां के पास भेजा ।

255

उसने पत्र में लिखा कि क्यामखां बिना बात क्यों मर रहे हो । सुल्तानों के दल के सामने भागने में तुम्हे क्या लज्जा का अनुभव हो रहा है ।

256

मेरे पास अनंत सेना है । मै तुझे मार डालूंगा । इसी कारण मैं बार बार तुम्हें कह रहा हूं । मुझे तुम पर दया आ रही है ।

258

क्यामखां ने इस पर उत्तर दिया कि मूर्ख अगेवान तेरी नजर कटक पर है पर मेरी नजर परमात्मा पर है ।

259

अगर अनेकों लोग शत्रु हो जाये तो भी आदमी को चिंता नही करनी चाहिये । जान कवि कहते है कि "मारने वाला और जिलाने वाला तो विश्व में एक ही है ।"

260

हे उदण्ड दूत तूं मेरे से नजर मिला । फिर तूं ऐसा नही कर सकेगा । जिसके इष्ट चन्द्रमा है उस पर उनकी दया दृष्टि व सहारा रहता है ।

261

उधर से मोजुदीन चढ़ा इधर से क्यामखां । चौहान और अगवान की सेना में भयंकर युद्ध छिड़ गया ।

262

सावन की घटा की तरह दोनों सेनायें एक दूसरे से मिली । उनके दौड़ने से रणभूमि में अन्धकार छा गया और कुछ भी दिखाई नही दिया ।

263

शूरवीर युद्ध करने को चढ़े और आपस में तलवारे बजने लगीं । योद्धा आपस में लड़ रहे हैं और मारो मारो की रट लगा रहे हैं । हाथ पांव कट रहे हैं । यौद्धाओं के खून से भूमि लाल हो रही है । शूरों के सिर टूट रहे है पर फिर भी उनकी युद्ध की इच्छा पूरी नही हो रही है ।

264

कट कर पड़ जाते हैं पर फिर उठकर लड़ने लग जाते हैं । वे बिना मरे नहीं रहते हैं । घाव और चोट की वे जरा भी परवाह नहीं करते हैं । छतीसों आयुधों की मार तन पर सह रहे हैं । जब भुजा कट जाती है तभी हथियार हाथ से गिरते हैं । हाथ कटने पर ही शूरवीर अपने हथियार देते हैं, पहले नहीं ।

265

युद्ध में हाथी घोड़े गिर रहे हैं और शूरवीर लड़ लड़ कर मर रहे हैं । उनकी गिनती नहीं हो सकती । वे असंख्य हैं । शिव और जोगनियाँ आनन्दमग्न होकर हँस रहे हैं । युद्ध में आसमान से वीरों को गिरते देख रणभूमि पर उत्तर आये हैं ।

266

जब दोनों और की सेनाओं में घमासान युद्ध हो रहा था तब सेना से निकल कर मौजुदीन अगेवान आगे निकल आया । क्यामखां वीर जैसे कार्य कर रहा था और घोड़ों को गिरा रहा था । मौजुदीन के आने पर वह भी आगे निकल आया ।

267

मौजुदीन ने क्यामखां पर बरछी का वार किया । इधर क्यामखां ने बाण का प्रहार किया । भगवान ने क्यामखां की रक्षा की । उधर अगेवान भूमि पर गिर पड़ा ।

268

क्यामखां ने मौजुदीन अगेवान को मार लिया । दूल्हे के बिना जनेत की तरह उसकी सेना हार कर भाग गयी ।

269

क्यामखां ने सारे शत्रु दल को लूट लिया । हाथी तथा घोड़े ले लिये । वह जीत के नगाड़े बजाता हुआ लौट आया । उसके मन में बड़ा चैन था ।

270

जब यह बात खिज्रखां ने सुनी तो क्रोध में आकर अपने हाथ को काटने लगा । उसने कहा कि जिसने मेरी सेना का नाश किया है उससे मैं जाकर लड़ाई करूंगा ।

272

रातदिन खिजरखां चिन्ता करता रहता था कि उससे किस प्रकार जाकर लड़े । क्यामखां की धाक से उस पर आक्रमण करने में वह हिचकिचा रहा था ।

273

जब क्यामखां ने यह सुना कि खिजरखां बहुत क्रोधित हो रहा है तब उसने मन में विचार कर एक उपाय किया ।

274

खिजरखां उस समय विलायत में था । उसका लकब बोज्झरीवाल था । उससे क्यामखां की जान पहिचान थी अतः उसने उसे बुलाने की कोशिश की ।

275

क्यामखां ने उसे लिख भेजा कि तुम जल्दी चले आवो । मैने तुमको दिल्ली दे दी । अगर तेरे मन में दिल्ली लेने की इच्छा है तो तत्काल चले आवो ।

276

खिज्रखां ने चिट्ठी पढ़कर उसे आदरपूर्वक सिर पर रखा । उधर से सेना चढ़ाकर चला । उसने जरा भी देर नही की ।

277

उधर खिज्रखां ने समाचार भेजा कि तुम देर मत करना । जल्दी चढ़कर आवो जो दिल्ली लेने के लिये मिलकर चलें ।

278

चिट्ठी पढ़कर क्यामखां निशान बजाता हुआ चढ़ा । वह मुलतान जाकर खिज्रखान से मिला ।

279

खिजखां क्यामखां के चरणों में झुका तब चौहान ने उसे छाती से लगाया । उसने कहा कि तुम्हारे बिना ऐसा कौन व्यक्ति है जो मुझे दिल्ली दे सके ।

280

जब दिल्ली लेने का निश्चय करके वे मुल्तान से चढ़कर चले । उन्होंने इस समय मन में सोचा कि पहले राठोड़ो को काबू में करके फिर दिल्ली पर जाना चाहिये ।

282

सभी छोटे बड़े राजाओं का दमन करते हुये वे नागौर के पास आ पहुंचे । यहां राजाओ में श्रेष्ठ राठौड़ चूड़ा निवास करता था ।

283

उन्होंने चूड़ा को किले में घेर लिया। वे शीघ्रता करके आये थे। चूड़ा चढ़ाई नहीं कर सका और दरवाजे से निकलते समय मारा गया।

284

उन्होंने राव चूड़ा को मार लिया। उसकी सारी सेना भाग कर चली गयी। बहुत खदेड़ने पर भी उन्होंने कोई लड़ाई नहीं की। वे अपने अंग नहीं कटा सके।

285

राठोड़ हाथ में बरछी लिये इस प्रकार भाग रहे थे जिस प्रकार सिंह को देखकर मृगों का झुंड भाग जाता है। "साग स्निंग" पाठ अशुद्ध प्रतीत होता है।

क्यामखां खिदरखां पठान सूं जुध करत है

286

नागौर को अपने वश में करके वे दिल्ली की ओर चढ़ चले। क्यामखां और खिज्रखां ने विशाल सेना सजा रखी थी।

287

इस समय से यह कहावत लोग कहते हैं। दिल्ली में कंगूरे थोड़े हैं और खान का दल बहुत है।

288

यह बात सुनकर कायमखां और खिज्रखां निसान सहित सेना सजाकर दिल्ली पर आये।

289

खिदरखां पठान (वस्तुतः दौलतखां) दिल्ली से सेना सहित चढ़ा। जब दोनों सेनायें मिली तो शूरवीर आपस में जूझंने लगे।

290

शूरवीर युद्ध करने को चढ़े । वे तलवार की चोट की कोई परवाह नहीं करते थे । लड़ लड़कर कट रहे हैं पर पग पीछे नहीं देते हैं और वहीं मर जाते हैं ।

291

हाथी से हाथी लड़कर मर रहे हैं, कितने ही घोड़े युद्ध भूमि में गिर गये हैं । वीर रणक्षेत्र में लड़ रहे हैं । घाव लगने पर अचेत अवस्था में घूम रहे हैं ।

292

दोलतखां की सारी सेना मारी गयी । वह भी प्राणहीन की तरह हो गया । उस समय पठान युद्ध से भाग चला । भागने की लज्जा को समझकर उसने युद्ध में अपने प्राणों का विसर्जन नहीं किया ।

293

खिदरखान पठान (दोलतखान) भाग गया । युद्ध में क्यामखां की विजय हुई । क्यामखां ने खिज्रखां की बांह पकड़कर उसे दिल्ली के तख्त पर बिठाया ।

294

क्यामखां चौहान सभी बातो में समर्थ है । वह जिसके सिर पर हाथ रख देता है वही दिल्ली का बादशाह हो जाता है ।

295

खिज्रखान दिल्ली में बादसाह हो गया और राज्य करने लगा । उसे किसी तरह की चिंता नही रही । उसके मन की सभी इच्छायें पूर्ण हो गयी थी ।

296

खिज्रखां के रात और दिन आनन्द से बीतने लगे । उसके और क्यामखां के बीच में कोई दूसरा नहीं आ सकता था ।

297

इसके बाद मूर्ख खिज्रखां ने यह समझा कि क्यामखां बलवान है । इसका कोई विश्वास नहीं हैं ।

298

क्यामखां जिसको चाहे निकाल बाहर करता है तथा जिससे रखना चाहता है उसे रख लेता है । यह अतीव शक्तिशाली सरदार है । इसे मै नहीं रहने दूंगा ।

299

राजा और प्रधान जब दोनो शक्ति में बराबर होते हैं तो पहले मारे वह मीर होता है । पीछे कुछ नहीं हो सकता ।

300

खिज्रखां ने यह मन में नहीं सोचा कि क्यामखां ने मुझे प्यार से दिल्ली की बादसाहत दी है । अब वह स्वयं मेरा नाश क्यों चाहेगा । दुनिया में ऐसा कोई आदमी नहीं है जो पहले तो पेड़ को लगाये और फिर उसे स्वयं ही उखाड़ फैंके ।

301

एक दिन क्यामखां स्वाभाविक रूप से खड़ा हुआ था । उस समय खिज्रखां ने उसे धक्का दिया जिससे वह नदी में गिर गया ।

302

क्यामखां पड़ते ही निकल गया और सीधा खड़ा हो गया । इसका हाथ निरन्तर दो कार्यो के लिये खड़ा रहता था । एक तो तलवार पकड़ने के लिये और दूसरे दान करने के लिये ।

303

खिज्रखां के मन में जो बात थी उसको क्यामखां जानता था । पर उसने यह समझ कर उससे लड़ाई नहीं की कि बादशाहों से लड़ने से धर्म की हानि होती है ।

304

क्यामखां पिचानवे वर्षों तक जिन्दा रहा। उसने अपने समय में बड़े बड़े वीरतापूर्ण कार्य किये। उनकी गिनती नहीं की जा सकती।

305

क्यामखां के साके सागर की तरह अपरंपार है। कोई उनका पार नहीं पा सकता है। मेरे को जितनों की जानकारी थी उनका मैने वर्णन कर दिया।

306

मैने क्यामखां की कथा का विस्तार नहीं किया है। मैने इस कथा को संक्षेप में ही कहा है। अपनी बुद्धि के अनुसार वर्णित किया है।

307

क्यामखां ने दिल्ली में अपना वर्चस्व बनाये रखा। बादशाह ने उसे आदर मान देकर वहां रखा था।

श्री दीवान ताजखां के पुत्र

1 फतेहखां, 2 रूक्का, 3 फखरदी, 4 मोजन, 5 इक्लीमखां, 6 पहाड़ा।

308

फतेहखां, मोजन, रूका, फखरद्दीन, इकलीम और पहाड़ा ये छह ताजखां के वीर पुत्र थे।

ताजखां को वर्णन

309

क्यामखां के पांच पुत्र थे।जब उन्होने अपनें पिता की बात सुनी तो वे सर्प की तरह रात दिन बल खाने लगे। अर्थात बड़े क्रुद्ध हुये।

310

इन पांचो पुत्रो के नाम ताजखां, महमदखां, कुतुबखां, इखतारखां और मौनखां थे। ये सभी बड़े वीर थे तथा शत्रुओं के दल को नष्ट करने वाले थे।

311

खिजरखान ने क्यामखां के पुत्रो को बारबार बुलाया पर वे नहीं गये। वे हिसार में बैठे रहे। उन्होने जाकर बादशाह से जुहार नहीं की।

312

जब खिज्रखां मर गये तो उसके मरने पर कर्ता ने मुबारकशाह को बादशाह बनाया।

313

खिज्रखां के वंश में कोई भी नहीं सुना जाता है। कृतघ्नता करनेवालों अर्थात् किये हुये उपकार को नहीं मानने वाले का कभी भला नहीं होता।

314

जब मुबारकशाह मर गया तो उसकी जगह महमद फरीद (वस्तुतः मुहम्मदशाह बिन-फरीद-शाह) गद्दी पर बैठा। कुछकाल तक शासन करने के बाद वह भी मृत्यु को प्राप्त हुआ।

315

उसका पुत्र अलावदी (अलाउद्दीन) था जिसे करतार ने राज्य दिया। उसके बाद मुबारकशाह का पुत्र अमानतखां गद्दी पर बैठा।

316

उसके बाद बहलोल दिल्ली में सुल्तान हुआ। उसने अपनी भुजाओं के बल से सारे हिन्दुस्तान पर दबदबा रखा था।

317

उधर क्यामखां का पुत्र अखन (इखत्यारंखां) ढ़ोसी पर राज्य कर रहा था। दिल्ली में उस समय बहलोल था। अखन उसकी जरा भी परवाह नहीं करता था। दोनो में काफी शत्रुता थी।

318

बादशाह ने इराक से घोड़े मंगाये थे। वे जब ढ़ोसी के पास से निकले तो अखन ने उनमें से नौ को चुनकर रख लिया।

319

बहलोल ने जब यह बात सुनी तो क्रोधपूर्वक अखन को कहलाया कि अगर घोड़े वापिस नहीं करो तो फिर मेरा इन्तजार करना।ढ़ोसी हरियाणा और राजस्थान के सीमान्त का गांव है।

320

अखन ने बहलोल को उत्तर में लिखा कि मेरे पास लाख घोड़े हैं। मैंने तेरे घोड़े सिर्फ लड़ाई की इच्छा से लिये हैं।

321

जब तुम्हारी इच्छा हो तो मुझ पर चढ़कर आना। तुम मुझे यहां ही पावोगे। न ढ़ोसी का पर्वत चलता है तथा न मैं चलता हूं। मैंने पहाड़ की तरह अटल रहने का स्वभाव बना लिया है।

322

अखन का उत्तर सुनकर बादशाह बड़ा क्रोधित हुआ पर उसका कुछ वश नही चला। वह शान्त होकर बैठ गया।

323

अखन ने बावन बार मेवात प्रदेश को रौंद दिया। मेवाती लोग उसके सामने से इस प्रकार भाग चले जिस प्रकार सूर्य के आगे रात।

324

जब तक इखतारखां जीया उसने बादशाह की कोई परवाह नहीं की । उसने वही किया जो उसके मन में आया ।

325

जिधर ढ़ोसी का पहाड़ था उधर ही अखन ने किले की रचना की । जो भोमिये लोग आसपास रहते थे वो सभी उसे दंडस्वरूप कर देते थे ।

326

आमेर के राजा वर्ष बीतने पर दस लाख रूपये अखन को कर स्वरूप देते थे । इसी प्रकार अमरसर के राव उसे आठ लाख का कर देते थे । एक पुराना कवित्त इसका साक्षी है ।

327

क्यामखां का चौथा पुत्र कुतुबखां था जो बारूवे[१] आकर बस गया । कोई उसका मुकाबला नहीं कर सकता । सारे आसपास के भोमिया उसके पांवो पर आ गिरे ।

328

क्यामखां का पांचवा लड़का मौनखां बगड़[२] में बस गया । आसपास के सब उसके सामने नत हो गये । कोई भी बल नही दिखा सका ।

329

क्यामखां का लड़का मौनखां कछवाहों का शत्रु था । उसकी सेना के भय से कुंतल रणक्षेत्र से भाग गया । कुंतल कोई कछवाहा सरदार हो सकता है ।

१-बारूवा लुहागर तीर्थ के पास आज एक छोटा गांव है ।

२-बगर पर उस समय पठानों का राज था अत: यह ठीक नहीं है ।दूसरे सूत्रों के अनुसार मौनखां इधर कभी आया ही नहीं

330

ताजखां सब में बड़ा था । दूसरा महमदखां था । ये दोनों ही चौहान वंशीय वीर अतीव साहसी एवं शौर्यवान थे ।

331

ताजखां और महमदखां दोनों हिसार में रहे । उन्होंने पिता के स्थान की अच्छी तरह रक्षा की । दोनो में खूब प्रेम था ।

332

बैर रखने के कारण ये दोनों भाई दिल्ली के बादसाह से नहीं मिलते थे । उन्होंने नागौर के खान फिरोजखां से मिलने का निश्चय किया और नागौर गये ।

333

उनके आने पर नागोरीखां उनसे आगे बढ़कर मिला । उसने उनका बहुत सम्मान किया । उसने कहा मैं भी दिल्ली के बादशाह की कोई परवाह नही करता हूं । अब हम एक से तीन हो गये ।

334

वे वहां बड़े प्रेम पूर्वक रहने लगे । रात दिन खान के साथ बने रहते थे । तब उन्होने मन में राणा पर हमला करने का विचार किया ।

335

नागोरीखां सेना सजाकर चढ़ा । सामने राना मोकल था । उसने सेना सजाई और निसान देकर युद्ध के लिये सामने आ गया ।

336

दोनों के दल जोताई नामक स्थान पर मिले । उधर मोकल था इधर फिरोजखां था । दोनों युद्ध के लिये एकत्रित हुये ।

337

राठोड़, कछवाहे और बहुत से भोमिया फिरोजखां के साथ थे । राणा के पास भी शूरवीरो की अच्छी सेना थी ।

338

नागोरीखां ने अपनी सेना को चार भागो में बांटा । ये भाग थे हिरोल (अग्रभाग) चंदोल (पृष्ठभाग) जरंगोल (दायां भाग) और बरंगोल (वामभाग)

339

ताजखां महमदखां चुपचाप अलग खड़े रहे । उन्होंने नागोरीखां जो कुछ कर रहा था उसे देखने का निश्चय किया ।

ताजखां महमदखां आगे राना भाग्यो

340

दोनों और की सेनायें चढ़ी और एक दूसरे के नीसान मिले । ऐसा लगा मानों काली घटाये छा रही हैं और बादल गरज रहे हैं ।

341

दोनों सेनाओं के मिलने पर पहले गोलियॉ चलीं और हथनालों से गोलो की बौछार हुयी । जिनके गोली लगी वे गिर पड़े । उनकी तत्काल मृत्यु हो गयी ।

342

दोनो ओर से बाणों की बौछार हुई । ये बाण सैनिको के अंगो में गड गये । बाणों से घायल सैनिक ऐसे लगने लगे मानो कॉटों युक्त सेही जानवर हो ।

343

जब युद्ध चल रहा था तो राणा ने क्रोधित होकर खान पर घोड़े उठाये । इस प्रहार का धक्का वह नहीं सह सका और वह रणक्षेत्र से भाग गया ।

344

फिरोजखां युद्ध से भागकर नागोर की ओर जाने लगा । उसके पीछे उसे लूटता हुआ वीर मोकल आ रहा था ।

345

राणा ने उस भागते नारोगीखां का चार कोस तक पीछा किया और उसके निसान ले लिये । इसके बाद राना चितौड़ की ओर रवाना हो गया । मन में उसके बड़ा अभिमान हो रहा था ।

346

ताजखां और मुहमदखां वहीं खड़े रहे । उन्होने अबतक युद्ध में कोई भाग नहीं लिया था । उन्होंने देखा कि फिरोजखां भाग चुका है ।

347

नागोरीखां को रणक्षेत्र से भागते जरा भी देर नहीं लगी । इधर ताजखां महमदखां दोनो भाई झांकते ही रहे । करतार ने क्या किया ।

348

वे दोनो खड़े खड़े सोच रहे थे कि इतने में राणा आ निकला । जिस प्रकार चीता हिरण को देखता है उसी पर राना को देखकर वे उस पर टूट पड़े ।

349

लड़कर राणा रणक्षेत्र से चला गया । जब घमासान युद्ध हो रहा था । उसने फिरोजखां से जो नेजे और निशान लिये थे उनको वहीं छोड़ दिया ।

350

उन दोनों भाइयों ने पहाड़ तक राना का पीछा किया । उन्होंने लूट का बहुत सा माल लूटा । राणा इन दोनो बाजों के हाथो चिड़िया की तरह छूट गया ।

351

स्वामी युद्ध से भागजावे और सेवक लड़ता रहे इसी में सेवक की शूरवीरता है । जड़ उखड़ने पर भी जब पेड़ स्थिर रहे उसी प्रकार की यह बात थी ।

352

उधर से ये दोनों भी जीत के नगाड़े बजाते लौट चले । उन्होंने हाथी, घोड़े और बहुत सा द्रव्य राणा का लूट लिया ।

353

वे लौटकर नागौर आये और नेजों और निसानों को जो फिरोजखां छोड़ आया था वे उसके पास भेज दिये ।

354

फिरोजखां इस पर बहुत शर्मिन्दा हुआ । वह मुंह नही दिखा सका । जब इस युद्ध की बात चलती तो उसे इसे सुन सुनकर लज्जा महसूस होती थी ।

355

ताजखां और मोहम्मदखां की कीर्ति बढ़ चली थी । वे फिरोजखां के लिये अब बड़े दुखदाई बन गये थे ।

356

फिरोजखां दोनों से नजर नहीं मिलाता था । जब वे दोनों इसके पास जाते थे वह इधर उधर हो जाता था और हंसकर बात नहीं करता था ।

357

अगर कोई कायर होता है तो उसे शूरवीर अच्छा नही लगता है । मनुष्य स्वयं जैसा होता है वह उसी तरह के आदमी चाहता है ।

358

जब फिरोजखां उनसे नजरें चुरा रहा था तो चौहान बंधुओ को बड़ा क्रोध आया । वे क्रोध में आकर उठ कर चल दिये ।

359

जब उसने नगाड़े की आवाज सुनी तो उसने अपने आदमियों से कहाकि इन लोगो को मत जाने दो ।

360

नागोर के फिरोजखां ने जब इनको सेना सहित आ दबाया तो उससे युद्ध करने के लिये ये दोनो वीर भी वापिस मुड़े ।

361

भंयकर युद्ध होने लगा, नारदनृत्य करने लगा । कोई भी यौद्धा भागकर भी नही बचा । वे शूरवीर जो मन लगाकर लड़े और मरे उन्हे प्रेम से अप्सरा वरण करके ले गयी ।

362

जब घनघोर युद्ध होने लगा तो ताजखां युद्ध में घायल होकर गिर गया । उस समय महम्मदखां भाग चला । वह युद्ध में नहीं ठहर सका ।

363

नागौरीखां इस युद्ध में जीतकर नागौर चला गया । इधर शूरवीर ताजखां रणक्षेत्र में ही पड़ा रहा ।

364

घायलों को उठाते हुये राठौड़ उस स्थान पर आये जहां ताजखां पड़ा हुआ था । वह बेहोश था ।

365

उसे शूरवीर समझकर राठौड़ उठाकर ले गये और घावों के ठीक हो जाने पर उन्होंने उसे हिसार भेज दिया ।

366

करतार ने ताजखां को बड़ा बनाया था । उसने युद्ध में बड़ी वीरता दिखाई, घायल होकर भी बच गया । इससे उसकी कीर्ति और भी बढ़ चली ।

367

ताजखां बड़ा शूरवीर हुआ । संसार में उसकी कीर्ति हुई । उसने आसपास के भोमियों को बहुत दबाया । यह काम उसने भुजबल और तलवार के बल पर किया ।

368

ताजखां की तलवार का फिरोजखां बड़ा भय मानता था । उसके डर से नागोर के दरवाजे बन्द ही रहते थे ।

369

ताजखां ने खेतड़ी, खरखड़ा, बुहाना को क्रोध में भरकर लूट लिया । उसने पाटन, रैवासा और आमेर को भी अपने वश में कर लिया ।

370

ताजखां ने कछवाहे, निर्वाण, तँवर और परमारों से भी पेशकश ली । यह बात सारा संसार जानता है ।

371

क्यामखां के पुत्र जो शत्रुओं का संहार करने वाला था उसके डर से नागौर का खान डरता था। उसने एक ही वार में खेतड़ी [१] खड़कड़ा,[२] बुहाना[३] और पाटन[४] को नष्ट कर डाला। उसने रैवासे[५] को पददलित कर डाला, उसके तेज के बल से आमेर गढ़ के फाटक नहीं खुलते थे। उसने तँवर, पंवार, देवड़ा, कछवाहे सभी को वश में कर लिया।

372

जब ताजखां मृत्यु को प्राप्त हुये तो उन्हे हिसार में क्यामखां के स्थान में दफनाया गया।

373

महम्मदखां जब मर गये तो उन्हें हांसी में दफन किया गया। दूसरे किसी भाई को हिसार में नहीं रखा।

374

जब ताजखां मर गये तो उनकी जगह उसका बेटा फतेहखां हिसार में पिता की गद्दी पर बैठा।

श्री फतेहखां के पुत्र

जलालखां, हैवतशाह, महमशाह, असदखां, दरियाशाह, साहमनसूर, सेखसलह, बलो, संग्रा-मसूर और हेतम।

375

फतेहखां के दस लड़के थे जिनके नाम जलालखां, हैवतसाह, महमसाह, असदखा, दरियासाह, साह मंसूर, सेख सलह, बलो, संग्रामसूर और हेतम थे।

---

१ खेतड़ी शेखावटी क्षेत्र का नगर है।२-खरकड़ा, ये भी खेतड़ी के पास एक छोटा गांव है। ३-बुहाना शेखावाटी का एक बड़ा गांव है।४-पाटन यह सीकर जिले में नीम के थाने के पास है यह तँवरों की राजधानी है।५-रैवासा वर्तमान सीकर के दक्षिण में आज एक छोटा गांव है।

376

ताजखां का लड़का फतेहखां बड़ा प्रबल हुआ । उसने किसी के आगे सिर नही झुकाया । वह केवल परमात्मा को ही मानता था और किसी को नही ।

377

फतेहखां ने एक ही दिन छह किलों की नीव रखी । उसने फतेहपुर, नगर को अपना मुख्य स्थान बनाया ।

378

उसने फतेहपुर को नये सिरे से बसाया । पहले यहां जल और जंगल था । उसने इसे अपना नाम देकर बड़ा स्थान बनाया ।

379

संवत 1508 में फतेहपुर नगर बसाया गया । उस दिन चैत माह की पंचमी तिथि थी ।

380

उस समय हिजरी सन 857 था जब फतेहखां ने जग में इस स्थान को प्रसिद्ध किया । सफर के महीन के बीसवे दिन फतेहपुर[१] बास को बसाया गया । संभवतः यह पहले बास नाम से जाना जाता था ।

381

शुभ नक्षत्र में किले का निर्माण प्रारम्भ हुआ । इस लिये परमात्मा ने इसे स्थिर बनाया । आसपास के भोमिया फतेहखां को सलाम करने आने लगे ।

१- उस समय फतेहपुर जाटों की बस्ती के रूप में बस चुका था पर उस समय का नाम ज्ञात नहीं है ।बाद में फतेहखां ने इसे फतेहपुर नाम दिया ।

382

पल्लू[१], साहबा[२], भादरा[३], भाड़ंग[४] और बाइले[५] में फतेहखां नें किले बनाये। फतेहपुर में भी किला बनाया जा रहा था।

383

बादशाह की दुश्मनी या नाराजगी से फतेहखां हिसार में नहीं रह सके। इसलिये इधर आकर फतेहखां ने फतेहपुर नगर अपने नाम से बसाया।

384

जब तक किले का निर्माण पूर्ण नही हुआ फतेहखां सदल बल रनाऊ[६] नामक गांव में रहता था। जब किला पूरा बन गया तो बड़े भारी दल को लेकर वह फतेहपुर आ गया।

385

बादशाह बहलोल के मन में रणथंभौर के किले को लेने की इच्छा हुई। उसने कहा कि फतेहखां कैसा हिन्दू है जो मुझसे आकर नही मिला। यहां संभवतः कायमखांनियो के पूर्वजों की ओर संकेत है। कैसा नासमझ है यह अर्थ भी ध्वनित होता है।

386

बहलोल लोदी एक बहुत बड़ी सेना सजाकर रणथंभौर लेने के लिये चला। उसकी सेना के गमन के कारण सर्वत्र धूल ही धूल दिखाई पड़ रही थी और दिन भी रात की तरह हो गया था।

387

जब फतेहखां ने यह बात सुनी कि बादशाह रणथंभौर लेने बढ़ रहा है तो वह अपने दल बल सजाकर उसके दल से जा मिला। उसने रास्ते में जाकर बहलोल से जुहार की।

१-पल्लू हनुमानगढ़ जिले का गांव है। २- साहब चूरू जिले का गांव है जो तारानगर से ३५ किलोमीटर है। ३- हनुमानगढ़ जिले का गांव है। ४- भांडग तारा नगर से ३० किलोमीटर है। ५- बाइला चूरू जिले का स्थान है। भाडंग और साहबा में ५ किलोमीटर का अंतर है अतः इतने पास पास किले बनाना युक्ति संगत नहीं लगता। संभवत मूलपाठ सेवा है जो डींडवाना से १४ किलोमीटर दूर है। ६-रनाऊ फतेहपुर से प्रायः ३किमी दूर एक छोटा गांव है जो दक्षिण पश्चिम में बसा हुआ है।

388

लोदी ने फतेहखां को देखकर उसकी बहुत बड़ाई की और क्यामखां के वंशज जानकर उसको छाती से लगा लिया ।

389

फतेहखां का नाम सुनते ही बहलोल ने कहा कि फतेहखां के मिलते ही खुदा ने हमें फतेह दे दी है ।

390

बहलोल ने अपने प्रधानों से यह कहा कि फतेहखां सोने जैसा खरा व्यक्ति है ।

391

जब गढ़ रणथंभौरवालों ने यह बात सुनी कि बहलोल हमला करने आ रहा है तो उन्होंने अपनी रक्षार्थ मांडू के सुल्तान को आने का निमन्त्रण भेजा ।

392

उस मांडू के सुल्तान का नाम हिसामदी था । जब उसने बहलोल के आक्रमण की बात सुनी तो निशान सजाकर चला आया ।

393

जब इधर से लोदी अपनी विशाल सेना के साथ रणथंभौर पहुंचा तो हिसामदी किले में घुसगया और खुले मैदान में नहीं लड़ सका ।

394

एक दिन बहलोल ने फतेहखां को बुलाया । उससे प्यार किया, और आदर सम्मान दिया तथा उत्साहित करते हुये यह कहा ।

395

तुम्हारे दादा क्यामखां ने कैसे कैसे वीरतापूर्ण कार्य किये थे । इस बात को याद करो और रणथंभौर पर फतह प्राप्त करो क्योंकि फतह तुम्हारे नाम लिखी हुई है ।

396

फतेहखां वहां से आया और रणथंभौर के किले के पास अपनी सेना सहित चला गया । साह हिसामदी इस सेना से आगे आकर लड़ा ।

397

फतेहखां के साथ थोड़ी सेना देखकर हिसामदी किले का दरवाजा खोलकर लड़ने को आया । उसके साथ बहुत बड़ा दल था तथा वह उत्साह से भरा हुआ था ।

398

इधर चौहान फतेहखां था । उधर मांडू का सुल्तान था । छोटी तोपों से गोले चल रहे थे तथा बाणो की वर्षा हो रही थी । इस प्रकार घमासान युद्ध हो रहा था ।

399

भारी भारी सांगों (भालों) की चोट हो रही थी । शरीर में कटारियाँ गड़ रही थीं । भंयकर चोट लगने से रण में जूझंने वाले अनेकों वीर गिर रहे थे ।

400

राव और राना युद्ध भूमि मे गिर पड़े । सुल्तान भी रणक्षेत्र में गिर पड़ा । इस प्रकार फतेहखां जीत गया और संसार में उसका यश फैंल गया ।

401

दोनों ओर के शूरवीर कट मरे । बड़ी घमासान लड़ाई हुई । जोर लगाकर फतेहखां ने हिसामदी को मार गिराया । इस प्रकार फतेहखां की जीत हुई ।

402

उसने हिसामदी सुल्तान का सिर काट लिया और उसे सुल्तान के पास भेजा। यह देखकर सुल्तान बड़ा हर्षित हुआ और फतेहखां की ओर प्रेम पूर्वक देखा।

403

फतेहखां ने रणथंभ को फतह कर लिया। वह गढ़ में घुस गया। बादशाह बहलोल ने पीछे आकर गढ़ को देखा।

404

गढ़ पर विजय प्राप्त करके पठान बहलोल दिल्ली लौट गया। उसने फतेहखां चौहान का बड़ा आदर सत्कार किया।

405

जीत का परवाना लेकर फतेहखां भी अपने देश में आ गया। जब से वह फतेहपुर आया सारे भोमिया उससे कांपते रहते थे।

406

उधर नारनौल से अखन का समाचार आया कि सभी मेवाती एकत्रित होकर लड़ने की सोच रहे हैं।

407

या तो तुम स्वयं यहां आवो या फिर सेना भेज दो। संकट के समय एक भाई दूसरे की मदद किया करता है।

408

फतेहखां ने नारनोल को अपनी सेना भेज दी। इस सेना को देखकर अखनखां बहुत हर्षित हुआ।

409

मेवाती उधर से चलकर ढ़ोसी के निकट आ गये । इधर से इखत्यारखां चढ़ा और उनके सामने आगया ।

410

मेवाती लोगों पर दोनों ओर से मार पड़ने लगी तो वे निर्बल हो गये और युद्ध छोड़कर भाग गये ।

411

चिमन नामक व्यक्ति का रण निमन्त्रण मिला । वह नगाड़े बजाकर लड़ने को आ पहुंचा । इस युद्ध में अखन की जीत हुई । इस जीत पर वह बड़ा हर्षित हुआ ।

412

फतेहखां की सेना ने विजय प्राप्त की । वे शत्रु के नीसान और नगाड़े छीन लाये । वे सदा फतेहपुर में आनन्द पूर्वक बजते हैं । उसका यश चारों और फैल गया ।

413

फतेहखां की सेना बड़ी प्रबल थी । उसमें एक से एक बड़े योद्धा थे । मै किस किस का नाम गिनाऊँ । अनेकों शूरवीर इस सेना की शोभा बढ़ा रहे थे ।

414

राव रणमल का पुत्र काँधल था । इसने फतेहपुर पर हमला कर बहुगुन[१] को रणक्षेत्र में विचरा दिया । सिर कटने पर भी बहुगुन लड़ता रहा और इस प्रकार उसने अपने बहुगुन नाम को सार्थक किया ।

१-बहुगुन सरखेल पठान था । यह फतेहखां का सेनापति था । इसकी कब्र अलखपुरा और फतेहपुर दोनों जगह विद्यमान है । रासो का यह कथन तथ्यपरक नहीं है । राठौड़ों से नगर की रक्षा फतेहपुर के महंत स्वामी गंगादासजी ने की थी । बहुगुन की याद में एक मकबरा अलखपुरा और एक फतेहपुर में किले के ठीक पीछे है । बहुगुन के कारण अलखपुर का नाम अलखपुरा बौंगन हो गया है ।

415

राना सांगा का साला अजा सांखला था । उसे लड़ाई होने पर फतेहखां ने कटक में मार गिराया ।

416

उस समय फतेहखां चितौड़ में था । उसके बिना बहुगुन ने राठौड़ो का सामना किया । इस प्रकार स्वामी की अनुपस्थिति में लड़कर बहुगुन ने अपना नाम और यश संसार में फैला दिया । वस्तुतः पद्य संख्या 416 पद्य 418 के बाद ही आना चाहिये था ।

417

फतेहखां के दल की राठोड़ो के साथ हुई लड़ाई में जीत हुई । अगर खुद व्यक्ति सच्चा पुरूष है तो उसके सेवक भी बड़े वीर होते हैं ।

418

मनुष्य की वैसी ही बुद्धि हो जाती है जैसे लोगो के वह पास बैठता है । इस बात में जान कवि के अनुसार जरा भी कोई कमी नही है ।

419

एक मुसकीखां किररानी था । वह अपनी इज्जत खोने के लिये एक दिन फतेहखां से युद्ध करने के लिये आया ।

420

इधर से फतेहखां दल बल सजाकर पहुंचा । उंधर से मुसकीखां आया । दोनों ने सरसे में पहुंच कर लड़ाई की ।

421

उधर पठान और इधर चौहान था । हाथी, घोड़े और शूरवीर युद्ध करने को एकत्रित हुये । बहुत गोलियां चलीं, लोगो के पैर और हाथ टूटने लगे, मस्तक फूटने लगे पर फिर भी वे पीछे नहीं हटते हैं ।

422

शरीर में बाण लगता है, प्राण निकल जाते हैं । जवान जूझ रहे हैं तथा वे जरा भी नही थकते हैं । अनोखी बरछी दुधारी तलवार की चोट शूरवीर सह रहे हैं ।

423

बहुत घमासान युद्ध हुआ पर उसका अंत नहीं हो रहा था । इस पर फतेहखां ने मुसकीखां का घोड़ा मारकर उसकी तलवार से गर्दन काट ली और इस प्रकार मुसकीखां को मार डाला ।

424

फतेहखां जीत का परवाना लेकर फतेहपुर चला आया । उसके बाद उसने आमेर पर हमला किया ।

425

उसने आमेर को लूट लिया । सारे भोमिया भाग गये । जिनके मुख पर लाज थी वे अच्छी तरह लड़कर मर गये पर भागे नही ।

426

फतेहखां आमेर को जीतकर चला आया । वह बड़ा प्रसन्न हुआ । इसके बाद अच्छी सेना सजाकर वह भिवानी पर चला ।

428

फतेहपुर ने जाकर, भिवानी को घेर लिया । यहाँ जाटू जावले (तँवर) बहुत अच्छी शूरवीरता से लड़े ।

429

इधर जाटू लोग है उधर चौहान है । दोनो में भयंकर युद्ध होने लगा । युद्ध में दोनों सेनाओ के भिड़ने से धूलि उड़कर आसमान में छा गयी । सूर्य इस धूलिके कारण दिखाई नहीं पड़ा । युद्ध में असंख्य गोली और बाण चल रहे हैं । तलवार और कटारियाँ बह रही हैं । बरछी की

चोटे लग रहीं है । भयंकर मार के आगे जाटू भूमि पर गिरने लगे । 'बरछी व्है जा हिन्दुसार ही' पाठ अशुद्ध प्रतीत होता है ।

430

फतेहखां की जीत हुई और जाटू जावले हार गये । उसने भिवानी को लूटकर बंधक बनायी । शत्रुओं के बहुत से सैनिको को पकड़ लिया गया । इन्हें वह अपने साथ ले चला ।

431

यौद्धाओ के समूह का संहार फतेहखां द्वारा किया गया । उसके बिना ऐसा कौन है जो इन भोमियों से लड़ सके ।

432

राठौड़ जोधा के मन में आया कि फतेहखां से शांति कर लेना चाहिये । उससे सम्बन्ध स्थापित करना चाहिये । इससे दोनो और का दुख मिट जायेगा ।

433

राव जोधा ने नारियल भेजा पर फतेहखां ने नही लिया । इसका कारण यह था कि जोधा के छोटे भाई कांधल ने फतेहपुर पर आक्रमण कर फतेहखां के सेनापति बहुगुन को मारा था । इसी लिये फतेहखां के मन में क्रोध था ।

434

इस समय झुंझनू मे महमदखां का लड़का सम्सखां शासन कर रहा था । वे उधर नारियल ले गये तो उसने हाँ भरली ।

435

इसके बाद उसने कहा कि वहां विवाह करने कौन जावे । तलवार के साथ डोला भिजवा दो ।

436

वे इस बात को तय कर गये और जाकर डोला भिजवा दिया । मीराजी ने जो भविष्यवाणी की थी वह आगे चलकर सच साबित हुई ।

437

उधर बादशाह बहलोल ने फतेहखां को अपने पास बुला लिया । रात दिन उसे अपने पास रखे और क्षण क्षण में उसके प्रति अपना प्रेम प्रकट करे ।

438

एक दिन बहलोल ने अपना यह विचार प्रकट किया कि तुम्हारा और हमारा सम्बन्ध होना चाहिये जिससे यह प्रेम और बढ़ सके ।

439

हमारा सम्बन्ध अदल बदल का होना चाहिये । इससे मन की इच्छा पूरी हो । अगर तुम चौहान हो तो हम भी जात के लोदी हैं ।

440

इस पर फतेहखां ने कहा कि अदलाबदली का नाता नहीं हो सकता क्योंकि मेरे तो कोई लड़की अब अविवाहित नहीं है ।

441

इस पर बादशाह बुरा मान गया । तब फतेहखां नाराज होकर वहां से चला आया । इसके बाद वह कभी दिल्ली नहीं गया । अपने स्थान पर आकर बैठ गया ।

442

बादशाह ने सम्सखां से कहला भेजा कि तुम अदल बदल का सम्बन्ध करो अगर तुम्हारे मन में इस बात की इच्छा है ।

443

यह बात सुनकर सम्सखां ने इसे अपना सौभाग्य माना । उसने बहलोल की लड़की से अपने पुत्र का सम्बन्ध किया और अपनी बहिन उसको दे दी ।

444

जब तक फतेहखां जीया उसने बादशाह को कुछ नहीं धारा। दिल्ली को सिर नहीं नवाया यह बात सभी जानते हैं।

445

ताजन के उस पुत्र ने पृथ्वी पर अनेकों राजाओ का विध्वंस कर दिया अर्थात उन्हें नष्ट भ्रष्ट कर डाला। उसने सभी भोमियों को अपनी भुजा के बल पर दबाया। उसने सुल्तान हिसामदी को मार लिया और भिवानी के जाटुओं को धूल में मिला दिया। चिमन[१] को मारकर उसका नीसान छीन लिया और कांधल तथा यादवों को भगा दिया। आमेर को लूट लिया और रणथंभ को जीत लिया। इस प्रकार सर्वत्र फतेहखां का यश छा गया।

श्री दीवान जलालखां के पुत्र

दौलतखां, अहमदखां, नूरखां, फरीदखां, निजामखां, पहाड़खां, लाडखां, दाऊदखां, अबन, महमदसाह।

446

इस पद्य में जलाल खां के पुत्रों के नाम दिये हैं। ये नाम वही हैं जो ऊपर लिखे गये हैं।

447

जब फतेहखां मर गया तब उसका पुत्र जलालखां उसकी जगह गद्दी पर बैठा।

448

फतेहखां ने फतेहपुर में किला बनाया था। जलालखां ने उसे और बढ़ाया। उसने इस किले की एक बड़ी पोल अर्थात् बड़ा दरवाजा बनाया।

१-चिमन संभवतः कोई अहीर सरदार था। यादव से यहाँ अहीरों का अर्थ ग्रहण करना अधिक समीचीन है। संपादक ने यादव से भाटी अर्थ ग्रहण किया है और इसे जान की अत्युक्ति मानी है। अगर यादव से चिमन के लोग समझे जायें तो फिर कोई अत्युक्ति नहीं रहती। देखे संपादकीय टिप्पण पृ. 118

449

जंलालखां दिल्ली के बादशाह की कोई परवाह नहीं करता था। उसने नागोरीखां का माल लूट लूट कर उसे दुखी कर दिया।

450

इस लगातार की लूट से नागोरीखां दुखी हो गया। उसने जलालखां को नष्ट करने के लिये बीड़ा फेरा जिसे मुगल चौपान ने ले लिया।

451

कटराथल[१] नागोर के खान की जागीर में था अतः मुगल चौपान ने अपनी सेना को तैयार किया। यह बात सुनकर जलालखां ने भी अपनी सेना तैयार की।

452

उधर से चौपानखां मुगल क्रोध में भरकर आया। इधर से अतुलित बलशाली जलालखां चौहान लड़ने को चला।

453

पहले मुगलो ने तीखे बाण छोड़े जिनके लगने से जलालखां की फौज के अनेकों सैनिक और घोड़े घायल हो गये।

454

इस पर जलालखां ने सारी सेना लेकर घोड़ों की बाग उठायी और घोड़े मुगलों पर डाल दिये। अब मुगल बाण नहीं चला सके और भाग गये।

455

चौपानखां को देखकर खान जलाल वहां जा पहुंचा। जैसे बाज चिड़िया को पकड़ता है उसी तरह उसको जा पकड़ा।

१- कटराथल सीकर के पास बड़ा गांव है।

456

जलालखां ने नितम्बों पर दाग देकर चौपानखां को छोड़ दिया । वह हाथी, घोड़े और सारा द्रव्य संपति छोड़कर लज्जाहीन होकर चला गया ।

457

इसके बाद इस युद्ध में विजय प्राप्त कर जलालखां अपने घर आ गया । जलालखां की समानता करे ऐसा संसार में कौन है ?

458

इसके बाद जलालखां छोपाली[१] पर चढ़ा । उधर के असंख्य भोमियों को मार मार कर घमासान मचा दिया ।

459

इसके बाद जलालखां ने आमेर पर आक्रमण किया । वहा के भोमिया बहुत अच्छी तरह लड़े और भागने की लाज को समझ कर वे युद्ध में डटे रहे और मारे गये ।

460

सैनिक लोग लूट में लगे हुये थे । किसी को इस बात की खबर नही थी । जलालखां अपनी भुजाओं के बल पर अकेला ही उन भोमियों के बीच में आ गया ।

461

वे हाथी को लेकर जा रहे थे इतने में जलालखां वहां पहुंच गया । उसने ऐसे बाण मारे कि जो कुछ वे लेकर भाग रहे थे वह सब छोड़कर भाग गये ।

463

तब जलालखां जीतकर घर आ गये । उसकी शूरवीरता का सब कोई बखान कर रहे थे ।

---

१ छोपाली झुंझनू जिले की उदयपुरवाटी तहसील का एक गांव है । उस समय उस पर निर्वाणों का शासन था ।

464

जब सम्सखां मर गया तो उसकी जगह फतेहखां बैठा। उसका विवाह बादशाह बहलोल के घराने में हुआ था इसलिये वह किसी को कुछ नहीं समझता था।

465

वह अपने भाई और सौतेली माता को उनका हक नही देता था। जो कुछ झुंझनू की आय होती उसे खुद ही ले लेता।

466

तब उसका भाई मुबारकशाह राठौड़ जोधा के पास गया। उसने जोधा से कहा कि मेरी सहायता करो ताकि मेरा निर्वाह हो सके।

467

तब राव जोधा ने कहा कि मैं कोई मदद नही कर सकता। तेरे पास ही तेरे मामा बीका और बीदा है उनसे जाकर यह बात कहो।

468

तब मुबारकशाह उठकर अपने मामाओं के पास आया पर जब वे कोई मदद नहीं कर सके तो निराश होकर लौट आया।

469

वह वहां से फतेहपुर आया और जलालखां से मिला। जलालखां उससे बहुत प्यार के साथ मिला और अपने अंक में भर लिया।

470

तब मुबारकशाह ने कहा कि मैं तुम्हे देखकर यहां आया हूं। मै जोधा और बीका के पास हो आया पर कोई सम्बन्धों की परवाह नहीं करता।

471

सब लोग बहलोल से डरते हैं इसलिये कोई मदद नहीं करते । हमारा काम जलालखां तुमसे हो तो हो ।

472

जलालखां ने उस से कहा कि बहलोल से मेरा बाप भी नही डरा । अब मैं उससे डरकर क्यो कुल में कलंक लगाऊ ।

473

जलालखां सेना सजाकर झुंझनू गया । फतेहखां की सेना युद्ध क्षेत्र से भाग गयी ।

474

तब उसने मुबारकशाह को झुंझनू का राज्य दिया । उधर इसी समय के आसपास फतेहखां मर गया तो उसके मन की इच्छा पूरी हो गयी ।

475

जब फतेहखां मर गया तो सम्सखां का बड़े पुत्र महमदखां उसकी जगह गद्दी पर बैठा । इस प्रकार मुबारक का स्थान छिन गया ।

476

शूरवीर जलालखां लुहागर में रहने लगा । वह पहाड़ का आश्रय लेकर नागौर के खान को बराबर तंग करता रहा ।

477

फतेहपुर को सूना देखकर बीदा[१] का मन ललचाया । वह किसी न किसी तरह गढ़ फतेहपुर में आकर घुस गया ।

---

१ राठोड़ बीदा जोधा का पुत्र था तथा छापर द्रोणपुर का शासक था ।

478

बीदा दलबल सजाकर नरहड़[१] आया और वहाँ के नवाब दिलावरखां से मिला । उसने उसे समझाकर सारी बात कही ।

479

उसने बताया कि इस समय फतेहपुर में कोई नहीं है । तुम वहां चलो और मेरा किले पर अधिकार करवादो । मै तुम्हे दस हजार रूपये दूंगा और अपनी लड़की की शादी कर दूंगा ।

480

यह बात सुनकर पठान को अच्छी लगी । उसने जरा भी देर नहीं लगायी और युद्ध के नगाड़ा बजाते हुये रवाना हो गया ।

481

आगे बढ़ते हुये वे गोवरे तक आ पहुंचे । उन्होंने बिना अच्छे मुहूर्त की परवाह किये गढ़ में प्रवेश कर लिया । गोवरे अशुद्ध प्रतीत होता है । इसकी जगह या तो गोहरे या गोड़िये पाठ होना चाहिये था ।

482

नगर का एक मनुष्य दौड़कर जलालखां के पास गया । उसने कहा कि अगर चलने में देर की तो फिर गढ़ नही मिलेगा ।

483

बीदावाटी से चलकर सेना सजाकर बीदा आया है और साथ में दिलावरखान पठान है । तुम्हारे बिना ऐसा कौन है जो उनसे युद्ध कर सके ।

484

यह सुनकर जलालखां का बड़ा बेटा दौलतखां सेना लेकर लुहागर से चला । उसने कहा कि शत्रुओं को किले से निकाले बिना पानी पीना हराम है ।

१- नरहड़ शेखावाटी का कस्बा था जहां पठान नवाब दिलावर खां था ।

485

जब थोड़ी सी रात्रि हो गयी उस समय वह गढ़ में घुस गया। जलालखां के पुत्र दौलतखां ने उस समय जीत के निसान बजाये।

486

जब बीदा भागने लगा और पठान लड़ने लगा। दौलतखा के आने पर उनके दल बल में खलबली मच गयी।

487

वे दौलतखां को आया देख अपने अपने स्थानो को भाग गये। राठौड़ बीदा छापर द्रोणपुर चला गया और पठान नरहड़ चला गया। वे ऐसे भागे जैसे बाघ की गंध पाकर वन से गायें भाग जाती हैं।

488

इसके बाद जलालखां फतेहपुर आया। अपने पुत्र की जीत सुनकर वह बड़ा प्रसन्न हुआ।

489

जलालखां की विजय का समाहार करते हुये जान कहता है कि जलालखां शूरवीर है। उसने मैदान में चौपान को हराया, छापोली को जला कर छार कर डाला, भोमियों को मारकर लुहागर पर कब्जा किया, आमेर का मान मर्दन किया और सब शत्रुओं को वश में किया। उसने टाक सम्सखां का मानमर्दन किया। उसने झुंझनू की गद्दी पर हाथ पकड़ कर मुबारकशाह को बैठाया।

श्री दीवान दौलतखां के पुत्र

नाहरखां, होबनखां, वाजीदखां

491

नाहरखां, वाजीदखां और होबनखां ये तीन पुत्र दौलतखां के थे। तीनों ही बड़े शूरवीर थे।

दौलतखां को बखान

जब सिरमोर जलालखां मृत्यु को प्राप्त हुये तो दौलतखां उनकी जगह फतेहपुर का नवाब बना ।

492

रणक्षेत्र में चढ़कर दौलतखां से युद्ध कर सके ऐसा कौन है । दुर्जन (शत्रु) उससे भय खाते हैं, भ्रमित होकर फिर रहे हैं और घर छोड़ रहे हैं । अर्थात् उसके भय से घर छोड़कर भागे फिर रहे हैं ।

493

सारे शत्रु नाकोंनाक आ गये । उन्होंने घर को झांकने की सौगन्ध खाली । वे आक और ढाक के पीछे छिपते फिरे ऐसी चौहान दौलतखां की धाक थी ।

494

दोलतखां दीवानं के विरद ब्रहुत हैं । अगर सात सुल्तान मिलकर भी लड़ने आ जावें तो भी वह लड़ाई से नहीं भागे । ऐसा वीर था ।

495

उसने अनीति के पैसे को नहीं लेने की सौगन्ध खा रखी थी । ऐसे धन के लाखों करोड़ों रूपयो को वह कौड़ी के समान तुच्छ समझता था ।

496

दौलतखां कहता था कि उसे गैब का धन नहीं चाहिये । अगर अरब खरब भी ऐसा धन मिले तो वह कौड़ी भी नहीं लेता था ।

497

जितनी भूमि अंगूठे के नीचे आये उतनी सी भी किसी के दबने नही दूं । इसी तरह मैं दूसरे की रंच मात्र भूमि पर भी अधिकार नहीं करूं ।

498

दौलतखां में करतार की ऐसी ज्योति थी कि वह जो बात मुंह से निकालता वह सत्य सिद्ध होती । वह वचन सिद्ध था ।

499

बीका ढोसी पर हमला करने गया था पर पठानों की मार से वहां टिक नही सका और भाग आया । लूनकरण चित में क्रोध करके उधर दल बल सजाकर चला ।

500

उसने पाटोधे में डेरा किया और अपने प्रधानो को दौलतखां के पास भेजा । लूनकरण ने अभिमान पूर्वक उनके साथ एक पत्र भेजा ।

501

उसने पत्र में लिखा दौलतखां चिट्ठी देखते ही जल्दी मेरे पास आ जावो । अगर अपना भला चाहते हो तो कुछ सहायता मेरे पास भेज दो ।

502

इस चिट्ठी को पढ़कर दौलतखां बड़ा क्रुद्ध हुआ । उसने इस चिट्ठी पर पेशाब कर दिया । 'कह्यै कामले भांड़ को' का यह अर्थ प्रतीत होता है कि उसने क़िसी भांड को कहा कि इस चिट्ठी पर मूतो ।

503

प्रधानों के देखते हुये उसने उस चिट्ठी पर पेशाब कर दिया । वे प्रधान जल बलकर कोयला हो गये पर कुछ नहीं कह सके ।

504

इसने बालू रेत मंगाकर दूत के अंचल में बाँध दी । इसका मतलब था कि लूणकरन के सिर में धूल डलेगी अगर वह लड़ने नहीं आवेगा ।

505

उसने लूनकरन को यह संदेश भिजवाया कि तूं घोड़े पर चढ़ा है पर अगर लड़ने नहीं आया तो ऐसा माना जायेगा कि तू गधे का सवार है ।

506

उसी समय प्रधानों को धक्के देकर निकाल दिये । उसने कहा कि हम दूत को मारते नहीं है इसी लिये तुम्हें नहीं मारता ।

507

तब प्रधान उठकर चले गये तो नगर में चिन्ता हो गयी । इस पर दौलतखां ने कहा कि उसके धड़ पर सिर नहीं है । अर्थात् वह लड़ाई में मारा जावेगा ।

508

प्रधान उदास चेहरे से लूनकरण के पास गये । जो वचन दौलतखां ने कहे थे वे सारे उसे कह सुनाये ।

509

लूनकरन यह सुनकर बड़ा क्रुद्ध हुआ । उस समय उसने यह निर्णय लिया कि पहले ढोसी पर विजय प्राप्त करलें फिर लौटते समय इसे मार डालेंगे ।

510

उधर से चढ़कर वह ढोसी गया । उसके साथ बड़ी सेना थी । उधर पठान थे जो उससे शूरवीरता से लड़े ।

511

आगे पठान थे उनकी मदद तुर्कमानों ने की । उन्होंने हिन्दुओ को रणक्षेत्र में मारा । बड़ी भयंकर लड़ाई हुई ।

512

वहां उन्होंने लूनकरण को मार लिया । उसका सारा माल लूट लिया । जान कहता है तुर्कमानों ने राठोड़ों को बड़ी चोट पहुंचाई ।

513

दौलतखां चौहान ने पहिले ही जो कुछ कहा था वही आगे चलकर सत्य हुआ ।

514

दौलतखां बड़ा बांका वली था । उसे कोई नहीं हरा सकता था । उसका जीत का डंका बजा करता था । शाह भी उससे भय खाते थे ।

सुलतान बाबर सुं दौलतखां मिल्यो...

517

बाबर काबुल से चलकर दिल्ली देखने आया । उसने कलंदर का वेश धारण किया और साथ में एक बाघ लिया ।

518

आते आते वह फतेहपुर में आ गया । उसने दौलतखां से मिलकर यह कहा कि बाघ के लिये एक गाय मंगावो ।

519

आज हमारा बाघ तीन दिनों से भूखा है । इसके खाने को गाय मंगावो ताकि हमारी इच्छा पूर्ण हो ।

520

दौलतखां दीवान ने गाय मंगायी पर यह कहा कि मैं देखता हूं मेरे देखते बाघ गाय को कैसे खाता है ।

521

जब बाघ गाय को मारने को उठा । उसने गाय को निकट से देखा । दीवान दौलतखां ने तब हांक लगायी । सिंह इससे गाय को नहीं खा सका ।

522

बाघ गाय की ओर फिर उठकर चला । दीवान ने उसे फिर हटक दिया । इस पर बाघ वहीं का वहीं खड़ा रहा और गाय को नहीं खाने पाया ।

523

तब बाबर ने कहा कि दौलतखां तुमने गाय की रक्षा कर ली । तुमने सिंह के साथ ऐसा किया । आगे मूल में पाठ नही है ।

524

सत्पुरूषो की कड़ी दृष्टि को सिंह भी नहीं सह सकता । सुभटो की हंकार, सुनकर हाथियों का मद भी सूख जाता है ।

525

बाबर यहां से चलकर अलवर आया । उसने भ्रमित होकर हसनखां मेवाती के कटक को देखा ।

526

वहां से वह दिल्ली को गया और सिकन्दरशाह को देखा । इस प्रकार सारे हिन्दुस्तान की थाह लेकर वह काबुल पहुंचा ।

527

लोग उससे दिल्ली मंडल की बातें पूछने आये तो उसने कहा कि मैने तीन ही बड़ी बातें देखी हैं ।

528

मैंने ऐसे तीन पुरूष देखे जो सारे हिन्दुस्तान में मशहूर हैं। उनके समान दूसरा जगत में कोई भी नजर नहीं आता।

529

एक स्वयं दिल्ली का बादशाह सिकन्दर था। दूसरा मेवाती हसनखां था जिसके पास असंख्य कटक था।

530

तीसरा फतेहपुर आकर दौलतखां को देखा जिसके डर से बाघ गाय नहीं मार सका।

531

दौलतखां चौहान का क्या वर्णन करें! वह अप्रतिम योद्धा के साथ साथ वह दीनों के प्रति दया करने वाला व दान देने वाला था।

दौलतखां ने गौर निरबांन मारे।

532

गौड़ राजपूत और निर्वाण नागौर के गांवो को लूट कर जा रहे थे। यह बात सुनकर दौलतखां नीसान बजाकर उन पर चढ़ा।

533

उसने मार्ग में सभी गौड़ों और निरवाणों को घेर लिया। भयंकर युद्ध हुआ और नारद नृत्य करने लगा।

534

अंत में दीवानजी जीत गये। उन्होंने दुर्जनों का कूट डाला। दौलतखां चहुवान ने सारा लूट का माल लूट लिया।

535

एक दिन दौलतखां शिकार के लिये चला । उसके साथ बाज, कुही, बहरी और अन्य शिकारी पक्षी थे ।

536

उसने कुंज पक्षी के लिये अपनी बहरी छोड़ी । वह आकाश में उड़ी । वह कहीं नजर नहीं आयी तब दौलतखां निराश होकर लौट आया ।

537

जाते जाते बहरी हिसार जा पहुंची । वहां मीर शिकार के लिये बाज को बुला रहे थे ।

538

उसने बहरी को लेकर सिकदार को सौंप दी । उसने उसे प्रेम पूर्वक रखा । दौलतखां यह बात सुनकर ससैन्य हिसार गया ।

539

वह हिसार का सिकदार था । उसका नाम मुहब्बतखां था । वह साराखानी सेना सजाकर लड़ने आया ।

540

यह बात सुनकर दौलतखां नासों नामक स्थान पर उतरा । उधर से साराखानी आया । इधर से दौलतखां चला । दौनों सेनायें नासों में मिली ।

541

मुहब्बतखां ने दूर से दौलतखां को देखा तो उसका मुख उदास हो गया, हृदय धड़कने लगा और बाणो में विचलन पैदा होने लगी ।

542

पठान ने अपने दल के लोगो से स्पष्ट कह दिया कि दौलतखां चौहान से मैं नही लड़ सकता ।

543

यह कहकर वह उठकर चला गया। उसके मन में धीरज नहीं रहा। उसके मन में भय और पीड़ा हुई। वह रणक्षेत्र से हटकर दूसरे मार्ग पर चला गया।

544

जीत के नगाड़े बजाता दौलतखां आया। चौहान जैसे सुभट की दृष्टि ही अनेकों सुभटो को नष्ट कर देती है।

545

उस पठान ने दौलतखां से अपना अच्छा बचाव किया। जो किसी से सम्बन्ध मानता है उस सम्बन्ध को कभी दाव पर नहीं लगाता।

546

आप ही अपने को मारता है उस कर्म को हिंसा कहते हैं। जो अपने गोत्र पर घाव करता है वह ऐसा करता है मानो आत्महत्या कर रहा है।

547

एक ही डारी होती है पर झूले की डोरियाँ अलग अलग होती है। जो एक ही रज से उत्पन्न हुये हैं वे एक ही रज में माने जाते है। देखने में वे चाहे अलग अलग हों।

548

जो गोत्र की लाज खोते हैं तथा ऐसा करते जिन्हे लज्जा नहीं आती ऐसे व्यक्ति में या तो रज नहीं या वे उस रज (वीर्य) के बने हुये नहीं है।

549

जो गोत्र के दुख से दुखी होता है वह कुल का तिलक होता है। कुल के दुख को देखकर उसे पीड़ा होती है। आंखो में नींद नहीं आती।

550

दौलतखां के अच्छे वचनों को सब मन लगाकर सुनो । दीवानजी हमेशा तीन बातें कहा करते थे ।

551

संसार का कर्ता एक है । मन में किसी दूसरे की बात मत सोचो । उसने सारे संसार की रचना अपने आप की है । किसी दूसरे को उसने साथी नहीं बनाया ।

552

दूसरी बात धीरज को नहीं छोड़ना है । कर्ता को छोड़कर किसी दूसरे से मत डरो । अगर हजारों और लाखों भी शत्रु हो जावें तो भी उनसे डरो मत ।

553

जान कवि कहता है कि क्या होता है अगर बैरी खोटी बाते बकते रहते हैं । पहाड़ों को लोग कब से गिर गिर कहते हैं पर वे उनके कहने से गिर थोड़े ही जाते हैं । वे तो सदा अडिग और अचल बने रहते है ।

554

दीवानजी की एक और बात अपने विवेक से समझो । उनका कहना है कि न्याय करते समय सज्जन और दुर्जन को एक मानो ।

555

जब बहलोलखां मर गया तो सिकन्दर उसकी जगह बादशाह बना । दौलतखां उसकी कुछ परवाह नहीं करता था । वह अपनी भुजाओं के बल से कल्लोल कर रहा था ।

556

दौलतखां चौहान ने अपनी भुजाओ के बल से शत्रुओ के लिये मतवाले हाथी के समान होकर उन्हें चीर डाला है । वह हाथियों की सेना को देखकर उसकी जरा भी परवाह नहीं करता है । उसे देखकर हाथी का मद सूख जाता था । वह बाघ होकर उसे चीरकर रख देता था । सिंह को देखकर वह शार्दूल हो जाता है । सिंह को देखकर अपनी भुजाओ के बल से उसे मार

डालता है । जब वह शत्रु रूपी तीतरों के दल को देखता है तो बाज होकर उनपर झपट पड़ता है ।

557

दौलतखां चौहान ने नागोरीखां के मान का मर्दन कर डाला । तैमूर के दलबल को भली भांति मार दिया है, मोहबतखां साराखानी को रण से भगा दिया । गौड़ और निर्वाणों को मारा तथा उनके गढ़ किले तोड़ डाले । शत्रुओं की नारियां उसके डर से बन बन भटक रही हैं । आगे मूल में कुछ छूट गया है । उनको अंगों के लिये पानी नही मिलता, अंगो में वे मंजन नहीं लगा सकती । उनके शरीर पर गहने नहीं है तथा न वस्त्र है । वे भूखी फिर रही हैं । मुख में उनके पान नहीं है और उनकी आंखो में काजल नहीं लगा है ।

558

उधर झुझंनू में मुबारकखां का बड़ा लड़का कमालखां था । उसको झुंझनू सारे माल और द्रव्य समेत दे दिया गया ।

559

दूसरा पुत्र साहबखां था जिसे नूंआ का राज्य मिला । जब तक वह जीया वह अपने भाई के आधीन होकर रहा ।

560

दोनों भाई जब मर गये तो इन दोनों के पुत्र इनके स्थान पर आये । जान कवि अब उनका बखान करता है ।

561

कमालखां का लड़का भीखनखां था । वह झुंझनू में राज करता था । झूंझनू नगर और उसके नीचे के सारे गांव उसके आधीन थे ।

562

साहबखां के लड़के का नाम मोहब्बतखां था। उसकी भीखनखां से दुश्मनी थी फिर भी उसे नित्य सलाम करता था।

563

भीखनखां ने जब मोहब्बतखां के छलपूर्ण व्यवहार को समझ लिया तब से वह उससे नजर नहीं मिलाता था। उसके मन में मोहब्बतखां के प्रति बड़ा क्रोध उपजा।

564

इस पर मुहब्बतखां ने नूआ को छोड़कर दौलतखां के पास जाकर फतेहपुर में शरण ली।

565

मोहब्बतखां ने फदनखां की अपनी लड़की से शादी कर दी। उसने ऐसी व्यवस्था की जिससे यह उसे झूंझनू पर कब्जा दिलादे।

566

उसने कितने ही दिनों तक दौलतखां की सेवा की और इसके बाद विनती की कि मुझे भीखनखां ने अपने देश से निकाल दिया है।

567

दौलतखां ने उससे कहा कि नूंआ तेरी है तुम जल्दी वहां चले जावो। मै देखता हूं तुझे वहां से कौन निकालता है।

568

अगर भीखनखां नहीं माने तो इधर एक आदमी भेज देना। मै उसे अच्छी तरह समझाकर रखूंगा।

569

जब वह नूंआ[१] चला गया तो भीखमखां ने यह बात सुनी । वह बड़ा दल सजाकर लड़ने को आया ।

570

मोहब्बतखां ने यह सुनकर फतेहपुर आदमी भेज दिया । उधर से नाहरखां सेना लेकर चढ़ा और शीघ्र आ गया ।

571

इधर से मोहब्बतखां चढ़ा और उधर से भीखनखां ने चढ़ाई की । आबूसर[२] के ताल पर बड़ी घमासान लड़ाई हुई ।

572

नाहरखां को देखकर भीखनखां कांपने लगा । जिस प्रकार शेर को देखकर गायें डर कर भाग जाती है ।

573

जब भीखमखां भाग गया तो आगे बढ़कर नाहरखां ने मोहब्बतखां को झूंझनू की गद्दी पर बैठा दिया ।

574

नाहरखां जब युद्ध जीतकर नगाड़े बजाता हुआ आया तो दौलतखां ने उसे प्यार से गले लगाया ।

575

जब तक दौलतखां जीवित रहा उसने अनेकों वीरतापूर्ण कार्य किये । अन्त में वह भी चला गया । इस झूठे संसार में कोई भी स्थिर नही रहा है ।

१- नूंआ झूंझनू के पश्चिम में एक छोटा गांव है २- आबूसर झूंझनू से पश्चिम में २ मील पर बसा गांव है ।

दीवान नाहरखां के पुत्र

फदनखां, बहादुरखां, दिलावरखां ।

576

बड़ा पुत्र फदनखां था । उससे छोटा बहादुरखां था तथा सबसे छोटा पुत्र दिलावरखां था ।

नाहरखां को बखान

577

जब वीरवर दौलतखां मृत्यु को प्राप्त हुआ तब नाहरखां पिता की गद्दी पर बैठा ।

578

उसे ईश्वर ने धन दौलत दी थी । वह इस धन से रात दिन किलोलें करता था अर्थात् ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करता था । उसने रूपवती चतुर वैश्यायें बड़ी संख्या में खरीद रखी थीं ।

579

रातदिन नाचगान होते रहते थे तथा क्षण क्षण में कौतुक पूर्ण बातें होती थीं । राजा तथा सुल्तान ये दोनो प्रेम के रंग में रंगे हुये होते हैं अर्थात् रसिक प्रवृति के होते है ।

580

वह रसिक था पर साथ साथ बड़ा बहादुर भी था । उसमें बांकापन व शौर्य था । उससे भोमिया भयभीत रहते थे तथा सीमान्त के राजा उससे भयभीत थे ।

581

बीकानेर वालों ने आपसी दुश्मनी दूर करने के लिये लूनकरन की बेटी नाहरखां को दे दी । इससे दोनों ओर बड़ा संतोष हुआ ।

582

जब लूनकरण जीवित था तब उसने अपनी लड़की देने की बात कही थी । उसके मरने पर उसके प्रधानों ने उसका विवाह कर दिया और शरण में आये ।

583

जब सिकन्दर लोदी मर गया तो उसका पुत्र इब्राहीम गद्दी पर बैठा । उसको मारकर बाबर ने दिल्ली पर कब्जा कर लिया । उसे दिल्ली अल्लाह ने दी थी ।

584

उसके पीछे हुमांयु बादशाह हुआ । उसके बाद नाहरखां के समय शेरशाह बादशाह बना ।

585

नाहरखां को देखकर शेरशाह ने उसे बड़ा आदर सम्मान दिया । वह उसे मामा कहकर बातें करता था । और बहुत प्रेम रखता था ।

586

शेरशाह ने नाहरखां को कहा कि फतेहपुर तुम्हे पेशकश में दियां गया है । तुम वहां जाकर सुख़ से बैठकर उसे भोगो ।

587

नाहरखां के यहां बड़ी उत्तम किस्म का इत्र निकलता था । उसकी सुगन्ध पर प्रसन्न होकर नाहरखां से बादशाह ने मांग लिया ।

588

अपने मन की योजना के अनुसार दीवान ने एक महला चिनाया । ऐसा महल संसार में दूसरा नहीं था । इसके लिये दीवान के विवेक उसकी सूझबूझ को धन्य है ।

589

इस महल का निर्माण विक्रम संवत 1593 में हुआ । उस दिन भाद्र मास की शुक्ला अष्टमी और सोमवार था ।

590

राणा ने नागौरीखां पर आक्रमण किया । खान ने उसका सामना किया क्योंकि उसे अपने पूर्वजो की लाज थी ।

591

नागौरीखां की आन सभी राठौड़ और कछवाहे मानते थे । वह दिल्ली के बादशाह की परवाह नहीं करता था तथा मुगल एवं पठानों को कुछ नहीं समझता था ।

592

उस समय जोधपुर के राव गांगा एवं बीकानेर के राव जैतसी आये । अमरसर का सूजा शेखावत एवं आमेर के पृथ्वीराज भी आये । इनके अलावा निकट के और भोमिया भी एकत्रित हुए ।

593

नागौरीखां ने चिठ्ठी लिखकर नाहरखां को बुलाया । राना का आना सुनकर दीवान तुरन्त रवाना हो गया ।

594

वहां जाकर नाहरखां ने सुना कि राना बारह कोस पर रूका हुआ है और नागौरीखां गढ़ में है । वह बाहर निकल कर नहीं लड़ रहा है ।

595

उसके मन में बड़ा क्रोध हुआ । वह नागौर से तीन कोस गया । उसने नागौर के किले में प्रवेश नहीं किया ।

596

नागौरीखां ने यह बात सुनी तो आदमी भेजकर कहलाया कि तुम अकेले क्यों जा रहे हो। गढ़ में आकर उतरो।

597

इस पर नाहरखां ने कहा कि राणा पास में ठहरा हुआ है और तुमने किले की ओट ले रखी है। तुम बाहर नहीं निकलते हो।

599

मैं पीछे नहीं आवूंगा क्योकि आगे आ ठहरा हूं। अगर तुम्हारे मन में मिलने की इच्छा है तो यहां चले आवो।

600

नागौरीखां यह सुनते ही नीसान बजाते हुये चढ़ा। वह नाहरखां के पास आया और उससे मिलकर बड़ा प्रसन्न हुआ।

601

तब यह बात सुनकर राना रात को ही भाग गया। वीर की धाक और हुंकार सुनकर कायर कैसे ठहर सकता है ?

602

नागौरीखां राना की खोज में चला। जिधर से राना निकला था। दोनों सेनाये आगे पीछे चल रही थी जैसे रात के पीछे सवेरा।

603

राना पहाड़ में घुसगया तो सेना नागौर लौट आयी। सारे गांव इस सेना ने लूट लिये। कोई स्थान लूटे बिना छोड़ा नहीं।

604

लूटपाट करके ये आनन्द से चले आ रहे थे तो जगमाल पंवार ने इनके पास एक आदमी भेजा ।

605

अगर तुम में रजपूती हो अर्थात् लड़ने की हिम्मत हो तो रूक जावो । मैं एक या दो पहर में पहुंच रहा हूं ।

606

राना ने मुझे अतीव प्यार कर अजमेर सौंपी थी । तुम उसे लूट कर जा रहे हो अतः एक लड़ाई करते जावो ।

607

किसी ने उसकी तरफ अपना मुख नहीं किया अर्थात् उसकी बात का उत्तर नही दिया तब राजदूत उठकर चलने को हुआ । वह किसी की परवाह नहीं करता था तथा वह ढीठ बनकर मुख से गालियां निकालता था ।

608

नाहरखां यह बात सुनकर सह नहीं सका और उस पंवार के दूत को हुंकार देकर अपनी ओर बुला लिया ।

609

उसने दूत को कहा कि पंवार से जाकर कहदो कि धीरे धीरे आवे । मेरा नाम नाहरखां बागड़ी है । मै बिना प्रणाम किये नही जाऊंगा ।

610

नाहरखां वहीं स्थिर रहा । और लोग उसे छोड़कर चले गये । उन लोगों ने अपनी पहिचान कुछ नहीं रखी तथा न रजवट की लाज रखी ।

611

नागौर का खान नागौर चला गया, बीके लोग बीकानेर चले गये । सूजा अमरसर और आमेर वाले आमेर चले गये ।

612

नाहरखां वहीं अचल रहा । उसने मन में धैर्य धारण किया । जिस वंश में पृथ्वीराज और हम्मीर हुये हैं उस वंश का आखिर वह वीर था ।

613

उसने पंवार की बाट देखी और मकराने के ताल में ठहर गया । वहीं बहुत सी सेना के साथ उसे जगमाल नजर आया ।

614

वह अजमेर का फौजदार था । उसका नाम जगमाल पंवार था । राना की सेना को साथ लिये आया । सामने अनेकों सैनिक और घोड़े थे ।

615

दोनों सेनाओं ने अपने को विभिन्न अंगो में बांटा अर्थात मोर्चे लेकर खड़ी हुयीं । घमासान युद्ध होने लगा । बहुत सी गोलियां चलने लगीं और बाणों की वर्षा होने लगी ।

616

बजने वाले नीसानो का शब्द ऐसे हो रहा था मानो बादल गरज रहे हों । बड़ी संख्या में चलते हुये बाण ऐसे नजर आ रहे थे मानो वर्षा की बूंदे लगातार गिर रही हों ।

618

तीखे बाण चल रहे हैं जो शरीर में घाव कर देते हैं । जिधर तलवार लग जाती है कमर, सिर और हाथ कट कर गिर पड़ते हैं ।

619

चौहान और पंवार की सेनाओ में बड़ा घमासान युद्ध हुआ । वीर एक दूसरे से लड़ मरे । उनके गिरने से युद्ध में बड़ा कीचड़ फेल गया ।

620

यौद्धाओं ने युद्ध के अनेको खेल करके अपनी कीर्तिके गीतों की रचना की । वे लड़ते हुये जरा भी मुड़ते नहीं थे और अपनी शूरवीरता के कारण युद्ध भूमि में कट पड़ते थे ।

621

खून के नाले बह चले । सारा ताल खून से लाल हो उठा । अंत में नाहरखां की जीत हुई और जगमाल रण छोड़कर भाग गया ।

622

नाहरखां ने युद्ध भूमि पर जाकर कभी पीछे की ओर मुंह नही किया । वह दौलतखां का पुत्र युद्ध में आगे ही बढ़ता था पीछे नही हटता था ।

623

दौलतखां का पुत्र नाहरखां जगत में वन्दनीय था । वह सचमुच में नाहर था । उसके घोड़े पर चढ़ने से शत्रु हिरण की तरह भाग जाते थे । वे गायों की तरह भाग पड़ते थे । उसने मकराने में जगमाल को युद्ध से भगाया । उसकी हाक से राना भय मानता था । मुहब्बतखां की भुजा उसने प्यार कर पकड़ी और उसका बेड़ा पार लगाया अर्थात झुंझनू का राज दिया ।

श्री दीवान फदनखां के पुत्र

ताजखां, पेरोजखां और दरियाखां ।

624

फदनखां के तीन पुत्र थे जिनके नाम ताजखां, पेरोजखां और दरियाखां थे । उन्हें सभी लोग जानते थे ।

625

जब नाहरखां मर गये तो फदनखां उसके स्थान पर फतेहपुर में गद्दी पर बैठे ।

626

दीवान फदनखां को करतार ने ज्ञान दिया था । वह लुकमान हकीम की तरह उस ज्ञान को सभी को देता रहता था ।

627

दिल्ली में उस समय सलीमशाह बादशाह था । उसने फदनखां से मिलने की बहुत इच्छा की ।

628

मोहब्बतखां का पुत्र खिदरखां उस समय दिल्ली में फदनखां के पास था । उस समय बादशाह ने उससे इस प्रकार कहा ।

629

फदनखां तुम इधर आवो । जहां तुम खड़े हो वह स्थान तुम्हारे योग्य नही है । भाई है तो क्या हुआ । तुम सब भाइयो में सिरमौर हो ।

630

उसके बाद हुमायुं दिल्ली का सुल्तान हुआ । उसने फदनखां को बुलाकर बहुत आदर सम्मान दिया ।

631

जब दिल्ली का बादशाह अकबर हुआ तो उसने भी दीवान फदनखां से बहुत प्रेम रखा ।

632

वह रात दिन उससे बहुत प्रेम करता था । इस प्रकार फदनखां चौहान का मान संसार में बहुत बढ़ा चढ़ा था ।

634

एक दिन बीरबल ने बादशाह से पूछा कि आप इस फदनखां पर इतनी दया किस कारण करते हो ।

635

उस समय बादशाह ने कहा कि और तो मेरे द्वारा बनाने से बड़े हुये हैं तथा फदनखां को करतार ने बड़ा बनाया है ।

635

राजपूतो में साढ़े तीन कुल श्रेग्ठ माने जाते हैं ।वे कौन कौन हैं यह बात मै तुम्हे समझाता हूं ।

636

प्रथम चौहान हैं । दूसरे तँवर हैं और तीसरे पंवार हैं ।आधे में दूसरे सारे राजपूत आ जाते है ।

637

जैसे वाद्यो में बड़ा नगाड़ा है उसी प्रकार राजपूतो में चौहान हैं । यह गोत सभी जातियों से बड़ा है ।

638

फदनखां से एक दिन बादशाह ने ऐसा कहा कि हमारे और तुम्हारे बीच सम्बन्ध होना चाहिये । इससे मेरे मन की इच्छा पूरी होगी ।

639

फदनखां ने इस पर विचार करके अकबर को अपनी बेटी विवाह में दे दी । अब पहले का प्यार और भी अधिक हो गया । दोनों इस सम्बन्ध से सुखी हुये । वह आगे चलकर ताज के नाम से बड़ी मशहूर कवयित्री हुई ।

640

बादशाह भोमियों का विश्वास नहीं करता था। हिन्दू जल्दी ही गुमराह हो जाते हैं और फिरते हुये देर नहीं लगाते।

641

उसने फदनखां से कहा कि इन हिन्दुओं को तभी मनसब दूंगा जब तुम इनकी जामनी दोगे। इस पर फदनखां ने सबकी जामनी दी।

642

रायसल[१] शेखावत की बॉह पकड़ कर उसे दरबारी बनाया और मनसब तथा मान सम्मान दिलवाया।

643

सीमा से लगे बीदवाटी से बीदावत फदनखां के राज्य में चोरी धाड़ा करने लगे। इस पर दीवान फदनखां को बड़ा क्रोध आया।

644

फदनखां बीकानेरवालों की कोई परवाह नहीं करता था। वह सेना चढाकर बीदावाटी में गया। उसकी सेना का नगाड़ा निडरता से बज रहा था।

645

वह अपनी सेना सहित् छापर[२] और द्रोणपुर[३] पहुंचा। इस पर बीदे भाग गये। वे दीवान से लड़ नहीं सके और युद्ध से पलायन कर गये।

१-रायसल शेखावत सूजा का पुत्र था। आगे चलकर यह बड़ा प्रसिद्ध हुआ। इसने बादशाह के अनेकों युद्धों में वीरता पूर्वक भाग लिया।२-छापर सुजानगढ़ तहसील का नगर है। आजकल तालछापर के नाम से प्रसिद्ध है।३-गोपालपुरा के पास सुजानगढ़ तहसील का एक छोटा गांव।

646

इस प्रकार बीदावाटी का विध्वंस करके दीवान लौट आया। इस पर बीदावतों ने चोरी न करने की सौगन्ध खाई।

647

फदनखां इसके बाद निर्वाणों के ऊपर चढ़ा। उसके मन में बड़ा क्रोध था। उसने अपने साथ बहुत से वीर घुड़सवार लिये जिनके घोड़ों के जालीदार कवच लगे थे। उसने जीत का नगाड़ा भी बजाया।

648

निर्वाणों पर इस समय बहुत मार पड़ी। उसने छापोली[१] और पूंख[२] को जलाकर राख कर डाला।

649

ऐसा कौन शूर निर्वाणों में है जो फदनखां से लड़ सके। नाहरखां के पुत्र को सारा संसार मान देता है।

650

दीवान नाहरखां अधिपति का पुत्र फदनखां था जो बड़ा शूरवीर था। वह सेना सजाकर द्रोणपुर, छापर पर गया तो उसके सामने राठौड़ नहीं ठहर सके। उसने एक ही हमले में छापोली और पूंख को धूल में मिलादी। उसने खिदरखां की सहायता की और उसे झूंझनू की गद्दी पर बैठाया। बदरखां पाठ मूल में अशुद्ध प्रतीत होता है।

श्री दीवान ताजखां के पुत्र

महमदखां, महमूदखां, सेरखां, जमालखां, जलालखां, मुजफरखां, हेवतखां और हबीबखां।

१- छापोली झुंझनू जिले का उदयपुर तहसील का छोटा गांव है। २- पूंख भी उदयपुर तहसील का छोटा पहाड़ी गांव है।

651

दीवान ताजखां के आठ पुत्र थे जिनके नाम महमदखां महमूदखां, सेरखां, जमालखां, जलालखां और मुज्फरखां थे ।

652

हैवतखां, हमीदखां ये आठ ताजखां के पुत्र थे । ये चन्द्रमा की तरह लगते हैं और राजा, नवाब इनके सामने फीके लगते हैं ।

653

जब फदनखां मृत्यु को प्राप्त हुआ तो इसकी जगह उसका पुत्र ताजखां गद्दी पर बैठा ।

654

ताजखां बड़ा रूपवान था । उसके रूप की चर्चा सर्वत्र फैल गयी । लोग बिना पूछे ही जान लेते थे कि यह ताजखां कुल शिरोमणि है ।

655

उजियारे के दौलतखां पठान ने उसके रूप की प्रशंसा सुनी तो उसका चित्र मंगाकर देखा और बड़ा प्रसन्न हुआ । ज्ञात नहीं उजियारा कहां है । पाठ में अशुद्धि प्रतीत होती है ।

656

ताजखां अलवर से सदलबल चढ़ा और उसने सारी, खरकरी और येदल गढ़ को नष्ट कर डाला ।

657

उसने मलिक ताज को लूटा । यह पठान सरदार था । इसके बाद उसने रेवाड़ी का थाना लूट लिया ।

658

ताजखां चौंहान अलवर से दल सजाकर चढ़ा। उसने सारां और खरकरी को नष्ट भ्रष्ट कर डाला। येदलगढ़ को लूट लिया। मलिक ताज को नष्ट करके रायमल को पराजित करके वह बड़ा प्रसन्न हुआ। यह रायमल संभवतः शेखावत रायमल है जो सम्वत् 1594 तक विद्यमान था। उसने रेवाड़ी के थाने को नष्ट भ्रष्ट कर डाला। उसका यश सारे जहान में इन विजयों के कारण फैल गया। रायमल पर विजय ताजखां ने अपने पिता के समय में प्राप्त की होगी।

659

ताजखां का बड़ा पुत्र महमदखां था। वह ज्ञानी, वीर, दाता था। उसके बराबर गुणों में कोई नहीं था।

660

वह साहित्य का मर्मज्ञ था। छिपे हुए अर्थ को जान जाता था।वह अतुलित ज्ञानवान और चतुर था। वह अपने दान से सभी की इच्छा पूर्ण करता था।

श्री दीवान महमदखां के पुत्र

अलिफखां, इबराहीमखां, सरमस्तखां।

661

अलफखां महमदखां के पुत्रो में सबसे बड़ा और श्रेष्ठ है। दूसरा पुत्र इब्राहीमखां और तीसरा सरमस्तखां है।

662

महमदखां ने क्योर और बैराठ पर विजय प्राप्त की। उसने अपनी तलवार के बल राठ के क्षेत्र अलवर के क्षेत्र को बरबाद कर डाला।

663

मांडन कूंपावत राठौड़ का पुत्र कुंभकरण था जिसे महमदखां ने युद्ध क्षेत्र से भगा दिया।

664

ताजखां का पुत्र महमदखां बड़ा वीर था । उसने तलवार के बल पर क्योर और त्रैराठ पर विजय प्राप्त की । शत्रु उसके चरणों पर आ लगे । उस वीर ने मांडन क पुत्र कूंपावत कुंभकरण को रणक्षेत्र से भगा दिया । वह अतीव धार्मिक और सुन्दर था और भोज तथा कर्ण के सामान दानवीर था तथा बुद्धिमान था ।

665

वह भरी जवानी में मर गया । अगर पुत्र पिता के पहले मरता है तो दुनिया में इससे दुखदाई वस्तु दूसरी नहीं है ।

666

ताजखां को उसकी मृत्यु पर बड़ा दुख हुआ पर उसका कुछ वश नहीं चला । वह लगातार रोता रहा पर आंसुओ के अलावा उसके हाथ कुछ नहीं लगा ।

667

महमदखां का सुपुत्र अलफखां था । ताजखां दीवान ने अपने पोते अलफखां के सिर पर अपना हाथ रखा ।

668

वह अलफखां को बादशाह के पास ले गया । उसने बादशाह से प्रार्थना की कि मेरे घर में यही बड़ा है इसे मान सम्मान प्रदान करें ।

669

अकबर ने उसको प्यार किया जब ताजखां की बात सुनी । उसने अलफखां को उस होनहार वृक्ष की तरह देखा जिसके पत्ते चिकने होते हैं ।

670

जब तक ताजखां जिन्दा रहा उसने अलफखां को अपने साथ रखा । पल भर भी उसे अपनें से दूर नहीं करता था मानो वह उसका आधा अंग हो ।

श्री नवाब अलिफखां के पुत्र

दौलतखां, न्यामतखां, सरीफखां, जरीफखां और फकीरखां ।

671

बड़ा पुत्र दौलतखां था । दूसरा न्यामतखां था । उनके बाद सरीफखां, जरीफखां और फकीरखां थे ।

672

जब ताजखां मृत्यु को प्राप्त हुये तो उसकी जगह अलफखां गद्दी पर बैठा ।

673

अकबर ने उसे टीका दिया । हाथी, घोड़ा और सिरोपाव दिया । उसे अपना प्रिय समझ कर फतेहपुर नगर दिया ।

674

बादशाह ने उस पर दया की । उसके मनसब में वृद्धि की । मान सम्मान बढ़ाया । बादशाह ने अपना फरमान लिखकर उसे फतेहपुर नगर दिया ।अलफखां दीवान को यह सब पाकर बड़ा आनन्द हुआ ।

675

उसने फरमान घर पर भेज दिया । उसकी पट्टी में कछवाहे लोग बसे हुये थे । कछवाहा गोपाल[१] का लड़का श्यामदास[२] मानता नही था तथा अपना अधिकार जताता था ।

676

उस समय फतेहपुर में शिकदार शेरखां था । उसने कछवाहों को लड़ाई में जीत कर उन्हें उस पट्टी से निकाल दिया ।

१- गोपाल अमरसर के शासक सूजा का तीसरा पुत्र था ।श्यामदास इसी का पुत्र था । २- श्यामदास गोपाल कछवाहे का पुत्र था जो फतेहपुर पट्टी में बसा हुआ था । वस्तुतः ये कछवाहे वर्तमान सीकर के आसपास बड़ी संख्या में बसे हुए थे । सीकर के पास के स्थान सीहोर बड़ी में इनका एक शिलालेख मिला है ।

677

उधर झूंझनू में बहादुरखां था जिसका पुत्र शम्सखां था । वह अपने पिता के मरने पर झूंझनू की गद्दी पर बैठा ।

678

उसके भाई उसे कुछ नहीं समझते थे । रात दिन उसे दुख देते रहते थे । अलफखां जब दरबार में गया तो उसे भी साथ ले गया ।

679

उसने शम्सखां की बांह पकड़ी और उसे बादशाह से मिलाया । उसको बादशाह से मनसब और मान दिलाया ।

680

अब तक यही बात चलती रही है कि झुंझनू में वही बड़ा होता है जिसे फतेहपुर वाले बड़ा करते हैं । अल्लाह का यही करम है ।

681

अकबर को पहाड़ी प्रदेश से चिंताजनक समाचार मिले तो उसके मन में बड़ा दुख हुआ । उसने जगतसिंह को उधर भेजा और अलफखां को उसके साथ कर दिया ।

682

वे पहाड़ में घुस गये । द्रुवन लोगों को दीवानजी ने अच्छी मार लगायी जिससे वे पस्त हो गये ।

683

उन्होंने धमेहरी और तिहारा पर कब्जा कर लिया । राजा वसु ने युद्ध में बहुत पराक्रम दिखाया जिससे जगत में उसका नाम फैल गया ।

684

इस पर डरकर पहाड़ी राजा तिलोकचन्द.आकर बादशाही सेना से मिल गया। अलफखां व जगत सिह ने उसे ले जाकर बादशाह के चरणों पर डाला।

685

जब सलीम ने राणा के ऊपर चढ़ाई की तो उसने बादशाह से अलफखां को प्रेमपूर्वक मांग लिया।

686

वहां जाकर थाने बांटे तो महत्त्वपूर्ण सादड़ी का थाना अलफखां को दिया।चौहान अलफखां ने राना के थाने को देखकर उधर दौड़ लगायी।

687

उसने शत्रुओ के सर काट कर वहां एक चौंतरा सा बनाया। उसके हाथ लूट का बहुत सा माल लगा और संसार में यश मिल गया।

688

राना ने जब यह बात सुनी तो वह क्रोध के मारे अपने हाथों को काटकर खाने लगा। राना इतना होते हुये भी अलफखां के थाने पर हमला करने नहीं आ सका।

689

ऊँटाले में सम्सखां का थाना था। राना सेना लेकर उधर आया तब चौहान सम्सखां ने राने के ऊपर अच्छी मार की।

692

शाहजादे ने इस बात को सुनकर दोनों से बड़ा प्रेम किया। उसने कहा कि अलफखां और सम्सखां दोनो बड़े शूरवीर हैं।

693

जब बादशाह अकबर मर गया तो उसकी जगह उसका वीर पुत्र सलीम जहांगीर नाम से बादशाह बना ।

694

तख्त पर बैठने से उसका नाम जहांगीर हुआ । वह रात दिन लोगो को कुछ न कुछ देता रहता था ।

695

उसने दीवान अलफखां पर बहुत कृपा की और प्रेमपूर्वक फतेहपुर का लालमोहर[१] का पट्टा उसके नाम कर दिया ।

696

उसने राव मनोहर शेखावत[२] और अलफखां को मेवात भेजा । जहां उन्होंने लोगों को बहुत दबाया जिससे वे उनकी सेवा करने लगे ।

697

बीकानेर के राव दलपत ने अपनी सेना के साथ गांवो को लूटना शुरू किया । इसने बादसाह की कोई परवाह नहीं की ।

698

उसने जाक्हीन के दल को भगा दिया और सेना के साथ सरसे में आ गया । वहां बादशाह की संपति लूट ली । उसे इस कार्य पर बड़ी प्रसन्नता हुई ।

१-लालमोहर का पट्टा वस्तुतः स्थायी अधिकार का द्योतक पट्टा था । जो व्यक्ति अपने वतनं में जागीर पाने का इच्छुक होता उसे आवेदन करना पड़ता था तब चंगेजखां के वंश की रीति के अनुसार उसे अल्तमघा जागीर की स्वीकृति दी जाती । इसमें परिवर्तन या हटने का डर नही रहता था । यह एक तरह से पुश्तेनी अधिकार था । इस पर अल्तमघा मोहर लगती थी जिसमें लाल स्याही लगती थी । लाल मोहर का पट्टा अत्यन्त विश्वसनीय लोगों को ही दिया जाता था । जहांगीर ने मोहर के स्थान पर पहले सोने की पत्तियाँ लगाने और फिर मोहर लगाने की प्रथा जारी की थी ।२-यह लूनकरन शेखावत का पुत्र था । इसका मनसब १५०० जात और ६०० सवार का था । यह फारसी भाषा का अच्छा शायर भी था ।

699

यह बात सुनकर बादसाह को बड़ा क्रोध हुआ। उसने उधर शेख कबीर और अलफखां को भेजा।

700

इस सेना के साथ बीस उमराव और थे। ये लड़ने की इच्छा से चले। दलपत वहां से चल दिया और ये लोग सरसे में आये।

701

एक दिन पानी के प्रश्न को लेकर आपस में झगड़ा होने लगा। सब उमराव अपनी सेना लेकर एक दूसरे के विरूद्ध चले।

702

आपस में समझौता कर सब उमराव एक हो गये। एक ओर इक्कीस उमराव थे और दूसरी ओर अलफखां अकेला था।

703

छोटी तोपों से गोलियॉ चली तो हाथी और घोड़ो के सिर फूट गये। वीरों ने हाथ में तलवार लेकर दूसरों को मारा। वीरो के झुंड बिखर गये।

704

हाथी से हाथी लड़ रहा है तलवार से तलवार बज रही है। वे लड़ते हुए आपस में लटपट हो रहे हैं। वे निरन्तर मारा मारी कर रहे हैं।

705

इधर उधर के अर्थात् दोनों और के जब सैकड़ो हजारों लोग मारे गये जो साहस, आन और धैर्य वाले थे तो शेख कबीर बीच मे आ गये।

706

शेख कबीर ने मनुहार कर दीवान को समझाया। पहले प्रेमपूर्वक उनके हाथ लगाया और फिर उनको चरणों पर गिरने की अनुमति दी।

707

अकेला अलफखां इक्कीस उमरावों से लड़ा। करतार ने उसकी प्रतिष्ठा रखी। अगर शेख बीच में नहीं आता तो अलफखां सब को भगा देता।

708

अलफखां और सारे उमराव तलवार के बल पर युद्ध करते हैं। माला मे मनके तो बहुत होते हैं पर लोग सुमेरू को ही पूजते हैं।

709

दीवान अलफखां से मिलकर सबने एक मन किया। उन्होंने नीसान बजाते हुये दलपत पर चढ़ाई की।

710

दलपत उस समय भाटू नामक स्थान में था। उसके साथ बहुत सरदार थे। वहां बादशाह के दल बादलों की घटा के समान उमड़ पड़े।

711

कुछ गोल में कुछ चंदोल (पृष्ठभाग) में खड़े हो गये। कुछ जरंगोल (दाहिने बाजू) और कुछ बरंगोल (बायें बाजू) में खड़े हो गये तो अलफखां हिरोल (अग्रभाग) में स्थित हो गया।

712

दीवान अलफखां आकर सामने खड़े हो गये तो हरोल का धक्का नहीं सह सकने के कारण राठोड़ लोग भाग गये।

713

जब अलफखां के दल ने दलपत को दबाया तो वह विचलित हो उठा । उसने वीरवर जलालखां को यह कहला भेजा ।

714

तुम मेरे बड़े भाई हो । मैं और क्या कहूं । अलफखां से कहो कि वह बादशाह के दल को रोके ।

715

उसने कहा कि लूनकरन, प्रतापसिह, राजा जोधा और मालदेव के सम्बन्धों को याद करो । अब तुम मेरे रक्षक बनो ।

716

इन पांचो ने जो तुम्हारे कुल को लड़की दी थी वह इन्हीं कार्यो के लिये थी । तुम्हारे बिना ऐसा कौन है जिसे भोमियों की लाज का रक्षक कहा जा सके ।

717

तब अलफखां ने दल को रोक दिया । इस प्रकार दलपत को बचा लिया । उसने उसे बादशाह के पास भेज दिया जिसने उससे खूब प्यार किया ।

718

तब बादसाह ने शेख कबीर को वापिस बुला लिया । उसकी जगह बादशाह ने मुबारकशाह को भेज दिया ।

719

तब अलफखां और पठान मुबारकखां क्रोध कर भिवानी को चले । वहां जादू जावलों ने पग रोपकर बादशाही फौज का सामना किया ।

720

वे गढ़ के पास जा लगे । वहां से गोलियों की वर्षा होने लगी । सवार डर कर कोई भी आगे नहीं जा सका ।

721

तब दीवान के दल उमड़ पड़े और उसने गढ़ी को तोड़ डाला । जो जाटू सामने आये उनको मरोड़ मरोड़ कर मार डाला ।

722

तिनोल के दांत तोड़ डाले । जाटू लोग स्थान छोड़कर चले गये । दीवान का यश सर्वत्र फैल गया । उसने सभी गांवों को लूट लिया ।

723

बादशाह ने अलफखां को बुला लिया । उसने कहा कि तुम एक बार मेवात फिर जावो ।

724

हाथी, घोड़ा और सिरोपाव देकर और उसका मनसब बढ़ाकर बादसाह ने चाहकर अलफखां को मेवात भेजा ।

725

उसने आते ही सारां को नष्ट भ्रष्ट कर डाला और धूल में मिला दिया । जो भाग गये वे बच गये और जो लड़े वे मारे गये ।

726

अलफखां ने कारहंडे में अपने डेरे बनाये । इसके पहिले वह सारां को नष्ट कर चुका था । मेव उससे वहां आकर मिले उन्होंने अपनी हार स्वीकार करली ।

727

उन्होंने घोड़े और तोपें पेश की । वे तलहटी में आकर बस गये । इन्होंने तब घनहटे पर कब्जा किया । उसे अच्छी तरह नष्ट कर डाला ।

728

उधर मेवों ने अच्छी लड़ाई की । वे टुकड़े टुकड़े होकर गिर पड़े । पहाड़ में खलबली मच गयी तथा नदी नदी में कोलाहल होने लगा ।

729

सारे जम्बूद्वीप में यह बात फैल गयी कि अलफखां ने मेवात को पात पात कर डाली अर्थात् अच्छी प्रकार पद दलित कर डाला ।

730

इसके बाद बादशाह ने शाहजादे परवेज के साथ अलफखां को दक्षिण में भेजा । उसके साथ इस समय बहुत बड़ी सेना थी ।

731

बुरहानपुर पहुंच कर सभी उमरावों को थानों पर स्थित किया गया । अपनी रजपूती के बल पर अलफखां ने मलिकापुर थाना लिया ।

732

शाहजादा स्वयं चढ़कर येदलाबाद आ गया । उसने वहां से सेना आगे भेजी जिसने मनबाद पर कब्जा कर लिया ।

733

खानखाना स्वयं चढ़े । उनके साथ खानजहान लोदी भी था । अब्दुल्लखां जख्मी चढ़ा और भी बहुतेरे खान साथ चढ़े ।

734

कछवाहा मानसिह ओर बीकानेर के रायसिह राठोड़ चढ़े । जान कहता है कि मैं किस किस का नाम गिनाऊँ । बहुत वीर चढ़े ।

735

मलिक अंब्रर बहुत बड़ी सेना सजाकर आया । जिस प्रकार आकाश के बादलों की संख्या गिनी नहीं जाती उसी तरह उसकी फौज भी गिनी नहीं जा सकती थी ।

736

वीर अब्दुला ने एक अच्छी लड़ाई की पर अन्त में वह भी अपने स्थान पर नहीं ठहर सका और भाग आया ।

738

सारे थाने उठ गये । कोई भी अपने स्थानं पर नहीं रह सका । पर वीरवर अलफखां मलिकापुर में जमा रहा ।

739

उसके दोस्तों ने उसको चिट्ठी लिखी कि तुम्हे थाना छोड़ने में कैसी लाज है । जैसे पंच करे वैसे सबको करना चाहिये ।

740

इस पर अलफखां दीवान ने उत्तर में लिखा कि मेरी पीड़ा से तुम लोग दुखी हो रहे हो पर मैं अपने पूर्वज हम्मीर को लजा कर भाग कैसे आवूं ।

741

दक्षिण के प्रबल दल उमड़ उमड़ कर चारों और से चले आये । चारो ओर उनके धौंसा नगाड़े बज रहे थे । उनकी आवाजें घनघोर बादलों की गर्जन के समान हो रही थी ।

742

दक्षिण के दलों ने आकर मलकापुर को घेर लिया। दोनों ओर से गोली, गोला और बाण छूटने लगे।

743

दोनों दलों से गोलियां चलती हैं। यही युद्ध में होता है। दोनो ओर से गोलियां आकर मृत्यु का समाचार देती हैं।

744

दक्षिण के दलों ने बहुत लड़ाई की पर मलकापुर नहीं ले सके। दक्षिण के दल दीवान के आगे हार कर भाग गये।

745

परवेज ने यह बात सुनी कि और थाने उठ गये हैं पर मलकापुर अलफखां ने लड़कर रखा है।

746

तब शाहजादे ने इस प्रकार कहा कि अलफखां वास्तव में अटलखान है। ऐसा वीर दूसरा नहीं है।

747

भीलन का थाना कठिन होने से कोई लेना नहीं चाहता था। तब शाहजादे ने अलफखां को मलकापुर से वहां भेजा।

748

उसने वहां जाने में जरा भी ढ़ील नहीं की। वहां जाकर भीलों को अलफखां ने मारा। बिचारी पिपीलक हाथी के पैर के नीचे आ पड़ी।

749

इसके बाद वह जालवापुर गया और भोमियों के आवासों को वश में किया । उसके यश रूपी फूल की गन्ध सारे संसार में फैल गयी ।

750

वहां से जाकर अलफखां ने फतेहपुर के गांवो पर विजय प्राप्त की । दीवान अलफखां का संसार में नाम हो गया ।

751

अलफखां शत्रुओं के आवासों को नष्ट किये बिना नहीं छोड़ता था । यही उसकी देन थी । सारे गांवो के लोग उससे आकर मिले और सेवा करने लगे ।

752

चौहान अलफखां पर बादसाह की कृपा हुई तो बादसाह ने उसका मनसब बढ़ाया और उसे बड़ा उमराव बनाया ।

753

अलफखां दक्षिण में था तब उसका बड़ा लड़का दौलतखां फतेहपुर में था । उसने सारे भोमियों को कुचल दिया । यह सब उसने अपनी भुजाओं के बल पर किया ।

754

बीदावत लोग उसके गांवो में चोरी करते थे और रोकने पर मानते नहीं थे । दौलतखां ने क्रुद्ध होकर इन पर चढ़ाई की ।

755

बीदावत लोग दौलतखां से लड़ नहीं सके । मुंह छिपाकर भाग गये । उनके गांवो को जलाकर दौलतखां जीत के डंके बजाता हुआ लौट आया ।

756

पाटोधे[१] तथा रसूलपुर[२] में अनेको कछवाहे बसे हुए थे। वे राहगीरों को लूट लेते थे, चोरी करते थे। यह पुकार बादसाह के दरबार में गयी।

757

तब बादसाह ने मोहब्बतखां से कहा कि ऐसा कोन है जो कछवाहो को धूल में मिला दे।

758

तब मोहब्बतखां ने कहा कि ऐसा तो दौलतखां है। इस पर बादशाह ने उसे फरमान भेजकर बुलाया।

759

वह अजमेर में जाकर बादसाह से मिला। जहांगीर ने उससे बहुत प्रेम किया और आदर सम्मान किया।

760

बादशाह ने उससे कहा कि सूजा[३] के वंश के लोग चोर हैं। उन्होंने राणा सगर से यह पट्टी अपने बल पर छीनली है।

761

बादशाह ने दौलतखां से कहा कि तुम यह पट्टी अपनी जागीर में ले लो और उन कछवाहो को निकाल दो। अगर तुमसे यह नहीं होता है तो विचार कर उत्तर दो।

762

दौलतखां ने बादशाह को सलाम कर कहा कि मैंने यह विचार किया है कि अगर वे लड़ेंगे तो मार डालूंगा नहीं तो पट्टी से निकाल दूंगा।

१-पाटोदा लक्षमणगढ़ से 16 किलोमीटर है। २- रसूलपुर रामगढ़ से 7 किलोमीटर पर हैं।३-सूजा रायमल शेखावत का बड़ा लड़का था। वह वि. १५९४ में अमररसर में गद्दी बैठा। इसके पुत्रो के नाम लूणकरण, रायमल, गोपाल, चांदा और भैरव थे। गोपाल अपने पुत्रो सहित फतेहपुर पट्टी में बसा हुआ था।

763

बादशाह ने उसे घोड़ा और सिरोपाव दिया। उसने दोनो पट्टियाँ दौलतखां की जागीर में लिखदीं।

764

बादशाह से विदा मांगकर दौलतखां लौट आया। वह अपनी शक्ति और भुजाओं के बल पर मस्त था। दूसरे किसी को नहीं गिनता था।

765

दौलतखां ने कछवाहों से कहा कि तुम हमारी पट्टी छोड़कर कहीं दूसरी जगह चले जावो।

766

अगर इन पट्टियों को छोड़कर तुम नहीं जाते हो तो लड़ने का प्रबन्ध करो। इन दोनों में से एक बात तय कर लो।

767

कछवाहों ने इस पर कहा कि ऐसा कौन वीर है जो इन पट्टियों से हमे निकाल सके।

768

रायसिह राठोड़ और राना सगर ने हमारे डर से जागीर ही छोड़ दी। तुम क्या उनसे बढ़कर हो।

769

खुसरो, तरतीबखां और अंबिया शेख भी हमें नहीं दबा सके फिर तुम क्या देखकर भूले हो।

770

दौलतखां ने यह सुनकर ससैन्य उन पर चढ़ाई की। वे खान से लड़ नहीं सके और वहां से भाग गये।

771

नगाड़े की आवाज सुनकर कछवाहे एक दूसरे को कोसते हुये भाग गये । वे इस प्रकार भागे जैसे गायें सिंह की गन्ध पाने पर भाग जाती है ।

772

माधो[१] और नरहर[२] कुटुम्ब सहित भाग गये जैसे हिरणों की डार भागती है । नाहरखां[३] ऐसे भाग गया जैसे गीदड़ भागता है ।

773

गिरधर के पुत्र गोकुल ने आकर के सलाम की । दौलतखां की बड़ी दृष्टि को शत्रु सह नहीं सके ।

774

दोलतखां ने क्रोध करके पट्टियो से नरहरदास को निकाल बाहर किया । तब वह कुटुम्ब सहित लुहारू में रहने लगा ।

775

माधोदास दौलतखां की मनुहार करके भादोवासी[४] में वसगया था । वहां से पुकार आयी कि वह रात दिन चोरी करता है ।

776

दौलतखां ने उसे आदमी भेजकर कहलाया कि भादोवासी छोड़ दो नहीं तो मैं आकर मार डालूंगा ।

---

१ माधोदास कछ्वाहा गोपाल का बड़ा पुत्र था । ये गोपालजी के शेखावत कहलाते हैं ।२ नरहरदास सूजा के पुत्र भैरव का पुत्र था ।३ नाहरखां नरहरदास का पुत्र था । ये भैरूजी के शेखावत कहलाते हैं ।४ यह अब एक छोटा गांव है जो सीकर से छह किलोमीटर उत्तरपूर्व मे है ।

777

तब माधो ने कहा कि मैं तुमसे मारा नहीं जाऊंगा । क्या तुमने नहीं सुना कि मैं बादशाह की भी कोई परवाह नहीं करता हूं ।

778

यह बात सुनकर दौलतखां ने बड़ी सेना तैयार की तथा निसान बजाते हुये उसने माधो पर चढ़ाई करदी ।

779

उधर माधो ने सारे शेखावतों की सेना सजाई । असंख्य सेना के देखकर उसके मन में बड़ा अभिमान हुआ ।

780

दौलतखां चौहान आगे बढ़ते हुये जब पास आ गया तो माधो लड़ नहीं सका और डरके भाग गया ।

781

अपनी धन संपति छोड़कर माधो भाग गया । चौहान दौलतखां ने दया कर उस संपति को लूटा नहीं तथा उसके पास भेजदी ।

782

जो सामने आकर लड़ाई करे उसे दौलतखां मारता था । उसकी यह आन थी कि वह भागने वाले व्यक्ति को नहीं मारता था ।

783

बादशाह ने नरहड़[१] अलफखां को जागीर में दी । उस समय दौलतखां दल सजाकर नरहड़ पर चढ़ा ।

---

१ नरहड़ शेखावाटी का प्राचीन कस्बा है । दौलतखां के समय नरहड़ मे उस समय पठान नाहरखां शासन कर रहा था ।

784

नरहड़ पर नाहरखां पठानं का शासन था। उसने लड़ने के लिये सेना तैयार की पर लड़ नहीं सका। उसने दौलतखां के पुत्र नाहरखां को अपनी लड़की दी तथा दौलतखां के चरण पकड़ लिये।

785

अलफखां का बादशाह को बड़ा विश्वास था अतः उसने उदयपुर[१] और बारवा[२] उसे जागीर में बख्श दिया।

786

खंड़ेले के राजा गिरधर[३] ने अल्खा टकनेत[४] को कहा कि तुम इन स्थानो पर उसका कब्जा मत होने देना। अगर वे लड़ने को आवें तो सामना कर लेना।

787

दौलतखां ने इस पर अल्खा को लिखा कि इन स्थानों से दूर चले जावो। अगर अपने आप नहीं जावोगे तो मैं आकर निकाल दूंगा।

788

अल्खा ने बदले में लिखा कि मेरे पांव पताल में हैं। ऐसा कौन है जो इन स्थानों से मुझे निकाल सके।

789

दौलतखां ने यह बात सुनकर सेना सहित चढ़ाई कर दी। अल्खा सामने होकर नहीं लड़ सका और भाग गया।

---

१ उदयपुर का कस्बा इधर उदयपुरवाटी नाम से मशहूर है। यह झूंझनू से दक्षिण में करीब २५ मील दूरी पर बसा है। इस पर उस समय शेखावतों का शासन था। २ बारूवा नवलगढ़ के दक्षिण में कुछ दूरी पर बसा है। ३ गिरधर रायमल का पुत्र था। उसके मरने पर वह खंडेले का शासक हुआ। ४ अल्खा टकनेत राजपूत था। यह खंडेले के अधीन सामन्त था।

790

अल्खा भागता फिरा और अपने सारे वचनों को भूल गया । वह इस प्रकार उड़ा जैसे हवा लगने पर आक वृक्ष के फल की रूई उड़ जाती है ।

791

वह खीरोड़ [१] में नही रह सका और खोह [२](रघुनाथगढ़) में जाकर छिप गया । दौलतखां नगाड़ा बजाते हुये उदयपुर में घुस गया ।

792

खंडेले में खलबली मच गयी । खंडेले के नगर रैवासे में शोर गुल मच गया । इस प्रकार चौहान·दौलतखां की धाक चारों और फैल गयी ।

793

बादशाह ने दीवान अलफखां को दक्षिण से बुलाकर फिर मेवात में भेजा और कहा कि उसे वश में करने एक बार फिर जावो ।

794

बादशाह ने तीसरी बार अलफखां को मेवांत का फौजदार बनाकर भेजा । इस बार उसने भोमियों को वहुत दबाया । दौलतखां भी उसके साथ था ।

795

बाकी खेड़ी और चोरटी जो भोमियों के सुदृढ़ स्थान थे उनको दौलतखान ने नष्ट कर डाला ।

796

भोमिये बहुत अच्छी तरह लड़े । उन्होंने वीरतापूर्वक युद्ध कर प्राणो का विसर्जन किया । दौलतखां उनकी लड़कियों को पकड़ कर ले आया । उसने उन्हें धूल में मिला दिया ।

---

१ खीरोड शेखावटी में उदयपुरवाटी क्षेत्र का गांव है । २- खोह का वर्तमान नाम रघुनाथगढ़ है । वह अलखा के कब्जे में था । पीपराली और गुंगारा ग्रामों पर भी अल्खा टकनेत का अधिकार था । टकनेत राजपूत भी शेखावत ही थे । राव शेखा के बड़े पुत्र दुर्गा के वंशज टकनैत कहे जाते हैं ।

797

फिर बादशाह ने अलफखां को दक्षिण में भेज दिया। जब बादशाह की सेना वहां बल में हीन हो गयी तो दीवान को भेजा। दक्षिण अब दक्षिणा भोग रही थी।

798

कांगरे में जब लड़ाई भड़क उठी तो दीवान को फिर दक्षिण से बुलाया गया। उसे राजा विक्रमाजीत के साथ मान सम्मान से विदा किया।

799

सूरजमल उस समय नूरपुर में था। बादशाह का दल वहां पहुंच गया। उसकी सेना प्रबल थी फिर भी उसके मन की इच्छा पूरी नहीं हो सकी।

800

सूरजमल लड़ाई नहीं कर सका और प्राणों को लेकर भाग गया। तब दीवान अलफखां और राजा विक्रमजीत नूरपुर आये।

801

शाह के दल ने सूरजमल को अपने घर से भगा दिया। पुराने बिल को खोदकर चूहें ने नाग को जगा दिया और इस प्रकार स्वयं की मौत को बुला लिया।

802

अपने महल और आवासो को छोड़कर सूरजमल भाग गया। वह जाकर पहाड़ो की गुफा में छिप गया। यहां अंदर और दुरायौ के बीच में 'जाय' शब्द रह गया है। उसने बाग बगीचा छोड़कर अब अपना मन कांटेदार थोहर के पेड़ों से लगा लिया। सूरजमल वन में घूम रहा था। किसी तरह ठौर ठौर पर अपना मन लगा रहा था। चूहा जिस प्रकार सर्प का बिल खोदकर स्वयं ही मर जाता है उसी प्रकार उसने शाही सेना को कुपित कर स्वयं ही अपनी मौत को निमन्त्रण दिया।

तुलना कीजिये:- *अलिरयं नलिनीरसलुब्धकः कमलिनीकुलकेलिकलारतः। विधिवशाद् पर देशमुपागतः, कुटज पुष्परसंबहु मन्यते।*

भौरा किसी समय कमलिनी के रस का पान करता हुआ सुख से काल यापन कर रहा था। विधि के वश से वह ऐसे स्थान पर जा पड़ा जहां कुटज के कड़वे रस वाले फूलो को छोड़कर कोई फूल नहीं थे। अब भौंरा क्या करे। वह तो कुटज के फूलो को ही अब सब कुछ मानता है।

803

शाह जहांगीर की असंख्य सेना पहाड़ियों पर चढ़ आयी । उनकी संख्या बहुत अधिक थी। बांटने पर किले के कंगूरे भी उसके हिस्से में नहीं आ रहे थे। घर घर में इस सेना का डर फैल गया। पहाडी प्रदेश कांपने लगा। उनके भय से पहाड़ी पागल हो गये और भाग नहीं सके। चंबे जैसे दुर्ग उनको सहारा नहीं दे सके। बादशाह ने ऐसे करोड़ों दुर्ग ढाह दिये। कवि सूरजमल से कहता है कि तूं नाल की चोट से उड़ जावेगा और भाग नहीं सकेगा। हे मूर्ख सूरजमल सुन तूं जल्दी आकर चरण पकड़ और अपने प्राणों का दान मांग। यहा 'गांगुरे' की जगह 'भागुरे' पाठ होना चाहिये।

804

सूरजमल को खदेड़कर शाही दल जीत की खुशियाँ मनाता हुआ लौट आया। अब यह दल नगरकोट को जीतने चला।

805

विक्रमादित्य ने अलफखां दीवान को नूरपुर में ही रखा। सूरजमल का बहुत डर था अतः दूसरा कोई वहां नहीं रह सका।

806

राजा विक्रमजीत नगरकोट गया है यह बात सुनकर सूरजमल नूरपुर सेना लेकर आया पर वह उस पर घात नहीं लगा सका।

807

अलफखां साहसियों का मल्ल था, बड़ा साहसी था। उसके पैर स्थिर थे। सूरजमल सामने आकर दीवान से लड़ाई नहीं कर सका।

808

उसका नाम सूरज है पर उसका स्वभाव उलट गया है। दिन में वह छिपा रहता है और रात को बाहर निकलता है।

809

उधर विक्रमाजीत कांगरे गया और शत्रुओं से उसने बातचीत की। वह लीपापोती करके चला आया पर इससे कोई बात नहीं बनी।

810

विक्रमाजीत ने नूरपुर आकर दीवान से कहा कि तुम काहलूर पर आक्रमण करो। मै नूरपुर में रहूंगा।

811

दीवान उधर से चढ़कर नीसान बजाते हुये आया और उसने ग्वालियर में डेरा किया।

812

कहलूरिये ने दीवाने के आने की बात सुनी। वह पेशकश लेकर आकर मिला। उसने धन, हाथी और घोड़े दिये।

813

दीवान ने कहलूरिये को विक्रमाजीत के पास भेज दिया। उस समय उसे देख विक्रमाजीत अलफखां का बखान करने लगा।

814

जहांगीर ने जो बात विक्रमादित्य ने शत्रुओ से की थी उसे नही माना। उसने कहा कि किसी न किसी तरह घात लगाकर तुम कांगड़े पर कब्जा करो।

815

उस समय नगर कोट को शाही सेना ने घेर लिया । गढ का पतन हो गया और इस प्रकार जहांगीर की इच्छा पूरी हुई ।

817

राजा विक्रमाजीत ने कहा कि कांगड़ा गढ़ हमारे कब्जे में आ गया है । इसकी हर यत्न करके रक्षा करनी चाहिये । जो इस गढ़ के ऊपर चढ़ेगा उसके मान सम्मान में बढ़ोतरी होगी । जो यहां रहेगा वह उन्नति पावेगा ।

816

राजा विक्रमाजीत ने हिन्दू और मुसलमानों को बुलाकर एक बात समझा कर कही ।

818

तब हिन्दुओं ने उससे कहा कि हमें विदा कर दो या फिर इस गढ़ में रहने का नाम मत लो ।

819

राजा विक्रमाजीत ने तब दीवान की ओर देखा और कहा कि या तो तुम रह सकते हो या मैं रह सकता हूँ । अन्य कोई यहां नही रह सकेगा ।

820

अलफखां ने खुदा पर नजर रखी और वहीं रह गया । यह सुनकर बादशाह बड़ा प्रसन्न हुआ । उसने दीवान का मनसब और मान बढ़ाया ।

821

जहांगीर के मन में कांगड़ा के किले को देखने की इच्छा हुई । तब बड़े प्रेम से बादशाह चलकर कांगड़े आया ।

822

बादशाह ने दीवान को लिखकर भेजा कि तुम अगवानी करने के लिये मत आना । हम स्वयं ही आकर किला देखेंगे ।

823

बादशाह गढ़ पर चढ़ा तो दीवान ने पांव पकड़े । जहांगीर ने उसका बहुत मान सम्मान किया ।

824

दीवान ने बादसाह पर बहुत निछरावल की । जहांगीर ने प्यार करके उसे हाथी एवं घोड़ा दिया ।

825

बादशाह उस ओर से उतरकर काश्मीर चले गये । वहां उसने साहसी, सच्चे और धैर्यवान अलफखां को रखा ।

826

फिर जब ठट्टा में शत्रुओं का शोर मचा तो दीवान को वहां बुलाया गया । बादसाह ने मान देकर उसे उधर रवाना किया ।

827

दीवानं ने ठट्टा जाकर वहां के लोगों को दबाया । यह सुनकर बादशाह बड़ा हर्षित हुआ ।

828

इसके बाद फिर कांगड़े में शोर हुआ । शत्रुओं की हलचल बढ़ी तब बादशाह ने बड़ा दल देकर सादिक खां को उधर भेजा ।

829

सब पहाड़ी मिलकर एक हो गये । उन्होंने बादशाह की सेना की अच्छी धुनाई की । शत्रुओं के कारण सादकखां के साथ के लोग आगे कदम नहीं रख सके ।

830

यह बात सुनकर बादशाह ने फरमान भेजकर अलफखां को बुलाया । इस पर दीवान ठट्टा से कांगड़ा रवाना हुआ ।

831

जब दीवान आया तो पहाड़ी लोग हार की आशंका से कांपने लगे । सब पहाड़ी मिलकर जुहार करने आये ।

832

सादिकखां के देखते देखते सभी पहाड़ी आकर दीवान चौहान से मिले । अलफखां के रजपूती शौर्य को धन्य है ।

833

काबुल के भोमिया विद्रोही हो गये । उनकी बड़ी हलचल मची । तब बादशाह स्वयं चलकर लाहौर आ गया ।

834

बादशाह ने अलफखां को काबुल भेजने के लिये बुलाया । उस समय अलफखां अपना दल बल सजाकर आया ।

835

इसी समय लक्खी जंगल से पुकार आयी कि भट्टी, ढूढी, डोगर एवं बटू ने मुल्क को उजाड़ डाला है ।

836

बादशाह ने विचार किया कि किसे भेजूं जो जाकर लक्खी जंगल के भोमियों को पकड़ कर लाहौर ले आवे ।

837

तब आसिफखां ने कहा कि ऐसा और कोई नहीं है ।यह मुहिम चौहान अलफखां से ही सर होगी ।

838

घोड़ा और सरोपाव देकर अलफखां को विदा किया गया । चौहान जीत के चाव से उधर दल सजा कर चला ।

839

अलफखां जब ससैन्य कसूर में उतरा तो भट्टी मनसूर डरकर भागकर बादशाह के पास गया ।

840

दीवान चढ़कर आगे चले । उन्होंने शत्रुओ की गढ़ी देखी । वे लोग भी आगे आकर लड़े । बड़ा घमासान युद्ध हुआ ।

841

अलफखां ने अपनी भुजाओं के बल से बड़े बड़े शत्रुओं को नष्ट कर डाला । तीन सौ लोग मारे गये । शत्रुओ के झुंड पूरी तरह बन्दी बना लिये गये । कोई भी जा नही सका ।

842

अरियों को नष्ट करके दीवान डोंगरों की और मुड़े । चौहान को आता सुनकर सभी भाग गये ।

843

उधर से फिर अलफखां बटु लोगों की तरफ चला । अलफखां की हाक को वे नहीं सम्हाल सके । ऐसा कौन है जो अलफखां की धाक सह सके ।

844

वहां से चढ़कर दीवान ने खाई में डेरा किया । सारे भोमिया दीन होकर आकर मिले । उन्होने आधीनता स्वीकार की ।

845

फिर दीवान चंहुनी देपालपुर आये । उसने पाक पटन की जियारत की जिससे उसके मन की साध पूरी हुई ।

846

उस समय अलफखां से आकर डूढ़ी बहादरखां मिला । उसने दीवान अलफखां को भेंट दी तथा स्वयं ने भी बदले में मान सम्मान पाया ।

847

इस प्रकार अलफखां ने जंगल के क्षेत्र में रहने वाले लोगों को पूरी तरह दबाया । इस बात को सुनकर सुल्तान जहांगीर ने उसकी बडाई की ।

848

सारे भोमिया भेंट लेकर आये और अलफखां से मिले । वह सारी भैंट उसने बादसाह के पास भेजदी । सारे संसार में उसका यश फैल गया ।

849

चिहुनी, देपालपुर, महमदौट, तिहारा, विठंडा और पट्टन के भोमिये धनराशि भैट स्वरूप देने आये ।

850

आलमपुर, पेरोजपुर, भटनेर, जलालाबाद के भोमिये अलफखां के दल को देखकर उससे मिलने आये ।

851

धिग, कबूला, रहमताबाद, वहीमाबाद आदि लक्खी जंगल के सरदारों को सर कर लिया तब वे सभी आकर मिले ।

852

अलफखां के आगे भटी, समेजे, जोइये, डूढ़ी, बटू, नेपाल, बैरियाह, डोंगर, खरल और शत्रु सब बेहाल हो गये ।

853

दीवान अलफखां ने धोला खेरा पर सेना भेजी और वहां के लोगों को मारकर धूल में मिला दिया । उसने वहां के सभी दुर्जनो की मूल को उखाड़ डाला ।

854

पहाड़ी क्षेत्र में सरदारखां था । जब वह मर गया तो पहाड़ी लोग चारों और छा गये । एक जंजाल फिर पैदा हो गया ।

855

उस समय पहाड़ियों के विद्रोह की बात सुनकर बादशाह ने अलफखां को बुलाया । उसने हुक्म दिया कि तुम जाकर पहाड़ियों को नष्ट करदो ।

856

अलफखां ने बादशाह को सलाम किया और शीघ्र वह वीर अपनी मुहिम पर रवाना हो गया । रास्ते में उसने कोई देर नहीं की और पहाड़ी क्षेत्र में प्रविष्ट हो गया ।

857

पहाड़ी लोग भागते फिरते रहे । वे खान के सामने लड़ने नहीं आये । ओट लेकर छिपते रहे जैसे सूरज से छांया छिपती है ।

858

काहलूर पर अलफखां ने कब्जा कर लिया । इसी तरह मंडई और शुखेत, सिकंदरा उसके कब्जे में आये । उसका यश इस विजय से फैल गया ।

859

उस क्षेत्र में सिकन्दरशाह को छोड़कर कोई भी तुर्क नहीं गया था। उस स्थान में सिर्फ साहसी और अगाध शक्तिशाली अलफखां ही पहुंचा।

860

पहाड़ी लोग भागते फिरते रहे। उनसे घर बार छूट गये। तलवार की धार को वे नहीं सह सके और नदी तथा पहाड़ो में घूमते रहे।

861

तब सारे पहाड़ियों ने एक होकर विचार किया कि हम सब एक साथ जाकर अलफखां से लड़ाई करे।

862

जगतसिह, पैठानिया, विसंभर, चंब्याल, गढ़भान का चन्द्रभान और फत्तू जसवाल तथा।

863

भोपत, अमूल, बूला, सूरजवाद, कल्याण, स्यामचंद सभी एक हो गये। ये सभी युद्ध में बड़े वीर थे।

864

जगतमाल, अलिया, राईकपूर सभी चढ़कर सामने आये। मै किस किस़ का नाम गिनाऊँ।

865

इन सारे दलो को साथ लेकर जगतसिह ने नगरोटे में डेरा किया। उधर तलवार का धनी अलफखां सतर्क और तैयार था।

866

इधर से अलफखां की सेना चढ़ी और उधर से पहाड़ियों का कटक चढ़ा। दोनो सेनायें ऐसी लगती थी मानो भादव मास में बादलों की घटायें झूम-झूम कर चली आ रही हैं।

867

इधर क्यामखानी थे उधर पहाड़ी लोग थे । सेना सजकर चली । मेहवरसाने वाले बादलो की तरह हाथियो की घटा छाई हुई थी । गोलियों रूपी बूंदे रण में गिर रही थी और बर्छी तथा दुधारी तलवारों की चमक बिजली की चमक सी प्रतीत होती थी ।

868

युद्ध में योद्धा लोग आपस में लड़ रहे हैं । मारा मार हो रही है । बाण लग रहे हैं, तलवार से तलवार बज रही है । मारते हुये थकते नहीं है बारबार प्रहार कर रहे हैं । पहाड़ी लोग हारकर इस युद्ध में भाग गये ।

869

टूक टूक होकर गिर रहे हैं, शूरवीर मर रहे हैं, हाथियों के टुकड़े टुकड़े हो रहे हैं, वीर अपना धैर्य नही छोड़ रहे हैं । पहाड़ी लोग वीर हैं अतः अधीर होकर भाग नहीं चले । उनको जरा भी नही छोड़कर बादशाह की फोज उन्हें चीरे डाले जा रही है । अथवा जिनमें जरा भी धैर्य था वे चीरा चीरी कर रहे है ।

870

वे अपनी प्रतिज्ञा और शौर्य से युक्त है, हाथियों की सेना की वे जरा भी परवाह नहीं करते । युद्ध में झुकते नहीं हैं, किसी भी रूकावट से रूकते नहीं हैं । अलफखां ने पहाड़ियों के टुकड़े कर डाले पर पहाड़ी भागने वाले नहीं है । उनके टुकड़े टुकड़े हो गये । ये टुकड़े हवा में उड़ गये । केवल गाडने के लिये तथा जलाने के लिये हड्डियां शेष रही । शंकर की मुंडमाला के लिये सिर नहीं मिला तथा गीदड़ो को मांस नहीं मिला । ये हाडों के गाहक नहीं है । शत्रुओं के टुकड़े न जलाने के लायक रहे तथा न गाड़ने के लायक रहे ।

871

सारे साथ को लेकर जगतसिह लज्जा छोड़कर मारा गया । इस प्रकार दीवान की जीत हुई और उसकी मनोकामना पूरी हुई ।

872

दूसरे दिन पहाड़ियों की सेना चढ़कर आ गयी। पर जब घमासान युद्ध हो रहा था तो युद्ध में हारकर भाग ग़यी।

873

तीसरे दिन भी पहाड़ी आये। इनके साथ बहुत सेना थी। इस दिन के युद्ध में भी अलफखां की जीत हुई और पहाड़ी हार गये।

874

फिर अगले दिन भोमिया चढ़कर आये। मार पड़ी तो कुछ तो मर गये जो बचे वे भाग कर चले गये।

875

इसके बाद पहाड़ी लोग पांचवे दिन भी आये। उनके मन में जूझंने की इच्छा थी। अंत में जब घमासान युद्ध होने लगा तो पहाड़ी भाग गये।

876

वे छठे दिन भी आये। उस दिन उन्होंने अच्छी लड़ाई की। अलफखां नें पहाड़ियों पर अच्छी मार लगायी। अंत में वे हारकर भाग गये।

877

उधर सादिकखां पठान ने चिट्ठी भेजी कि या तो तुम सेना भेज दो या मुझसे आकर मिलो।

878

तब क्रोध में आकर उसने सेना भिजवादी। उसने सोचा शत्रु मेरे सामने खड़ा है फिर अपने पांव क्यों छोडूं।

879

रण में मरने की चिंता नहीं संसार में शूरवीर रहना चाहिये । अगर प्राण जाते हैं तो उन्हें जाने दो परमात्मा रजवट की, शूरवीरता की लज्जा राखे ।

880

जगतसिह ने जब यह बात सुनी कि दीवान के पास थोड़ी सेना रह गयी है तो सेना के ठाठ सजाकर नीसान देता हुआ रणभूमि में आ गया ।

881

तलवार के खेल में इधर दीवान भी चढ़कर चले । वह रजवट की लज्जा बचाना चाहता था तथा अतीव साहसी और शक्तिशाली था ।

882

अलफखां ने अपनी सेना को तीन भागो में बांटा । एक तरफ रूपचंद था तथा दूसरी और डढवाल वासु था ।

883

ह्रदय में युद्ध की इच्छा लिये दीवान बीच में स्वयं खड़ा हुआ । वह अपनी रजवट नहीं जाने देता है । जीवन चाहे जावे तो जावे ।

884

पहाड़ियों ने अलफखां की सेना के चारों ओर घेरा बना लिया । वे बड़ी संख्या में कटने लगे । जिस प्रकार मदबहाता मतवाला हाथी सामने आता है उसी प्रकार वे सामने आये ।

885

बड़ा भंयकर युद्ध हुआ । घमासान मचने लगा । यह युद्ध कौरव पांडवो जैसा युद्ध था । या भीम कीचक की तरह का युद्ध था ।

886

रूपचंद और वासु भाग गये जब उन पर भारी दबाव आ पड़ा पर ऐसी परिस्थिति में भी बड़े साहस से वीर अलफखां खड़ा रहा ।

887

युद्ध में तलवार की धार पर परमात्माने दो अक्षर लिखे हैं । जो युद्ध में जूंझता है उसका सिर कटता है तथा जो भागता है उसकी नाक कटती है । यहां सरं की बजाय सार होना चाहिये ।

888

ये अंक युद्ध के समय प्रकट होते हैं । यह बात स्वामी और सेवक अच्छी तरह समझलें । वीर आगे ही रहते हैं । वे पीछे हटने का नाम नहीं लेते ।

889

शूरवीरो का यही स्वभाव होता है कि वे अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा करते हैं । वे प्राणो की हानि को कुछ नहीं समझते हैं अगर उनकी शूरवीरता की लज्जा बच जाती है ।

890

शूरवीर और मछली इन दोनों का एक सा स्वभाव होता है । ये पानी से ही प्यार करते हैं । शूर मान से या प्रतिष्ठा से और मछली जल से । अगर पानी घट जाता है तो दोनो तड़फ तड़फ कर मर जाते हैं । प्रतिष्ठा खोकर जीवित नहीं रहते ।

891

शूरवीर और मछली दोनो को गार पसंद नहीं हैं । मछली कीचड़ में नहीं रह सकती और शूर दूसरों की गाली नहीं सह सकता । इनको तो पानी से ही प्यार हैं ।पानी का दुसरा अर्थ यहां इज्जत है ।

892

कवि जान कहता है कि एक बात में शूर मछली से बढ़ जाता है । मछली पानी घटने पर मर जाती है पर शूर पानी से पूर्ण होकर मरता है अर्थात् कीर्ति से परिपूर्ण होकर मृत्यु का वरण करता है ।

893

रूपचंद अपने रूप की कोई परवाह न कर युद्ध से भाग गया । उधर वासु डढवाल दाढी की बात खोकर अपने सत्व को नष्ट कर भाग गया ।

894

दोनों बाजुओं की सेना भाग जाने पर अलफखां पर शत्रु का दबाव बढ़ गया । वह रण में जूझंने लगा । एक तरफ चौहान था और दूसरी तरफ सारे पहाड़ी थे ।

895

उधर पहाड़ी थे तथा इधर संभरी नरेश वीर चौहान था । उसने अल्लाह को याद करके युद्ध में अपनी वीरता को प्रकट किया । तलवार आरपार हो गयी, बहुत मार पड़ी । लाल लाल खून के नाले बह चले । अलफखां की बाल्य अवस्था, जवानी और बुढ़ापा तीनो का तीन तरह से निर्वाह हुआ । करतार ने उसके आदि और अंत का ठीक तरह से निर्वाह किया । बादशाह ने अलफखां के साहस की इतनी प्रशंसा की कि भाट, चारन और कलावंत उसका मुकाबिला नहीं कर सकते ।

896

हाथी, घोड़े और मनुष्य कट कट कर गिर पड़ते हैं । हथियार टूटते हैं । गुर्ज लगने से सिर फूट जाते हैं, और रक्त की धारा बहने लग जाती है । फिर की जगह सिर मूल में होना चाहिये ।

897

घमासान युद्ध हो रहा है । अलफखां लड़ रहा है । उसने शत्रुओ के मुण्डों का दान देकर शिव को निहाल कर दिया । भस्म लगाये, युद्ध की रक्त से सनी धूल में सने हुये रूप में सिद्ध लोग युद्ध में घूम रहे है । त्रिशुल आयुध है तथा खप्पर ढाल है । डमरू की ध्वनि गूंज रही है ।

उनकी इच्छा पूर्ण हुयी जब हाथियों की खाल उनको मिली । शिव इस युद्ध भूमि में प्रसन्न होकर नृत्य कर रहे हैं ।हाथियों की सूंड को सर्प बनाये तथा मुंडो की माला वे पहिने हुये हैं ।

898

अलफखां ने कुल की लाज रखने के लिये तथा बादसाह के कार्य को करने के लिये उसने पहाड़ में अपने पांवो को पहाड़ की तरफ स्थिर बना लिया । तरह तरह के वस्त्रों से ढके हुये शूरवीर बड़े सुहावने लगे मानो बहार आने पर फुलवारी फूट उठी हो ।

युद्ध में कीचड़घान हो गया अर्थात् रक्त धूल का कीचंड़ ही कीचड़ मच गया । दोनो और से घमासान युद्ध होने लगा । घायल मतवालों की तरह युद्ध में फिर रहे है । जब हाथियों की सेना नवाब पर चढ़ आई तो जैसे सिंह की दहाड़ सुनकर हाथियों का झुंड भाग जाता है उसी प्रकार इस सेना को नवाब ने मार कर विचलित कर दी ।

899

मदमस्त गजराज आया ऐसा लगा मानो पर्वत ही चला आ रहा है । उसके चूते हुये मद से झरना बह रहा था । उसे देखकर सेना व्याकुल हुई । वह हाथी पेड़ों की तरह लोगो को उखाड़ डालता था तथा लोगों को तूण डालता, धार धार कर देता । इसे देखकर रूपचंद और वासु ने भागने का निश्चय किया । उस समय नवाब अलफखां सामने आया और उसने हाथी के सिर पर बर्छी मारकर उसे भगा दिया । हाथी घटा सा और उसका श्वेत दांत बगुलो की पंक्ति सा नजर आता था । तलवार की धार ऐसी नजर आती थी मानो बादलो में बिजली चमक रही हो ।

900

हाथी घूमते आ रहे हैं । वे मतवाले होकर चक्कर लगा रहे हैं । वे सावण की घटा की तरह काले हैं । वे पर्वत से दिखायी पड़ते हैं और शरीर में बहुत भारी है । जिस प्रकार भादवे में बादल गरजते हैं वे उसी प्रकार गरज रहे है ।

901

हाथी एक स्थान पर ही खड़े होकर कांपते रहे । आगे बढ़ने को पांव खड़ा करते हैं पर पांव उसके आगे नहीं पड़ते । उनके अंग में बहुत से घाव लग चुके हैं । उनसे लाल होकर डर कर गिर जाते हैं । जान कवि कहता है कि ऐसा मालुम होता है मानो पहाड़ से झरना झर रहा है ।

902

बिचारा हाथी तो पशु है । शूरवीर की क्रोध भरी दृष्टि कैसे सह सकता है । शूरवीर को देखकर हाथी इस प्रकार चलता है जैसे सूर्य को देखकर रात्रि चलती है ।

903

युद्ध मचने लगा । चौहान शत्रुओं के टुकड़े टुकड़े करने लगा । सांग लगने पर शत्रु जीवित अवस्था में ही उड गया । अपने सत से और शत्रुओ के खून से वह ऐसा लाल हो गया कि उसका वस्त्र कसूमल बागे की तरह मालुम होने लगा । महमदखां के पुत्र अलफखां ने अपने पैरों को मेरू पहाड़ की तरह अचल बना लिया और किसी के आगे से नहीं भागा । पृथ्वीपर जितने शूरवीर हैं उनमें दीवान से अधिक कौन है । अथवा दीवान के आगे कौन ठहरा है ।

904

पहाड़ियो के पास अनन्त सेना है । फिर भी वे झुक जाते हैं । और लड़ते हैं । वे कहते है कि ऐसा शूरवीर कोई दूसरा नहीं है । यह अर्जुन की तरह हमें हाथ में धनुष लेकर मार डाल रहा है । समुद्र चाहे कितने ही झुंड के झुंड घूंट भर भर कर पानी पीने पर भी कभी नही टूटता है । योगिनियाँ मुंडो के भार से झुक गयी । उन्हें अलफखां ने ऐसा सुन्दर हार भेंट किया है ।

905

भगवान शिव मुंडमाल पहनते हैं ।वे इस प्रकार का कार्य इसलिये करते हैं वे वीरों के शिरों को देखकर उन्हें मानो गले से लगा लेते हैं ।

906

भंयकर युद्ध हो रहा है । धड़ बिना सिर के गिरकर तड़फ रहे हैं । आगे की पंक्ति का अर्थ स्पष्ट नहीं है । संभवत मूल पाठ में कुछ कमी है ।

907

सुभटो की आंखे खुली देखकर गृद्ध और सियार डरते हैं। वीर मर गये हैं पर इस अवस्था में भी बड़े विकट लगते है। देश की जगह देख पाठ है।

908

वीरों के रूधिर को जोगनियाँ खा गयी। अर्थात् रूधिर भर भर कर पी गयी। गीदड़ वीरो के मांस और चमड़ी को खा गये। हाड़ कोई नही खाता है क्योकि उसका नाम ही अपवित्र है।

909

शूरवीर के घाव भी घायल अंग से मारो मारो की पुकार लगा रहे हैं। जब शूरवीर की जीभ थक गयी तो उसका अंग ही मारो मारो करने लगा।

910

साहिबखां का पुत्र अलफखान के साथ लड़ा। हथियार की धार मुड़गयी पर उसने अंग नही मोड़ा।

911

पहाड़ी लोग अनन्त सेना लेकर और घोड़े हाथी और पैदलों का समूह लेकर टूट पड़े। शिव प्रसन्न होकर नाच रहे है, जोगनियां प्रसन्न होकर रक्त पान कर रही है। नाल और बन्दुकों की गोलियां चल रही हैं। युद्ध में दबाव बढ़ा तो कायर विचलित हो उठे। उस समय साहिबखां ने तलवार संभाली। उसने अपनी मिस्र देश की बनी तलवार से किसी का सिर काट डाला, किसी की कमर काट डाली। इस प्रकार यह तलवार मिसरी (मीठी) थी पर शत्रुओं को यह बड़ी खारी लगी। मिसरी होकर खारी में विरोधालंकार है। जान ने बड़ा सुन्दर मतगयंद सवैया कहा है।

912

दीवान अलफखां के अनेकों वीर इस युद्ध में काम आये। मैं कितनों के नाम ले लेकर गिनाऊँ।

913

येदलखां ने शत्रुओ के दलों को नष्ट कर डाला । इसी तरह भैय्या कमाल ने किया । नाथा और जमाल कायमखानी युद्ध में बहुत अच्छे लड़े ।

914

मुजाहिद ने अपने पैरों को पहाड़ की तरह स्थिर कर लिया । इसी प्रकार भीखन और बहलोल ने किया । लाडू और फिरोज खां ने अपना नाम नहीं लजाया ।

915

दोला और अबू ये दो खान और शूरवीरता का समूह इसकंदर, मारू और सरीफ ने रण में वीरता दिखाकर अपने नाम को उज्जवल किया ।

916

उदा, परता, चतुर्भुज, जगा, मनोहरदास, काजू और हरदास ये मरकर पास पास ही गिर पड़े ।

917

दोंदराज और दोनों मोहन एक ही स्थान पर मरकर गिर पड़े । मैं किस किस का नाम लूं । बहुत से लोग इस युद्ध में कट पड़े ।

918

जो वीर दीवान के साथ जूंझते हुये रण क्षेत्र में गिर पड़े उन्होने जहाज में बैठकर इस संसार रूपी सागर को पार कर लिया ।

919

अलफखां युद्ध में मारो मारो शब्दों का ही उच्चारण कर रहा था । जब दबाव बढ़ा तो उसने हाथ की तलवार से शत्रुओं को मार डाला ।

920

अलफखां का एक हाथी था जिसका नाम चतुर था। वह शत्रुओ को वृक्ष की तरह उखाड़ डालता था। वह इन्द्र के हाथी ऐरावत की तरह था।

921

शत्रुओं के कुछ हाथी उस हाथी ने मार डाले और कुछ दीवान ने मार डाले। युद्ध में बड़ा घमासान हुआ। मरे हुये हाथियों को जोधा अपने पांवो के तले रौंद रहे थे।

922

शत्रु का हाथी अधीर होकर दौड़ा। उस समय उसके आक्रमण के आगे कोई धीरज नहीं रख सका। जिधर अलफखां खड़ा था उधर ही उस हाथी ने आकर दबाया। उसने जरा भी देरी नहीं की। अलफखां ने उसके चरणो पर तलवार बाही। वह सावन के नाले की तरह निकल गयी। पांव टूटने पर हाथी इस प्रकार गिर गया जैसे स्तंभ फूटने पर चार खनो की हवेली।

923

जब भारी युद्ध होने लगा। पहाड़ियों के कटक सजकर आने लगे तब दीवान उनके पीछे लगे और उनमें से बहुतों को मार डाला।

924

दीवान ने शत्रुओं के तेरह सौ आदमी मार डाले। स्वयं दीवान की फौज के भी बहुत से लोग मारे गये।

925

पहाड़ियों ने जब देखा कि भागने पर शत्रु छोडेगा नहीं तो सभी एक मत होकर रणक्षेत्र में लड़ने चले आये।

926

फिर बड़ी भंयकर लड़ाई होने लगी जिसमें दीवान अलफखां शहीद हो गया जिससे उसका यश संसार में फैल गया।

927

जो खेत के अन्दर मर कर गिर पड़े वास्तव में वे ही सच्चे योद्धा हैं, और रणक्षेत्र उन्हीं का है । जिनके रण से पांव नहीं छूटते हैं अर्थात जो युद्ध से भागते नहीं हैं परमात्मा उन्हें ही जीत देता है ।

928

अलफखां ने अपने मन में अपनी मौत को समझ लिया । जिस प्रकार अलफखां युद्ध में अचल रहकर मरा ऐसी मृत्यु कोई भी राजा या राना वरण नहीं कर सकता ।

929

दीवान अलफखां अपने सत और अपनी लज्जा के कारण बड़ा प्रबल था । वह शत्रुओ से जूंझता था । बड़े बड़े दल के सामने भी न झुकता था तथा न अकुलाता था । वह युद्ध का ऐसा समुद्र है जिसमें शहादत के मोती भरे हुये हैं । इन मोतियों को वही पा सकता है जो मौतरूपी जल से नहीं डरकर डुबकी लगाता है । महमदखां के पुत्र अलफखां ने हमेशा युद्ध में लड़कर विजय प्राप्त की ।शत्रुओं के लिये उस पर विजय प्राप्त करना कठिन था । उसने अंतिम समय में बड़े शूरवीरता पूर्ण कार्य (शाका) किये । जिस तरह अलफखां मरा उस तरह की मृत्यु का वरण करने के लिये बड़े बड़े राजा, राव, राना, उमराव और भूप हाथ मलते ही मर गये पर वैसी मृत्यु न पा सके ।

930

राजा वसु को उसने नियंत्रित किया, चम्बे के राजा से पेशकश ली । उसने नगर कोट को जीत लिया जिससे उसका यश चारों ओर फैल गया । काहलूर, जैतरा, मंडई और सुखेत में विकट पहाड़ खड़े हैं, जहां हवा को भी निकलने का रास्ता नहीं मिलता है । पहाड़ी भागे भागे फिरे फिर हारकर एक हो गये । इन लोगों से लड़नें का साहस किसमें है । अलफखां अमरापुर गये, मर गये और युद्ध में मरकर अमर हो गये । वास्तव में चौहान अलफखां ने लौन को भी लौन चढ़ा दिया । उसने अपने नमक की बड़ी ठीक तरह से लज्जा रखी ।

931

वीरवर अलफखां जितने दिन जीये सदा नये गढ़ो पर विजय प्राप्त करते रहे और बड़े बड़े मनसब पाते रहे ।

932

अलफखां दो बार दक्षिण में जाकर लड़ा । मेवात का उसने तीन बार विध्वंस किया । कछवाहों को तीन बार युद्ध भूमि से भगाया । उसने दो बार मेवाड़ को वश में किया । आगे चलकर ठट्टा के विद्रोहियों को दबाया । भिवानी को नष्ट करके भोमियों को धूल में मिला दिया । पैनी तलवार के बल पर उसने चार बार कांगड़े को दबाया । लखी जंगल के लोगों को मारकर उनसे उसने दण्ड भरवाया । अलफखां सरसे में एकरस खड़े रहे और उमरावों का दमन किया तथा दलपत को युद्ध से भगा दिया । कवि ने यहां अलपखां की विजयों का समाहार किया है ।

933

विक्रम संवत1683 और हिजरी सन 1035 में अलफखां वैकुण्ठ गये । उस दिन अट्ठाइसवां रोजा था ।

934

अलफखां की दरगाह पर सभी जियारत करने जाते हैं । उसकी करामात प्रकट है । दरगाह को देखते ही इच्छा पूरी हो जाती हैं ।

935

दीवान की करामात सब पर प्रकट है । जैसे पहाड़ों पर बादल रहते हैं उसी प्रकार रोजे मकबरे पर उनका नूर रहता है ।

936

दरगाह का नूर देखने से दुख दूर होता है । निर्धन को धन मिलता है तथा निसन्तान को सन्तान मिलती है । यह अल्लाह का कर्म है और बड़ी अद्‌भुत बात है । बिना बुद्धि वाले को बुद्धि मिलती है । जो बेसुध है उसे सुध मिल जाती है । अगर कोई राह भूलकर आता है तो उसे रास्ता दिखाई पड़ जाता है । अलफखां चौहान ने अपने प्राणों को लोभ नहीं किया । बादशाह के स्वामी धर्म का पालन किया और उसका पल प्राप्त किया । वह दरगाह न्यामतों से भरपूर है यहां पर दरगाह में जहूर हैं ।दरगाह का नूर देखने पर आदमी का दुख दूर हो जाता है ।

937

सुबह प्रेम से अलफखां के नाम को लेना चाहिए । असाध्य रोग उनके प्रताप से साध्य अर्थात् ठीक हो जाते हैं । आदमी के असंख्य अपराध मिट जाते है । चित्त में कोई चिन्ता नही रहती है और कल्पवृक्ष की डालों की तरह वह उमंग से परिपूर्ण हो जाता है । अर्थात् उसे मनोवांछित सब कुछ प्राप्त हो जाता है । अलफखां करामातों से पूर्ण है । उनकी दरगाह के दर्शन करने से सारे रोग और विकार चूर चूर हो जाते हैं । आंखो से दुख का मुख दिखाई नहीं पड़ता अर्थात आदमी दुखी नही होता अगर अलफखां का नाम वह प्रातः काल लेता हो ।

938

प्राणों की इच्छा दीवान पूरी करता है । वह न्यामत और करामातों से भरपूर है अगर दुखी यहां आता है तो सुखी हो जाता है । अलफखां महापीर होकर पृथ्वी पर प्रकट हुआ है । पीड़ा से दुखी व्यक्ती की पीड़ा वह दूर करता है । अलफखां सुख का अथाह समुद्र है । यहां आने पर मन की इच्छा पूर्ण होती है । यहां आकर जो नमस्कार आदि कर लेता है या अपने अपराध स्वीकार कर लेता है उनके प्राणों की इच्छा दीवान पूरी करता है ।

939

कवि जान ने इस ग्रन्थ को विक्रम संवत 1691 में पूर्ण किया । जान कहता है कि उसने पुराना कवित सुना था । उसके अनुसार वर्णन कर दिया ।

940

अब जान दीवान दौलत खां का वर्णन करता है । वह तलवार और त्याग में निष्कलंक है अर्थात् तलवार और दान दोनों का धनी है । यह बात सारी दुनिया जानती है ।

श्री दीवान दौलत खां के पुत्र

1 ताहरखां, 2 मीरखां, 3 आसफखां

941

दौलतखां के लड़को में बड़ा ताहरखां था । उसके दूसरे पुत्रों के नाम मीरखां और आसफखां थे ।

942

जब अलफखां मौत के वश में हो गये तो उनकी जगह उनका बड़ा पुत्र दौलतखां गद्दी पर बैठा ।

943

बादशाह जहांगीर ने दौलतखां को आदर मान दिया और कांगड़े का किला उसे सौंप दिया ।

944

बादशाह ने उसे इस प्रकार कहा कि तुम्हारे बिना ऐसा कौन है जिससे नगर कोट और भौन निश्चल रह सके ।

945

अब दौलतखां कांगड़े आ गया । उसके आने पर भोमियों को बड़ा भय हुआ और राजा राना संशक हो गये ।

946

सारे पहाड़ी लोगों को उसने वश में कर लिया । वे दंड देते हैं और सेवा करते हैं । और इस प्रकार कांपते हैं जैसे पेड़ के पत्ते कांपते हैं ।

947

जब जंहागीर की मृत्यु हो गयी तो संसार में बड़ा शोरगुल हुआ । मुगलों के सारे थाने पहाड़ियों ने उठा दिये । कोई भी अपने स्थान पर नहीं रहा ।

948

उस समय दौलतखां ने अपने पांवो को दृढ़ रखा । वह शत्रुओ के दल से नही डरा और अचल होकर वहीं स्थिर हो गया ।

949

सारे पहाड़ी एक होकर आये उन्होने घेरा कर लिया। दीवान के चरण दृढ़ थे। उसे उनका जरा भी डर नहीं लगा।

950

दौलतखां ने अपने दल से कहा कि बाहर निकल कर लड़ो। मरो और मारो तथा बड़ा घमासान मचावो।

951

जब क्रोध में भरकर दीवान का दल निकला। उन्होंने भयंकर युद्ध मचाया और घेरा हटा दिया।

952

जो पहाड़ी लड़े वे मारे गये और जो भाग गये वे बच गये। उनकी रजवट की लज्जा लूटकर दीवान का दल वापिस आ गया।

953

उस समय दिल्ली के तख्त पर शाहजहाँ बैठा। उसने दीवान के स्थिर होने की बात सुनी।

954

और कोई वहां नहीं ठहर सका। सब अपना स्थान छोड़कर चले आये। दौलतखां चौहान ने नगर कोट की रक्षा की।

955

बादसाह ने मनसब बढ़ाया। उसे आदर दिया। दौलतखां चौहान सारे जग में नामी हुआ।

956

उधर चौदह वर्षों तक दीवान रहा। उसने पहाड़ियों को अपने वश में किया। इसके बाद वीर चौहान काबुल को रवाना हुआ।

957

दौलतखां काबुल और पेशावर में अच्छी तरह रहा । सीमान्त के शासक सब उससे मिलकर चलते थे । वे उसके मुख के तेज को नही सह सके ।

958

दौलतखान का बेटा ताहरखां था । युद्ध में उसके खड़ग की चमक बिजली सी चमकती थी । दान दाताओ में वह अग्रगण्य था ।

959

दौलतखां शाहजहां से मिलने को अकबराबाद गया । उस समय बादसाह ने उससे बड़ा प्रेम किया और मनसब दिया ।

960

गजसिंह के पुत्र अमरसिंह ने सलावतखां को मार डाला । उस समय बादशाह के दरबार में बड़ा घमासान मचा ।

961

शाहजहां ने देश दिया कि राठौड़ अमरसिह को मार डालो जिससे आगे चलकर ऐसी बे अदबी कोई दूसरा नही करे ।

962, 963

तब गुरजबदार चारों और घिर गये । उन्होंने अपनी गुर्जो से बुर्ज को ढहा दिया । इस बुर्ज के गिरने में बहुत देर लगी । अमरसिह के जो सेवक आगरे में थे वे सब बादशाही फौज से लड़कर मर गये । कोई भी युद्ध से नही भागा ।

964

राव अमरसिह का कुटुम्ब उस समय नागौर में था । उसका ऐसा डर फैला हुआ था कि कोई नागौर लेने को तैयार नहीं हो रहा था ।

965

बहुत से उमरावों ने नागौर जाने से इन्कार कर दिया । उस समय ताहरखां ने आगे होकर कहा कि मै नागौर जावूंगा ।

966

जोधो की क्या मजाल है जो नागौर में ठहर सके । आपका हुक्म ही बलवान है । मैं उन्हें पल भर में उडा दूंगा ।

967

यह सुनकर बादसाह प्रसन्न हुआ और उसने नागौर ताहरखां के नाम लिख दी । इस प्रकार ताहरखां ने बादसाह के ह्रदय में अपनी जगह बनाई ।

968

बादशाह ने फरमान भेजकर दौलतखां को बुलाया । उसका मनसब ड्योढा कर दिया और मान सम्मान बढ़ाया ।

969

दीवान दौलतखां काबुल में था । इधर से फरमान उसके पास जा रहा था तो बादशाह ने ताहरखां से पूछा ।

970

जब तुम्हारा पिता आ जावेगा तब तुम नागौर जावोगे या पहिले ही जाकर नागौर से राठौड़ों को निकाल दोगे ।

971

ताहरखां ने कहा कि आपकी आज्ञा सिर पर रखकर मैं अभी जाकर जोधों को नागौर के गढ़ से निश्चित रूप से निकाल दूंगा ।

972

बादशाह ने प्रसन्न होकर उसे भेंट स्वरूप सिरोपाव दिया । उसने ताहरखां को आदरमान दिया और नागौर की जागीर दी । उसने उसे बड़ा उमराव बनाया ।

973

ताहरखां का पुत्र सरदारखां था जिसे बादशाह ने आदरमान देकर अपने पास रखा । सरदार खां बड़ा कान्तियुक्त था ।

974

उधर ताहरखां अपने वतन फतेहपुर में आया । वहां से नागौर की ओर कूच किया । उसके साथ बड़ी सेना थी ।

975

जाते जाते ताहरखां नागौर के निकट जा पहुंचा । उस समय जोधावतों ने गढ़ खाली कर दिया और दूसरी जगह चले गये ।

976

सारे उमराव शाहजहां के आगे नागौर जाने के लिये इन्कार कर गये । ताहरखां ने बीड़ा उठाया और थोड़ी सी बात की । जोधों ने नागौर के किले के द्वार बन्द कर लिये पर वे युद्ध में अपना मस्तक नहीं दे सके । जब ताहरखां ने उन्हे खूब दबाया तो थोड़ी सी लड़ाई कर वे होरी सी खेलकर भाग गये । चहुरंग वाली सेना सजाकर ताहरखां ने नागौर पर कब्जा कर लिया । जो एक भोली सी बात कहते थे (ताहरखां नागौर नही ले सकेगा) वे क्रोध में आये पर कुछ नहीं कर सके । ताहरखां की कीर्ति और शत्रुओं की अपकीर्ति गंगा और यमुना की जोड़ी की तरह इस संसार में अमर रहेगी ।' मिटे' की जगह 'नटे' पाठ होना चाहिये ।

977

पाखरो से सजे हुये हाथियों के समूह में धौंसे की हूंकार गूंज रही है । ऐसा लगता है मानो सघन काली घटा में बिजली कड़क रही है । ताहरखां ने प्रबल दल सजाकर कूच किया । उसके घोड़ों के खुरों से सारा संसार डरता है । धूल उड़कर आकाश में छा गयी । सूरज दिखाई नहीं पड़ा । अन्धकार हो गया जिससे शत्रुओ के हृदय कंपायमान हो उठे । पवन जैसे बादलों

को बखेर देती है वैसे ही उसकी सेना के आगे शत्रु सेना भाग जाती है । यह सैन्य समूह सागर के समान लहरा रहा है ।

978

वह स्वभाव से ही मूंछो पर ताव दिया करता था । उसे देखकर बड़े बड़ों के मन में भय का संचार होता था । वह अगर तलवार निकाल कर देखता तो सारे दिकपाल, दिशाओं के राजा डरने लग जाते । जब वह अपने घोड़े पर पलान करता तो वह हिरन की तरह दौड़ने लगता । उस समय शत्रुओं के मन में धीरज नही रहता था । ताहरखां की धाक दसो दिशाओं में फैली हुई थी । वह युद्ध में सेल लेकर लड़ाई करता था । अंतिम पंक्ति में एक शब्द छूट गया है ।

979

ताहरखां ने हिम्मत के बल पर बादसाह को मोह लिया । शाहजहां के मुख पर लोग तेरे साहस की बातें करते थे । जोधा तेरा कोई विरोध न कर सके क्योकि तुम युद्ध की सारी चालें जानते हो । ताहरखां तेरे तेज की तथा तेरे दानकी कीर्ति सर्वत्र फैली हुई है । उस दान के बीज पृथ्वी पर फैले हैं । कवियो ने उसके यश का वर्णन अच्छी तरह किया है ।

980

ताहिरखां शत्रुओं को कष्ट देने वाला है । वह वीर है तथा तलवार का धनी है । उसने कछवाहों को धूल में मिला डाला । वे सिंह कहे जाते थे पर अब गाय हो गये थे । बीकावतों का सारा बांकापन गायब हो गया । लड़ाई छोड़कर बीदावत उसके पैरों पर आ पड़े । दौलतखां का वह सुपुत्र अपने देश में आकर बड़ा आनन्दित हुआ ।

981

ताहरखां ने अमरसिह के महल जयगढ़ में अपने डेरे कर लिये । उसने हिम्मत के बल पर संसार में अपना नाम किया ।

982

सुख में चार महीनों का समय बीत गया । दौलतखां लौटकर गये और पिता पुत्र दोनों मिलकर बड़े प्रसन्न हुये ।

983

दोनो सुखपूर्वक नागौर में रहते थे। आसपास के राजा राव उनसे पूरी तरह डरते रहते थे।

984

दौलतखां सात आठ महीने नागौर रहा। इसके बाद बादसाह का फरमान उसे मिला।

985

फरमान में लिखा था कि तुम इसे पढ़ते ही नागौर से रवाना होकर शीघ्र पेशावर पहुंचो।

986

उधर से जब शाहजादा बल्ख लेने के लिये जावे तब तुम उसके साथ चले जाना और बल्ख को जीतना।

987

दीवान दौलतखां तो पेशावर गये। इधर ताहरखां आनन्द से आठ मास तक नागौर रहा।

988

फौज के बल्ख की ओर रवाना होने की बात ताहरखां ने नागौर में सुनी। उसने बादसाह के पास अर्जी भेजी जो उसे लाहौर में मिली।

989

उसमे इस प्रकार लिखा था कि अगर मुझे हुक्म होतो तो मैं दरबार में आकर हाजिर होवूं।

990

बादशाह ने ताहरखां को बुलाकर बल्ख भेज दिया। बादसाह के छोटे शाहजादे ने सेना लेकर बल्ख पर विजय प्राप्त की।

991

दोनो शाहजादों ने रूस्तमखां और दीवान दौलतखां को इंदखोह स्थान पर भेज दिया । वे शूरता और अपने सत को लिये वहां पहुंचे ।

992

ये दोनो उजबेकों के मान का मर्दन करते हुये अपने अपने थानों पर अच्छी तरह रहे ।

993

उधर शाहजादे के पास बल्ख में ताहरखां था । पापिनी एवं निर्लज मृत्यु ने अनायास उसे ग्रस लिया ।

994

तरूवर ताहरखां इस जगत से चला गया यह बात जीभ से कैसे कही जावे और कान इसे कैसे सुने ।

995

ताहरखां की मृत्यु की खबर सुनकर शरीर में पसीना आ गया । रोम रोम रोने लगे और हृदय में बड़ा कष्ट हुआ ।

996

ताहरखां इस लोक से चला गया यह बात सुनकर आंसुओ से वस्त्र भीग गये और रोने से दोनो आंखे लाल हो गयी ।

997

वह ताहरखां जवानी में ही मर गया । तरूवर वह नहीं बन पाया । वह वृक्ष की स्थिति को नहीं पहुंच पाया । लोगो के भाग्य बड़े विपरीत है । 'बॉव' पाठ के स्थान पर 'बाम' होना चाहिये ।

998

वह चांद पूनम तिथि को नहीं पहुंच पाया । कमोदिनी का भाग्य ही बुरा था । यह विपरीत बात बहुत बुरी लग रही है कि सप्तमी ही उस चांद का भक्षण कर गयी ।

999

लोगो के आंसू थाली के मोती हो गये जो ढहते ही जा रहे थे । कल्पवृक्ष के समान ताहरखां के बिना किसी के भी आंसू नहीं रूकते थे ।

1000

हृदय रूपी कमल अब नही खिलता है । वह पल पल में मुरझा रहा है । ताहरखां रूपी सूर्य की छवि अब नजर नहीं आ रही है ।

1001

चकोर के नेत्रों को आनन्द कैसे प्राप्त हो । ताहरखां का मुखरूपी चन्द्रमा कहीं भी दिखायी नहीं पड़ता ।

1002

ताहरखां ने मरकर अपने चाहने वालों को यह देन दी । उनके नेत्रों से आंसू बहने लगे, हृदय में जलन हुई, मन में पीड़ा हुई और शरीर कमजोर हो गया ।

1003

प्यारे ताहरखां बिना कलेजे को मजबूत कैसे बनाया जावे । उस बल्ख रूपी डाइन ने कलेजा जो निकाल लिया ।

1004

मै यमराज को धर्मराज कैसे कहूं । यह कैसा धर्म का काम उसने किया । इस प्रकार के कल्पवृक्ष को काटते हुये किसी के भी मन में दया नही आई ।

1005

उस मनको अच्छे लगने वाले ताहिरखां के बिना बढ़ी हुई जलन को कौन मिटाये । छाती पर आंसू छिड़कते हैं पर हृदय शीतल नही होता है ।

1006

ताहर के नहीं होने से चित्त में असंख्य चिन्तायें व्याप्त हो गयीं । आंखे चन्द्रकान्त मणि की तरह नित आंसू बहाती रहती है ।

1007

सज्जन और दुर्जन दोनों एक समान होते है । दोनों ही भला नहीं करते । सज्जन जीवित अवस्था में हितु बनकर सुख देता है और मरकर अनहित करता है । दुर्जन जीता हुआ दुख देता है और मरने पर सुख ।

1008

सज्जन की आंखे अरहट की घड़ी है जो भर भर कर खाली हो जाती है । दुर्जन ऐसी मौत पर हंसते फिरते हैं । उनके होंठ रस से सरोबार रहते है ।

1009

ताहरखां इस देश में एक बार फिर आवो । सज्जन कौन है और दुर्जन कौन है इसे परखने का मौका तो अभी है ।

1010

ताहरखां मरकर ही अपने देश लौटा । इस प्रकार के मिलन से लोग कैसे सुख पा सकते है ।

1011

दुर्जन सामने आकर झुके नहीं । सज्जनों ने प्रेम नहीं किया । उस ताहरखां ने जरा भी नेत्रों को खोलकर किसी की ओर नही देखा ।

1012

ताबूत को देखते ही नगर में हाहाकार मच गया । हे मियां कैसी नींद सोये हुये हो जो अब तक नहीं जागे ।

1013

हे प्यारे एक बार भी तुम्हारे मन की कथा नहीं सुनी । मन की मन में ही रह गयी । विधाता के आगे किसी का वश नहीं चलता है ।

1014

ताहरखां रूपी कल्पवृक्ष की छांह सिर से उतर गयी है । वे ही शीत, हवा, लू, गर्मी, और वर्षा के दुख को जानते है तथा दुखी होकर रह रहे है ।

1015

मौत का नाम विष से भी कठोर लगता है । उसने ताहरखां जैसे कल्पवृक्ष को जला दिया है । रत्नों से भरे समुद्र को उसने पल भर में सुखा डाला । पर जो कर्ता चाहता है वह मिटता नहीं है । भरी जवानी में ही ताहरखां को छीन लिया मानो कुबेर से उसका धन लूट लिया गया हो । मानो किसी ने सोने के पर्वत को क्रोध कर ढहा दिया है । रोम रोम में दुख भर दिया, जरा भी दया नही की । इस डायन बल्ख ने तो सीधा कलेजे पर हाथ डाला है ।

1016

पुत्र की मृत्यु का समाचार सुनकर पिता को कैसे धैर्य आ सकता है । जो रोने के योग्य होता है उसे ही लोग रोते हैं । यह दुख अनन्त है ।

1017

दीवान दौलतखां ने यह बात सुनी तो उसे बहुत दुख हुआ पर उसने यह समझ कर धैर्य धारण किया कि कर्ता जो करता है वह सिर माथे पर होता है । उसके आगे किसी का वश नही चलता ।

1018

बादशाह ने यह बात सुनकर सरदारखां को बुलाया। उसने उसको बहुत धीरज दिया।

1019

बल्ख की मुहिम वापिस लौट आई। सेना काबुल लौट आई। इसके बाद बादसाह ने कंधार को लेने सेना भेजी।

1020

जयगढ़ को घेर लिया गया। पर मुगल सेना का वश नहीं चला तब बादशाह ने कुमुक के तौर पर और सेना भेज दी।

1021

इधर शाहजहां के दल थे उधर शाह अब्बास की सेना थी। आपस में दोनो सेनाये लड़ने लगी तो धूल उडकर आकाश में छा गयी।

1022

जब मुगलों की फौज डिगने लगी तब रूस्तम दीवान की फौजें सामने होकर लड़ने लगीं। शत्रुओं में भगदड़ मज गयी।

1023

शाहजहां ने क्रोध करके कंधार को लेने के लिये अपनी फौजें भेजी। भंयकर युद्ध हुआ, रणक्षेत्र में नारद नाचने लगा। उधर से अब्बास की फौज आ गयी। दक्षिणी रूस्तमखां दाहिनी और हुआ दीवान ने बाये बाजू को सम्हाला। दलनायक दौलतखां ने शाह अब्बास की फौज को लड़ाई में विचलित कर दिया।

1024

बादशाह की फौज की जीत हुई। अब्बास की फौज भाग चली। जो युद्ध में लड़े वे मारे गये एवं जो गुमराह होकर भाग गये वे बच गये।

1025

जब बर्फ गिरने का मौसम आया तो मुगलों का दल वहां नहीं ठहर सका । कंधार का घेरा उठाकर सेना काबुल चली आई ।

1026

जब जाड़े का हंगामा संसार से मिट गया तब बादशाह ने बहुत सी सेना भेजी । उसे लड़ाई करने का आदेश दिया । यहां 'जामे' की जगह 'जाड़े' होना चाहिये ।

1027

मुगल सेना ने फिर कंधार पर घेरा डाला । पर वह हाथ नहीं आ सका । तब सारा दल कंधार और काबुल छोड़कर चला आया ।

1028

तीसरी बार फिर मुगल सेना कंधार गयी । उसने घेरा डाला पर वहां बादशाह की कुछ नहीं चली । गढ़ के आगे मुगल सेना का कोई जोर नही चला ।

1029

रात दिन लोग जूंझ रहे हैं । नाल से गोलियां छूट रही है । जिसके छोटी तोप से गोली लगती है उसके प्राण निकल जाते हैं ।

1030

दौलतखां दीवान भी चढ़कर चला पर बीच में कुछ का कुछ हो गया । उसके मौत की बुखार चढ़ गयी ।

1031

कितने ही दिनों में दौलतखां मर गया । मरना जगत का स्वभाव है । इस मौत से कोई भी नही बच सका । चाहे वो राव हो या राना ।

1032

जिस दिन से चौहान दौलतखां संसार में प्रकट हुआ उस दिन से इतने राजाओं को उसने नया बना दिया है। वह दान में कर्ण के समान है, बुद्धि में भोज, सत में हरिशचन्द्र है। दूसरे के दुखो को काटने में वह विक्रम के समान है। वह हठ करने में हम्मीरदेव के समान है। बल में पृथ्वीराज के समान है जिसका सुयश जग में छाया हुआ है। दौलतखां के जीवित रहते समय ये राजा भी जीवित के समान थे पर जब आज दौलतखां मर गया तो ये छै राजा भी मर गये।

1033

पहले उसने राठौड़ों को पद दलित किया फिर कछवाहों को मारा। जहांगीर से उसने जो प्रतिज्ञा की थी उसका भली प्रकार निर्वाह किया। कांगड़े को दबाकर वह बल्ख और कंधार गया। युद्ध में उसने शाह अब्बास के कटक का बहुत संहार किया। यह दौलतखां दीवान सातों द्वीपो में नामी हुआ। ऐसे शूरवीर को मरा हुआ कैसे कहे।

1035

सन एक हजार पचास और तेरह था और संवत् सत्रह सौ दस था जब दीवान ने मृत्यु का वरण किया। यह तुर्की करतब लिख रहा हूँ। इनमें से दस निकालने से सही सन् संवत् आ जाते हैं। इसमें घाट बाढ़ नहीं रहती।

1036

बादशाह के पास दौलतखां की मृत्यु का समाचार पहुंचा तो उसने इसका मुल्क सरदारखां को दे दिया।

1037

इसको मुल्क दिया और सिरोपाव बख्सा। बादसाह ने दया करके इसको अपने वतन को विदा कर दिया।

1038

जव वीर सरदारखां घर आया तो हितैषियों के मन में आनन्द हुआ और शत्रुओं के मन में द्वेष पैदा हुआ।

1039

सीमान्त के राव राजा कांपने लगे । उन्हें ऐसा ही डर व्याप्त हो गया । उन्होंने इस डर के मारे घर और स्त्री को छोड़कर वनवास ले लिया ।

1040

सरदारखां के दल की बात सुनकर शत्रुओ में खलबली मच गयी । उनमें डर छा गया । उसकी सेना की घटा को देखकर टोडरमल[१] सब कुछ छोड़कर भाग गया ।

1041

ताहरखां का यह पुत्र तरूवर के समान सुखदाई था । वह सुपुत्र था तथा साहस और सच्चाई से भरा हुआ था । वह सरदारो में सरदार था और रजपूतो में रजपूत ।

1042

वह दान और तलवार दोनो में निष्कलंक था । किसी मांगने वाले को उसने निराश नहीं किया और तलवार के दाग नही लगाया । वह निडर वीर था जिसका यश संसार में फैला हुआ था । गुनी लोगउसे आशीष देते हैं । गुनीजन से यहां कलाकारों से मतलब है । वह शत्रुओ के सिर काट डालता है । जो बचा उसने समुद्रपार जाने की राह खोजी । वह कुल का तिलक था । सबको सुख देता था । सरदार खां परिवार का स्तम्भ है । वह अजर अमर रहे । कर्ता ने करम करके इस अनोखे राजा को बनाया है । सरदारखां का कर संसार की रक्षा करता है ।

1043

वह रूप में उजागर है, बागड़ देश का अधिपति है । वह दिनों दिन अच्छा लगता है । जब तक चन्द्रमा, सूर्य, पृथ्वी और आकाश है, जब तक गंगा नदी का जल है तब तक करतार कृपा करके इस क्यामखानी वंश के टीके को कायम रखे । सरदारखां प्राणो का आधार है, नेनों का तारा है और प्राणो से भी अधिक प्यारा है ।

१- टोडरमल शेखावत भोजराज का पुत्र था । इसकी राजधानी उदयपुरवाटी थी जिसका प्राचीन नाम कुसुम्बी था । यह सरदारखां का पड़ौसी राव था ।

1044

मछली जल चाहती है । उसे जल मिलने पर ही चैन पड़ती है । चकोर चन्द्रमा और चकई सवेरे को चाहती है । मोर बादल को चाहता है । ऋषिमुनि वन को चाहते हैं । अपने मन के मनोरथ को पूर्ण करने के लिये कमल केवल सूर्य को चाहता है । अंधा नेत्रों को चाहता है । हृदय प्राणो को चाहता है । जिस प्रकार इन बातो को इतने चाहते हैं वैसे ही मेरे नेत्र सरदारखां को चाहते हैं । चाहे पग गैन का अर्थ पैर गमन करना चाहते हैं भी संभव है ।

1045

पुत्र और पिता को देखकर कवि कहता है कि मेरा अनुराग बढ़ता है । फदनखां और सरदारखां की भगवान करोड़ों वर्षों की आयु करें ।

॥ इति रासा सम्पूर्णम् ॥

परिशिष्ट

श्री अलिफखां की पैड़ी लिखते

1

पहले अल्लाह को याद करना चाहिये जिसने वीरों को पैदा किया। वे वीर अपने वचनों को निभाने के लिये शरीर का भी बलिदान कर देते हैं। मनुष्य के वश में कुछ नहीं है। परमात्मा को जो अच्छा लगता है वही करता है। जान कवि कहता है कि वही जीतता है जिस तरफ अल्लाह होता है।

2

वीरों के सरदार मुहम्मद का नाम लेना चाहिये जिसने धर्म का रास्ता सारे संसार को दिखाया। जिन लोगों ने कलमा कहा वे पार उतर गये और जिन लोगों ने दिल में दगा रखा वे मारे गये।

3

अकबर का पुत्र जहांगीर दिल्ली का सुल्तान हुआ जिसने चार चर्कों और नौ खंडो में अपनी आन फिरवाई। वह सातों द्वीपो पर सूर्य के समान प्रकाशित हुआ। उसने अलफखां को स्थापित किया जो चौहान कुल में सिर मौर था।

4

उसका दादा क्यामखां था। उसने कितने ही वीर कृत्य किये और तलवार के बल पर विस्तृत भूमि पर अधिकार कर लिया। उसने युद्ध क्षेत्र में मल्लूखां को हराया और खिदरखान की भुजा पकड़ कर दिल्ली के सिहासन पर बैठाया।

5

क्यामखानी वंश का सिरमौर, खानो का सरताज अलफखां हुआ । जो गोत्र में बड़ा होता है उसे बहुत लाज रखनी होती है । पहाड़ों के भोमियां सेना सजाकर घूम रहे हैं । युद्ध में मारना और मरना ये वीरों के काम है ।

6

उस अलफखां ने पहले युद्ध करके राजा वसु को भगाया फिर उसके पुत्र सूरजमल को भी लड़ाई के मैदान से भागने को मजबूर किया । जब वसु के पुत्र जगतसिंह ने विद्रोह किया तो अलफखां ने उस पर चढ़ाई की । तुम्हारे बिना ऐसा कौन है जिसे शरीर का मोह नहीं हो ।

7

उसने बड़े बड़े शाके किये जिनकी गिनती नहीं हो सकती । तुमने शत्रुओ को इस संसार से विदा कर दिया । तेरे भय से वे भयभीत हुये । तुमने राणा जैसे भूपति को युद्ध क्षेत्र से भगा दिया । चारों दिशाओं के भौमियों को तुमने पकड़ कर बादसाह से मिलाया ।

8

नगरकोट के भोमिया सदा के विद्रोही रहे । वे सारे परगनों को लूट लेते थे और कुछ भी बाकी नहीं छोड़ते थे । वे फौजदार और सरदार को कुछ नहीं मानते थे । बादशाह ने वहां अलफखां को भेजा और उसके साथ हाथी और घोड़े भेजे ।

9

बादशाह ने अमूल्य सिरोपाव दिया और प्यार कर बीड़ा दिया । अलफखां बादसाह के चरणों पर गिरा । उसने बादसाह को सलाम कर विदा मांगी और डेरे पर आया । उसी समय बिना देर किये वह डेरे से रवाना हुआ ।

10

एक दौर में ही अलफखां पहाड़ पर आगया । उसने राह में कोई देर नहीं लगाई और शीघ्र चलकर आ गया । उसके आने पर भोमियाँ कांपने लगे । उन्होने सुना कि जगतसिंह से नाराज होकर बादसाह ने चौहान को भेजा है ।

11

नगारे और नीसान बजाता हुआ अलफखां चढ़ा । ऐसा मालूम होता था कि भादव मास की घटाये आकाश में गहरा रही हो । अलफखां रण में लड़ने को आनन्द पूर्वक चला । ऐसा प्रतीत हुआ मानो बहुत गाजे बाजे के साथ कोई ब्याह करने चढ़ा हो ।

12

वह अलफखां पहाड़ में आकर घुसा । उसकी सेनायें नगारे बजा रही थी । सारे संसार में शोर हुआ जिसकी गूंज पर्वतों में फैल गयी । सारे राजा इस प्रकार भाग गये जैसे सिंह को देखकर गायें भाग जाती हैं । उन्होंने निन्दा की परवाह नहीं की और भागकर अपने प्राणो को बचाया । उन्होंने अपनी रजवट को छोड़ दिया ।

13

आगे आगे भोमिया भाग रहे थे । पीछे अलफखां लगा हुआ था । वे हरिनों की डार की तरह भागे और वनों पर्वतो में फिरते रहे । भारी नींद, भूख और प्यास मिट गयी और सुख की आदत छूट गयी । वे पहाड़ों में जगह जगह पक्षियों की तरह उडान भरते हुये फिरते हैं ।

14

अब पुरूष और स्त्री सेज पर सुखपूर्वक किलोलें नही करते थे । शत्रु की स्त्रियाँ आंखो में काजल डालना भूल गयी थीं । वे पत्तो के कपड़े बनाकर पहिनते थे क्योकि उनके अमूल्य कपड़े फट गये थे । वे कभी कभी दर्पण हाथ में लेकर अपने मुँह को नही देखती थीं ।

15

पहाड़ी लोग भागते फिरते हैं और भारी दुख सह रहे हैं । पर्वतों पर चढ़ते चढ़ते उनके पैर थक गये हैं । उनके संगी साथी बिलबिला रहे हैं । अन्न पकाने को नहीं मिलता । वे अब पेड़ों की छाल पकाकर खा रहे है । दीवान के दल को आते देखकर उसे भी छोड़कर भाग जाते हैं ।

16

दीवान ने धमेहरी पर कब्जा कर लिया । असराल भी उसके कब्जे में आया । जंबू को उसने गीदड़ बना दिया तथा चम्बाल को चूहा बनाया । नरगकोट पर कब्जा कर लिया । घोड़े पर

चढ़कर शीघ्र हीं मंडई और सुखेत पर कब्जा कर लिया और शत्रुओं की खाल से निकाल ली ।

17

उसने सिकंदरा पर कब्जा कर लिया । बहुत से राजाओं को वश में किया । अलफखां ने वहाँ जाकर शत्रु के नगर किलो को ढाह दिया । पहाड़ी लोग पर्वत की गुफा में भागकर छिपे । वे वृक्षों पर बन्दरो की तरह कूदते फिरने लगे ।

18

सारे पहाड़ी लोगो ने एक होकर यह सोचा कि हमने नजरों से देख लिया है कि अलफखां हमे जीवित नहीं छोड़ेगा । हम उड़ नहीं सकते, वह कठोर पृथ्वी फट नहीं सकती । हम घोड़ों की बाग उठायें और एक साथ हमला करे ।

19

शत्रुओ में जगतसिह पठानिया, विश्वभर चम्बाल, सीबे का अमू, फतु जसवाल, श्याम का पुत्र सुखेत, चंद, सूरज मंडाल, राजा बिलूंदा, और ठक्कर चिड़ियाल युद्ध के लिये चढ़े ।

20

राजपुर का अनिरूद्ध, टलूकपूर, कूलू का कल्याण, कहलूर का चंदा, कुटलहर का बूला सभी सामने आये । इनके अलावा चन्द्रभान चढ़कर आया मानो सूर्य उगा हो ।

21

दल सजाकर अनेकों पहाड़ी आये । इनमें पठियार, खड़िहार, भूटंत सुत महेश भी सम्मिलित थे । मै किस किस का नाम लूं । सारे पहाड़ी एक साथ आ जुड़े ।

22

पहाड़ी लोगों ने मिलकर अपार दल सजाया । उसका हिसाब लग नहीं सकता । वे ऐसे लगे मानो सारा संसार उमड़ पड़ा । उन पहाड़ियों को जरा भी देर नही लगी । वे सारे अलफखां पर चढ़ आये । उनके आगे हाथी घूम रहा था और वे हाका कर रहे थे ।

23

जब अलफखां ने यह सुना कि पहाड़ियों की बहुत बड़ी फौज चढ़कर मुझ पर आ रही है तो उसने नीसान सजाकर अपनी सेना तैयार की । वे कीर्ति के लालची थे । यश पाने के लिये वे लड़ने को तैयार हुये ।

24

अलफखां ने तब आज्ञा दी कि मेरा घोड़ा लावो । यह सुनकर साहणी दौला सरनाम उठकर दौड़ा । उसने लीले (घोड़ा) को ठाण में नाचते हुये देखा । उस घोड़े ने पूँछ का चँवर फैला रखा था ।

25

साहणी (सईस) ने घोड़े को तैयार किया । उसने घोड़े के अंगो को उज्जवल बनाया । विवाह के जल को लाकर घोड़े को स्नान करवाया । पूंछ की ओर से वह पानी उतारा । इसके बाद घोड़े के अंग रूमाल से पौंछे । उसके मुख में लगाम लगाई, सिर जोट पहनाया, उसके गले में मखमल की बनी हुई गलतणी बांधी । इसके बाद उसकी पीठ पर उनी लवादा काठी के नीचे रखा । काठी के नीचे रखे जाने वाले ऊनी नमदे का नाम खोगीर है ।

26

घोड़े पर जीन की गयी, साखत सजाई गयी, कसकरतंग बंधा गया । जयबंध और अंगवंद कसे गये लोहे की जालियों से निर्मित कवच पहनाया गया । दुमची पूठे पर लगाये जाने वाले गहने और रकाब लगायी गयी । इस प्रकार सारे साज संजाये गये । वह घोड़ा ऐसा लगा मानो सिंह पर पाखर पड़ी हो । उस सजे सजाये घोड़े को देखने के लिये देवराज इन्द अपने उच्चश्रवा घोड़ें के छोड़ा ।

27

वह अलफखां का नीला घोड़ा नाचता हुआ आया । वह नीले मयूर सा लग रहा था । उसके ऊपर जालीदार पाखर था । वह समुद्र की लहरों की तरह उछल रहा था । वह घोड़ा हाथियों की सेना में भी कायर नहीं होता था ।

28

उस घोड़े पर सारे जगत को जीतने वाला अलफखां बैठा। उसके पहले अच्छे जल से खान ने स्नान किया। अच्छे कपड़े पहिने, शराब का प्याला पीया। इसके बाद जिरह बख्तर पहिने, सिर पर शिरस्त्राण लगाया। सारे हथियार लेकर हाथ में बरछा लिया। इसके बाद उसने शत्रुओं की ओर इस प्रकार देख जैसे हिरणो की और चीता देखता है।

29

इसके बाद उसने रकाब पर पैर रखा। उसनें मन में अल्लाह को याद किया। वह घोड़े पर चढ़ा। सारी सेना सजाई गयी। उसने सेना को बांटा। एक सेना का दक्षिण बाजू और दूसरी का बांया बाजू बनाया। आगे आगे चतुर गज चल रहा था वह इन्द्र के हाथी एरावत सा नजर आ रहा था।

30

खान के आगे कोतल घोड़ा उछलता चल रहा था। धुर ईराकी और अरबी घोड़े बहुत अच्छे दिखाई पड़ रहे थे। वे हिनहिनाते आ रहे थे। उनकी मूर्ति कामदेव के समान मन को मोहने वाली थी।

31

जिन्होनें सुना है वे कहते हैं कि वे जरदे जैसे पीले हैं। वे रूप के मंदिर हैं तथा सुन्दर नीले रंग के हैं। वे चांदनी रात की तरह उज्जवल हैं बहुत अधिक सुन्दर हैं। चाबुक मारते ही उनके पंख लग जाते हैं। बिना छेड़े ही वे दौड़ने लगते हैं।

32

कायमखां का पोता अलफखां बड़ा मरदाना था। वह दोनों पक्षों दादा और नाना में पवित्र था। वह रजवट के यश का पालन करने वाला था। वीरों के बाने का रक्षक था। उसे दिल्ली का बादसाह भी अपने दिल के अन्दर मानता था।

33

जिस अलफखां के पूर्वज पृथ्वीराज और हम्मीर जैसे हैं। वह युद्ध के समय प्रसन्न होकर फिरता है। युद्ध में उसके मन में आनन्द होता है। युद्ध में वह योगी की तरह सीने को खोलकर

कच्छे को पहिनकर विचरण करता है । वह जैसे खाती वृक्ष को काटता है उस तरह शत्रुओ के झुण्ड को काटता है ।

34

ताजखां के पोता और वीरों के सरताज उस अलफखां ने स्वामी धर्म का पालन किया । वह रणक्षेत्र को छोड़कर नमक नहीं लजाता था । बैरी को देखकर वह ऐसे उनकी ओर दौड़ता है जैसी तीतर के पीछे बाज ।

35

कछवाहे, राठौड़, देवड़ा, चौहान, चाहिल, मोहिल, सांखले, मुगल और पठान सभी आये । छत्तीस कुलो के लोग उस सेना में थे । घोड़े कूद रहे थे । हाथी को आगे कर दीवान अलफखां युद्ध करने को चला ।

36

वीरों से दीवान ने यह कहा कि संसार में जो पैदा हुआ है वह एक न एक दिन अवश्य मरेगा । जिसका मरना बड़ा है वही संसार में बड़ा है । यह बात सीखो और अपनी इज्जत रखो । जो सच्चाई और साहस से मरता है वास्तव में उसे ही जीता हुआ मानो ।

37

उस सेना में नीले, पीले, सफेद रंग के घोड़े थे । अबरसी, मुसकी, मंगसी, खिंग, हरियल, ऐत आदि विविध रंगो वाले तुरंग थे । शीरवीरों ने घोड़ों को सजाकर उन्हें जालीदार कवच पहिनाये । घाड़ों को कुदाते हुए चौपनाल लेकर शूरवीर युद्ध के लिये प्रेरित होकर चले ।

38

राव अलफखां युद्ध भूमि में आया । शहनाइयाँ बजने लगीं । मारू, सिंधु रागों को बजती सुनकर सुभटों के अंगो में उत्साह समा नही पाया । सत के प्याले पीकर मदमस्त और शूरवीरता की हाक से छके हुये वीर शत्रुदल पर दौड़ कर टूट पड़े । उन्हें कुछ भी याद नहीं रहा न अपना और न पराया ।

39

युद्ध राग को सुनकर उनके मन में बड़ी उमंग उठी । रण में भुजा फड़क उठती है । यह वीरों का स्वाभाव है । युद्ध के बीच में वीर फूल उठे । उनके मन में उत्साह समा नहीं रहा है । उधर केले के पत्तो की तरह शत्रु के दल जरूर कांप रहे है ।

40

दोनों ओर के कटक चढ़े । मन में क्रोध कर दौड़े । धूल के उड़ने से अंधेरा छा गया जिससे अकाश में सूरज छिप गया । ऐसे अंधेरे में अपने और पराये का ज्ञान बिना बोले नहीं होता था । जिस प्रकार नदी की लहरें उठती हैं उस प्रकार दोनों दल आये ।

41

घोड़ो के खुरों की खूंद से धरती कसमसा उठी । पहाड़ थर्राने लगे, कच्छप कलमला उठे धोलों ने सुख प्राप्त किया । शेष की सांस बंद हो गयी, हृदय रूंध गया, अंग अंग में भय व्याप्त हो गया । लड़ने की फिक्र करके दोनो दल आ गये ।

42

सेना घटाओ की तरह उमड़ती थी । निसान गर्ज रहे थे । गोली ओलो की तरह पड़ रही थी और बाण बून्दो की तरह गिर रहे थे । चन्द्रबाण इस प्रकार चमक रहे थे मानो रात में बिजली चमक रही हो । आंधी मेह को लेकर आयी तो दल पर छाई धूल मिट गयी ।

43

लड़ाई मच गयी, सेना कटने लगी, मार मार होने लगी । घोड़े हींसने लगे, हाथी मदमस्त हो उठे । इतना अंधकार हुआ कि दिन को भी सब लोग रात समझने लगे ।

44

वीर हाथो में धनुष लेकर बाण चला रहे हैं, बाण बीच में ही बाणो से अटक रहे हैं । मिसरी अर्थात तलवार म्यान से निकल रही है । कृपाणे बह रही है । दूनाली बंदूक से गोली लगने से सिर लटक जाता है ।

45

दोनों दलों के आगे हाथी चल रहे हैं मानो काले बादल उमड़ रहे है । हाथियों की गर्जन बादलों की गर्जन है । हाथियों के दांत बगुलो की पंक्ति जैसे नजर आते हैं । मद बरसाने वाले, अंकुश खाने वाले, मतवाले होकर घूमने वाले, पहाड़ जैसे विशाल हाथी थे । उनकी सूंड परनाले की तरह थी ।

46

हाथी से हाथी लड़ रहे हैं । उनका अपार मद बह रहा है । ऐसा लगाता था मानो काली घटायें एक दूसरे से मिल रही हों और जल की धारा बरस रही हो । जोर की हवा चली तो कवि ने ऐसा विचार किया मानो तमाल के पेड़ आपस में मिल रहे हो ।

47

हाथी आते हुये दिखायी दिये तो वीरों को अपार सुख मिला है । उसी प्रकार जैसे घटाओं को देखकर संजोगणी स्त्री को सुख मिलता है । कायर कांपने लगे । उनकी आंखो के आगे अंधेरा छा गया इनको हाथी ऐसे लगे मानो रात्रि हो ।

48

घोड़े हिरनों से मालूम हो रहे थे । हाथी दौड़ रहे थे । इन्हें देखकर घोड़े चमक पड़े और भाग पड़े । जान कवि कहता है कि ऐसा मालुम होता है कि आगे आगे हवा भाग रही है तथा उसके पीछे काली घटायें चल रही है ।

49

वीर लोग ताजणा करके अपने घोड़ों को हाथियों के सम्मुख ले गये । उन्होंने हाथियों को घायल कर दिया । इस पर हाथी भाग छूटे । घोड़े उनके पीछे दौड़े । वे इस प्रकार भागे जैसे बादल हवा के आगे भागते हों ।

50

अलफखां के साथ के हाथी मद बहाने लगे । वे गुर्जो एवं गदाओं की चोट को कुछ नहीं गिनते थे । वे बर्छी और सांग की चोट सहते थे । धूल के कारण अंधियारा फैल गया था उसमें वे

रोकते हुये भी नही रूक रहे थे । गोलों और बाणों की भी वे कोई परवाह नहीं करते थे । वे शत्रुओ को सूंड से पकड़ते घूम रहे थे ।

51

शूरवीरों ने कठोर होकर भारी बर्छी का वार किया जो हाथी के शरीर में घुस गयी । महावत ने बहुत वक्त लगाकर उसे निकालना चाहा पर वह नहीं निकली । वह ऐसी दिखायी दी मानो पर्वत पर खिजूर पड़े हों ।

52

शूरवीरो ने क्रोध में भरकर विशाल हाथियों को मार डाला । उन्होंने जिद्द करके दुधारी तलवारों के वार किये । ऐसा प्रतीत हुआ मानो वे कसोटी की रेखायें थी । कवि के मन में एक उक्ति आई कि मानो मोटियार सिंदूर से सजकर मिलकर बैठी हों ।

53

वीरो क्रोध और विरोध के कारण हाथियों के सामने चले । उन्होंने हथियारों से हाथी मार डाला । अच्छे हाथ लगाये । तलवार लगने से सूंड कट गयी । हाथी धरती पर गिर पड़े तो ऐसे लगे मानो पहाड़ वृक्ष की तरह डिग कर धरती पर गिर पड़े हों ।

54

वीर हाथी से लड़ रहे हैं । मंन में उनके उत्साह भरा हुआ है । वे क्रोध में भरकर हाथी को काट डालते हैं । सूण्ड और मूंड टूटकर पृथ्वी पर गिर पड़े । यह स्वाभाविक रूप से हुआ । ऐसा प्रतीत हुआ मानो पहाड़ से उछलकर खिजूर हवा के लगने से पृथ्वी पर आ गिरे ।

55

सुन्दर घोड़े और हाथी सेना के बीच में उछल रहे हैं । ऐसा लगता था मानो काली घटाओं के घिर आने पर मोर नाच रहे हैं । सांग की नोकें टूट टूट कर हाथी के अंगो में गड रही हैं मानो काली रात में तारे चमक रहे हों । हाथी क्रोध में भरकर दौड़े । वे हटाये भी नही हट रहे हैं । उनके सामने सुभटों के पुत्र शूरवीर आये । हाथियों ने उन्हे सूंड में पंकड़कर फिराया मानो.... । आगे का अर्थ स्पष्ट नहीं है ।

57

अग्निबाण हाथी के लगे तो चिनगारियां छूटने लगीं । इसको देखकर जान कवि विचार करता है कि हाथी की झूल इस प्रकार जल उठी कि मानो पर्वत पर अग्नि लगी हो और उसमें अनेकों पेड़ जल गये हो ।

58

मद बहाते हाथी रोके नहीं रूकते हैं । वे तलवार की कोई परवाह नहीं करते हैं । उनके कितनी ही गोलियां लगकर आर पार निकल गयी है । गोलों ने हाथी का पेट चीर डाला है । ऐसा लगता है मानो पहाड़ो के बीच में गुफा हो गयी है ।

59

हाथी की सूंड कट कर गिर पड़ी है । खून बह रहा है । ऐसा लगता है मानो पहाड़ों से नाले बह रहे हैं । साथ ही महावत गिर पड़ा जो घावों से भरा हुआ था । ऐसा लगा मानो पेड़ की डाली टूटने पर बन्दर भी उसके साथ धरती पर आ गिरे हैं । या ऐसा लगता है मानो पहाड़ से मतवाले नाले बह रहे हों ।

60

हाथी क्रोध कर दौड़े जब उनके बंधन खोल दिये गये । सेना कांप उठी जैसे हवा के झोंके से पेड़ कांपते हैं । फीलवान उड़कर धरती पर गिर पड़ा जब उसके गोला लगा । ऐसा लगा मानो गिलोल का पत्थर लगने पर चिड़िया पेड़ से गिर पड़ी हो ।

61

सर पर भाला लगने से फीलवान के पैर डिग गये । धरती पर गिर कर वह मर गया । उसे मौत ने पंजे में ले लिया । संसार छूट गया और सेना के बीच फिरना बंद हो गया । उसका हाल ऐसा हुआ । वे ऐसे लगे मानो अपना वस्त्र फैलाकर ग्वालबाल धरती पर सो रहे हैं ।

62

हाथी के अंग से गोली दूसरी और निकल गयी । हाथी का शरीर चलणी की तरह हो गया । घाव आर पार हो गये और ऐसे मालूम हुये जैसे आकाश के बीच में तारे हवा से पेड़ धरती पर आ पड़े ऐसा कवि का विचार है अथवा ऐसा लगा मानो वर्षा से महल ढह पड़े हों ।

63

वीर क्रोध करके हाथी को मारते हैं तो हाथी मरकर धरती पर गिर जाता है । कवि उसकी बात सुनाता है । जान कवि कहता है कि काले शरीर वाला हाथी ऐसा लगता है मानो परछाई हो या रात मिलकर सो रही हो ।

64

हाथी के तीन पैर रह गये जब तलवार चली । इस पर हाथी गिरकर पृथ्वी पर पीठ के बल आ पड़ा । उसका एक पांव ऊपर खड़ा हो गया । वह ऐसा लगा मानो वृक्ष जड़ से उखड़ उलट गया क्योंकि तेज हवा का बहाव वह नहीं सह सका ।

65

मद बहाते हुये हाथी रूकते नहीं हैं । वे मद मस्त होकर दौड़ रहे हैं । हाथी दूसरे हाथी से दांत फंसाकर लड़ रहे हैं ।मुंह में उनके सफेद सफेद दांत हैं मानो बगुलो की कतारें हो । अथवा ऐसा मालूम होता है मानो काली घटाओं में बिजली चमक रही हो ।

66

हाथी खान पर चढ़कर आया । उसने अपना मुंह खोल रखा था । इस पर अलफखां ने उस पर तलवार का वार किया । उसकी सूंड इस प्रकार कट कर गिर पड़ी मानो पहाड़ से सर्प गिर पड़ा हो ।

67

अलफखां पर हाथी आया जिसकी देह पर्वत की तरह विशाल थी । उसके झरने की तरह मद बह रहा था । खान ने बर्छी मारी । वह सूंड में इस प्रकार घुस गयी मानो बड़ी सर्पिणी बंबी में घुस गयी हो ।

68

मदमस्त हाथी आगे पैर नहीं रख सका । जिस प्रकार वायु पेड़ को हिला डालती है उसी प्रकार वह हाथी कांपने लगा । बर्छी को सूंड से झिकाले देकर खान ने इस तरह निकाली जिस तरउ सर्प सर्प को निगल कर उगल देता है ।

69

उन्होंने बहुत से हाथी मार डाले । मारते मारते भुजा थक गयी पर वे मन में नहीं हारते हैं । उन्होने बर्छी से महावत को छेद दिया । ऐसा लगा मानो जाल डाल कर पेड़ के पक्षीगणो को पेड़ से उतार लिया ।

70

लहू के नाले बह चले । आगे चलकर उन्होंने नदी का रूप ले लिया । गोली लगने से हाथी गिर गये जिससे धरती कापंने लगी । खून की बूंदे उछलने लगी । उछलती बूंदे ऐसी मालूम हुई मानो किनारा टूट कर पानी के बीच आ पड़ा हो और उससे बूंदे उछली हों ।

71

युद्ध में दोनो दलो में जुझाऊ बाजे बज रहे थे । निसान चमक रहे थे । तीर और चक्र छन छन की आवाज कर रहे थे और सांग धमाका कर रही थी । गोली सूंकार की आवाज करती चल रही थी । तलवार चमक रही थी मानो काली घटा के बीच में बिजली चमक रही हो ।

72

हाथी से हाथी लड़ रहा है । महावत भी आपस में लड़ रहे हैं । पैदल से पैदल लड़ रहा है और सरदार से सरदार लड़ रहा है । वीर बिल्कुल निडर होकर मारने को दौड़ता है । कायर करोड़ों कोशिश करके ओट लेकर जीव बचाता है ।

73

वीर आपस में भिड़ गये । वे उछाल लगाकर आक्रमण करते हैं । ओट लेकर वे शत्रु के प्रहार को नहीं बचाते हैं । सांग के मारे हुये धरती पर गिर पड़े और तड़फने लगे । वे इस प्रकार तड़फ रहे हैं मानो काले सांप ने उन्हे डस लिया हो ।

74

क्रोध करके घोड़े के चाबुक जब लगा तो घोड़े ने छलांग लगायी और हाथी के मस्तक पर आनंदित होकर चढ़ा । हाथी के सिर पर घोड़े के नाल गड गये । इस पर कवि की अच्छी बात सुनो । वे खुर ऐसे लगे मानो दूज का चांद निकल आया हो ।

75

वीर वीर से लड़कर खून से रंग गये । ऐसा लगा मानो वे होरी खेल रहे है । सभी के वस्त्र खून से लाल हो गये । छोटी तोप की गोली लगने से घुड़ सवार इस तरह उछलते हैं मानो लाल खाल के बंदर उछल रहे हैं ।

76

वीर लोग आपस में भयंकर रूप से भिड़ रहे हैं । उनके हाथ पैर कटं कट कर गिर रहे हैं और सिर फूट रहे हैं । तलवार लड़ते लड़ते टूट गई है और उनके हाथ में सिर्फ मूठ बची है । उन शूरवीरों ने तलवारों की धाराओं के कुंड में अच्छा स्नान किया है ।

77

शूरवीर ने शत्रु पर बर्छी से वार किया । शत्रु को चोट लगी तो वह खून बहाता हुआ उछल पड़ा । चोट के बीच में ढाल आ गयी । बर्छी ने ढाल को पिरो लिया । वह इस प्रकार लगी मानो नालियां पानी से भीग रही हों । अंतिम पंक्ति का अर्थ स्पष्ट नहीं है ।

78

लोहे से लोहा बज रहा है जिसकी ठणकार सुनाई पड़ रही है । इस लोहे की झाल सहने वाले सच्चे जुझार होते हैं । क्रोध से यौद्धा गरज रहे हैं । तलवारे बज रही हैं । हाथियो के कुंभस्थल फट रहे हैं वीरो के सिर टूट रहे हैं जिनसे खून की धाराये बह चली हैं ।

79

वीरों के सिर फड़फड़ा रहे हैं और वे शरीर से अलग हो गये है । मार मार को छोड़कर वे कोई और शब्द नहीं बोल रहे हैं । धड़ पृथ्वी पर गिर कर तड़फ रहे हैं । वे बिचारे सिर से अलग हो गये है । घायलो के चरण डगमगा रहे हैं मानो उन्होंने कोई नशा किया है ।

80

खून से बहने वाली नदी सरस्वती नदी है । सरस्वती का जल लाल रंग का होता है । मरे हुये हाथी यमुना है । यमुना का जल नीला होता है । उनके दांत गंगा के समान है । गंगा का जल श्वेत कांति वाला होता है । जान कवि कहता है इस प्रकार तीनो नदियों के मिलने से त्रिवेणी संगम हो गया । युद्ध भूमि में पड़े खून से सने वीर इसमें नहा रहें हैं मानो वे पुजारे हैं ।

81

वीर रणरक्त में पड़े हैं । उनके पास हाथी मरे पड़े हैं । उनकी सूंड सुभट के मुंह से लगी हुई है । कवि इस पर यह उक्ति करता है कि मानो वीरों को सोया हुआ देखकर अपनी पीने की इच्छा को लेकर सर्प पहाड़ से निकला और उनका श्वास पीने लगा ।

82

भगवान शिव ने वीरो के अंगो के धागे बनाये, शिरो को माला के मनके बनाये । हाथी की सूंड को सुमेरू बनाया । इस प्रकार उन्होंने माला बनायी । इस माला से शिव परमात्मा का सुमरिन करने लगे । वे बड़े प्रसन्न हुये और वीरों को आशीष देने लगे ।

83

शिवजी ने मुंडो की माला बनायी । उनके मन की इच्छा पुरी हुई । वीर शिवजी के गले से मिलकर बड़े प्रसन्न हुये । शूरवीरो के नेत्र खुले हुये थे । वे बड़ी शोभा पा रहे थे । गृद्ध उनकी आंखे निकालने को दौड़ रहे थे जैसे बाज पक्षी पर ।

85

गृद्ध खुली आंखो की ओर देखकर उन्हे खाने को मुंह नहीं खोलते हैं । धूल उड़कर आंखौ में पड़ी तो दृष्टि बन्द हो गयी तब गृद्धो ने निडर होकर शूरों की आंखे निकाल लीं । गीदड़ों की नजर आंखे बन्द किये शूरो के शरीर पर पड़ी तो वे नजर गडाकर खाने के लिये आये ।

86

चौपनाल की आवाज सुनकर जोगिनी उठकर चली आयी और वह प्यासी योगिनियां उधर चलीं जहां सुभटो की लोथे घमासान होने से एक दूसरे पर पड़ी थी । वे खप्पर भर कर रक्त छानकर पीने लगी । मन में बड़ी प्रसन्न हुई । ऐसा लगा मानो रंगरेज ने रंगने के लिये कुसुम्बा चढ़ाया हो ।

87

हाथी कटकट कर धरती पर गिर पड़े । वे बहुत घायल हो चुके थे । उनके हठ को वीरो ने तोड़ डाला था और उन पर लगातार सांगो की चोट की थी । योगिनियां हाथी पर चढ़ रहीं तथा उतर रही थीं । ऐसा मालूम होता था जैसे टीबों पर चढ़कर कुँवारी कन्यायें कूद रही हों ।

88

योगिनियां युद्ध क्षेत्र में घूम रही हैं । वे मिलकर होली खेल रही हैं । उन्होने हाथी की सूंड की पिचकारी बनायी है और उससे वे खून एक दूसरे पर छिड़क रही हैं । सबके रंग लाल हो गये मानो गुलाल की रंगत हो । मुंडरूपी कुंड में नहाकर वे सभी निहाल हो रही हैं ।

89

योगिनियां मिलकर खोपड़ी के प्याले से खून पी रही है । लोहू रूपी मद को पीकर वे सभी मतवाली हो रही हैं । उन्होने कलेजे की गजक बनायी । उनकी आंखे लाल हो रही हैं । वीरों के आंतो के बीच गृद्ध फंसे हुये ऐसे लगते हैं मानो पक्षी जाल में फंस गये हों ।

90

कितने ही वीरों के शिर कटकर गिर पड़े और धड़ सिर से अलग हो गये । उन्होंने रजवट का प्याला पीकर मृत्यु के डर को हटा दिया । राहू केतु जिस प्रकार अमृत पीकर अमर हो गये और किसी के मारे नहीं मरे । इसी प्रकार शूरवीर मरकर अमर हो गये उन राहू केतु की तरह ।

91

वीरों ने सब कुछ समर्पित कर दिया । अपने पास कुछ नहीं रखा । गृद्धो को आंते दी, और आंखें दी, जोगिनियों को खून दिया । शिव को मुंड दिया । चमड़ी मांस और हड्डी सियारों को दी । इस प्रकार सारा शरीर उन्होने बांट दिया और इस प्रकार कीर्ति को प्राप्त किया ।

92

साहिबखां बड़े तोल का सरदार है । वह खान का सगा भतीजा है जिसने संसार में अपनी प्रतिज्ञा रखी । येंदलखां, नाथो, कम्माल और जमालखां दोनो कायमखानी युद्ध में किलोले कर रहे हैं । तुग्गू का मुजाहिद, भीखन, बहलोल, लाडू और पेरोजखां एक प्रतिज्ञा की पूर्ति के लिये रण में गिरे । खान अबूशरीफ ने भी अपना चोला खून में रंगा । इनके अलावा मारूफ सिकंदर ने भी युद्ध की झोल सही । खानं का खास व्यक्ति खांनू ढोल बजाकर शत्रुओ के सामने गया । उदा, परता और चतुरभुज ने युद्ध भूमि में अपनी तलवार को खोला । इनके अलावा कौजू, हरदा, मनोहर, घमरोल, जग्गा, दोदराज, दोनों मोहन इन सभी ने तलवारो के घाव खाये । मै किस किस का नाम लूं सारा समूह जूझ पड़ा । उन्होंने इस प्रकार मुंह पर

तलवार की चोट सही मानो कोई पान खाता हो । इस प्रकार सारे साथ ने अलफखां पर अपने प्राणों को निछावर कर दिया ।

93

दोनों ओर के इतने वीर मारे गये कि उनकी गिनती नहीं हो सकती । हाथी, घोड़े और मनुष्य युद्ध में गिर पड़े । बड़ा घमासान युद्ध हुआ । दीवान अलफखां बादशाह के काम के लिये जूंझ गया । इन सभी को हूर विमान पर बैठाकर स्वर्ग ले गयी ।

94

अलफखां के बराबर का कोई उमराव नहीं हुआ । बादसाह जहांगीर ने भी यही बात कही । जीवित अवस्था में उसने अनेको गढ़ों को जीता । यह बात सभी जानते हैं । मरने पर उसने जाकर स्वर्ग को लिया । हे दीवान, तुम्हे धन्य है ।

95

इस प्रकार की लड़ाई संसार में किसी ने नहीं की । दोनो और के वीरो ने शरीर में एक जीव पाया था उसे लुटा दिया । यौद्धाओं ने आपस में लड़कर शरीर के टुकड़े टुकड़े कर लिये । जगतसिह और विश्वंभर ने भाग कर अपना जीव बचाया ।

96

अलफखां ने स्वामी धर्म का अच्छी तरह पालन किया । वह चौहान वंश का वीर था । उसने बादशाह के काम के लिये अपना जीव दे दिया । सारे जहान से खान की मजार पर जियारत करने लोग आते हैं । उनकी करामात सब पर प्रकट होती है ।

97

अलफखां का नाम लेने से दुख दरिद्रता दूर भाग जाती है । सोया भाग जग ज़ाता है तथा मन की इच्छा पूरीं हो जाती है । अगर दिल से मांगता हो तो उसे धन लक्ष्मी मिलती है । जो सुबह उठकर चरणों से लगता है उसे सब कुछ मिल जाता है ।

98

अगर शूरवीर इस वीर कथा को सुनते हैं तो हथियार रथ लेकर उन्हें वही करना चाहिये जो अलफखां ने किया। हथियारों का पानी उन्हें अमृत समझकर पीना चाहिये। अगर शरीर क्षीण हो जावे तो भी उनका नाम कभी मरेगा नहीं।

99

ढाढ़ी इसे पढकर पंजाब की बोली पहिचान जायेंगे। वह पूरी कथा मुझे याद नहीं है जो बढ़ा चढ़ाकर मैं कहूँ। भाषा कोई भी हो कथा यह सच्ची है। जो कवि लोग विशेष उक्ति कर गये हैं मैने उसी का बखान किया है।

100

दीवान अलफखां वि.1621 में पैदा हुये। उस चौहान ने क्यामखां के वंश को उज्जवल किया। जब विक्रम संवत 1683 आया तो इस संसार को छोड़कर अलफखां वैकुंठ चले गये।

इतिश्री दीवान अलफखां की पैड़ी सम्पूर्ण ॥

सम (मा) प्ता। अथ संवत १७१९ मिती कार्तिक वदी ॥ सनीसरवार। तारीख २३ मा. मुहर्रम सन १०७० लिखाइतं पठनार्थ फतैहचंद लिखंते भीखा ॥